भाखर रा भौमिया

आदिवासी गराभिया साहित्य

सम्पादक - अनुवादक

अर्जुनसिंह शेखावत



भाखर रा भौमिया

आदिवासी गरासिया साहित्य

INDIAN LITERATURE IN TRIBAL LANGUAGES

भाखर रा भौमिया

आदिवासी गरासिया साहित्य



संपादक-अनुवादक

डा॰ अर्जुनसिंह शेखावत



साहित्य अकादेमी

आदिवासी भाषा साहित्य प्रकल्प

Bhakhar Ra Bhomiya (Adivasi Garasiya Sahitya) : Edited by Dr. Arjunsingh Shekhawat, Sahitya Akademi, New Delhi

भाखर रा भोमिया (आदिवासी गरासिया साहित्य)

साहित्य अकादेमी

खास दफतर :
रवीन्द्र भवन, 35, फीरोज़शाह मार्ग , नमीं दिल्ली - 110 001

विक्करी विभाग :
स्वाति, मन्दिर मार्ग, नमीं दिल्ली - 110 001

खेत्तरी कार्यालय :
172, मुम्बई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुम्बई - 400014

जीवन तारा बिल्डिग, चौथा छत्त, 23ए/ 44 एक्स,
डायमंड हार्बर मार्ग, कोलकाता - 700053

सेंट्रल कॉलेज कैम्पस, डॉ. आम्बेडकर विधि, बैंगलोर - 560001

मेन बिल्डंग. गुना बिल्डिंग (दुई मंजल) 443(304),
अन्ना सलाइ तेनाम पेट, चेन्नई 600113

मोल : दो सौ पचास रुपये

ISBN : 81-260-2246-9

छापणवाळा : आर० के० ऑफसैट प्रोसैस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

आदिवासी साहित्य- भूमिका

भारतीय साहित्य परम्परा की अनेकविध विशेषताओं में साहित्य का बहुभाषित्व महत्त्वपूर्ण विषय रहा है। मुख्य धारा की साहित्य रचना और भाषाओं के विभिन्न आंचलिक स्वरूप इनके बीच भारतीय परम्परा में बहुविध स्तरों पर आदान-प्रदान चलता आया है। हमारी परम्परा में साहित्य तथा संस्कृति की पहचान मात्र लिखित स्वरूप या केवल मौखिक स्वरूपमें सीमित नहीं है। इन दोनों का मिलाप हर प्रमुख भाषा साहित्य में देखने को मिलता है। इन्हीं कारणों से मौखिक साहित्य रचनाओं का स्थान भारतीय साहित्य के इतिहास में महत्त्वपूर्ण रहा है।

परन्तु बहुत सी भारतीय भाषाओं को आज भी पूर्ण रूप से भाषा होने की स्वीकृति नहीं मिल पाई हैं। आज तक हम उन्हें केवल 'बोली' के रूप में ही पहचानते आए हैं। इनमें से बहुत सी बोलियाँ 'आदिवासी' नाम से जानी गई। इन में जनजातियों की भाषाएँ भी हैं। लिपिबद्ध होने से वंचित रही ये बोलियाँ बोलने वाले जनसमूहों की संख्या भी बहुत ही अधिक है। जन जातियों की इन भाषाओं में प्राचीन समय से मौखिक रूप में साहित्य की रचना होती आई है, जिस में गीतों के अलावा कथाएँ और महाकाव्य तक भी अंतर्भूत हैं। भारतीय साहित्य की प्रकृति और परम्परा पूर्ण रूप से समझने के लिए इस जन साहित्य के सर्जनात्मक व्यवहार का अवलोकन करना अत्यंत आवश्यक है।

मौखिक साहित्य का संकलन और अवलोकन करने के कई प्रयत्न इसके पूर्व भी हो चुके हैं और इन प्रयत्नों ने नृवंश शास्त्र, मौखिक संस्कृति तथा समाज विज्ञान जैसी विद्या शाखाओं को निश्चित रूप से समृद्ध बनाया है। परन्तु भारतीय साहित्य के पाठकों तथा अभ्यासकों को जनजातीय साहित्य एक सुगठित शृङ्खला के रूप में कभी उपलब्ध नहीं हुआ है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए साहित्य अकादमी ने भारतीय जनजातीय साहित्य व मौखिक परम्परा प्रकल्प की रचना की। इस प्रकल्प के अंतर्गत दो विभिन्न शृङ्खलाओं में उनकी साहित्य कृतियों को प्रसिद्ध करने का संकल्प है। एक ग्रंथ शृङ्खला में मूल जनजातीय बोली की कृतियाँ, हिन्दी/अंगरेज़ी अथवा अन्य संबंधित भारतीय भाषा में किए गए अनुवाद के साथ प्रस्तुत की जाएँगी। दूसरी शृंखला में मूल जनजातीय बोली की कृतियाँ, उनके रोमन लिपि में दिए गए ट्रान्सलिटरेशन के साथ तथा उसके हिन्दी/अंगरेज़ी व अन्य संबंधित भारतीय भाषा में किए गए अनुवाद के साथ प्रस्तुत की जाएँगी।

गरासिया जनजातीय साहित्य का संकलन तथा संपादन करनेवाले डॉ. अर्जुनसिंह शेखावत गरासिया साहित्य और संस्कृती के जानेमाने विद्वान रहे है, तथा आप दीर्घकाल तक इस विषय का प्रगाढ शोध करते आये है। आशा है कि साहित्य और अन्य मानव्य शास्त्रों के पाठक व विद्वान् इस ग्रंथ का उचित स्वागत करेंगे।

गणेश देवी

अनुक्रमणिका

आमुख i
डा. लक्ष्मीमल सिंघवी

भूमिका v
कोमल कोठारी

भूला जठा सूं गिणौ xix
भूले वही से गिनो
डा. अर्जुनसिंह शेखावत

भासा अर गरासी बोली १
भाषा और गरासी बोली

नांव धरण री रीत १३
नामकरण संस्कार

गरासियां रा गीत १७
गरासियों के गीत

गरासिया कथवां १२९
गरासियों की कथाएँ

प्रलय रै पछै री कथा १९५
प्रलय के बाद की कहानी

औखाणां २०९
कहावतें

कोआनी २१८

पहेलियां

नाचवु २२५

नृत्य

लोक कला : मॉडणां २४३

लोक कला : अल्पना चित्र

लोक कला : मॉंडला २५१

लोक कला : गोदना

हीमेन २५९

शकुन

हपनौ २६७

स्वप्न

वाजू २७५

वाद्य यंत्र

जड़ी बूटी अर इलाज २९१

जड़ी बूटी और देशी चिकित्सा

जंतर-मंतर ३०७

जंत्र - मंत्र - तंत्र

मर्दुमसुमारी रा आंकड़ा ३३९

जनगणना के आंकड़े

माप-तोल ३४७

नाप-तोल

संदर्भ ग्रंथो की सूची ३५१

आमुख

भारतवर्ष के सबसे प्राचीन निवासी कौन है? इसको एक विवादास्पद विषय कहा जा सकता है। आर्य और द्रविड़ लोग इसी भूखण्ड पर कई सहस्राब्दि से रहते हैं, किन्तु बनवासी भारतीय जन-गण को भी आदिवासी संज्ञा से अभिहित किया जाता रहा है। भारत की वनवासी जातियां और कुनबे भारतवर्ष के सांस्कृतिक वैविध्य के परिचायक हैं और वे सब गहरे रूप से भारतीय संस्कृति से अर्न्तग्रंथित हैं - गरासिया जाति, उनका जीवन और उनका साहित्य इस प्रस्थापना का प्रमाण है।

गरासिया लोग राजस्थान और गुजरात में पाये जाते हैं। १९८१ ईसवीं में राजस्थान में उनकी संख्या - १,२१,९३९ थी। इस ग्रंथ के लेखक श्री अर्जुनसिंह शेखावत ने बड़े परिश्रम से जनगणना के आंकडों को प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार १९७१ में राजस्थान में जनजातियों की आबादी लगभग २०.३२ लाख थी। उन्होंने अपनी शोध की प्रक्रिया में १८४१ में मुद्रित मर्दुमशुमारी राजमारवाड़ १८४१ (हरदयाल सिंह-रिपोर्ट) में "मारवाड़ी जातियाँ" नामक अध्याय का उल्लेख करते हुए, जो आंकड़े दिये हैं, वे अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। उन्होने मारवाड़, सिरोही, मेवाड़ एवं प्रतापगढ़ रियासतों की जनगणना का भी विश्लेषण किया है। श्री शेखआवत के शोध विश्लेषण से प्रतीत होता है कि मेवाड़ मे गरासिया जाति की संख्या १८११ में ८०४८ थी और १९४१ में १७,८३०, मारवाड़ राज्य में उनकी जनसंख्या १८११ में ४०४० से बढकर १९४८ में ८९४२ हो गई। मेवाड़ राज्य में १९४८ में उनकी संख्या १५,८०७ थी। इनकी मातृभूमि सिरोही मानी जाती है, जो राजस्थान और गुजरात की संगम-स्थली है। सिरोही रियासत में १४११ में उनकी जनसंख्या सबसे अधिक आबूरोड पिण्डवाड़ा में थी। श्री शेखावत के अनुसार राजस्थान की जनजातियों में साक्षरता का प्रतिशत लगभग १०.२७ है।

संस्कृति और समाज के बीच भाषा की अन्तःसलिला साहित्य कला और परम्पराओं को निरन्तर अभिसिंचित करती रही है। जैसा कि प्रस्तुत पुस्तक के प्रणेता श्री अर्जुनसिह शेखावत ने अपनी भूमिका में राजस्थानी भाषा के अनुपम साहित्यिक अन्दाज में कहा है "भूल्या वठै सूं गिणौ"। वस्तुतः जमीन से जुड़ी हुई यह प्रस्तुति साहित्यिक अभिव्यक्ति की व्याख्या के माध्यम से क्रम की भूली हुई गिनती की पुनर्गणना है और मुझे यह कहने में कोई संकोच नही कि यह अनुशीलन गरासिया जाति का एक जीवन्त समाजशास्त्र है।

साहित्य मनुष्य के मन और समाज का दर्पण होता है, श्री शेखावत का यह अनुशील इस तथ्य का प्रगाणिक साक्ष्य है। जैसा कि श्री शेखावत ने राजस्थानी भाषा में मार्मिक शब्दों में कहा है कि ''लोक री सांची संक्रिति जनता रे कंठा बसै''। यही हमारी वाचिक और मौखिक संस्कृति की अनमोल धरोहर है। उन्होने स्व. नारायण सिंह जी भाटी के स्मृति-सुरभित संस्मरण देकर कहा है कि ''मरुभौम रे सौरभ री ताजगी, जकौ इण लोकसाहित मांयै रची-पची है, वा मोटी-मोटी प्रबंध पोथ्यां में ई कोनी। लोकसाहित जूनो व्हैतां थका ताजो लागै। इणरो रंग नीं फीकौ पड्यों अर नीं सुवास में ई की फरक पड्यौ। वो अठा रा वासीन्दा री ''रागात्मक प्रवृत्तियां'' रौ भण्डार है और लिपिबद्ध नीं व्हैतां थका इतिहास नै सावल रकेलनै राख्यौ है ।''

हमारी वाचिक विरासत की ताजगी का रहस्य यह है कि इसका दिन-प्रतिदिन जीवन के हर कदम पर नवीनीकरण होता है। यह पुस्तक उस लोक और लोक जीवन्त परम्परा की प्रशस्ति है। श्री शेखावत की यह प्रस्थापना आधारभूत है कि लोक एक सनातन सच है, अमर हैं क्योंकि वह हर पल मरता है और फिर पुर्नजन्म लेता है। उनके शब्दों को दुहराते हुए कहना चाहता हूँ कि ''लोक में जीवन है, जीवन में पिराण, पिराण ही जीवन की कसौटी है।'' इस कसौटी पर इस अनुशीलन की विशेषता यह है कि गरासिया साहित्य का यह एक सर्वांगीण अध्ययन है और प्रामाणिकता की कसौटी पर खरा उतरता है।

कर्नल टॉड के अनुसार गरासिया शब्द में एक ध्वनि है कि राजपूत जाति से अदभूत हुए और फिर उनको दूसरी श्रेणी मे रख दिया गया जो केवल एक ग्रास के हकदार हुए। गरासियों की अभिव्यक्ति राजस्थानी भाषा से अन्तरंग रूप से जुड़ी हुई है। इस मौखिक अभिव्यक्ति साहित्य मे गीत, गाथा, वार्तायें, मौखिक नाटक, ख्याल, रमत, औखाणा दाखला, आडियां, सुगन, सपना, औषधि, देवता, पित्तर, झाड़ा-झपटा, टोटका, जन्तर-मन्तर-तन्तर बड़े यत्न से सहेज कर रखे गये हैं। इस दृष्टि से यह अनुशीलन एक मनोरम झांकी है। इस अनुशीलन में लोक जीवन की पूर्णता और समग्रता है। यद्यपि गरासिया जाति स्वयं राजपूत वंश-वृक्ष से सम्बंध रखती है, तथपि उसका अपना आन्तरिक वर्गीकरण भी है, जिसमें ऊंच-नीच के भेदभाव कायम हैं।

गरासिया की अभिव्यक्ति का माध्यम भीली बोली है, जो राजस्थानी एवं गुजराती के सम्मिश्रण से बनी और विकसित हुई है। गरासिया कुनबों में परस्पर जाति भेद है और साथ ही एक-सूत्रता भी। गरासिया समाज में धर्म परिवर्तन नहीं हुए। उनकी मान्यताओं में प्रभु या भगवान सर्वोच्च है, गणेश,धर्मराज, काला भैरव, गोरा भैरव की पूजा-अर्चन का रिवाज भी है। व्याघ्र पर आसीन अम्बा माता की आराधना भी है। प्रस्तुत पुस्तक में

गरासी बोली एवं शब्दावली का विवेचन भी है। गरासिया कथाओं और औखाणों इत्यादि के सुन्दर सर्वेक्षण के साथ साथ गरासियों के गीतों के विषय में श्री शेखावत जी लिखते हैं कि 'वनवासी गरासिया रा जूना गीत, सुमेर परबत रा गीत, दो माछलां रै झगड़ा सूं व्हिया परलय रा गीत, राधा किसन अर गोपी-कसन रा प्रेम गीतड़ा अर अंधारियौ जुग रौ आध्यामिकगीतां माय इतियास गूंथ्योड़ो। इणारै गीतां री राग-रागिणी मांयै घणौ उतार-चढाव कोनी व्है। रिग्वेद री रिचावां रै ज्यू धीमी-मधरी राग सू हवलै हवलै गावै , कै सामगान रै ज्यूं गावै घणखरा गीत नाच रै साथे गावै, नर-नारी केई गीतां में सवाल-जवाब ई करै।''

श्री शेखावत के शब्दो में, इस साहित्य के सम्मोहन का यह मनोहारी दिग्दर्शन इस प्रकार प्रस्तुत हुआ है :

''इणारा गीतां मांयै नहीं तो भासा गै चमत्कार दीसे, नीं परुसरण (प्रस्तुति) री त्यारी दीसै। अेक कंठ में अेकण साथै सैपूचौ समाज बोलै। सीधा-सादा सबद सरल सीधी लय, जिणमें घणौ उतार-चढाव ई नीं मिलै। अेड़ौ लागै जाणै बोल चाल री बोली मायै गीता री झूलकी पैरायौड़ी। नाच में ई जाणै सैज चाल नै इज लयबद्ध कर दी व्है। अेक भाव-विचार सूं गीत उपजे-नीसरे अर ज्यूं गीत री कड़ियाँ आंकड़ियाँ खुलती-जुड़ती जाय त्यूं गीत आगे वधतो जाय। धणौ ढोल-ढमको ई कोनी राखें, सांती सूं आणंद लैवे देवै। कथाओं और कहावतों रो संसार निरालो है।''

श्री अर्जुनसिंह शेखावत का यह सारस्वत अनुशीलन, अरावली के पुरातन पुत्र गरासियों के प्रति उनकी ममता और संवेदना की एक मार्मिक अभिव्यक्ति है। इस पुस्तक की यह एक विशेषता है कि यह एक साथ कई भाषाओं में प्रस्तुत की जायेगी। मुझे इस पुस्तक को पढ़ने में जिस लोकरस और सरस जीवन्त की अनूभूति हुई वह वस्तुतः अनिवर्चनीय है। श्री शेखावत इस अनुशीलन और सरस सर्वतोमुखी साहित्यिक प्रस्तुति के लिए बधाई के पात्र हैं। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक का सर्वत्र हार्दिक स्वागत होगा और भारतीय भाषाओं के इतिहास में सहृदय संवेदनशील के उदाहरण के रूप में यह पुस्तक मील के पत्थर की तरह लोक साहित्य के हर सुधी रसज्ञ के लिए चिरस्मरणीय रहेगी।

डा. लक्ष्मीमल सिंघवी
अध्यक्ष, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
पूर्व ब्रिटिश हाई कमिशनर, लंदन. सांसद.

भूमिका

कोमल कोठारी
निर्देशक

रूपायान संस्थान
जोधपुर

प्रिय भाई अर्जुन जी,

आपका आग्रह कि मैं इस पुस्तक की भूमिका लिखू। गत दो तीन माह से मैं अपनी बीमारी के कारण लिख नहीं पा रहा था। आपने अपने आग्रह में कमी नहीं आने दी। मैं मजबूर ही हो गया कि भूमिका लिखूं। यह कार्य मैं एक व्यक्तिगत पत्र के माध्यम से करना चाहता हूँ ताकि अपनी बात को आसानी से कह सकूं। इस पुस्तक में आपने आदिवासी गरासियों के साहित्य से संबंधी विचार विमर्श किया। अपना परिचय भी लम्बे वर्षों का है। आप राजस्थानी भाषा की उन्नति और साहित्य की रचना धर्मिता से जुड़े रहे है। साथ ही साथ आपकी गहरी रूचि महिलाओं की व्रत कथाओं में भी रही। विषयों की इसी समानता के कारण समय-समय पर हमारे विचारों का आदान-प्रदान होता रहा। आप अपने अध्यापकीय कार्यकाल में गरासिया क्षेत्र में रहे। यों उसी क्षेत्र के निकट भौगौलिक अनुभाग में आपका मूल निवास भी है। कुछ परिस्थितियां बनती है जिनसे अनायास हमारा ध्यान विशिष्ट समस्याओं के प्रति आकर्षित हो जाता है। आकर्षण तो प्रथम सोपान है, उसके ठीक बाद देखने-समझने का उलझन भरा मानस उभरता है। धीरे-धीरे उसी में शायद खास तरह का बीज मिल जाता है और वही बीज अध्ययन की भाव-भूमि प्राप्त करके एक विषय की विशिष्ट समझ की तरफ अंकुरित होने लगता है। यों तो आबू-सिरोही क्षेत्र में गरासियों के अलावा सौंकडों-हजारों की संख्या में पढ़े लिखे लोग हैं, गरासियों के जीवन प्रसंगों से जुड़े भी है, उनके रीति/रिवाज एवं रहन-सहन की व्यवस्थाओं से परिचित भी हैं किन्तु उनके मन में कभी नहीं आया की वे एक सम्यक विचार क्रम से कोई रचनात्मक कार्य करें।

आपने मुझे कुछ पुस्तकें भी दी जो गरासियों एवं अन्य राजस्थान के आदिवासीयों पर गत वर्षो में लिखी गई और उनका प्रकाशन भी हुआ। कुछ एसे ही प्रकाशन हमारे पुस्तकालय में भी पहुँचे। छुट-पुट लेख भी पत्र पत्रिकाओं में छपते रहते हैं। लेकिन

आपको एक बात कहना चाहता हूँ कि आदिवासी लोक जीवन में विशिष्ट रूप से जो घटित हो रहा है और जिस संस्कृति के परिवेश में आदिवासी जी रहे हैं उसमें कुछ फर्क है। चाहे ये दो प्रकार या अनेक प्रकार के समाज एक ही क्षेत्र में निवास कर रहे हो। वे अपने-अपने शासन-अनुशासन प्रशासन की सीमाओं में जीवन यापन कर रहे हैं। इस स्थिति में आदिवासीयों को देखने समझने की तीन प्रतिक्रियाएं अद्भुत होती दिखती है।

१. निरपेक्ष एवं समग्रता की दृष्टि से केवल आदिवासी जनजीवन को देखना।

२. आदिवासी जीवन का अन्य समाजों की परंपराओं की धाराओं के साथ जोड़कर उन्हे अपने ही समकक्ष ले जाने की कोशिश करना

३. आदिवासीयों की जीवन पद्धति से उन्हीं तथ्यों का विवरण प्रस्तुत करना जो अन्य समाजों को आश्चर्यजनक एवं अद्भुत लगे और यह बताना कि आदिवासियों को मुख्य जीवन धारा में लाने के लिए क्या-क्या किया जाना आवश्यक है ?

उपरोक्त तीनों प्रक्रियाओं के आधार पर होने वाले अध्ययनों की कार्य पद्धतियां (मेथोडोलॉजी) भिन्न-भिन्न होनी चाहिए। लेकिन राजस्थान में होने वाले विद्वत कार्यो में एक प्रकार से इनका अभाव ही मिलता है। परिणाम स्वरूप एक ऐसा चित्र उभरता है जो गरासियों से संबंधित भी है और दूसरी ओर उनसे बहुत दूर भी है। मैं आपके अध्ययन की परतों के बाहर उन स्थितियों, अभिव्यक्तियों और व्यवस्थाओं को समझने का उपक्रम करना चाहता हूँ जो निपट गरासियों की अपनी कही जा सकती हैं। लेकिन मैं इस तथ्य को भी भूला नहीं सकता कि अनेक सदियों से गरासिया या भील या मीणा या राजस्थान की अन्य जनजातियां प्रदेश की अन्य जातियों से बिल्कुल अछूती रही। एक जो स्थिति भारत के उत्तर-पूर्वीय क्षेत्र के आदिवासीयों में देखने को मिलती है वो निश्चय ही राजस्थान से बहुत अर्थो में भिन्न है। राजस्थान की जनजातियों का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां इन्हीं का वर्चस्व हो, घनी आबादी हो, जहां अन्य जातियों से एक मात्रा से अधिक आदान-प्रदान न हो। इसका स्पष्ट अर्थ यह भी है कि राजस्थान की जनजातियां अपने जीवन के परिवेश मे उन सभी अनुभवों एवं कार्यकलापों से अछूते नहीं रहे जो अन्हें सम्पूर्ण जीवन प्रणाली को सुनिश्चित एवं स्वतंत्र छबि प्रदान कर सके। इस अन्योन्याश्रित जीवन शैली ने कहीं अपनी पहचान बनाए रखी तो बहुत अर्थो में अन्य प्रभावो को भी अपने में आत्मसात किया। यह तथ्य आपके द्वारा संग्रहित सामग्री के माध्यम से स्पष्ट हो जाता है। आपने इस पर अच्छा प्रकाश डाला है।

यदि हम गरासियों की भाषा एवं उसकी भंगिमा के साथ उसके स्वरूप को समझने का उपक्रम करते है तो सामान्य राजस्थानी का प्रारूप हावी होता दिखता है। उसका एक प्रमुख कारण यह भी हो सकता है कि गरासियों की अपनी भाषा जो पारम्परिक व्यवहारों,

दैनिन्दिन कार्यों, त्यौहारों-उत्सवों में प्रयुक्त होती रही - उसका कोई ऐतिहासिक लिखित रूप नहीं मिलता। यह एक ऐसी भाषा रही जो वाणी या कथ्य तक ही अपने को समेटे रही। उसे जब हम लिपिबद्ध करने का उपक्रम करते है अथवा एक नियोजित लिखित आधार देने का प्रयत्न करते है तो उसे राजस्थानी के अपने स्वरूप एवं विधान से पृथक नहीं कर सकते। शब्दों की समानताओं के बावजूद भी वाणीगत उच्चारणों को ज्यौं का त्यौं स्वीकार किया जाना-भाषा विज्ञान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हो सकता है किन्तु सामान्य रूप से उनके पठन-पाठन की क्रिया असंभव हो जाएगी। लिखित भाषा की अपनी आवश्यकताएं होती हैं। यह सब होते हुए भी अपने वाणीगत या वाणी के स्वभावानुसार लोकगीतों को लिपिबद्ध करने का प्रयत्न किया है, उसमें निश्चित ही गरासियों की अपनी भाषा के दर्शन होते हैं। यह आपका प्रयास अनुकरणी है, स्तुत्य है। दो तीन कथाएं भी अपने किसी पढे लिखे गरासिये से लिखवाई है - उसमें भी हमें एक अन्य गंध मिलती है। अध्ययन का यही क्रम हमें गरासियों की वाणी की गरिमा भी अवश्य प्रदान करेगा। लेकिन यह कहना भी अनिवार्य होगा कि गरासियों की भाषा का संसार राजस्थआनी के संसार से पृथक नहीं हो सकता। उसका व्याकरण, उसकी भाषा-वैज्ञानिक कलेवर, लेखन के नियम,अनुशासन राजस्थानी के ही बने रहेंगे क्योंकि उनकी भाषा का मूल चाहे आधुनिक राजस्थानी में न हो, ऐतिहासिक राजस्थानी के पूर्व की प्राकृतों-अपभ्रंशो में सुनिश्चित रूप से निहित है। आपका भी यही मत है, मैं इससे सहमत हूँ। भासा का नाम भी आपने 'गरासी भाषा' अच्छा रखा है। यह भाषा पहली बार 'पेपर' पर लिखी गई है।

सामान्यतया भाषा संबंधी चर्चा के बाद हम सीधे लोकगीतों की ओर अग्रसर होते हैं। सही भी है कि लोकगीत एक अर्थ में कविता अर्थात काव्य के कृतित्व में आच्छादित है अर्थात छंदोमय है। बोलचाल की भाषा मे उसकी भंगिमा भिन्न है - अर्थात अर्थ प्राप्त करने का साधन भी भिन्न है। भाषा की अभिधा प्रवृत्ति से हट कर लक्षणार्थ एवं व्यंगार्थ की ओर अग्रसर होते हुए - वो यथार्थ से परे कुछ कहने लगती है। लेकिन मैं यहां भी यह कहना चाहता हूं कि लोकगीतों के विवेचन में जाने-अनजाने, जहां गीतों के विषयों ने अपना आधिपत्य बना लिया है, उससे हटकर सभी प्रकार के लोकगीतों का विश्लेषण करना चाहिए। मुख्यतया जो लोकगीत जिस 'प्रसंग' में गाए जाते हैं, वे ही गीत के वर्गीकरण के आधार बन जाते हैं। हमें यह सोचने का अवसर ही नहीं मिलता कि गीतों के रचना-विधान अथवा उसकी संरचना के बारे में सोचें। मुख्यतया हम लोग गीतों को लिखने के लिये गायकों से डिक्टेशन लेते हैं। वो बोलें एवं हम लिखें। लिखाने वाला कभी कभी गुनगुनाकर गीत की पंक्तियों को याद भी करता है। इस प्रकार से लिखे गए गीतों का सही स्वरूप नहीं मिल पाता। विशेषकर उसका निश्चित छंदोमय रूप। गीत को गाते समय

उसकी 'लय' को कभी छोड़ा नहीं जा सकता। वो लय ही गीत का आन्तरिक छंद है। मुझे पक्का विश्वास है कि आप गरासिया गीतों पर इस दृष्टि से भी अध्ययन में प्रेरित होंगे। मैं पक्के रूप से कह सकता हूँ कि गरासियों ने जो भी गीत जिन पंक्तियों के क्रम से एक-बार गाया, दूसरी बार उसी गीत को उसी क्रम से कभी नहीं गा सकते। इसके कारण में जाने की आवश्यकता है। गरासिया गीत (चाहे स्त्रियों के हों, चाहें पुरुषों के हो, चाहें दोनों के सम्मिलित हों) कभी भी एकल रूप से नहीं गाए जाते। गीतों को गाने वाला हमेशा एक समूह होता है, वो चाहे छोटा हो या बड़ा, निश्चिय ही इस गीत का आगीवान एक स्त्री या एक पुरुष होता है। लेकिन यह आगीवान भी एक ही गीत के दौरान दो भिन्न व्यक्ति हो जाते हैं। अतः जो गीत हम लिख रहे हैं - वो तो एक पुरुष अथवा एक स्त्री की बोली गई रचना हुई। ठीक उसका वही गेय रूप मिल ही जाय यह आवश्यक नहीं। कभी-कभी लगता है कि गीतों की इस प्रकार की संरचनाओं की वस्तुस्थिति ही क्यों निर्मित होती है? एक ओर तो यह महसूस होता है कि गीत निरबंध है, स्वछंद है, वो चाहे जैसी उड़ान ले सकता है, बिंबों एवं तथ्यों को निरंतर जोडता चला जा सकता है और दूसरी ओर उसकी सामूहिक गेय-रूप का बंधन भी स्वीकार करके चलना पडता है। ऐसी स्थिति तो बनती ही नहीं कि गीत की एक रचना हो गई, उस गीत की पंक्तियों को, इन ही बिंबों को, भावों को उसी रूप में पुनः क्यों नहीं गा पाते ? बहुत-सी बार तो एक ही पंक्ति के शब्दं का क्रम भी बदल जाता है। यदि तुलना में हम अपना राष्ट्रीय गान 'जन गण मन' को ले तो क्या शब्द क्रम और पंक्ति क्रम को बदल सकते हैं? क्या प्रसाद, पंत और निराला की कविता के साथ यह संभव होगा? शायद नहीं। इसीलिए मैं यह भी आवश्यक समझता हूँ कि गरासियों की गीतों में आने वाली एसी स्थितियों का गंभीर विवेचन हो। हर नयी पंक्ति के साथ, एक टेर जैसी प्रवृत्ति वाली पंक्ति निश्चिय ही बनी रहती है। अर्थगत विश्लेषण में इस टेर वाली पुनः पुनः गेय पंक्ति को साफ छोड़ना पड़ता है। अतः कौनसी स्थिति है जो इस पुनरावर्तन को गीत के लिए अनिवार्यता प्रदान करती है?

इन सब बातों को कहने का एक ही तात्पर्य है कि गरासिया अपने गीतों में उस स्वतंत्रता एवं स्वयं स्फूर्ति रचनाधर्मिता को स्वीकार करते हैं जो विशिष्ट काल और विषिष्ट परिस्थिति के कारण उत्पन्न होती है। वो नये से नये अनुभवों को, नये से नये तथ्यों को, नये से नये हाव-भावों को, नयी से नयी घटनाओं को अपनी नई-नई अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक समझते है।जनजातियों के पास ही ऐसे गीत है जो अनेक ऐतिहासिक अनुभवों के साथ-साथ प्रतिदिन होने वाली मार्मिक घटनाओं को अपने गीत के विषय बना लेते हैं। आप इस बात को स्वीकार करेंगे कि गरासियों का प्रत्येक गीत को लंबे समय तक गाया जाता है या गाया जा सकता है। उसके लिए प्रारंभ, मध्य और अंत का

कोई अर्थ नहीं होता। शास्त्रीय या शिष्ट समाज की कविताओं एवं गीतों में अवश्य ही प्रारंभ और अंत होता है। यह अभिव्यक्तियां मुख्यतया लिखित साहित्य की विधाएं है। गेय-काव्य (गीत) है तो भी एक सीमा है। छोटी कविता और लंबी कविता के बाद उसे एक अन्य साहित्यिक विद्या का भोग मानना पड़ेगा। यह सोचना भी आवश्यक है कि कविता के प्रत्येक 'बंद' (स्टेंजा) में एक भाव का परिपोषण होगा। अन्य 'बंद' उसी तथ्य को दूसरे प्रकार से प्रकट करने का प्रयत्न करेंगे। एक प्रकार का यह अन्य रूपों में, अन्य बिंबों का पुनरावर्तन है। कविता की विधा से परे निकलते दूसरी काव्यात्मक विद्या को ग्रहण करना पडता है - वो कथात्मक हो, वो विवेचनात्मक हो, वो एक तर्क से दूसरे तर्क तक ले जाने का प्रयत्न हो। ठीक इन्ही मापदंडों से लोकगीतों को समझने की आवश्यकता तो मैं नहीं मानता लेकिन उनके उनके अपने ही मापदंडो की तलाश हमें जरूर करनी चाहिये।

गरासियां गीतों में एक बड़ी संख्या कथात्मक गीतों की है। अर्थात उसमें किसी न किसी रूप में घटनाओं का क्रम मिलता है। ऐसे कथा गीतों को पृथक श्रेणी में रखना होगा। इसके भी भेद होंगे - वे कथात्मक गीत जो बहुत छोटी घटनाओं पर केन्द्रीत हैं - उसमें विशिष्ट स्थान तथा विशिष्ट पात्रों के नाम नहीं होंगे। लेकिन ये एक कविता (या लिरिक) भी नहीं कहे जा सकते। पंक्तियों के संयोजन में कथा-तत्व का क्रमिक विकास दिखाई देगा। ऐसे कथात्मक अंश वाले गीतों को 'बैलेड' की श्रेणी में रखना पड़ेगा। दूसरे रूप में लंबी कथात्मक गेय रचनाएं होगी। जिनमें स्थानों के नाम एवं पात्रों या चरित्रों का वर्णन होगा। इससे भी बड़ी गाथाएं होंगी जिन्हें प्रबन्ध काव्य (महाकाव्य या एपिक) की श्रेणी में रखना पडेगा। आपने जितने भी गीतों के उदाहरण लिए हें, उनमें तीनों प्रकार दिखाई देते है। इससे साहित्यकारों को नया दिशा दर्शन मिलेगा।

आपने एक छोटा प्रसंग सीता और राम की कथा से प्रस्तुत किया। राम की कथा संबंधी दो स्वरूप हमने भील समाज से प्राप्त किए। कथा का प्रारंभ राम-सीता-लक्ष्मण के वनवास से प्रारंभ होता है। रावण की मृत्यु और सीता की अग्नि परीक्षा तक चलता है। राम-सीता की जानी मानी कथा होने के बावजूद भी इसके प्रसंगो का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। जिन लोगों ने इस कथा को गाया, उनसे बहुत खोदा-बखेड़ी करते हुए यह जानना चाहा कि राम के पिता कौन थे? मां कौन थी? उन्हें बनवास में क्यों जाना पड़ा? कैकेयी कौन थी तो वे कुछ भी बताने में असमर्थ थे। निश्चय ही बड़े आश्चर्य की बात लगी ? लेकिन बांसवाड़ा के भीलों में हमने श्रवण की कथा का छोटा सा प्रसंग रेकोर्ड किया था। श्रवण कुमार की कथा में दशरथ के श्राप का उल्लेख था। पुनः बांसवाड़ा में श्रवण की पूरा कथा का रेकॉर्डिंग किया। पुनः आश्चर्य ही मिला कि वहां दशरथ की

चर्चा नहीं थी। कथा के विस्तार में नहीं जाना चाहता लेकिन इस तथ्य की ओर अवश्य ध्यान लाना चाहता हूँ कि ऐसी प्रसिद्ध और अखिल भारतीय रूप से प्रचलित कथाओं में आदिवासियों को अपने जीवन-मूल्यों हेतु क्या कहना है ? आपने ऐसे ही प्रसंग को 'मिरग रौ छल' के नाम से प्रस्तुत किया है। इसमें एक छोटी-सी बात आई है कि राम जंगल से फल के लिए गए जो डेढ टीमरू मिले, उन्हें तो खा लिए और सोचा अब मिलेंगे, उन्हें सीता-लक्ष्मण के लिए ले जाऐगे, लेकिन कुछ भी मिला नहीं। कुटिया पर आए तो देखा कि सीता और लक्ष्मण दोनों पूर्ण रूप से नग्नावस्था में सो रहे हैं। सागवान के पत्तों के वस्त्र थे वो उड़ गये। राम को देवर-भाभी के संबंधों पर संदेह हुआ। ऐसे छोटे-छोटे उल्लेखों में गरासिया जीवन के अनेक अनजाने तथ्य छिपे हुए दिखाई देते है। क्या राम की किसी भी कथा में ऐसा उदाहरण मिलेगा ? आपने तो पूरी कथा का छोटा-सा रूप ही दिया। आवश्यक है कि पूरी कथा का संकलन करें और उसका वैज्ञानिक विश्लेषण भी प्रस्तुत करें। इस दिशा में आपने अच्छी पहल की है। आपने अनेक नये प्रसंग उजागर किये है जो रामायण तथा महाभारत से भिन्न है। इस शोध हेतु साधुवाद।

गरासियों एवं भीलों में अंबा माता संबंधी अनेक गेय कथाएं मिलती है। यो प्रत्येक कथा अपने में स्वतंत्र दिखाई देती है, परन्तु उनके तारतम्य को गंभीरता से देखे तो वह एक वृहद गाथा ही सिद्ध होती है। आपने लंबे लंबे गीतो में इन कथाओं को अति सुंदर गूंथा है। अंबा का बडला-हींदवा ढूंढने जाना, समुद्र के तल से उसे प्राप्त करना, उसे पृथ्वी पर लाकर लगाना; बगीचे में भंवरा-दानव का प्रसंग आना, जोगियों के बलि चढाने की बात, बींजूरी कांजरी की पृथक कथा, रावण का हींदवा बडले को काटना, भस्मासुर की कथा हटिया, दानव की बात, कानगूजरी की कथा इत्यादि सब मिलकर एक बड़ी गाथा बन जाती है। इसके उल्लेख आपके गीत संकलन में मिलते हैं। मुझे यह भी आश्चर्य की बात लगती है कि यहां महागाथा की 'नायक' माता है। पुरुष नायक नहीं है। ऐसे सूक्ष्म संकेतों की भाषा को हमे निश्चय ही अर्थत्व देना चाहिए। आपने साहित्य में यह नया अध्याय जोड़ा है, प्रयास सराहनीय है।

भाई अर्जुन जी, यों आपके द्वारा संकलित गीतों को, गेय कथाओं को और उनकी रचनागत स्थितियों का तो कहना ही क्या?, वो तो पाठकों के सामने है ही, मैं उन सभी के परे जो कुछ मुझे दिखाई पडता है - उसके बारे में ही लिखना चाहता हूँ। गरासियों के अनेक गीतों में अंग्रेजी (फिरंगियों) का उल्लेख आया है। आपके एक गीत में आबू पर अंग्रेजों के कब्जे की घटना भी आई हैं। यों सिरोही के इतिहास में आबू पर्वत का किस प्रकार केन्द्रिय सरकार ने अपने कब्जे में लिया, इसका क्रमबद्ध उल्लेख मिल जायेगा। भारत की स्वतंत्रता के बाद राजस्थान के निर्माण के समय भी सरदार पटेल की इच्छआनुसार आबू क्यों गुजरात का भाग बना ? गोकुल भाई भट्ट को क्यों आंदोलन चलाकर उसे

वापस राजस्थान में लेना पड़ा। यह ऐतिहासिक घटनाक्रम पढ़ा जा सकता है। उसी घटना से जुड़ा आबू पर्वत गरासियों के गीतों में क्या रूप ले लेता है ? आबू पर्वत की सीमा के निर्धारण में 'फीता' (नाम के लिए) काम में लिया गया। वो फीता गरासियों के गीतों में भैसे की खाल का माना गया। "सिरोही वाला राजा" मात्र एक गुडिया ही बना रहा- अशक्त-असमर्थ। सत्ता के प्रति गरासियों का यह मानस मनन योग्य है। जिसे आपने उजागर किया। इसी प्रकार मेवाड के राणा सज्जन सिंह द्वारा सज्जनगढ़ के निर्माण में गारासियों-गमेतियों को बेगारी में बुलाया गया। कौनसे-कौनसे बहाने कर के वे अपने आपको शोषण से बचाने का प्रयत्न करते थे ? आदिवासीयों की इस मनोदशा को समझना अनिवार्य है। गरासियों के प्रत्येक गीत में उनके जीवन के तथ्यों एवं अस्मिता के स्पष्ट दर्शन होते हैं। वे भाव गुंफित है।

गरासियों से जिन कथाओं का संग्रह आपकी पुस्तक में हुआ - वे भी अनेक प्रकार से गरासियों की मान्यताओं, विश्वासों एवं जीवन मूल्यों की, किसी न किसी रूप में स्थापना करते हैं। लेकिन सत्य यह भी है कि प्रकाशित २८ कथाओं में संपूर्ण जीवन की प्रतिच्छाया मिलना संभव नहीं है। कुछ भी हो, आपकी इन प्रकाशित कथाओं में पशु कथाओं का बाहुल्य है। कुछ पशु कथाओं में सभी पात्र पशु हैं और कुछ कथाओं में पशु के साथ मनुष्य का उल्लेख भी आया है। इन दोनों प्रकार की कथाओं में शेर या नाहर अवश्य एक पात्र है। नाहर छूटा तो हाथी ने स्थान पाया। शेर, हाथी और मगर, इन तीनों को शक्ति एवं बाहुल्य के कारण अन्य पशुओं से अपने आपको एक पृथक सत्ता के रूप में प्रदर्शित करते है। शेर तो वन का राजा भी माना जाता है। तो क्या राजा और शेर एक दूसरे के पर्याय है? सत्ता, शक्ति और हिंसा के प्रतिरूप। सो इन कथाओं में शेर की क्या स्थिति है? यह आदर्श ही समझा जाना चाहिये कि सभी पशु कथाओं में शेर की शक्ति को छोटे से छोटे अशक्त पशुओं की बुद्धिमानी से पराजित ही सिद्ध किया गया। कभी नेवले ने तो कभी सियार ने। उन्हें अपनी जिन्दगी से हाथ धुलवा दिया। शेर की मांद के मालिक बन गये। हाथी को मार देने के बाद लंबे समय तक उसके मांस से छोटे पशु अपनी क्षुधा मिटाते रहे। 'मगर' किसी भी नेवले के कलेजे के स्वाद से अपनी पत्नी का मनोरंजन नहीं कर पाया। मौत के मुंह तक पहुंच जाने के बाद भी नेवले ने मगर को मूर्ख सिद्ध कर दिया। पशु कथाओं का यह दर्शन केवल गरासियों की कथाओं में ही नहीं है अपितु विश्व की सभी लोक कथाओं की निरपवाद अभिप्राय है। इस पर आपने अच्छा प्रकाश डाला है। जिन पशु कथाओं में गरासिया या किसी मनुष्य का पात्रत्व है तो वहां भी मनुष्य पशु पात्र के माध्यम से ही शेर को परास्त करता है या मार देता है। मुझे यह बात भी समझने में देर लगेगी कि 'नेवले' को यहां मुख्यतः मिलने के पीछे क्या कारण हो सकते है? नेवले को अपने सामान्य जीवन में गरासिया किस प्रकार

ग्रहण करते है ? लोमड़ी एवं नेवले के अंतरंग रिश्ते के बारे में भी आपने एक वाक्य में बहुत कुछ कह दिया है।

गरासियों कि लोक कथाओं में राजारानी के चरित्र भी आये हैं। ये कैसे राजा-रानी है? इनेक पास न राजमहल है, न दरबारी है, न शान-शौकत है - साधारण मनुष्य के जैसे ही प्राणी है। भूख-प्यास उन्हे सताती है, धूप-छांव में पसीना-आराम मिलता है, क्या खाने के लिए नौकरी करनी पडती है। केवल राजा-रानी के संबोधन मात्र से सामन्ती ढांचा नही होता। राजा-रानी, राजकुमार-राजकुमारी, मंत्री-दरबारी भी जब कथा में आ जाते है तो कहीं देश-निकाला, कहीं आधा राज्य और राजकुमारी को दे देने की शर्त आ जाती है, वहां हाथी द्वारा अभागे से व्यक्ति का वरण संभव बन जाता है। लोक कथाओं में इतिहास के राजा-रानी नहीं है - वे केवल काल्पनिक एवं अमूर्त संसार के सामान्य सदस्य हैं। कभी दंभी, अत्याचारी , एवं शोधक के रूप में भी राजा आता है तो इन कथाओं में शेर की भांति अपनी निपट मूर्खता का प्रतीक बन जाता है। लोक कथाओं के ऐसे पात्रत्व की परिकल्पना को ठीक-ठीक विश्लेषित करने की आवश्यकता महसूस होती है। ऐसे कथानकों के प्रेषणीय संदेश भी वास्तविक ऐतिहासिक राजा-रानियों के प्रति एक छद्‌भ प्रतिक्रिया या रोष स्वीकृति का संदेश भी प्राप्त होता है।

जो कथाएं गरासियों की चतुराई व्यक्त करती है, उसमें भी सामान्य व्यक्ति की बुद्धिमानी अथवा परिस्थितियों की उलझनों में रास्ता निकाल लेने का तथ्य उजागर होता है। पुनः ऐसी कथाएं साधरणतया औसत व्यक्ति को महिमा मंडित किया जाता है। ऐसी कथाएं हमेशा विश्वजनीय होती है। आपने इन कथाओं पर भी बल दिया है।

आपकी संकलित कथाओं में राम की कथा से सीता के वनवास का एक अंश मिलता है। लव-कुश के जन्म के कथांश में बंदरी के मातृत्व से सीता को दुविधा का सामना करना पडता है। उसके पुत्र पालने से गायब है और साधु द्वारा नव-सृजित पुत्र का पालन-पोषण सीता को करना पडता है। इसी प्रकार लाख के घर में पांडवों की बात आई है - ये दोनों कथाएं पूरी नहीं है। इन कथाओं का पूर्ण गरासिया रूप एवं उसके विभिन्न स्वरूप मिले तो उन पर विचार संभव हो सकता है। चौबीस रसिया की कथा बगड़ावत अथवा देवनारायण महाकथा का एक प्रकारान्तर है।

'अकाल की कहानी' गरासियों या राजस्थान के आदिवासियों की एक प्रमुख कथा है। वर्षा को बांध देना, भयंकर अकाल पड़ना, देवी का बनिये के घर की घट्टी के पुड़ को उठाकर बादलो को मुक्त करना, वर्षा होना, भैसे की बलि चढ़ाना, उसके रहम से *सार्वभौमिक पानी का रक्त से लाल हो जाना। यह अत्यंत* महत्त्वपूर्ण संदेशात्मक कथा है।

इसी कथा का गेय रूप हमने ब्यावर के भीलों से गेय रूप में सुना था, दूसरी बार उदयपुर के निकट गोगूंदा गांव के भीलों से सुना और एक अन्य आदिवासी कथा संग्रह में बांसवाडा से यह कथा प्रकाशित हुई। इस कथानक का भौगोलिक विस्तार एक विशिष्ट आदिवासी जीवन स्थिति को प्रकट करता है। लोक कथाओं के अध्ययन में हमेशा इस तथ्य को ध्यान में रखना होगा कि उनका ऐतिहासिक (काल संबंधी) एवं भौगोलिक क्षेत्रों (देश संबंधी) की वस्तुस्थिति कौनसी बनती हैं। यह सही है कि आपने इन सभी कथाओं को गरासियों से सुनी लेकिन आपको यह भी मालूम है कि यही काथाएं सभी आदिवासी समाजों में, सभी देशों में, अखिल विश्व में किसी न किसी रूप में प्रचलित है। यह विशाल सार्वजनिक साहित्यिक संपदा है। तो वाणी के माध्यम से जीवित है। ये कथाएं पुरातत्व के मूर्त या स्थूल अवशेष नहीं है अपितु जीवन्त अनुभवों के पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आने वाले, मनुष्य के कंठ में विराजित तथ्य है। ऐतिहासिक शिलालेख, पत्रावलिया, किले, गढ़, दुर्ग, मंदिर, पुरातात्विक खनन (हडप्पा, कालीबंगा, पीलीबंगा, मोहनजोदड़ो) में प्राप्त वस्तुए स्थूल सत्य को प्रस्थापित करते है, वो निर्जीव हैं, स्पष्ट हैं, दर्शनीय हैं, इन्द्रिय गोचर हैं, निश्चित एवं ठोस हैं और इन्ही स्थूल तथ्यों ने हमें विरासत के नाम पर आक्रांत कर रखा है। इसके विपरीत एक विचारों की, सोच की, दर्शन की, जान की, बुद्धि की सूक्ष्म स्थिति हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी से समृद्ध होते हुए हमें जीवन्त, अस्पर्शय, अदीठ, इन्द्रियों की सीमा से परे अनिश्चित एवं अमूर्त है। लोक साहित्य, लोकजीवन, लोक के प्रमुख तत्व है जो लिखित से भी कहीं अधिक प्रमाणिक एवं निर्णायक स्थिति में रहते है। परिवर्तनशीलता में ही इस परम्परा की गहरी जडें हमें मिलती है। इस अमूर्त परंपरा को 'भूलना' आता है जो कुछ जीवन में त्यागने योग्य है, उसे उखाड फेंकना इसका प्रमुख धर्म है। इसके बाद जो भी शेष बचता है वो विश्वजनीन है, सार्वभौमिक है, सर्वमानवाद की प्रस्थापना है।

भाई अर्जुन सिंह जी ! मैं अपनी भूमिका का यहीं अंत कर सकता हूँ। किन्तु आपकी पुस्तक में गीत एवं कथाओं के बाद भी आपने लगभग दस अन्य विषयों पर कार्य किया है। ओखाणा (कहावत) और कोआनी (पहेली) भाषा पर आधारित अभिव्यक्तिया है। सामान्यतया गीतों एवं कथाओं पर मैने जो विचार प्रकट किए हैं उनको सांगोपांग रूप से इन विधाओं पर भी आरोपित किया जा सकता है। पहली बात तो मैं यह कहना चाहूंगा कि भाषा की संरचना के दृष्टि से कहावत एवं पहेली एक विधा के दो रूप हैं । बहुत-सी बार पहेली का स्वरूप ज्यों का त्यौं कहावत में मिल जाता है और अनेक बार कहावतों के विश्लेषण में अथवा अर्थग्रहण करने में पहेली जैसे सुझाव का सहारा लेना पड़ता है। यह भी बात महत्वपूर्ण है कि पहेली एक भाषात्मक खेल के रूप में प्रयुक्त होती है जबकि

कहावत अपने तिल रूप में मानवीय भावों को, अनुभवो को, क्रिया कलापो एवं अर्थ के उद्देश्यपरक संवाद का सापेक्ष प्रसंग की पुष्टभूमि में अस्तित्व रखती है। यो तो कहावत एक संपूर्ण उक्ति है, वाक्य या वाक्यों का एक समूह है, उसमें एक से अधिक शब्दों का प्रयोग होता है किन्तु जहां तक उसके अर्थ -ग्रहण की प्रक्रिया का प्रश्न है - वो मात्र शब्द और अर्थ की अनुरंजना पर आधारित है। एक ही कहावत का प्रयोग और अर्थ ग्रहण की स्थिति, उसके प्रसंग पर आधारित है। आपने कुछ कहावतों को त्रिया-चरित्र में भी वर्गीकृत किया। एक कहावतः 'मछली अर लुगाई री ऊंधी मत, ऊंधे पाणी चढ़ै' (मछली एवं नारी की उल्टी बुद्धि, उल्टे पानी चढ़ती है) इस कहावत का प्रयोग नारी के चरित्र के बखान हेतु नहीं किया जायेगा अपितु उस प्रत्येक कार्य के लिए किया जायेगा, जो कभी भी सही निर्णय लेने की क्षमता नहीं रखता। यह पुरुष या स्त्री, किसी के व्यवहार की स्थिति मे प्रयुक्त की जा सकती है। प्रसंग ऐसा ही होगा तो कहावत अर्थवान बनकर खिल जायेगी। इसका व्यंगार्थ उल्टी बुद्धि और उल्टे पानी में निहित है जो मछली के एक प्राकृतिक व्यवहार पर आधारित है। ऐसा व्यवहार किसी का हो सकता है। इसीलिए आधुनिक कहावत के विद्वानों ने अर्थ संकेतों हेतु उसके प्रसंग को प्रमुख ही माना। शब्द जिस प्रकार अपने प्रसंग के आधार पर लक्ष्यार्थ या व्यंगार्थ के कारण विभिन्न अर्थो को सृजित कर सकता है -ठीक वही प्रवृति कहावतों की होती है। पानी का अभिधार्थ तो स्पष्ट है लेकिन जब वाक्य कहे कि 'उसका पानी उतर गया' या 'उसमें पानी है ही नहीं' या मोती की पहचान उसके पानी से होती है तो क्या सभी जगह अभिधार्थ काम में लिया जा सकता है? मैं केवल एक संकेत भर देना चाहता हूँ, इस भूमिका के माध्यम से कि मैं आपके सहारे पाठकों के मन में कुछ जिज्ञासाओं को जागृत करना चाहता हूँ। शायद यह भी कहना चाहता हूं कि गरासिये चूंकि प्री-लिटरेट (अनपढ़-अज्ञानी नहीं) है, उनकी अभिव्यक्तियों में कहावतें संख्यातीत है। ज्यौं-ज्यौं मनुष्य पढ़ा लिखा साक्षर होने लगता है, उसके जीवन की भाषायी अभिव्यक्ति में बहुत कम कहावतें शेष रह जाती है। पहेली तो मात्र बच्चों तक सीमित हो जाती है।

गरासिया शकुन को 'हिमेन' कहते है। हीमेन की व्युत्पत्ति का अन्दाज नहीं लगा पा रहा हूँ। आपने ४५ शकुनों का उल्लेख किया है। इसमें एक तिहाई (१५) पक्षियों के व्यवहार संबंधी है एवं आठ पशुओं से संबंधी है एवं पांच कीट परिवार से है, एक शकुन जलचर (कछुवे) से संबंधी है। एक सरीसृप वर्ग से सांप भी है। शकुनों के माध्यम से भले-बुरे की आशंका का चित्रण हुआ है। यह अमूर्त विश्वासों का तर्क-वितर्क है। निश्चय ही आदिवासियों के क्रियाकलापों पर उनका प्रभाव देखा जा सकता है। लेकिन मैं इन शकुनों के माध्यम से

आदिवासियों के उन सत्यों तक पहुंचने को प्रयत्न करना चहूंगा, जो लीलाओं को समझने का प्रयत्न करते है। आपने जिन पक्षीयों का उल्लेख किया-निश्चय ही उन पक्षियों की पक्की पहिचान गरासियों को है। ये पक्षी है - डुस्की, भैरवी (खो खो), सिवंटी, खाती, कागला-कागली (कौआ) बेवालियन (शायद गरासिया नाम नहीं), मुरगी, हालू, काळचिड़ी, मोरियौ, टीटोडी, गुतेरण्या (गूंथने वाली) तीतर एवं सूवटियौ। यदि गरासियों से ४५ के बजाय ४५० शकुन इकट्ठे होंगे तो पक्षियों की संख्या ही नहीं बढ़ेगी अपितु इनके विभिन्न व्यवहारों, रंगों, परों, आंखो इत्यादि के अनेक गुणों का भी वर्णन मिल जायेगा। कीटो में गोबर रौ कीडौ। जो अनेक प्रकार के होते है। मकडी, माखी, माछर व किसारी के उल्लेख आए है। पशुओं में सियार, लूंकी (लोमडी), बळद, बकरी, गधा, कुत्ता, घेटा-टेटा (मैंढा-भेड) एवं गाय के नाम आए है। इनमें दो वनचर है एवं शेष घरेलू/पालतू है। यदि शकुनों की व्याख्या को ऐसे आधार पर समझने का उपक्रम होगा तो आदिवासियों की पर्यावरण के प्रति अनेक मान्यताओं का खुलासा भी होगा और अंध-विश्वास की श्रेणी से निकलकर स्थानीय ज्ञान की सीमा में आ जायेंगे।

जंतर-मंतर भी एक विकट विषय है। कुछ मानवीय भले के लिए हैं तो बहुत कुछ 'बुरे' की कोटि में आते है। यो यंत्र एवं मंत्र में भेद है। यंत्र में चित्रात्मक आकृतियां होती है एवं मंत्र में शब्दों का महत्त्व है। लेकिन दोनों ही प्रकार के जंतर-मंतर को साधने की प्रक्रियाओं का उल्लेख आपने किया है। दोनों ही स्थितियों में विशिष्ट आदिवासी अदृश्य शक्तियों को प्राप्त करने की कोशिश करते है। जिनके माध्यम से अपने समाज में विशिष्ट स्थान भी प्राप्त करते हैं। आदिवासियों के पारस्परिक मनमुटाव, कुछ जबरदस्ती प्राप्त करने की आंकाक्षा, प्रतिशोध की भावना एवं किसी को अपने 'वश' (वशीकरण) करने की इच्छाओ के मूल में जंतर-मंतर का बीज छुपा है। ऐसी शक्तियों के प्रमुख प्रतीक महावीर हनुमान एवं भैरव है। महावीर हनुमान, दोस हनुमान से भिन्न है जो ५२ वीरों (बुर के प्रतीक) के गणनायक है। भैरव के भी दो रूप है - काला और गोरा। काले भैरुं के मांस-मदिरा (पंच सकार) का चढ़ावा होता है जबकि गोरा का चढ़ावा मिष्टान है। दोनों तांत्रिक शक्तियों के केन्द्र को इस दिशा की तरफ ले जाने का प्रयत्न करना चाहिए।

गरासियों के नृत्य, गीतों की भांति हमेशा सामूहिक होते है। पुरुष-स्त्री द्वारा मिलकर किए गए नृत्य, केवल पुरुषों के नृत्य अथवा केवल स्त्रियों के नृत्य अपने अपने रूप में विभिन्नता को प्रकट करते हैं। इन नृत्यों के साथ अनिवार्य रूप से ढ़ोल या मादल, थाळी आदि होती है। लेकिन कुछ नृत्यों के साथ बांसरी एवं सुरणाई का वादन भी होता है। आपने गरासियों के लोकवाद्यों के बनाने वालों नाम-पते भी दिए है -यों यह विषय एक

पूर्ण पुस्तक का आधार बन सकता है। वाद्यों के नाम और उनकी पक्की पहिचान हेतु काफी शोध की आवश्यकता है। किसी तीसरे व्यक्ति के वर्णन के आधार पर वाद्यों पर लेखन अनेक भ्रमों को उत्पन्न करता है। वद्यों के सही उल्लेख हेतु अनेक प्रसंगात्मक स्वरूप को समझना भी अनिवार्य है। राजस्थान के आदिवासियों द्वारा एक अंबनद्ध वाद्य 'ढाक' अवश्य होता है। यों ये एक लय वाद्य है किन्तु इसका वादन मुख्य रूप से दैनिक गेय गाथाओं अथवा पूर्वजों के संबंधी गीतों में ही होता है। विवाह या जन्म संबधी संस्कार गीतों एवं गेय गाथाओं के साथ इन्हें बजाया जाता है किन्तु मृत्यु संस्कारों के साथ यह जुङ जाता है। भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र में धन, अवनद्ध (लय के वाद्य) सुषिर एवं तंत (स्वर वाद्य) नाम से चार वर्ग प्रस्थआपित किए। आदिवासियों में ये चारों प्रमुख प्रकार और उनके उप-उपकार सभी मिल जाते है अर्थात आदिवासियों का संगीत संसार एक उन्नत स्थिति का परिचायक है। साथ ही साथ स्थानीय प्रकृति के सहज ही प्राप्त वस्तुओं, वृक्षों, चिकनी मिट्टी, लौह एवं मिश्रित धातुओं का प्रयोग भी चौकाने वाला है। वाद्यों के विश्वजनीय विभिन्नता को समझने के लिए आदिवासी वाद्य कितने चुनौती पूर्ण सांगीतिक प्रश्न उत्पन्न करते हैं ?

मांडना एवं गोदना हमें चित्रकला की अनूभूतियों की ओर ले जाता है? मांडने बनाने की प्रक्रिया में महिलाओं की विशिष्ट अभिव्यक्तियों को समझने का मौका मिलता है। अवसर की अनूकूलता के साथ जो मांडने (आंगन या दिवार पर) उकेरे जाते है, उनकी अपनी एक भाषा होती है जिसे समाज एक प्रेषणीय संवेदन के साथ सामाजिक अर्थत्व प्रदान करता है। मांडने उकेरना मातृभाषा के समान है जिसे सीखने की प्रक्रिया से नहीं गुजरना पड़ता। एक शिशु, अपने तीन-चार वर्ष की आयु में भाषा का सही उपयोग करने वाला बन जाता है, अपनी बात कह सकता है - दूसरों द्वारा कही हुई बात को ग्रहण कर सकता है - ठीक उसी प्रकार मांडने के अर्थो को समझा जा सकता है। मांडने वस्तुतः एक ज्योमितिक संरचना है, सीधी रेखा, टेढ़ी रेखा, समांत रेखा, त्रिकोण, वर्ग, चतुर्भुज, गोलाकार एवं अर्ध गोलाकार रेखाओं का अंकन है। यह प्रक्रिया विशिष्ट फॉरमूला पर आधृतव है जिसे प्रत्येक महिला सहज ही अंकित कर सकती है। यह सरलता एवं सहजता नहीं होती तो मांडने भी सामान्य महिलाओं की अभिव्यक्ति नहीं बन सकती थी। इसके विपरीत गोदने का चित्रांकन दूसरा जानकर व्यक्ति करता है। वो विशिष्ट प्रतिको के सहारे मानवीय रक्षा-सुरक्षा या मान्यताओं को प्रकट करता है। बिच्छू-सर्प की आकृति मनुष्य को अनके जहर से मुक्ति दिलाना मानते हैं। आदिवासी समाज में अपने प्रियजनों के नाम गुदवाने की प्रथा भी है। मित्र, भाई, पति, बहिन इत्यादि के नाम गुदवाए जाते है, उनकी सुरक्षा हेतु और अपने स्नेह को व्यक्त करने के लिए। इन प्रतीकों को भी सामाजिक एवं

विश्वासों की पृष्ठभूमि में समझना अनिवार्य है। जंतर-मंतर और तंतर का भी हमें यहां एक वर्चस्व प्राप्त होगा दूसरी ओर आभूषण या सुन्दरता हेतु भी इनका प्रयोग मिलता है। आपने अच्छे उदाहरण दिए है - लेकिन वे संकेत नागरी सभ्यता संबंधित है - विशेषकर मांडनों के वर्णन में।

जड़ी-बूटी शब्दों का विमुक्त प्रयोग हमें मिलता है। आयुर्वेद एवं स्वास्थ्य हेतु रोग निदान के क्षेत्र में आयुर्वेद तो एक दार्शनिक एवं तात्विक चिकित्सा पद्धति है लेकिन उससे कहीं अधिक लोक चिकित्सा संबंधी सामग्री इनमें मौजुद है जो अनुभवों के माध्यम से समाज में प्रचलित है। जड़ी-बूटी संबंधी चर्चा आती है। जड़ी-बूटी वस्तुतः वनस्पति के क्षेत्र में जड़ तथा फूल पत्तों से जुड़ी मान्यता है। यों संस्कृत साहित्य में (निघंटु) में वनस्पति केवल उन पेड़ पौधो को कहा गया है जो प्रति वर्ष फल-फूल प्रदान करते है। औषधि उनको कहा गया जो बोये जाये या स्वयं उगे और फल देने के बाद समाप्त हो जाय। जैसे गेहूं, बाजरा इत्यादि। मुझे बहुत खुशी है कि आपने इस विषय पर विपुल एवं अद्भुत सामग्री संकलित की है। आदिवासियों के रोग-निदान या रोग सह सकने की प्रक्रियाओं में इनका अद्भुत योगदान है और निश्चय ही ये निदान आयुर्वेद की सीमाओं से बाहर हैं। स्थानीय वनस्पति एवं औषधि के उपयोग की एक सार्थक सूचि है। बस हमारी कमजोरी यही है कि आंख बंद करके इन्हें सौ रोगों की एक दवा मानकर सेवन करने लग जाते है।

अपने पारंपरिक माप-तोल पर एक संक्षिप्त आलेख तैयार किया। इसे ठोस पदार्थ, द्रव्य या पानी एवं लंबाई के विषय में लिखा। पहली बात जो महत्वपूर्ण वो है कि चार संख्या ४,८,१२,१६ के रूप में विकसित होने वाला स्वरूप। यह दशमलव पद्धति का गणना विधान नहीं है। आपको अच्छी तरह वो समय याद होगा जब रूपये के सोलह आने होते थे। एक आने में चार पैसे होते थे। परिवर्तन में दशमलव पद्धति पर हम अपनी मुद्रा को ले आये। चार का एक वर्ग बनाने पर हमें १० या जीरो के स्थापना की जरूरत नहीं होती जबकि अब दशमलव यही 'जीरो' अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य बन जाता है। किलो, लीटर, किलोमीटर इत्यादि भी दशमलव पद्धति से परिवर्तित हुए। सेर व मील की धारणा का हमें छोड़ना पड़ा। गणना पद्धति का यह चक्र गणित की व्यवस्था में आन्दोलनकारी एवं क्रांतिकारी परिवर्तन की भूमिका निभाता है। गांवों मे आज भी चार से विभाजित एवं गुणित संख्याओं का महत्व बना हुआ है। लेकिन एक बात स्पष्ट है कि जिन तोलो की आपने बात की है, वे अनुमानित हैं - कम-ज्यादा होना उनकी सवाभाविक प्रवृत्ति है। लेकिन अनुमानित आंकड़ों का यह संसार हमे 'अनुपात' जैसी स्थिति की ओर ले जाता है जो स्टेंडर्ड तोल की भांति नहीं होता। ठोस व अधिक मात्रा का माप एक

बात है लेकिन सुनार जब इसी प्रकार के वजन की बात करता है तो सूक्ष्म मात्राओं का अधिक्य हो जाता है।

माप की बात भी उलझनपूर्ण है। वहां 'चार' की संख्या का उतना महत्व नहीं दिखाई देता। लेकिन ये नाप कपड़े पर, चमड़े पर, मिट्टी के बर्तन पर, वाद्यों की रचना पर, जूतों पर, आभूषण पर और न जाने कितने मानवीय कार्य व्यापारों पर लागू होते है। बीधा, एकड़, बिस्वा, विस्वांस भूमि के नाप हैं। इस प्रकार देखे तो 'नाप' की अवधारणा के बिना मनुष्य का जीवन भी संभव नहीं लगता। लेकिन शरीर के विभिन्न अंगो से नाम की अवधारणा स्पष्ट करती है कि इंच, फुट, गज या मिलीमीटर, सेंटीमीटर जैसे वो स्टेंडर्ड या टकसाली रूप के लिए नहीं है। प्रत्येक मनुष्य अंगुलियों का नाप पृथक होगा, बिलांत भी टकसाली नाम नहीं होगा। लेकिन मैं यदि कारीगर हूं तो मेरी अंगुलियों का नाप ही काम में आयेगा। आज भी देशी खाती, लुहार, कुम्हार, सिलावट ऐसे ही शारीरिक नापों से कार्य करते हैं। पुनः महत्व की बात यह है कि जब कार्य की पूरी रचना हो जाती है तो अनुमान की प्रणाली ही उसे सफल बनाती है। हमने लोक वाद्यों बनाने की विधि में देखा कि सभी नाप अंगुलियों, बेंत, बिलात पर लिए गये। पुराने बने बाद्यों को जब इंच, सेंटीमीटर से नापा तो कोई भी दो वाद्य एक ही नाप के नहीं मिले। इन समस्याओं पर गहरे विचार एवं गणितीय अमूर्त विद्या को समझना होगा। वेद में उल्लेख आया है कि प्रत्येक स्त्री-पुरुष की लंबाई 'सप्तविस्तता' है अर्थात सात बिलांत है। हम जानते हैं कि इंच-सेंटीमीटर इसे प्रमाणित नहीं कर सकेंगे। इस रास्ते पर चलने पर हम अपनी मानवीय अस्मिता को कभी नहीं समझ पायेंगे। शेखावत नै यह बहुत बड़ा काम किया है। इस क्षेत्र में पहल करके नई दिशा दी है। नया अध्याय खोला है।

भाई अर्जुन जी ! आपकी तीस साल की साधना का यह फल सराहनीय है, बधाई। अब मुझे अपनी कहानी को समाप्त करनी होगी। मेरा प्रयत्न यही रहा कि आपके द्वारा विवेचित विषयों से उत्पन्न समस्याओं को कुछ अलग से लिखूं जिससे आदिवासी समाज पर अध्ययन करने वाले विद्वानों के प्रयत्न नई नई दिशाओं और क्षितिजों की तरफ टकटकी लगाकर देखे। शेष आपके संपूर्ण स्नेह के साथ। आपका यह काम साहित्य जगत में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा।

आपका हितैषी

कोमल कोठारी

भूला जठा सूं गिणौ

मारग बंध्या है सा? मारग ई अणदेख्या, अणबोल्या, उबड़-खाबड़ मगरा अर वन मांयला। जठै आज तांई कोई पूगो इज कोनी। तो पधारो मारे साथै, ले चालू उणारै हिवड़ै री हाट। अंतस री अळिया-गळियां घुमाय लाऊं, दिखाय लाउं चमक चान्नणी करनै। कराऊं नवी औळखाण। आप अपणायत जताय नै वीं रतन रा जतन करो। अंधारै सूतांनै जगावा अर सै चन्नण चांन्नणै लावा। आपनै वे उडीके है पीढिया सूं। औ तौ माखण रौ घी करणौ है। जाणै जकौ तांणै अर फिरै जकौ चरै नै बाधौ भूखौ मरे। पड्यौ-पड्यौ सीगडों ई जड़ा मेले अर हियै व्है जको होंठै आवै। औ गुड़ तो अंधारे ई मीठो लागै। आ ढीकरी घड़ो फोड़ सकै। अबै पूठीयो गमाय नै पो'रो देणौ है पण भूला जठा सूं ई गिणौ। जागा जरै ई परभात समझौ।

आवौरा मारे लारे । पगोतिये-पगोतिये भूंड़ड़ा मा उतारूं पछै नाळ चढाऊं ऊंची, पछै अतीत रा झरौखा सूं झांकौ तो मानवी रौ मूळ निगै आवैला। पाछल फोर जोवौ तो लारे रीयोड़ा वडेरा दीसै। मांयली वात हाथै लागै। दरपण मा झांको अर देखो कै औ आप इज तो नीं हो ? इणारी घसक ई दीसै के औ इज है 'धरती रा मोबी पूत'। आप इणांनै भींगार अर अटाळौ समझनै अंधारी औरकी मांय न्हाख दिया। पण गाबा में सैं नागा। औ वासग नाग पताळा पूगां जरै चन्नण गोह रे टींका निकळ्या। तो आवो लो सुणौ इयांरी पीड़ री बातां, घोड़ानै कांई घर आगो। देखो तो सही इणांरी तीन लोक सूं मथारी ई न्यारी। मोडिया री मरोड़ तौ देखौ। दिल्ली फकीरा जोग अहम्मै व्ही। भैंस भादरवो चितारे तो अेक दिन नीं जीवै पण तोई औ लोग हाल जीवै।

आदिवासी (आदूवासी) सगळा सिंसार मांये छड़िया-बिछड़ियाँ बस्यौड़ा मिळै। औ मुलक रा मूळ वासीन्दा है। औ धरती रा मूळ 'भूमि पुत्र' है। इण झूलड़ां मांये जूनी आदिम जात्यां आवै। औ सकस मुलक री मुख्य धारोळां सूं टळिया-टळिया रीया। इण वजे सूं उन्नति रौ मारग कोनी अगेड़ सकिया, अर इण वास्तै 'प्रगति री दौड़' में सैं सूं लारै रेग्या। अंडमान निकोबार में तो आज ई औ लोग साव नागा-मूंगा रैवै अर आज सूं सौकड़ू बरस पै'ला रीं सभ्यता (असभ्यता) रौ जीवन जीवै। सिंसार रा न्यारा-न्यारा देसां मांय इणां रा भांत-भांत रा नांव धरीज्या। आथूणा मुलकां मांये इणानै 'जिप्सी' कैवे तो नवा पनपता देसां मांय जनजाति, आदिवासी, वनवासी कै भाखरवासी कैवे। रामजी नै तो चवदा बरस रौ वनवास मिळियौ हो

पण इण लोगां नै जीवन भर रौ इज नीं पीढियां सूं नै हजारां बरसां सूं अै वनवास भोग रया है। मुलका री आदू अर जूनां जुगां री संस्क्रिति री औळखाण करावै।

आदिवासीयां रौ अरथ वीं लोगां सूं है जकौ सभ्यता री दौड़ में लारै रीया अर आपरा 'प्रारंभिक स्वरूप' नै कोनी छोड सकिया। विग्यान री वदोतरी सूं तो इयां आदिवास्यिां रौ कोई लैणौ दैणौ इज कोनी। इंणांनै आंपां आपरा वडेरा रै रूप में देख सका। इणा दरेक देस री जूनी अर जुगां जूनी संस्क्रिति नै आज तांई जीवती राखी। भारत मांये १९ % भाग में आदिवासी बसे। सैंग आबादी रौ ८ %आदिवासी है, जकौ सिक्सा अर सभ्यता सूं कटियौड़ा है अर अंधविस्वास रा अंधारा में जीवै। संविधान अर कानून री गळियों सूं इयांरौ कीं तलोबलौ कोनी।

सगळा सूं बता जनजाति रा लोगबाग अफ्रीका मांयै बसै। अर दूजी ठौड़ भारत नै मिळै। सन् १८९१ री मर्दुमसुमारी रै मुजब ६.७८ किरोड़ आदिवासी भारत में हा, जकौ देस री सैपूची जनसंख्या री आठ टका सैकडू निकळै।

राजस्थान मांयै पचपन लाख मंजे १२.४४ सैकडू आदिवासी है, जिणनै भारत सरकार बारा जात्यां मांय बांट्यां है। इणांरी आपरी भासा, सभ्यता अर संस्क्रिति है। सगळी आदिवासीयाँ री संस्क्रितियों मांयै थोडो घणौ फरक व्हैता थका मूळ में अेक इज है। इणनैं घणी कैवटनै, अवेरनै, रकेळनै राखण रा जतन करणा पड़सी।

रामायण अर मा'भारत मांयै इणांरा अलेखू दांखला लाधै। बाल्मीकी भील रै दूध रा हा जकौ रतनाकर भील सूं आदूकावि तांई पूगा। राम-काव्य रा पेलपोत रा लिखारा अै इज हा। इणांनै धर पेलड़ा 'राष्ट्र कविसर' मानणा चाईजें। 'सबरी भीलड़ी' रा अेटवाड़ा बोर रामजी घणा मोद सूं अरोग्या। अेकलब्या री गुरू भगति सरावण जोग। अैड़ो दस्टांत इतियास मांयै जोयो ई नीं लाधै। राणा परताप नै 'हल्दीघाटी' आद जुद्धां मांयै आदिवासी भील अर गरासियाँ इज आडा आया। वे भागा रा भीड़ू अर आंधी रा बेवला बण्या रया। आजादी खातर मर मिटवानै सदीव त्यार रैवता। राजस्थान मांयै पांच आदिवासी - भील, मैणा, डामोर गरासिया अर कोटा में सहरिया ई है।

लोक साहित रै इतियास रौ ई आदू जुगां सूं इज सीगणेस व्हियो। जद सूं मिनखां रै होठा मांयै भासा जळमी - जागी जद सूं वो मन में इज गुणगुणावा लागो। टूटी-फूटी अधूरी आंकड़ियां मांयै गीतड़ा री ओळ्यां उघेरतौ व्हेला। 'संवेगां' नै सबदां मांयै पिरोवा लागो व्हेला - सुख, दुःख, किरोध, खुसी, रंजिस नै बोली मांयै परगट करवा लागो व्हेला। कविसर सुमित्रानंदन पंत री हेटे मंडयोड़ी कविता री आंकड़ियां अठै बिरोबर नै फिरोफिट बीडीजे :-

वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।
उमड़ कर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान।।

आदूकाल मांयै नी इत्तरी सिक्सा ही, नीं साहित लिखण रा साधन अर नीं छापाखाना हा। इण वास्तै 'विद्या कंठै नै नाणां अंटै' कैवीजता, मुतलब विद्या कंठै करनै मुख जबानी याद राखनै पीढी दर पीढी आगे सूं आगे संभळावता रैवता। इणमें नवी पीढी री नवी बातां ई भैळी भिळती जाती। औ इज लोक साहित बणग्यौ। लोकगीत, वार्तावां, लोककथावां अर औखाणां आद इण इज खाते खतीज्या। गरासियां रौ लोक साहित ई इण इज भांत रूखाळिज्यौ अर अवेरीज्यौ। इयांरा लोकगीतां मांयै गरासियां रा रीति-रीवाज, परंपरावां, इतियास आद रा जूना लेखा लाधै। गरासियां रै सामाजिक मोल अर महात्तम में अणसूं वदोतरी व्ही, जिणसूं इयांरौ 'आध्यात्मिक' अर 'प्राकृतिक' विस्वास री निराळी नखाली पिछाण व्ही, जकौ अेक व्यवस्थित जीवन पद्धति री 'गोपनीयता' राखै।

मानवी रौ मन घणौ अचपळौ नै अनोखो। आपरा भाव परगट करण खातर तरै तरै रा तरैदार तूमार वापरिया-माडणां, चितरांम, मूरतकला, संगीत कळा अर साहित सिरजण आद इणरौ इज पुन्न परताप। सबद ई अेक जरीयौ। सबद री 'अभिव्यक्ति' सूं गीत, कथा आद रौ जळम व्है, सिरजण व्है। मानवी रै हिया रै हब्बोळां साथै भाव उपजै; वे गीत, गाथा, कथा आद रै सांचा अर खाचां में उडेलीजै अर ढाळीजै। प्रेम, घिराणी, किरोध, विवसता, हेज, भगति, भरोसो, सरधा, सुख, दुःख, चिन्तन, मनन, मंथण, अर दरसन आद सूं लोक सहित परगटियौ।

मिनख कनै जद भासा नीं ही, सबद रौ जळम कोनी व्हियो हौ, वीं बखत ई आपरा भाव किण ई नै किण ई रै जरियै सूं परगट करतो इज हौ। आज तो सबद बगर 'अभिव्यक्ति' री बात सोच ई कोनी सका। 'लिपि' री सोध तो घणा लारा सूं व्ही। इणरै पै'ली मुख जबानी कैवणौ, सुणणौ अर याददास्त रौ इज आधार हौ। आपणां 'श्रुति', 'स्मृति', 'उपनिषद' आद इण इज परंपरा री कड़ियां है।

लोकजीवण में औ धारौ लोकगीत, लोककथावां, वार्तावां अर लोकोक्तियां में निगै आवै। आज ई इस्या इलाका अर हलका है जठै बठारा लोग लिपि कै भासा सूं अणजाण हैं तो पण भावां री 'अभिव्यक्ति' आपरै ढंग सूं करै। गीतां रौ असर मानखां पर ऊँडो व्है।

लोकगीत मंजे वे गीत ज्यांनै लोक रच्या, जिणमें माटी री सुगंध अर सौरभ व्है। सुणणीया रै हिवड़ै सागै वै इज भाव जगावै, वीं इज रस रौ सुवाद करावै। गरासिया राजस्थान री आदिम जातियां माऊं अेक, जकौ आपरै निरोगा तन-मन, निरभै वृत्ति, सेवाभाव अर झुंजारू तेवर सारू जग चावा, अै आडावळां रा मोबी सपूत। गरासिया जात रै जूना इतियास अर पैदाइस रौ लेखो नीं लाधै। 'दांत कथावां' मुजब गरासिया सबद ही

पैदाइस संस्कृत रै गृह+ऋषि = गृहषि सबद सूं हुई बतावै, जिणरौ 'अपभ्रंश' आज ग्रासिया, गरासिया अर गराइया आद बणीया। रिखिसर भाखरां अर वन में तपसा तापता, इणांरी सेवा अर रिक्छा रै वास्ते कीं 'क्षत्रिय' लोग जंगळ में गृह (घर) बणाय नै रैवता जिणानै 'गृहऋषि' कैवता, इणारी आल औलाद (ओद) गरासिया कैवीजी। कर्नल टॉड रै मत मुजब गरासिया सबद 'गवास' सूं बण्यौ। अै राजपूतां सूं निकळ्या अर आपरै जाति सूं नीचा गिर ग्या, इण वास्तै ई गरासिया कैवीज्या, अै अेक 'ग्रास'(भोग) रा हकदार हुया इण वास्तै ई गरासिया कैवै। गुजरात में आजई 'भूस्वामियों' नै गिरासदार कै गरासिया कैवै।

इणांनै 'गिरि' (भाखर) रा वासीन्दा व्हैवण रै वजै सूं ई 'गिरीवासी' या गरासिया कैवे। अै भाखर रा भौमिया है। भील अर गरासिया रै सरीर री गठन अर रंग रूप में घणौ फरक कोनी। भील खटरा (ठिगणा) नै पातळा व्है, रंग सूं घणा काळा व्है। गरासिया की लांबा अर थोड़ा काळा व्है। भीला रौ उणियारौ लांबो, नाक नैनो अर गाल पिचक्योड़ा व्है। गरासिया लुगायां कद में नैनी अर मुंडौ भरचौडौ अर फूटरो व्है। गरासिया सुभाव सू भोळा ढाळा, ईमानदार, वचन रा सांचा अर मेहनती व्है। अेक अेकलो गरासियो पूरो बेरो खोद लैवे। अेक गीत में गरासणी आपरा पति ने साही बंधो (बांध) खोदण तकात रौ ठेको लेवणरी सल्ला देवै। झूठ, कपट, दगौ देवणौ अै लोग नीं जाणै। अै लोग जंगळ री उपज, मामूली खेती अर मजूरी सूं आपरौ टबारौ चालावै।

म्हारै मत सूं तो 'आर्य' मेसोपोटामिया' या 'मध्यएशिया' सूं कोनी आया, अरावली में इज जाया जळम्या। अरावली सबद ई 'आर्यावली' सूं बण्यौ लागै। आर्य अरावली री लाबी कतार में पसरता बस्या इण कारणै 'आर्यावली' कहीज्यौ। जकौ 'अपभ्रंश' होयनै 'अरावली' बणग्यौ। अरावली हिमालै सूं ई जूनो-पुराणौ।

आदिवासियां री 'लोक साहित' इज धरती रै साहित री पै'ली फाल है। लिख्योडौ साहित तो हजारां बरस पछै आयौ। 'प्रेस री आविष्कार' तो घणौ मौड़ौ व्हियौ। इण वास्तै आदिवासी कै आदूवासी (आदिमजाति) रै लोक साहित रै सोध री घणी जरूरत है, इणनै अेक 'आविष्कार' कैय सका। 'अंतर्राष्ट्रीय स्तर' माथै इणरौ घणौ महातम कूतीजै। ई सोध सारूं आज रै बखत री हेलो है, जुग जमाना ही मांग है जिणनै पूरणी पड़ैला। इणसूं साहित अर इतिहास में अेक नवो पाठ जुड़ैला। इण पेटे आज ताई दो च्यारेक इणिया गिणिया साहितकार कलम खड़ी है अर वा ई कीं अंस माथै अर आधी अधूरी। इण वास्तै औ अेक अबोट विसै है। इण वास्तै पिछड़ियोडा, दलित नै उपेक्षित आदिवासी गरासिया रै लोक वाङ्मय अर संस्क्रिति नै उजाळा में लावण री म्हैं बीड़ौ झेलीयौ।

इणांरी बोली मांयै अलेखू गीत, भारथ, वार्तावां, मौखिक नाटक, ख्याल, रम्मत, औखाणां,

दांखला, आडियां, सुगन, सपनां, जड़ी-बूटियाँ (औखद), देवता, पितर, मोगा, वीर, मोळा, झाड़ा, झपटा, टोटका, जंतर, मंतर, तंतर, सगळा मूंडै याद। औ अखूट ग्यान घणा जतन सूं अवेरनै राखै। सिंसार रा सगळा लोकसाहित मांयै एकतारूप मिळै, चूंकी आदिवासायां रौ मूळ अेक है।

'लोक' री सांची संस्क्रिति जनता रै कंठा में बसै। 'लोक'सबद घणा जूना जुगां सूं चालतो आयौ। औ सबद वैदिक काल सूं वापरीजै। वेद, उपनिसद, गीता आद सगळा ग्रंथां मांयै इणरी 'व्याख्या' मिळै'। डा. वासुदेव लिख्यौ के 'लोक' आपणै जीवन रौ मोटो दरीयाव है। इणमें भूत, भविष्य नै वर्तमान तीन्यूं भेळा रेवै। 'लोक' संस्क्रिति रौ अमर रूप है। इणमें सैंग सास्तरां रौ सार है। औ जीवन रौ 'आध्यात्मिकशास्त्र' है'। इणसूं सुभट लखावै के 'लोक' भू भाग माथै बस्यौ साधारण 'जनसमाज' है, जिणनै आज आपां 'संस्कृति' रौ नांव देवा वो 'लोक' सूं न्यारौ कोनी। अग्रणै समाज मांयै 'नागरिक' अर 'ग्रामिण' दो न्यारा कोनी। पण आपणै समाज मांयै 'नागरिक' अर 'ग्रामिण' दो न्यारी संस्क्रतियां रौ लेखो लाधै। 'लोक' में यूं तो दोन्यूं संस्क्रतियां रौ संगम व्है जावै। नारायणसिंघजी भाटी लिखै के 'मरूभौम रै सौरभ री ताजगी, जकौ इण लोकसाहित मांयै रची-पची है वा मोटी-मोटी प्रबंध पोथ्यां में ई कोनी। लोकसाहित जूनो व्हैतां थका ताजो लागै। इणरौ रंग नीं फीकौ पड्यो नीं सुवास में ई कीं फरक पड्यौ। वो अठारा वासीन्दा री रागात्मक प्रवृत्तियाँ रौ भण्डार है। औ लिपिबद्ध नीं व्हैतां थका इयां इतिहास नै सावळ रकेळनै राख्यौ है।'

'लोक' अेक दरसन - अलेखूं आंख्यां अर 'बिबां' री लांबी लड़ाक ओळ्यां। म्हूं ई अेक चस्मूहीन गवाह हूं - अेक टकटकी लगा'र निरख्या-परख्या हूं बिबां नै। आंख्या देखी परसराम कदै न झूठी होय। पण विराट री लीला पल-पल पलटती रेवै, 'बिंब' ई वदळता रेवै। वो नासवान है तो पण सांचो खरौ। 'लोक' सनातन सांच है, अमर है। पण पल-पल मरै अर जळमै। 'लोक' कोनी रैवैला तो सनातन रौ आधार ई खतम व्है जाई। लोक में जीवन है, जीवन में पिराण। पिराण ई परमाण री कसौटी। सांच-झूठ री कसौटी नै हटौटी ई लोक कनै है। लोक परमाण री साख इज नीं भरै 'प्रमाणिकता' री कसौटी पण है। लोक 'परिवर्तनशील' रै पाण सनातन है।

लोक अेक संगीत - हरेक दरसाव, हरेक बिंब, हरेक ढंग, हरेक रंग, अंग है किण ई ने किण ई राग-रागिणी रौ। खासीयत आ के गावणवाळी अलोप रेवै। गावणियौ पड़दा रै लारै। अेकदम निराकार। फगत सुर सुणीजै। कदैई कदैई तो खाली अनभव व्है। धीमे मधरै नाद री गोदी मांय लीन व्है जावै अर आपा 'सद्दगान' मांय रम जावा। गम जावा।

धुळमिळ जावा, ज्यूं क पांणी में रंग। रूं-रूं सूं अनहद नाद निसरै-सुणीजै। पछै कांना री जरूरत कोनी-मांइला अंतस् सूं नाद उठे अर मांइलो इज सुणै औ 'अनहद नाद' अैड़ो निराळौ है आपणौ लोक।

लोक पूरण है - कठैई कीं 'अपूरण' कोनी। जठै जेड़ौ व्हैवणौ जौइजे वेड़ौ इज है। हरेक कुदरत रौ हरेक पांन, फूल हरेक रूंख, हरेक मगरौ, हरेक नदी, हरेक झरणौ आपरी पूरणता सूं परिपूरण है। हरेक री न्यारी सुतंतर सत्ता कायम है। कुणनै ई किण ई री कोई शिकायत कोनी। लोक स्वाधीनता, सुतंतर अर सहजीवण री धाकेड़ विद्यासाळा है। सैंपूचा ब्रह्माण्ड मांय अैड़ी दूजी चटसाला कठै ई कोनी लाधै। हरेक अस्तित्व वाळी इकाई पूरी स्वाधीन, पूरी सुतंतर अर दूजोड़ी किण ई इकाई री सुतंतरता सूं कोई अेतराज कै शिकायत कोनी। सगळा मानवी समाज रै वास्तै लोक अेक धाकड़ पोसाळ है - सहजीवन री, स्वाधीनता री, सुतंतरता री किरोड़ा वनस्पतियां साथै साथै उगे। रूंखडियां रा पूरा पंचांगां रा गुण धरम, तासीर नै कैवट ने अर खेवट करनै राखणौ सैज काम कोनी तो पण कुदरत सारूं साव सैंग सैलको ने सुरक्षित।

लोक अेक मोटो मंजूष है - नवादा आविष्कार अर सोध करयौड़े ताजा टणाटण ग्यान रौ मंजुष है। कुदरत जकौ गोचर ई है अर अगोचर ई। बारीक झीणी झीणी सूक्ष्म लै'रा हिळौळा खाती सरबव्यापी। हरेक चराचर ने 'स्पंदित' (झरनाटा) करवा वास्तै किरोड़ा बरसां री तप-तपसा सोध्योड़े ग्यान अर सांच री झीणी झणकार-टणकार री तरंगा उर्जा अर उष्मा सूं भरपूर। सकल ब्रह्माण्ड मांय सारो नाच-गान वीं सूं इज चालै। वा डोर वीं रै हाथ, आपां तो कठपुतळ्यां हा। हरेक पलक रौ निहत सिरजण ने अरपण है। इणमें सिधि सारू कठै ई संहार है तो कठैई सिरजण।

लोक रौ मारग आलोक रौ मारग - विद्या रौ मारग ई आलोक रौ मारग। कण-कण आलोकित। लोक आलोक मांय बस्यौ है अर आलोक लोक मांय। इण वास्तै - 'पुनरपि जननम्, पुनरपि मरणम्' रै साथै 'भज गोविन्दम्' रौ जाप गूंजतो रेवै। चालतो रेवै।

लोक रौ अरथ भारत मांय आथूणा जगत रै 'फोग' कै 'फोक' री धारणा रै खिलाफ है - अठै 'लोक' नीं तो जूना-पुराणा रे खाते खतीजै नी 'पिछाड़ापण' रे पेटे अर नीं सास्तर रै खिलाफ गिणीजै।

" 'लोक' सबद रौ अरथ - 'लोक' रो अरथ 'जनपद' कै 'ग्राम्या' कोनी। इणरौ मुतलब स्हैरां - गांमां मांय पसरयौड़ी सैंपूची जनता है। जियारै वैवारिक ग्यान रौ आधार पोथ्यां कोनी' "- हजारी प्रसाद द्विवेदी। 'लोक संस्क्रिति ने फगत गामां री इज संस्क्रिति नीं कैय सका' - डा. इन्द्रदेव। पण रामनरेश त्रिपाठी लोकगीतां ने 'ग्राम्यगीत' मानै। 'गीत तो गामां रै धन रौ खजानौ है, जुगां सूं वडेरा रौ संच्यौड़ो। स्हैर मांय तो वे गिया है, जाया-जळम्या कोनी। आज स्हैर री 'लोक संस्कृति री ठौड़ 'पॉपुलर संस्कृति' लेय री है।'

'लोक वाङ्मय रौ भूरपूर मजो लैवणौ व्है तो दिमाग समाज सास्तरी रौ अर हियौ रसिक रौ चाइजै। रससिध मन अर वाणी सिध-बुध व्हैणी चाइजै। रोज पलटती नवी ताजी अर राती माती संस्क्रिति परंपरा रा गांम अर स्हैर दो छेहड़ा है। आज सैंग प्रदुषण सूं खतरनाक संस्क्रितिक प्रदूषण है। लोक अर मार्गी (सास्तरीय) आपणी कला रा दोन्यू पग है जिणारै पांण आपां ऊभा हा। 'अलंकार' प्रधान साहित कला' मार्गी रौ रूप धारण करतौ जाय रीयौ है लोक कला सूं अलगी नै न्यारी व्हैती जाय री है।

डा. अय्यप्प 'आदिवासी कथा-आख्यान' लेख मांय आदिवासी टोळां रै साथै अन्याव, आदिवासी कथावां अर गीता रै न्यारा-न्यारा पगसा अर वीयां री जिंदगी माथै खासो विस्तार सूं लिख्यौ है। माथै ई आपणौ ध्यान 'गाथा सप्तशती' अर 'जातक कथावां' जिसा लोकसाहित रै सास्तरीय पगस रै साम्ही खाचै। अेक वगत आपां सगळा आदिवासी हा अर सैंग भासावां मांय धरपेलड़ा कथाकार अर गीतकार आदिवासी इज व्हैला। वाल्मीक, व्यास नै शुक आद सगळा आदिवासी झूलड़ा रा इज अंग है। आदिम अर आदिवासी में फरक है - पणिकर रै मत मुजब विदेशियां रै आया पैली आपणै मुलक में रैवणिया वनवासी, व्यवस्थित समाज सूं न्यारा दळां नै आदिवासी केवै नीतर तो विदेसियां रा वडेरा ई कदेई नै कठैई आदिम अर आदिवासी रया इज व्हैला।

कोमलजी कोठारी 'शास्त्रीय संगीत अर लोकसंगीत' लेख मांय लिख्यौ क "हरेक तरै रो, हरेक देस काळ री संगीत कीं कांनां नै सुहावती राग-रागणियां रौ मंडाण कुशलता सूं करयौ, जिं में सबद अर लय में गाढ़ै तालमेळ व्है। लोक मंजे देसी सरल संगीता रौ 'संयोजन' कुदरती रूप सूं व्है अर सास्तरीय के मार्गी संगीत मांय वो इज काम नियमां रै तहत व्है। इण वास्तै सास्तरीय संगीत मांय घणी ऊंडाई नै घणौ विस्तारौ अर घणौ असरदार व्हैवण री उम्मीद रेवै। सास्तरीय संगीत रौ जळम लोगसंगीत सूं इज व्हियौ।" कोमळ दा लिखे क लोकगीतां मांय अलेखूं राग-रागणिया रौ भेळीयौ बीजौ है। कुमार गंधर्व कैवे - "आपारै लोक धुनां मांय अलेखूं रागां, तान, सुर लुक्यौड़ा लाधै। सास्तरीय रागां लोक धुनां सूं पनपी-पांगरी। लोकगीतां मांय कोई खास स्वरावली कै वींरौ खण्ड के चलण, के न्यास रौ कोई खटकौ व्है अर सास्तरीय गवैया वींनै उभारनै, कीं जोड़-तोड़ करने नवी राग-रागीणी रौ रूप दे देवै - ज्यूंक कुमार गंधर्व आपरी धुन 'उगम' रागां मांय करयौ। पण औ कैवणौ ई वाजब कोनी क सगळा सास्तरीय राग यूं इज जळम्या है। सुध सास्तरीय संगीत सूं ई नवाराग बणिया है।"

कीं (सैंग नीं) राजस्थान री पेशेवर जात्यां ज्यूं क लंगा, मांगणीयार, ढोली-डूम रै गावा - बजावा में थोड़ो-घणौ-सास्तरीय जैड़ा ततवां रौ भेळभाळ व्हियौ। आ आंशिक सास्तरीयता

के तो पीढ़ी-दर-पीढ़ी पेशेवर साधना सूं उपजी, के आड़े-पाड़े सास्तरीय वातावरण रै असर सूं उपजी, ने कै दोन्यूं रौ असर अेके साथै पड़ियौ। किण ई थोड़ी-घणी सास्तरीयता रौ अेक पगस (परख), किण ई राग री औलखाण, अेक खास नाम सूं व्हि ज्यूं क मांड, आसा, खूब सामेरी रागां रा नांव। इण पेटे कोमलजी रौ मत है क लोक गवैया रौ संगीत खास करने छंद गान रै ज्यूं व्है जिणमें दूहो अर सोरठो री मोकळात व्है - इण दूहां ने भांत भांत सूं उधेरण री शैलियां ने खास रूप अर नांव धरिया - वीलावत, गूंड मलार, जोग-(जोगीयौ) आद। च्यारूं मांडां मांय ई पैली दूहा बोलाण री रीत चालगी। दूहा अर अै राग-रागणियां भगति संगीत में ई वापरीजै।

अमूमन कैवै क भीलां रै गीतां मांय सामगान रौ पुट लाधै। लोकमानस माथै पड़िया परभाव नै अेतिहासिक घटना जितरौ इज घण महताऊ मान्यौ है पण इतियास ने परभावित करवावाळा 'ततव' अर 'वास्तविक तथ्य' में फरक करणौ इज पड़ैला। ज्यूं क अेक वाकौ व्हियौ क रस्सी ने सांप समझने न्हाटणौ पड़ियौ तो इणमें सांप रौ व्हैवणौ सांच कोनी पण न्हाटणौ इतियास जरूर बण्यौ।

डा. श्यामचरण दुबे आपरै लेख 'लोक कलाओ का भविष्य' मांय लिखे क "लोक कला अचल के जड़ कोनी। वींनै आप फ्रिज नीं कर सको अर वींरै सुध अर मूळ रूप री सोध विरथा है।"

इतियास अर लोक आख्यान रै खींचताण री चरचा डा. चन्द्रप्रकाश देवळ आपरै लेख - 'इतियास का लोक और लोक का इतिहास' में करी है। वे सोधपूरण सास्तरीय इतियास रै मुकाबले लोक सूं रचित समानान्तर इतियास नै इतियास रै ठौड दैवण री वात करै। 'समानान्तर' इतियास रौ इतियास व्हैवणौ ई लाजमी है। शम्पाशाह रौ आलेख 'जनजाति सांस्कृतीय अस्मिता' मांय लिख्यौ - 'भलेई लोक साहित अर लोककला ने 'सामूहिकता' रौ 'उत्पादन' मानै पण नवादी कला रा खेतर रै ज्यूं वीं लोगां सूं जुड़िया थका खेतर री कड़ी जोड़वा रौ काम काढै, जिणरै कारण वा परम्परा वना जोटा गिया लगोलग नवो नवादो करती रैवै। दूजी वात मानव सास्तरी, जनजातीय अर लोक कलावां मांय जितरौ आंतरौ अर फरक बतावै, वाकई मांय उतरौ कोनी।'

व्है सकै क इक्कीसवीं सदी मांय होवणवाळा 'सामाजिक विकास' अर 'औद्योगिकरण' लोक समुदाय अर संस्क्रिति रौ वैड़ौ इज सत्यानास कर सकै जैड़ौ क अठारवी साइका अर उन्नीसनां साइका मांय आथूणा योरोप रा देसां मांय व्हियौ हौ। के तो जीवती लोक परंपरावां री पाकोड़ी सगतियां आज री अंदरूणी क्रिया सूं संस्क्रिति, खुद री जड़ां सूं पाळरै-पांगरै अर नवा रूप में वधापौ करै। इणरौ अेक चोखौ दृष्टांत शम्पा शाह दियौ क - 'रेबारी जात री लुगाया कोड़ियां री जगा प्लास्टिक रा बटणौ अर पोलिथीन री थैलियां रौ फूटरौ नवादो उपयोग करयौ है।'

वो दिनड़ौ कद ऊगैला जद आपां सनातन ने लोक रे साथै, लौकिक ने शास्त्रीय रै साथै, विग्यान ने संस्क्रिति रे जोड़ै, सिक्षा ने संस्कारां रे साथै अर दर्शन ने साहित रे साथै राखनै साधना करणी सीखाला।

इण पोथी रा कीं गीतां मांय अैड़ा दाखला आया है क आपणै सास्तरां सूं मेळ कोनी खावै, ज्यूं क लिछमण ने सीताजी ने नागा सूता रामजी रौ देखणौ, बांदरी रै बचिया ने छाती रै चेप्यौ देख'र सीता ने लव री औगत आवणी, सीता, राम अर लिछमण रौ खेती आद करणी। औ असर आदिवासी जीवण नै संस्क्रिति रौ है - गरासिया अेक इज झूपी मांय सैंग नागा सोवै, झूपड़ी मांय उजाळौ नीं राखै। वनवासियां रा भाइला रूंखड़ा अर पसु-पंखेरू इज व्है। इण गीतां मांय अंचूभे री वात क दसरथ, कैकाई आद राणियां आद रै नांव रौ लेखो कोनी लाधै। ई भांत भीमौ पांडवां रौ भाई इज है क वीं जैड़ो दूजो कोई, आ संका व्है जावै।

'पइसा ओछा पड़िया' गीत ई झूलड़ा अर टोळा रौ गीत है, अेकला रौ कोनी। मंजे गरीबी नै लाचारी पूरा समाज री है। आपणा पितर अर इणारा 'मोगा' में ई फरक है। जिणरौ वंस नी वधै अर मर जाय वौ पितर व्है पण मोगा में औ जरूरी कोनी।

तीर बणावा री ई न्यारी-न्यारी विधियां है - शेर, हिरण, खरगोस अर तीतर आद री शिकर सारू न्यारा-न्यारा तरै रा तीर घड़ावै जिणारै आकार, प्रकार अर अणीदार आगला भाग री बणगट में फरक व्है। हरेक री 'बेत' खुद री बारह आंगळ रै बिरोबर व्है, आ प्रमाणित है।

जठातांई 'गरासी' भासा रौ सवाल है, इणारै सबदां रै उच्चारण मुजब ढाळिया है जकौ हिन्दी नै राजस्थानी सूं कठैई कठैई न्यारा है, ज्यूंक 'स' ने 'ह' (सूरज ने हूरज), 'च' ने 'स' (चौपा ने सोपा), सबद रै सरूपोत रे अकारांत रौ अेकारान्त (हल्दी नें हेलदी), म्हूं का मूं अर मांय री मां व्है जावै। इणी भांत हिन्दी री केई बड़ी काना-मात नैनी ने नैनीरी री मोटी व्है जावै। इण बोली रौ व्याकरण नीं लिखीज्यौ, इण वास्तै परिष्कृत भासा रौ रूप हाल नीं मिल सक्यौं। पाठकां नै औ अजूबो लाग सकै।

भारत री भासवां मांय सैकडू अैड़ी है, जिणानै भासा व्हैवण री मंजूरी कोनी मिली, वींयानै बोली इज मानै। कई बोलियां तो आखरी सांसा लेवै। इणांरी कैवट नै अवेर करणी जरूरी है। 'गरासी' बोली ई इण मांऊ अेक है। अलेखू बोलियां मातर 'आदिवासी' बोली नांव सूं पिछाणीजै जकौ जनजातियों री भाषावां है, वींयारौ नाम तक कोनी धरीज्या पण इण भासावां मांय आदूकाल सूं मूंडै याद राखणिया साहित रौ सिरजण व्हैतौ आयो है, जिणमें 'महाकाव्य' तकात है।

हालताई गरासिया जीवन माथै छप्पौड़ी फकत दो नैनी-नैनी पोथ्यां है - डा. सोहनलाल पटनी री 'आबू क्षेत्र के आदिवासी' (६२ पृष्ट) अर डा. महेन्द्र भानावत री 'कुँवारे देश के आदिवासी' (१०२ पृष्ट) और डा. बी. आर मेहड़ा का History of culture of girasias (२३८ पृष्ट) जकौ इणांरौ सोध ग्रंथ है अर गरासिया रै समाजिक जीवन माथै है, गरासिया रै लोकसाहित माथै कोनी। गरासिया रै लोक साहित माथै विस्तारा सूं कोई कोनी लिख्यौ, औ अेक अछूतो विसै है। औ धरपैलो ग्रंथ है।

लोकसंष्क्रिति अर साहित कंठै कीयौड़ै (मौखिक साहित) गीतां, कथवां, औखणां आद में है। अण वास्तै औ ग्यान आधो अधूरो व्है। इण साहित सागर में सगळां सास्तरां री नदियां रौ मेल अर संगम है। लोक संष्क्रिति कुदरत री गोदी में पळै, औ देस रै लोक जीवण रौ 'आदर्श' है, जकौ आम आदमी रै आचार-विचार मांय झलकै। असल में आ आदू मानवी री अेक 'मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति' है, अनभव रौ भण्डार है। वो समाज रै मडांण, उछब, इतिहास नै साहित रै बुध बल सूं परगट व्है[३]।

इण लोक संस्क्रिति नै तीन पंगत में बैठाय सकां -

१. लोक विस्वास अर आंधी परम्परावां

२. रीत-रीवाज नै प्रथावां

३. लोक साहित

लोक साहित लोक संष्क्रिति रौ इज अेक अंग है। आपां जकौ सोचा, करां, गावां, रौवां, नाचां, चितरांम उकेरा कै मूरत घड़ा, सगळा माथैं 'लोकसंस्क्रिति' री गै'री छाप रैवे। लोकसाहित में इणरौ लेखो लाधै ।

डा. सत्येन्द्र रै मत मुजब दलित जात्यां रा रीत-रीवाज, नीति, का'ण्यां, गीत, औखाणां, जादू-मिंतर, वसीकरण, टोटकां, झाड़ा-झपटा, डोरां-मादळियां, ताबीज, मूठ, डाकण-भूतण, मोगां, पितर, वीर, रोग, इलाज, सुगन, सपना आद रै संबंध में आदिवासी विस्वास राखै । इण मांय ब्याव, रीत, नीत, तै'वार, जुद्ध, सिकार, पसुपालण अर बापूनी आद री सगळी वातां भेळी गूंथीजै। अै सैंग धरम, करम, गाथवां, कथवां, गीतड़ा, आड्यां, हीला (लोरीयां), साका (बैलेड), भारथ अवदान (लीजेण्ड) आद रै मारफत आवै[४]। लोक साहित मांय सैं गद्य-पद्य वाड़मय आय जावै। टाबरां रै जळम गुटकी अर हीला सूं लगायनै देवलोक व्हिया पछै औसर-मौसर पर गाइजण चाळा हरजस, भजन तांई सैंग आवै। रुत बदलाव रा गीत, करसण रा गीत, प्रेम-वैपार रा गीत, बूडां-ढाडां वडेरा सूं सुणणवाळी का'ण्यां सै भेळा आ जावै। लोक साहित रौ विस्तारौ मोकळौ। 'औ साहित उतरौ ई 'स्वाभाविक'लागै जितरौ वन में खिल्यौड़ी पुसप कै आभै उडाणां भरतो पंखेरू अर उत्तरौ ई सरस अर अबोट जितरौ गंगाजळ।'

डा. श्याम परमार लोक साहित रै विस्तारा रौ नीचै मुजब लेखो नूंध्यौ -

'लोक साहित लोक रै दिमाग री 'सम्पन्नता' अर समाज री आतमा री बोली (अभिव्यक्ति) इज इणरौ अखूट खजानौ है।'

लोक साहित जनता रौ साहित है अर जनता रै जरीयै जनता रै वास्तै मूंडे याद राखीजै'। नट अर जोगी भी लोक साहित री रचना करै बतावै। आम जनता जकौ सोचे, अनभव करै उणरी 'अभिव्यक्ति' तरै तरै सूं करैं वो इज 'लोक साहित' बाजै। इणनै खास पांच पंगत मांय बांट सका।

१. लोकगीत

२. लोकगाथा

३. लोककथा

४. लोकनाट्य

५. लोक सुभाषित

इण सगळां री अलेखू साखावां है। फगत अेक लोककथा रा दाखला सूं मालूम व्है सकै कै कितरा अलेखू फांटां फंटीजै -

१. नीतिकथा

२. प्रेमकथा

३. दंतकथा

४. पौराणिक कथा

५. मनोरंजन कथा

६. व्रत कथा

लोक कथावां मांय हेटे मंडयौड़ी खासीयत व्है -

१. प्रेम रौ पूरो पुट

२. अश्लील सिणगार

३. मूळ प्रवृत्ति रौ गाढौ रंग

४. मंगळिक भावना

५. सुखान्तता

६. रहस्य, रोमांच, अलौकिकता

७. उत्सुकता री भावना

८. वर्णन री स्वाभाविकता

लोक साहित नै लोक वाङ्गमय कैवे, (मुखजबानी साहित), क्यूंकै औ लिख्यौड़ी कोनी अर मुख जुबानी याद राखै, लोगां (लोक) रै कंठां मा बसै। पण गरासिया (आदिवासी) वाङ्गमय नै म्है लोक वाङ्गमय ई कोनी मानूं क्यूंकै सभ्य नागरिका रा लिखत साहित नै 'साहित' कै 'सास्तरीय साहित्य' कैवे अर गांवां रा वासीन्द खेतीखड़ करसां-मजूरा रा जबानी साहित नै (मौखिक साहित) 'लोकवाङ्गमय' कैवे पण गरासिया (आदिवासी) साहित इण दोन्यूं सूं न्यारौ नकालो है। इणनै नीं तो 'साहित' कैपय सका नीं लोक वाङ्गमय कैय सका। औ तो फगत गरासिया (आदिवासी) वाङ्गमय इज कहीज सकै जकौ तीजी न्यारी पंगत मा बैठे। इण वास्तै इणा नै गरासिया गीत, गरासिया कथा आद कैवणौ वाजब व्हैला। इणनै आदिम साहित कैवणौ पड़ेला पण लोग इणनै लोक वाङ्गमय इज मानै इण वास्तै म्है ई कठैई 'लोक' सबद ई वापरियौ है अर कठैई लोक कोनी मांडयौ है। पण म्हारौ अरथ औ इज है।

इण भांत गरासिया री बोली रौ म्हैं 'गरासी' नांव धरियौ जको पेलपोत वापरीज्यौ है। बोली इण वास्तै कै इणरौ व्याकरण अर सबदकोस बीजो कोनी। भासा वा गिणीजै जिणरौ सबद कोस - व्यावकरण बीजौ है। संस्कार कियौड़ी बोली भासा बणै। 'गरासी' बोली नै भासा ई म्हैं लिख्यौ है पण है वा बोली इज। इण बोली नै बोलण अर उच्चारण मुजब वार वार सुणनै वीं मुजब देवनागरी लिपि मा बांधण रौ जतन करयौ है। गरासिया गीत, कथा, औखाणां, कोहनी, हपनो, मांडला, हीमेन आद गरासी भासा - बोली मा है वे सबंद-ज्यूं-रा-ज्यूं लिख्या है पण भूमिका अर समझावण वास्तै खुलासो करणनै राजस्थानी भासा वापरी है। जिण मा 'गरासी' बोली रा सबद मेला गूंथीज्या है ज्यूं कै 'में' कै 'मांय' री जगां 'मां' ।अण वास्तै राजस्थानी विदवानां नै खटक सकै। अलेखू सबद गरासी बोली रा आया है। यूं 'गरासी' बोली ई राजस्थानी भासा रौ इज अेक अंग माननै म्हैं अंगेजी है।

सन् १९५६ मा मध्यप्रदेस, १९६० मा मणिपुर मा अर १९६१ मा राजस्थान मा धरपेला आदिवासियां रौ सर्वे (जनगणा) व्हियौ। इण पैला मारवाड़ में व्हियौ हौ। पछै बंद दरूजा खुल्या-इणरा 'संग्राहलय' अर 'संस्थान' खुल्या अर राष्ट्रीय संगोष्ठियां-समिनार जुड़िया।

इण ग्रंथ नै लिखण मा म्हनै घणा फोड़ा पड़िया, केई वेला वितीज्या। म्है १९६५-६६ मा बाली समिति मा सिक्सा प्रसार अधिकारी हो। इणमें गरासिया रौ हलको आवै सो मगरा मा गरासियां रा हलका में जावणौ-आवणौ पड़तो। वठा सूं म्हनै गरासिया री संस्क्रिति अर साहित माथै लिखण री चसकौ लागो अर लिखणौ मांडयौ। धीमे-मधरै काम करतो रयौ अर इणारै जीवण नै नेड़ा सूं निरखतो-परखतो रयौ। पछै वठा सूं पलटी व्हैगी पण लगन लागोड़ी नी छूटी नी।

गरासियां पर लिखणौ घणौ कावळ कांम हो। पैली तो आडावळा में जावण रा साधन कोनी। सावळ मारग कोनी। जावां तो रातवासो लैवण री ठौड़ कोनी। धरमसाळा कै होटलां वठै कठै पड़ी है ? फेर कोसां आगां आगां अेकूका बिखरयौडा घर। पैदल इज जावणी पड़तो। घणा भांटां मांगीया। फेर उणांरी बोली कुण समझै ? वे आपणौ भरोसो पण करै कोनी। असिन्दा आदमी माथै व्हैम व्है तो मारतां जेज करै कोनी। वठै कुण सुणै। अै सगळी अबखाइयां व्हैता थका औ काम ३५ बरसां मा धीरे मधरै पार घाळीयौ। कीं जोग संजोग री वात ही कै - १९६१-६२ मा म्है सेवाड़ी मास्टर हो, वठै आदिवासियों रौ 'हास्टल' हो जठै आदिवासीयां रा छोरां पढता, उणांसूं म्हारी आछी पिछाण व्हैगी। वे अहम्मै गरासियां रा हलका मा इज कोई मास्टर है, तो कोई 'ग्रामसेवक' तो कोई सिरेपंच तो कोई प्रधान कोई दुकानदार। वे 'दुभाषिये' रौ काम ई करयौ अर सुरक्षा नै खावणरी, ठहरवा में पूरी मदद राखी जरै काम पार पाड़ियो।

७२ बरस री ऊमर मां म्हनै आ पोथी लिखता घणौ गुमेज। तीस पैतीस बरस री साधना सूं टीपौ-टीपौ औ घड़ौ भरीज्यौ। औ जळ साव अबोट-अछूतो। आ म्हारी अगन-परीच्छा ही। म्है इण माथै पीएच. डी. करणौ चावतो पण वो तो नीं व्है सकियौ पण औ काम अणसूं सवायौ समझू अर इणसू पूरो संतोख जरूर मिळियौ। जकौ धाकड़ सोध री साध पूरावै।

इण खातर माणिकलाल वर्मा आदिम सोध संस्थान, उदीयापुर ई गियौ वठै ई बतायौ कै भीला अर मैणां पर तो खासो काम करीज्यौ है पण गरासियां पर अंगेई कोनी हुयौ। अहमदाबाद अर गुजरात ई गियौ पण वठै ई भीलो माथै खासो भलो लिखिज्यौ है। पण गरासिया माथै कोनी। ब्रिटिश कांसिल लाइब्रेरी नै ई लिख्यौ वठा सूं पत्र सं. आरङ/२६५/३७ दि. २२-११-७९ रै मुजब 'नेगेटिव' उत्तर इज मिळयौ। पछै छेवट 'फिल्ड' में जायनै काम करण रै सिवाय कोई रस्तो कोनी हो।

इण विराट बिखरयौड़ा लोक वाङ्मय नै भेळौ करणौ नै छापणौ धणौ दौरो काम। साहित अकादमी प्रकाशन रौ बीड़ौ उठायौ है अर भारत री जनजाति सहित अर मौखिक परंपरा ने रकेळ नै उजास में लावण री योजना बणाई जकौ करणजोग, सरावणजोग अर शोभाजोग - घणा घणा रंग अकादमी नै। डा. जी. एन. देवी रौ इणमें घणमहताऊ सै'योग रयौ, म्हनै इयांरौ भरपूर सै'योग मिळ्यौ, म्है इणांरौ अर अकादमी रौ आभारी हूं।

म्हनै इण वास्तै केई आदिवासी ढाणियां अर फळां मांय जावणौ पड्यौ। खासकर पीपला, गोरीया, मीमाणा, बेरड़ी, ठेडीबेरी, गरासिया कॉलोनी, धाणेराव, नाणा, आबू, अंबाजी उपला गढ आद। जिण मांय सैं सूं बत्तौ सै'योग चौपाजी गरासिया (७०) रौ मिळ्यौ। चौपाजी सूं औळखाण करायनै प्रेरित करण रौ धण महताऊं काम स्री भंवसिंहजी राठौड़ रौ रयौ, इणारौ आभार मानूं। की गुटकौ लैनै, मूड बणा'र आधी आंख्यां खुली मुद्रा में चौपाजी जद कथा

कैवताक गीत उधेरता तो लोगलग बोलता जाता जाणै जीभ माथै सारदा बैठ जाती, म्है लिखतो जातो पण पूरो मजो तो ध्यान सूं सुणणिया भंवरसा लैवता। गीत ध्वनि मुद्रण अर श्रव्य-दृश्य अंकन करीज्या, पछै लिखीज्या। रित परवाणै आवणवाळा सामाजिक, धार्मिक उछबां ज्यूं क होळी, दियाळी, दसराबो, मेळा अर ब्याव आद माथै गवीजणवाळा गीत, नाच आद रा अंकन करिया। इण गीतां मांय 'भारथ' (युद्ध) रौ ई लेखो लाधै। घणा मानीता पदम विभूषण कोमल दा कोठारी अर घण आदरजोग डा. लक्ष्मीमलजी सिंधवी जिसा लूंठा विद्वान अर आंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त धाकड़ साहितकार इण पोथी माथै दो सबद लिखनै म्हनै आसीष दीवी जियांरौ म्है हिवड़ै तणौ आभार मानूं। दोन्यूं जणां बीमार व्हैता पका टैम निकाळनै मेहरबानी करी, वींयां सारूं कैवणनै की सबद कोनी।

रूपायान संस्थान सूं इण वास्तै केई दुर्लभ फोटू मिळ्या इण वास्तै ई कोमलदा अर बिज्जी नै लाख लाख रंग।

इस ग्रंथ री केई खासीयता है -

१. इण पोथी रै मार्फत गरासिय-साहित लिखण रौ स्त्री गणेस व्हियौ है जको अेक नवौ मौलिक (Original) काम व्हियौ।
२. पांच भासावां (गरासी, राजस्थानी, हिन्दी, रोमन अंग्रेजी) मा अेकण साथै (अेकइज पोथी में) छपण वाळौ औ धरपेलो ग्रंथ व्हैला, जकौ आगली खेप में छपेला
३. गरासी भासा मा गरासियां रौ साहित पैलीवाळ उजास मा आय रीयो है। म्है इण भासा रौ 'नामकरण संस्कार' भीली री जोड़ मा 'गरासी' भाषा धरीयौ। औ आपने दाय आवैला।
४. म्हैं इणनै 'लोकसाहित' कोनी मान्यो है, फगत आदिवासी गरासिया (गरासी) साहित (आदिम साहित्य) मान्यो है।
५. आ अेक नवी शोध है, आविष्कार है। साहित मांय अेक नवो पाठ (अध्याय) खुल्यौ है, जुड़्यौ है।
६. आज इणरौ 'राष्ट्रीय' इज नीं 'अंतराष्ट्रीय' महातम आंकीज रयौ है। इणसूं जुग-जमारा री मांग पुरीजेला अर साहित सिंसार री घण महताऊ कमी पूरण व्हैला।

म्है इण वास्ते स्त्रीमान जी. एन. देवी अर साहित अकादमी, नै लाख लाख रंग द्यूं कै म्हारौ औ प्रोजेक्ट मंजूर करने छापण रौ बन्दोबस्त कर्‌यौ।

- अर्जुनसिंह शेखावत

भूले वही से गिनो

रास्ता बंद है। रास्ता ई अपरिचित, मूक, 'उबड़-ख़ाबड़' पर्वत और वन में। जहाँ आज तक कोई जा ही नहीं सका। तो आईये मेरे साथ, ले चलता हूँ उनके हृदय के 'हाट' में । उनके अंतःकरण की गलियों में घुमा कर लाऊं, प्रकाश करके दर्शन करा दूंगा। नया परिचय कराऊंगा। आप अपनापन बता कर उस हीरे की सुरक्षा करें। घोर अंधकार में सो रहे है उनको जगा कर प्रकाश में लाये। आपकी वे युगो से प्रतीक्षा कर रहे है। मक्खन से मानो धृत बनाना है। जो जानता है वही तो तर्क कर सकता है। जो फिरेगा वही तो चरेगा, बंधा हुआ तो भूखा ही मरेगा। एक स्थान पर पड़े पड़े श्रृंग के भी जडें फूट जाती है । जो जिसके हृदय में है वही तो होठ पर जन्म लेता है। यह गुड़ तो अंधेरे में भी मीठा लगता है। यह 'ठीकरी' घड़ा भी फोड़ सकती है । सब कुछ खो कर अब पहरा देने से क्या अर्थ ? परन्तु फिर भी जहाँ से भूले है, वहीं से गिनना होगा। जब जागे तभी सवेर।

आइये मेरे पीछे पीछे। सीढियो से तलघर में उतारता हूँ, सीढ़ियों से फिर वापस ऊपर चढ़ाऊंगा और फिर देखोगे तो मानव का मूल दृष्टिगत होगा। पीछे मुडकर देख़ोगे तो जीवनयात्रा में पीछे छूट गये पूर्वज दिखाई देंगे और अंदर की बात हाथ लगेगी। दर्पण में झांक कर देखो कि वे आप ही तो नहीं है ? इनका जीने का तरीका ही कहता है कि यही पृथ्वी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। आपने इनको बेकार, व्यर्थ और असभ्य समझ कर अंधेरे कमरे में फेंक दिये थे, परन्तु कपड़ों में सब नंगे है। वासुकी नाग पाताल चले गये तब 'चंदन गोह' के तिलक निकला है। तो आओ, सुनो इनके दुःख दर्द के दास्तान। अभी ले चलता हूँ - घोडे के लिये क्या घर दूर है। इनकी तीन लोक से मथुरा न्यारी है। भैस सावन-भादो को याद करे तो एक दिन नही जी सकती पर फिर भी ये जी रहे है।

समस्त संसार में आदिवासी बिखरे हुए बसे है। किसी भी देश के मूल निवासियों में जो शेष बचे है उन्हे हम आदिवासी कहते है। इन्हें मूल रूप से 'पृथ्वी पुत्र' कह सकते है। इन झुंडों में प्राचीन आदिम जातियाँ आती है। यह लोग राष्ट्र की मुख्य धारा से अलग रहे और इस कारण प्रगति का पथ नहीं पकड़ सके। इसलिये प्रगति की दौड़ में सबसे पीछे रहे। अंडमान निकोबार द्वीप समूह में तो आज भी आदिवासी नग्न रहते

है और आज से सैकडो वर्ष पूर्व की सभ्यता (असभ्यता) का जीवन जी रहे है। ये आदिवासी विश्व के पृथक पृथक देशों में तरह तरह के नामों से पहिचाने जाते है। पश्चिमी देशों में इनकों 'जिप्सी' कहते है तो नये प्रगतिशील देशो में इन आदिवासीयों को जनजाति, आदिवासी, वनवासी अथवा पर्वतवासी कहते है। राजा राम को तो चौदह वर्ष का वनवास मिला था परन्तु इन आदिवासीयों को तो जीवनभर का ही नहीं पीढियों तक का वनवास मिल गया, जो हजारों वर्षों से भोग रहे है। देश की आदिकाल (प्रागऐतिहासिक युग) की प्राचीनतम संस्कृति की पहिचान इन्हीं से होती है।

आदिवासी का अर्थ उन लोगो से है जो सभ्यता की दौड़ में सबसे पीछे छूट गये है और अपने 'प्रारंभिक स्वरूप' को नहीं छोड सके है। विज्ञान की प्रगति से इनका कोई लेना देना नही है। इनको हम अपने पूर्वज के रूप में देख सकते है। इनके कारण ही युगों पुरानी संस्कृति आज तक जीवित रह पाई है। भारत में १९% भू भाग में आदिवासी बसते है। समस्त जनसंख्या का ८ % आदिवासी हैं, जो शिक्षा और सभ्यता से कटे हुए हैं और वे अंधविश्वास के अंधकार में जी रहे है और न ये संविधान और कानून की गलियाँ जानते है।

सर्वाधिक जनजाति के लोग अफ्रिका में रहते है और द्वितीय स्थान भारत का है। सन १९९१ की जनसंख्या के अनुसार ६.७८ करोड़ आदिवासी भारत में है जो देश की समस्त जनसंख्या का आठ प्रतिशत है।

राजस्थान में पचपन लाख अर्थात् १२.४४ प्रतिशत (१९९१) आदिवासी है जिसे भारत सरकारने बारह जातियों में बांटे है। इनकी अपनी भासा, सभ्यता, संस्कृति एवम् लोक वांङ्मय है। समस्त जनजातियों की संस्कृतियां में कुछ अंतर होते हुए भी मूल में एक ही है। इसे बहुत सुरक्षित रखने के प्रयास करने अनिवार्य है।

रामायण और महाभारत में इनके अनेक उदाहरण उपलब्ध है - बाल्मीकी भील जाति का था जो रतनाकर भील (शिकारी) से आदिकवि तक पहुँचा। राम-काव्य से सर्व-प्रथम कवि वाल्मीकी ही थे। इनको राष्ट्र के 'प्रथम राष्ट्र कवि' माना जाना चाहिए। सबरी भीलनी के झूठे बेर राम ने बड़े प्रेम से खाये। एकलव्य की गुरू भक्ति सराहनीय थी। ऐसा उदाहरण इतिहास में ढूंढने पर भी नहीं मिलता। महाराणा प्रताप को हल्दीघाटीं युद्ध में आदिवासी भील और गरासियों ने खूब सहायता की थी। स्वतंत्रता के लिये हमेशा मर मिटने को तैयार रहे। राजस्थान के मुख्य आदिवासी पांच - भील, गरासिये मीणा। कोटा में कुछ 'सहरिये' और 'डामोर' भी है।

लोक साहित्य के इतिहास का प्रारंभ भी आदिकाल से ही होता है। जब से मानव

के होठो पर भाषा ने जन्म लिया तब से ही वह मन ही मन गुनगुनाने लगा। अपने संवेगों को शब्दों में पिरोने लगा होगा - सुख-दुःख, क्रोध-हर्ष, शोक-खुशी आदि को अभिव्यक्त करने लगा। कविवर सुमित्रानंदन पंतने की कुछ पंक्तियाँ इसके अनुकूल है -

वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।
उमड़ कर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान ॥

आदिकाल में न इतनी शिक्षा थी न साहित्य लिखने के साधन और न ही प्रेस आदि थी, इसलिये 'विद्या कंठो में और पैसे अंटी में' कहा जाता था। अर्थात ज्ञान ग्रहण करके उसे याद रखना अनिवार्य था और उसे पीढी दर पीढी आगे सौपना अर व्यवहार में उपयोग करना था। इसमें नई पीढी की नई बातें भी इसमें सम्मलित होती रहती थी जैसे अभी नई कहावत चल पड़ी -'धी देशी और ट्रेक्टर मेसी'। यही सब मिलकर लोक साहित्य बन गया । इसमें लोकगीत, वार्ताएँ, लोक कथाएँ और कहावतें मुहावरें सम्मलित है। गरासियो का लोक साहित्य भी इसी प्रकार सुरक्षित रहा है। लोक साहित्य में लोक गीत, लोक कथाएँ , कहावतें आदि आती है। यही आगे जा कर लोक वाङ्मय बना। इनके लोक गीतों में गरासियों के रीति-रिवाज, परंपराएँ, मूल्य, इतिहास और प्राचीन विरासत उपलब्ध है। गरासियों के सामाजिक मूल्य और महत्त्व में इनसे प्रगति हुई है। इससे इनका आध्यात्मिक और प्रकृतिक विश्वास का पता चलता है। गरासिये अपने विशेष चारित्र एवं व्यक्त्वि की निराली एवं अलग पहचान रखते है। एवं व्यवस्थित जीवन पद्धति की 'गोपनीयता' रखते है।

मानव मन अति चंचल और विचित्र है। अपने भाव प्रकट करने के लिये तरह-तरह के अजीब तरीके अपनाते हैं - अल्पना चित्र, चित्र, मूर्तिकला, संगीतकला तथा साहित्य सृजन इसी की देन है। शब्द एक माध्यम है। शब्द की अभिव्यक्ति से गीत, कथा आदि साहित्य का जन्म होता है। मानव के हृदय में भावों की लहरें उठती है और गीत, गाथा, कथा आदि के सांचे में उडेली जाती है और वह तदनुरूप ढल जाती है। प्रेम, घृणा, क्रोध, स्नेह, भक्ति, श्रद्धा, चिंतन, मनन, मंथन, दर्शन, विश्वास सुख, दुःख और विवशता आदि से लोक साहित्य का जन्म हुआ।

मानव के पास जब भाषा नहीं थी, शब्द का जन्म नहीं हुआ था उस समय भी अपने भाव-विचार किसी न किसी माध्यम से प्रकट करता ही था। आज तो बिना शब्द अभिव्यक्ति असंभव लगती है। लिपि की शोध तो बहुत बाद में हुई इससे पूर्व कहना, सुनना और स्मृति में रखना पड़ता था। अपने श्रुति, स्मृति, उपनिषद आदि इसी परंपरा की श्रृंखला है।

लोकजीवन में यह परंपरा लोकगीत, लोक कथाओं आदि में दृष्टिगत होती है। आज भी ऐसे क्षेत्र है जहाँ लोग भाषा लिपि से अनभिज्ञ है तो भी वे अपने भावों की अभिव्यक्ति अपने ढंग से करते है। गीतों का प्रभाव मनुष्य पर गहरा होता है। लोकगीत अर्थात् वे गीत जिसकी रचना लोक ने की जिसमें मातृभूमि की सुगंध है। सुनने वाले के हृदय में वे ही भाव जगाते है और उसी रस का रसास्वादन कराता है। गरासिया राजस्थान की आदिम जातियों मे से एक है जो अपने स्वस्थ तन-मन, निर्भय वृत्ति, सेवाभाव और झूंजारूं तेवर के लिये विश्व प्रसिद्ध है। वे अरावली के ज्येष्ठ पुत्र है। ये लोग अरावली के वन की उपज, कृषि और मजदूरी से अपनी आजीविका चलाते है।

गरासिया जाति का प्राचीन इतिहास और उत्पत्ति का विस्तार से विवरण नहीं मिलता। दंत कथाओं के अनुसार 'गरासिया' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के गृह+ऋषि=गृहषि शब्द से हुई बताते है। जिसका अपभ्रंश आज ग्रासिया, गरासिया, गराइया आदि बने। ऋषि पर्वतों और वन में तपस्या करते थे तो इनकी सेवा और रक्षा के लिये क्षत्रिय लोग जंगल में गृह बना कर रहते जिनको 'गृहऋषि' कहते थे। उन्ही की संतान 'गरासिया' कहलाई। कर्नल टॉड के मतानुसार गरासिया शब्द 'गवास' से बना। ये राजपूतों से ही निकले पर उनसे नीचे गिर गये अतः 'गिरासिया'' कहलाये। यह लोग एक ग्रास (भोग) के अधिकारी बने इसलिये भी 'ग्रासिया' कहलाये। गुजरातमें 'भूस्वामयों' को आजभी गरासदार या गरासिया कहते है । कुछ लोग यह भी मानते है कि गरासियो को 'गिरीवासी (पर्वतवासी)' होने से भी इन्हे गिरासिया कहा गया। यह पर्वत और वनांचल के पूर्ण जानकार होते है। भील और गरासियों का शारिरीक गठन और रंग रूप (आकार-प्रकार) में अधिक अंतर नहीं होता। भील नाटे कद के और इकहरे बदन के होते है। रंग में अधिक श्यामवर्ण होते है। भीलो का चहरा (शक्ल)लंबा, नाक छोटा तथा गाल चिपके होते है। पर गरासिये लंबे व रंग में कम काले होते है, चहरा गोल होता है। गरासिया स्त्रियों कद में छोटी अर चहरा भरा और सुंदर होता है। रंग भी कुछ गोरा (गेहूआं) होता है। गरासिये स्वभाव से भोले भाले, ईमानदार, वचन के पक्के और परिश्रमी होते है। एक अकेला गरासिया कुआ खोद लेता है। एक गीत में गरासनी अपने पति से कहती है कि साही बांध खोदने के लिये ठेके (कोन्टेक्ट) पर ले लो। झूठ, धोखा और कपट करना ये नहीं जानते। ये लोग जंगल की पैदावार, खेती और मजदूरी से अपना खर्चा चलाते है।

मेरे मतानुसार तो 'आर्य' मेसोपोटामिया या मध्यएशिया से नही आये, यह अरावली में ही जन्मे थे। 'अरावली' शब्द भी 'आर्यावली' से बना लगता है। आर्य अरावली की लंबी श्रृंखला में फैल गये इसलिये इसे 'आर्यावली' कहा गया जो आगे अपभ्रंश हो कर 'अरावली' बन गया। यह हिमालय से भी प्राचीन पर्वत है।

आदिवासीयों का लोक साहित्य ही पृथ्वी का प्रथम साहित्य है। लिखित तो हजारो वर्षो पश्चात आया। प्रेस का आविष्कार तो उससे भी बाद में हुआ तब छपा। इसलिये आदिम साहित्य (वाड़मय) के शोध की अत्यन्त जरूरत है। इसे शोध अथवा आविष्कार कहा जा सकता है।

यह आज के समय की पुकार और युग की मांग है जिसे पूरी करनी होगी। इससे साहित्य और इतिहास में एक नया अध्याय खुलेगा। आज तक इक्के दुक्के साहित्यकारोने इस पर कलम उठाई है और वह भी आंशिक एवं आधी अधूरी। वह भी भील और मेणो पर ही लिखा गया, गरासियों पर नहीं। इसलिये यह एक अछूता विषय है इसलिये पिछड़े, दलित एवं उपेक्षित आदिवासी गरासियों के लोक वाङ्मय और संस्कृति को प्रकाश में लाने के लिये यह दुष्कर कार्य हाथ में लिया।

इनकी बोली में उनके गीत, भारथ, वार्ताएँ, मौखिक नाटक, ख्याल, रम्मत, कहावतें, महावरें, शकुन, स्वप्न, जडी-बूटी का ज्ञान, देवता, वीर, भोपा, मोगा, पितर, भूत, पलीत, जादू, मंत्र तंत्र आदि सभी मौखिक रूप से स्मरण रखते है और इनका उपयोग करते है। यह कभी समाप्त न होने वाले ज्ञान को बड़े यत्न से सुरक्षित रखते है।

लोक की सच्ची संस्कृति जनता के कंठो में बस्ती है। 'लोक' शब्द बहुत प्राचीन समय से चलता आया है। वेद, उपनिषद, गीता आदि समस्त आर्ष ग्रंथो में इसकी व्याख्या हुई है[1]। डा. वासुदेव ने लिखा है - लोक अपने जीवन का विशाल समुद्र है। इस में भूत, भविष्य और वर्तमान तीनो सम्मलित रहते है। 'लोक'राष्ट्र की संस्कृति का अमर स्वरूप है, जीवन का सार, आध्यात्मिक शास्त्र है[2]। समाज में 'नागरिक' और ग्रामिण दो संस्कृतियां है। 'लोक में दोनो का संगम ही होता है। नारायण सिंह भाटी लिखते है कि - ''मरूभूमि की सौरभ की ताजगी, जो इस लोक साहित्य में रची-पची है वह महान प्रबंध ग्रंथो में भी नही है और 'ख्यातों' में खूब खोज करने पर संभव है मिले। यह प्राचीन होते हुए भी ताजा लगता है। इसका न रंग फीका पड़ा है, न स्वाद मे अंतर आया है। यह यहां के निवासियों की 'रागात्मक प्रवृत्तियों' का भंडार है और लिपि बद्ध नहीं होते हुए भी इतिहास को सुरक्षित रखा है ।''

लोक एक दृश्य है - अनेको आँखों के 'बिम्वों' की एक श्रृंखला है। मै भी इनका प्रत्यक्ष दर्शी हूँ - प्रत्येक बिम्ब को देखा-परखा है। प्रत्यक्ष से बड़ा प्रमाण होता भी क्या है? परन्तु लोक की विशाल विराट दृश्य लीला में प्रत्येक बिंब बदलता रहता है पल-प्रतिपल। लोक में सब कुछ नाशवान है फिर भी वह सच है, सनातन सच। नाशवान हो कर भी शाश्वत हैं। यदि लोक नहीं होगा तो सनातन की कल्पना

ही निराधार सिद्ध हो जायेगी। क्योंकि लोक में जीवन है, जीवन में प्राण है। प्राण ही प्रमाण की कसौटी है। सच्च-झूठ भी यही लोक है। इसलिये लोक मात्र प्रमाण ही नहीं, प्रमाणिकता की कसौटी भी है। लोक परिवर्तनशील रूप में भी सनातन है। शाश्वत है। सत्य है। वातावरण के अनुसार इसका स्वरूप बदलता है।

लोक एक संगीत है - प्रत्येक बिंब, किसी दृश्य, रंग या किसी लय विशेष का अंश है, संगीतमय है। विशेषता यह है कि गायक अदृश्य है। संगीतकार नेपथ्य में है - अगोचर। मात्र उसका स्वर सुनाई देता है- कभी कभी तो केवल अहसास ही होता है, अनुभूति ही होती है। नाद की गोद में सो जाय तो हम महागान में रम जाते है। घुलमिल जाते है। पौर-पौर अनहद के आलाप का हिस्सा हो जाता है। कानों का तब अर्थ ही नहीं रहता।

लोक में पूर्णता है - कहीं भी कुछ भी अपूर्ण नहीं। जो जहाँ जैसा होना था, वैसा ही है। प्रत्येक जर्रा, पत्ता, फूल, वृक्ष, पर्वत, झरना तथा नदी आदि अपने आप में पूर्ण है, पूर्णता से परीपूरण है। हर वस्तु की अपनी एक स्वतंत्र सत्ता है। किसी को किसीसे कोई शिकायत नहीं लोक स्वाधीनता, स्वतंत्रता तथा सहजीवन की सबसे बड़ी विद्याशाला है। पूरे ब्रह्माण्ड में ऐसी दूसरी शाला कहीं नहीं है। प्रत्येक अस्तित्ववान इकाई पूर्ण स्वाधीन, पूर्ण स्वतंत्र और दूसरी इकाई की स्वतंत्रतासे कोई शिकायत नहीं। सम्पूर्ण मानव-समाज के लिये लोक एक विशाल पठशाला है - सहजीवन की, स्वाधीनता की, स्वतंत्रता की। करोड़ों वनस्पतियाँ साथ साथ उगती है। सभी जड़ी बूटीयों के, पूरे पंचोंगों के गुण-धर्म और तासीर को बचाये रखना सरल नहीं है, फिर भी स्वतः सुरक्षित है सब कुछ।

लोक एक मंजूषा है - यह लोक अन्वेषित ज्ञान और अनुभूत सत्यों की एक विराट मंजूषा है। सब कुछ संजो कर रखा है - अलौकिक से जो गोचर भी है, अगोचर भी। सूक्ष्म तरंगो के रूप में सर्वत्र विद्यामान है। हर चराचर को स्पंदित करने के लिये करोड़ो वर्षो की तपस्या से अन्वेषित ज्ञान और सत्य की वे सूक्ष्म ध्वनि तरंगे ऊर्जा तथा उष्मा से परीपूर्ण है। सकल ब्रह्माण्ड में सारा नर्तन उनसे ही संचालित है। प्रतिपल सृजन को समर्पित है वह नर्तन। इसमें कहीं संहार है तो कहीं सृजन।

लोक का मार्ग विद्या का मार्ग है - कण कण आलोकित है। लोक, आलोक में निहित है और आलोक लोक में। इसी लिये पुनरपि जननम् पुनरपि मरणम् । का जप 'भज-गोविन्दम' के साथ गूंजता है।

'फोक' की पाश्चात्य अवधारणा भारत के 'लोक' से भिन्न है। लोक न तो प्राचीनता का बोधक है, न पिछड़े पन का, न शास्त्र विरूद्ध है बल्कि शास्त्र पूरक है।

डा. इन्द्रदेव लिखते है - 'भारत में लोक वार्ता' अब भी सांस्कृतिक-परम्परा का महत्त्वपूर्ण अंग है..... कृषक सभ्यता की लोक संस्कृति और परिष्कृत संस्कृति से निरंतर आदान प्रदान व क्रिया-प्रतिक्रिया होती रहती है..... नगरीय केन्द्रों से सम्पर्क लोक संस्कृति के लिये मूलतः बाधक नहीं साधक है।'

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते है - 'लोक' शब्द का अर्थ 'जनपद' या 'ग्राम्या' नहीं है, बल्कि नगरों व गाँवों में फैली हुई वह समूची जनता है जिनके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पुस्तकें नहीं है। बल्कि पुस्तको का आधार वह स्वयं है।'

विशुद्ध लोक तथा परिष्कृत नागर संस्कृतियों के आदन प्रदान की बात एक ऐतिहासिक तथ्य है। बल्कि इन संस्कृतियों के बीच के पुल रहे है। डा. इन्द्र देव लिखते है - 'लोक संस्कृति का मात्र ग्राम्य संस्कृति नहीं कहा जा सकता' रामनरेश त्रिपाठी का मत है कि 'लोक गीतों को ग्राम्य गीत कहना उचित ही है। गीत तो गाँवो की संपत्ति है। शहरों में तो वे गये है, जन्में नहीं। गाँवो का यह गौरव है।'

लोक वाङ्मय का पूरा आनन्द लेना हो तो दिमाग समाजशास्त्री का और दिल रसिक शिरोमणी का चाहिए। रससिक्त मन और वाणी सिद्ध प्रज्ञा हो। राय आनन्द कृष्ण के मतानुसार प्रत्येक जीवन परम्परा में नगर और ग्राम्य उनकी संस्कृति के दो छोर है। आज लोक संस्कृति का स्थान 'पापुलर संस्कृति' ले रही है। आज समस्त प्रकार के प्रदूषग से सर्वाधिक खतरनाक प्रदूषण 'सांस्कृतिक प्रदूषण' है। लोक अर मार्गी (सास्तरीय) अपनी कला के दो पांव है। जिन पर हम खड़े है। जो अलंकार प्रधान साहित्य और कला मार्गी रूप (शास्त्रीय) धारण करती जाती है।

डा. अय्यप्प पणिकर का लेख 'आदिवासी कथा-आख्यान' गहन अध्ययन का प्रमाण है। आपने आदिवासी समूह के साथ हुए अन्याय, आदिवासी कथाओं तथा कथा-गीतों के विविध आयामों और उनके जीवन में अवस्थिति पर अच्छा प्रकाश डाला है। इसके अतिरिक्त वे हमारा ध्यान गाथा सप्तशती और जातक कथाओं जैसे लोकसाहित्य के शास्त्रीय अंश की ओर आकर्षित करते है। लेकिन एक समय हम सभी आदिवासी थे और सभी भाषाओं में प्रथम कथाकार अथवा गीतकार आदिवासी ही होगा तथा वाल्मीकि, व्यास तथा शुक आदि भी आदिवासी समूह के घटक है। आदिम और आदिवासी का अंतर हमें समझना होगा। पणिकर के शब्द में - 'विदेशियों के आगमन से (के) पूर्व (से) अपने ही देश में रहनेवालो तथा (आज भी) वनो में रहने वाले, व्यवस्थित समाज से छिन्न-भिन्न समूहों को ही आदिवासी कहना चाहिए,

वरना तो आदिवासियों के देशी या विदेशी उत्पीड़कों के पूर्वज भी कभी न कभी कहीं न कहीं आदिम और आदिवासी ही रहे होगे।

श्री कोमल कोठारी ने 'शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत' लेख में अनछुए बिन्दु उठाये है। वे लिखते है - हर प्रकार का, देश काल का संगीत, कुछ कर्ण प्रिय, संगीतोपयोगी ध्वनियों का कुशलतापूर्वक किया गया एक संयोजन है, जिसमें अक्सर शब्द और लय का भी योगदान होता है। लोक या देशी संगीत में यह संयोजन नैसर्गिक रूप से होता है जबकि शास्त्रीय या मार्गी संगीत में यही काम नियमों के तहत होता है - इस कारण शास्त्रीय संगीत में अधिक गहराई, अधिक विस्तार और अधिक प्रभावोत्पादकता की संभावना बनती है।

लोक और शास्त्र के अंतर्सम्बन्धों का एक महत्वपूर्ण पहलू संगीत से संबंध रखता है। शास्त्रीय संगीत का जन्म लोक संगीत से हुआ है। कोमलदा लिखते है कि 'लोक गीतो में अनेक राग रागनियों की छाया है।' कुमार गंधर्व का कहना है कि हम लोक धुनों में रागों को छुपा हुआ पाते है .....। शास्त्रीय राग लोक धुनों में छुपे हुए रागों का विकसित स्वरूप है। इन्हीं धुनों से साहित्य रागों का विकास हुआ। लोकगीतों में न कोई विशिष्ट स्वरावली या उसका खण्ड या चलन या न्यास संबंधी कोई खटका होता है और शास्त्रीय संगीत को उभार कर, कुछ जोड़ तोड़ कर नये राग का स्वरूप दे देता है जैसा कि कुमार गंधर्व ने अपनी धुन उगम रागो में किया परन्तु यह कहना भी न्यायसंगत नहीं होगा कि सारे शास्त्रीय राग ऐसे ही जन्में होगे। विशुद्ध शास्त्रीय तरीके से कई नये राग भी बनते है।

कुछ (सब नहीं) राजस्थान की पेशेवर जातियाँ जैसे लंगा, मांगणीयार, ढोली-डूम के गायन-वादन में कुछ शास्त्रीय जैसे तत्वों का समावेश तथा कुछ रागो या रागनामों का कॉन्शस उपयोग भी अति रोचक विषय है। यह आंशिक शास्त्रीयता या तो पीढ़ी-दर-पीढ़ी पेशेवर साधना से उपजी है या फिर आसपास उपस्थित शास्त्रीयता के प्रभाव से उत्पन्न हुई है। इस किंचित शास्त्रीयता एक पक्ष किसी राग या क्षुद्र राग को पहिचानना और उसका नाम लेकर पेशा करना है। इस संदर्भ में सबसे महत्त्वपूर्ण और आम तथ्य मांड, आसा, सूब, सामेरी - 'रागो' को उसका नाम ले कर पुकारा जाता है। फिर मांड भी चार प्रकार से गाई जाती है। इस संदर्भ में कोमल कोठारी का मत है कि इन लोक गायको का संगीत मुख्यतया छंदगान के समान होता है जिस में दोहा और सोरठी का बाहुल्य रहता है..... और इन दोहो को विभिन्न प्रकार से गाने की शैलियो या लोकरागो ने राग जैसे स्परूप और नाम भी ग्रहण कर लिये। इन रागो एवं

गायन शैलियों को विशिष्ट स्वरूप दिया - वीलावत, धनाश्री, गूंडमल्हार, जोग (जोगिया) गाते है। चारो मांडो में गीतों के प्रारंभ में दोहे बोलते है। इन राग-रागनियों का प्रयोग भक्ति संगीत में भी होता है। विजय वर्मा ने यह बातें अपने एक लेख में विस्तार से दी है।

अक्सर कहा जाता है कि भीलो के गायन में सामगान का पुट है। लोकमानस पर पड़े प्रभावो को इतिहासिक घटना जितना ही महत्त्व दिया है। लेकिन तथ्य और इतिहास को प्रभावित करने वाले तत्वों में तो अंतर करना ही होगा - जैसे रस्सी को सांप समझ कर भागना पड़े तो रस्सी का सांप होना नहीं है परन्तु भागना इतिहास जरूर है।

डा. श्यामचरण दुबे अपने आलेख 'लोक कलाओं का भविष्य' में लिखते है - 'लोक कला अचल या जड़ नहीं है। उसे फ्रीज नहीं कर सकते और उसके शुद्ध और मूल रूप की खोज व्यर्थ है।'

हमारी पारम्परिक संस्कृति और कला के कुछ अंश जैमे हस्तशिल्प और लंगो-मांगणिहारों का संगीत भी आलम्बन पा रहे है।

इतिहास और लोक आख्यान में विवाद की चर्चा डा. चन्द्रप्रकाश देवल ने 'इतिहास का लोक और लोक का इतिहास' में की है - वे शोधपूर्ण शास्त्रीय इतिहास के मुकाबले लोक से रचित समानान्तर इतिहास के इतिहास का स्थान लेने की बात करते हैं। 'समानन्तर' इतिहास का इतिहास होना आवश्यक है। शम्पाशाह अपने लेख 'जनजाति सांस्कृतिक अस्मिता' में लिखती है - 'भले ही लोक साहित्य और लोक कला को सामूहिकता का उत्पादन माना जाय, लेकिन आधुनिक कला के क्षेत्र की भांति, उन लोगो से जुड़े क्षेत्रों में भी, 'कडी जोड़ने' का काम, जिसके कारण परम्परा लगातार अपने को नया करती रहती है। दूसरी बात मानव शास्त्रियों द्वारा जनजातिय व लोक कलाओं में जितना फासला बताया जाता है, वास्तव में उतना है नहीं। तीसरी बात किसी वास्तु शिल्प का स्वरूप उनके बनाने वाले के कौशल पर तो निर्भर करता है, लेकिन साथ ही, वह इस बात पर भी निर्भर करता है कि उपयोग कौन करेगा।

संभव है इक्कीसवीं सदी में होनेवाला सामाजिक विकास एवं औद्योगिकरण लोक समुदायों तथा संस्कृति का वैसा ही विनाश करें जैसा अट्ठारवीं और उन्नीसवीं सदी में पश्चिमी योरोप के देशो में हुआ था अथवा जीवन्त लोक परम्पराओं की परिपक्व आधुनिक शक्तियों की अंतरक्रिया द्वारा लोक संस्कृति विनष्ट होने के बदले अपनी ही

जड़ो पर विकसित हो कर एक नये चरण में प्रवेश करें। इसका एक अच्छा अदाहरण शम्पाशाह ने दिया कि - 'रेबारी स्त्रियों को कौड़ियों के स्थान पर प्लास्टीक के बटनों और पोलीथीन की थैलियों का सार्थक व सौन्दर्यपूर्ण उपयोग करते देखा है।'

'वह दिन कब आयेगा जब हम सनातन को लोक के साथ, लौकिक को शास्त्रीय के साथ, विज्ञान को संस्कृति के साथ, शिक्षा को संस्कारों के साथ और दर्शन को साहित्य के साथ रख कर साधना करनी सीखेगे।'

प्रस्तुत पुस्तक के कुछ गीतों में ऐसे प्रसंग आये है जो हमारे शास्त्रों से मेल नही खाते, यथा-लक्ष्मण और सीता को नग्न अवस्था में राम का देखना, बंदरिया के बच्चे को छाती से लगा देख कर सीता को लव का ध्यान आना, सीता, राम व लक्ष्मण द्वारा खेती करना आदि। यह प्रभाव है आदिवासी जीवन एवं संस्कृति का - गरासिये एक ही झोपड़ी में सभी नंगा सोते है, कुटिया में प्रकाश नहीं होता। इन वनवासियों के मित्र वृक्ष एवं पशु-पक्षी ही होते है तथा इन गीतों में कहीं भी दशरथ, कैकई आदि का नाम नहीं आता। इसी प्रकार भीम भी पांडवो का भाई ही है या अन्य कोई उसके जैसा, यह आशंका होती है।

'पइसा ओछा पड़िया' गीत भी एक समूह-गीत है अर्थात् गरीबी ब्यक्ति की समस्या नही, समीष्ठी की है। समाज की गरीबी और मजबूरी का प्रभाव है। हमारे 'पितर' और इनके 'मोगा' में अंतर है। पित्तर ये उसे कहते है, जिसका वंश नहीं चलता और मृत्यु हो जाती है परन्तु 'मोगा' में यह जरूरी नहीं होता।

तीर बनाने की भी इनकी अलग अलग विधि-विधान है - शेर, खरगोस, हिरन, तीतर आदि को मारने के लिये अलग-अलग तरह के तीर होते है जिसके आकार प्रकार एवं नुकीले अग्रभाग में अंतर होता है। प्रत्येक की बिलात स्वयं के बारह अंगुल के बराबर होती है, यह प्रमाणित है।

जहाँ तक 'गरासी' भाषा का प्रश्न है उनके शब्दों के उच्चारण के अनुसार लिखी है जो हिन्दी तथा राजस्थानी से कहीं कहीं कुछ भिन्न है जैसे 'स' को 'ह' (सूरज को हूरज) 'च' को 'स' (चौपा को मोपा), शब्द के प्रारंभ में 'अ' का 'अे' (हलदी का हेलदी), म्हू का मू तथा मांय का मां हो जाता है इसी प्रकार हस्व-दीर्घ मात्रा का भी अंतर है। इसमे हिन्दी की कई बड़ी मात्रा छोटी और छोटी बड़ी हो जाती है। इस बोली का व्याकरण नहीं लिखा गया अतः यह परिष्कृत भाषा का स्वरूप नहीं मिल पाया है। विद्वानों को मेरा यह नया प्रयोग अखर सकता है।

भारतीय भाषाओं में सैकड़ो ऐसी भाषाएँ है, जिनको भाषा होने की स्वीकृति नही

मिली, उन्हें केवल बोली ही माना जा रहा है। कई बोलियां विलुप्त होने के कगार पर है, इनका संरक्षण अनिवार्य है। 'गरासी' बोली भी उनमे से ऐसी ही एक है। अनेक बोलियाँ मात्र 'आदिवासी' नाम से ही जानी जा रही है जो जनजातियों की भाषाएँ है। उनका नामकरण तक नही हुआ परन्तु इन भाषाओं में आदिकाल से मौखिक रूप से साहित्य रचना होती आ रही है जिनमें महाकाव्य तक है। इनकी अपनी लिपि भी नही है।

अब तक गरासियों के जीवन पर लिखी दो छोटी छोटी पुस्तकें डा. सोहनलाल पटनी की 'आबू क्षेत्र के आदिवासी' (६२ पृष्ट) और डा. महेन्द्र भानावत की 'कुँवारं देश के आदिवासी' (१०२ पृष्ट) उपलब्ध है। एक बड़ी पुस्तक डा. बी.आर.मेहड़ा History of culture of girasias(२३८ पृष्ट) जो इनका शोध ग्रंथ है और सामाजिक जीवन पर है, आदिवासी लोक साहित्य पर नही है। गरासियों लोक साहित्य पर विस्तार से किसीने अब तक नहीं लिखा, यह एक अनछूआ विषय आब तक चला आ रहा है। इस पर यह प्रथम पुस्तक है।

लोक संस्कृति (गीतादि) लोगो के कठस्थ किये हुए साहित्य में जीवित है। इसलिये इसका ज्ञान अपूर्ण है। इस महासागर में समस्त शास्त्रों की नदिया समाहित होती है। लोक संस्कृति प्रकृति की गोद में पलती है और लोकजीवन का आदर्श है जो जन साधारण के आचार-विचार में झलकता है। 'लोक संस्कृति' वास्तव में आदिमानव की एक 'मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति' है। अनुभवों का कोष है चाहे वह दर्शन, धर्म, विज्ञान, चिकित्सा, इतिहास, नीति, साहित्य आदि के संबंध में क्योंन हो। इस लोक संस्कृति को तीन भागों में विभक्त कर सकते है।

१. लोक विश्वास और अंधविश्वास तथा रूढिया ।

२. रीति रीवाज और प्रथाएँ।

३. लोक साहित्य

लोक साहित्य लोक संस्कृति का ही अंग है। हम जो कुछ सोचते, करते, गाते, रोते, नाचते, चित्र चित्रित करते अथवा मूर्ति निर्मित करते हो, सब पर लोक संस्कृति की गहरी छाप रहती है, लोक साहित्य में इसका वर्णन मिलता है।

डा. सत्येन के मतानुसार इसमें दलित जातियों के आदिम साहित्य में रीति रीवाज नीति, कहानियाँ, गीत, कहावतें, जादू मंत्र, वशीकरण, टोटका, डोरा, ताबीज, मूठ, भूतिन, पितर, वीर, रोग, उपचार, शकुन, स्वप्न आदि के संबंध में आदम और अंध विश्वास आदि आते है। इसमें बपौती, शादी, रीति-नीति, त्यौहार, युद्ध, शिकार

तथा पशुपालन आदि सभी बातें सम्मलित रूप से गुंफित है। इसके साथ धर्म गाथाएँ, लोकगीत, दंतकथाएँ, पहेलियाँ, लोरियां, शाका (बैलेड) और अवदान (लीजेण्ड) भारथ आदि भी इनके विषय है[४]। लोकसाहित्य में गद्य-पद्य वाङ्मय (मौखिक साहित्य) आ जाता है। बच्चों के जन्मघुटी और लोरी गाने से लगा कर मुत्युपरांत गाये जाने वाले भजन एवं हरजस तक सभी समा जाते है। ऋतु परिवर्तन, कृषि कर्म के समय गाये जाने वाले गीत, प्रेम-व्यापार की कोमल कलियाँ और वृद्धजनों द्वारा सुनाई जानेवाली कहानियाँ, बच्चों के खेल में गाई जानेवाली तुकबंधियाँ आदि सभी इस लोक वाङ्मय के अंग है। यह विशाल-विराट महासागर है। यह साहित्य उतना ही स्वाभाविक लगता है जितना वन में खिला फूल अथवा नभ में उडान भरता हुआ पक्षी, और उतना ही सरल, स्वाभाविक एवं पवित्र जितना गंगा जल।

डा. श्याम परमारने लोक साहित्य के विस्तार का विवरण निम्नांकित प्रकार से दिया है -

'लोक साहित्य लोक (समाज) की सम्पन्नता और आत्मा की अभिव्यक्ति है, यह कभी समाप्त न होनेवाला महासागर है। इस प्रकार लोक साहित्य जनता का साहित्य, जनता के द्वारा और जनता के लिए मौखिक रूप से स्मरण (वाड़मय) रखा जाता है[५]।'

साधारण जन समाज जो सोचता है, अनुभव करता है उसकी अभिव्यक्ति तरह तरह से करता है। यही 'लोक वाड़मय' कहलाता है। नट या जोगी जाति के लोग भी लोकसाहित्य रचते बताते है। इसे मुख्य रूप से पांच भागों में विभक्त किया जा सकता है -

१. लोकगीत

२. लोकगाथा

३. लोककथा

४. लोकनाट्य

५. लोक सुभाषित

इन सबकी अनेक शाखायें है। केवल मात्र लोककथा की शाखायें उदाहरण स्वरूप दी जा रही है -

१. नीतिकथा

२. प्रेमकथा

३. दंतकथा

४. पौराणिक कथा

५. मनोरंजन कथा

६. व्रत कथा

लोक कथाओं में निम्नांकित विशेषताएँ होती है -

१. प्रेम का पूरा प्रभाव

२. अश्लील श्रृंगार

३. मूल प्रवृत्ति का गहरा रंग

४. मांगलिक भावना

५. सुखांतता

६. रहस्य, रोमांच, अलौकिकता

७. उत्सुकता की भावना

८. वर्णन की स्वाभाविकता

लोकसाहित्य को 'लोकवाङ्मय' कहते है क्योंकि यह लिखित नही होता, मौखिक याद रखा जाता है और 'लोक'के कंठोमें बसता है। परन्तु आदिवासी गरासिया वाङ्मय को मैने लोक वाङ्मय भी नही माना है, क्योंकि सभ्य नागरिको के लिखित 'साहित' को शास्त्रीय साहित्य और गाँवों के निवासी कृषकों के मौखिक साहित्य को 'लोक़ वाङ्मय' कहा जाता है, परन्तु आदिवासी गरासियों का साहित्य दोनो से अलग है। इसे न तो 'शास्त्रीय साहित्य'क़ह सकते न 'लोक वाङ्मय' कह सकते। यह तो केवल मात्र 'आदिवासी वाङ्मय'कहा जा सकता है - यह मेरा अपना मत है जो इसे तीसरे प्रकार के 'साहित्य' की श्रेणीमें रखता है। इसे गरासिया गीत, गरासिया कथा आदि कहना न्याय संगत होगा। इसे मात्र 'आदिवासी वाङ्मय' कहना उचित होगा। परन्तु चूंकी विद्वान इसे 'लोक वाङ्मय' ही मानते है इसलिये मैने भी कहीं 'लोक' शब्द का प्रयोग किया है और कहीं नहीं।

इसी प्रकार गरासियों की बोली का नाम करण संस्कार 'गरासी' लिख कर किया है। 'गरासी' नाम मैने सर्वप्रथम रखकर नवीन बोली की शोध की है। बोली इसलिये कि इसका व्याकरण एवं शब्द कोश नही है। व्याकरण-शब्द कोश में बांध कर संस्कारित करने पर वही भाषा बन जाती है। 'गरासी बोली' का यह प्रथम प्रयोग है जिसकी विवेचना भाषा वैज्ञानिको के लिये छोडता हूँ। कहीं कहीं 'गरासी' भाषा भी लिख दिया है पर है बोली ही। गरासियों की 'गरासी' भाषा में उच्चारण के अनुसार बार बार सुन कर, टेप करके, तदनुसार मैने देवनागरी लिपी में बांधा है। गरासी भाषा

में गीत, कथा, कोहनी (पहेली) औखाणाँ (कहावतें) हपनो (स्वप्न) मॉडला (गोदना), हीमेन (शकुन) आदि ज्यों के त्यों लिखे है। भूमिका अर स्पष्टीकरण में राजस्थानी भाषा के प्रयोग किया है जिसमें 'गरासी' बोली के कुछ शब्द सम्मलित किये है इसलिए राजस्थानी विद्वानों को खटक सकते हैं । जैसे कि 'में' या 'मांय' के स्थान पर 'मां' लिखा है। ऐसे अनेक शब्द है। यूं 'गरासी' बोली ई राजस्थानी का ही अंग (बोली) मैने स्वीकार की है।

सन् १९६६ में मध्यप्रदेश, १९६० में मणीपुर-त्रिपुरा और १९६१ में राजस्थान में सर्वप्रथम आदिवासीयों का सर्वे हुआ। फिर तो बंद दरवाजे खुले - इनके संग्राहलय, संस्थान खुले, राष्ट्रीय संगोष्ठिया-सेमिनार आयोजित होने लगे। कुछ योजनाएँ बनी।

इस ग्रंथ को लिखने में बहुत परेशानी हुई, कई कष्ट झेलने पड़े। मैं १९६५-६६ में बाली समिति में शिक्षा प्रसार अधिकारी था, जिसमें गरासियों का क्षेत्र आता है, इसलिये इस क्षेत्र में जाना आना होता रहता था। बस वही से गरासियों कि संस्कृति-साहित्य पर लिखने की रुचि जागृत हुई और लिखना प्रारंभ किया। मंद-मंथर गति से काम करता रहा और इनके जीवन को निकट से अवलोकन करने का अवसर मिला। फिर वहाँ से स्थानान्तर हो गया परन्तु लगन नहीं छूटी।

गरासियों पर लिखना बड़ा दुष्कर एवं विकट कार्य था। पहले तो अरावली पर्वत पर पहुंचने के साधन नहीं। रास्ते नहीं। पहुंच भी जाय ज्यों त्यों तो रात्रि विश्राम के लिये सुविधा नहीं। वहां कहां है सराय या होटलें ? फिर इनके एक दो किलो मीटरमें बिखरे बसे हुये एक एक घर। पैदल ही जाना पड़ता। कई दिक्कतें थी। फिर उनकी बोली कौन समझे ? वे अपना विश्वास भी नहीं करते। अपरिचित व्यक्ति पर शंका की सूई यदि घूमे तो वे हत्या तक करने में समय नहीं लगाते। वहां जंगल में आपकी कौन सुने ? कौन समझे ? यह अनेक समस्या से झूझते हुए मैने ३५ वर्षों में यह काम पूरा किया किया। कुछ संयांग की बात थी कि सन् १९६१-६२ में मैं सेवाडी गांव में अध्यापक था, वहां आदिवासियों का 'हॉस्टल' था जहाँ गरासियों के लड़के पढते थे। उनसे मेरा अच्छा परिचय था। वे अब (२०००ई.) गारासिया क्षेत्र में ही कोई शिक्षक है, कोई ग्रामसेवक है, कोई सरपंच है, कोई प्रधान है तो कोई दुकानदार है। इन लोगों का मैने विश्वास प्राप्त किया और यह कार्य कर सका, अनका पूरा सहयोग मिला। इन्होने मेरे लिये सुरक्षा, संपर्क, ठहरने एवं 'दुभाषिये' का काम भी किया। इनके सहयोग से सफलता मिली।

७० वर्ष की आयु में भुझे यह अद्वितिय ग्रंथ लिखने का गर्व है। पैतीस वर्षो की

लंबी साधना से बूंद-बूंद कर यह घड़ा भरा। जल भी परम पवित्र एवं अछूता। यह मेरी 'अग्निपरीक्षा'थी। मेरे जीवन की साध थी। मैं इस शोध ग्रंथ (पी. अेच. डी.) लिखना चाहता था पर वह तो नहीं कर सका परन्तु यह कार्य उससे भी अधिक महत्त्व पूर्ण समझता हूँ। और मुझे पूर्ण संतोष है क्योंकि यह विशाल विराट शोध की आशा पूर्ण करता है।

इसके लिये मैं माणिकलाल वर्मा आदिम शोध संस्थान उदयपुर भी गया परन्तु वहाँ भी भीलो और मेणों पर काफी काम हुआ है। गरासियों पर कुछ नहीं हुआ ब्रिटिश कांसिल लायब्रेरी को भी लिखा, वहां से भी पत्र सं. DEL/265/37 दि. २२-११-७९ के अनुसार 'नेगेटिव' उत्तर मिला। तब आखिर 'फिल्ड' में जाकर काम करने के अतिरिक्त कोई रास्ता नही बचा।

इनका संकलन-प्रकाशन का कार्य अत्यन्त दुष्कर है। साहित्य अकादमी ने यह बीड़ा उठाया है, भारत की जनजाति साहित्य तथा मौखिक परम्परा को सुरक्षित कर प्रकाशन की योजना बनाई है जो अनुकरणीय है। मुझे भी उनका पूरा सहयोग मिला, इसके लिये मै अकादमी और श्री गणेश देवी का आभारी हूँ - धन्यवाद।

मुझे इसके लिये अनेक आदिवासी गाँवो में अनेक बार जाना पड़ा, मुख्यकर पीपला, गोरीया, भीमाणा, बेरड़ी, बेड़ा, ठंडी बेरी, गरासिया कॉलोनी धाणेराव, नाणा, आबू, अंबाजी आदि। जिसमें सर्वाधिक योगदान चौपाजी गरासिया (७०) का मिला। इसके बार बार संपर्क करवाने एवं प्रेरित करने में श्री भंवरसिंहजी राठौड का सहयोग भी सराहनीय रहा - उनका भी आभारी हूँ। कुछ पी कर, मूड बना कर अर्ध नेत्र खुली मुद्रा में चौपाजी जब कथा कहते या गीत गाते और धारा प्रवाह ऐसे बोलते जैसे सरस्वती जिव्हा पर आरूढ हो गई है, लिखते हुए भी आनन्द आता पर पूरा आनन्द तो श्रोता भवरसिहजी मस्ती से उठाते। कई गीत ध्वनिमुद्रण और दृश्य-श्रव्य अंकन किये गये फिर लिखे गये। मौसम के अनुसार आनेवाले सामाजिक, धार्मिक उत्सवों जैसे होली, दिवाली, दशहरा, मेले तथा शादियों आदि पर गाये जाने वाले गीत, नृत्यादि सुने, देखे। इन गीतो में 'भारथ' (युद्ध) का भी वर्णन है। माननीय पद्म विभूषण कोमलदा और आदर जोग डा. लक्ष्मीमल सिंघवी दोनो बीमार होते हुए भी, बैठकर लिखनेकी शक्ति न होते हुए भी, भूमिका के दो शब्द लिख कर आशींवाद दिया, उन दोनो मर्मज्ञ विद्वानों और विश्वव्याख्यात साहित्यकारों का मैं हृदय से आभारी हूँ।

रूपायन संस्था के सौजन्य से इस पुस्तक में प्रकाशनार्थ चित्र प्राप्त हुए, इसके

लिये भी मै बिज्जी और कोमलदा का कृतज्ञ हूँ।

इस ग्रंथ की अनेक विशेषताएँ है -

१. इस पुस्तक के द्वारा गरासिया साहित्य लिखने का श्रीगणेश हुआ है, जो एक मौलिक काम हुआ है। यह शोध ही नहीं आविष्कार भी है।

२. पांच भाषाओं (गरासी, राजस्थानी, हिन्दी, रोमन और अंग्रेजी) में एक साथही (एक ही पुस्तक में) प्रकाशित होने वाली यह सर्व प्रथम पुस्तक होगी जो वाद में छपेगी।

३. गरासी भाषा में गरासियों का साहित्य सर्वप्रथम प्रकाश में आ रहा है। मैने इस भाषा का नामकरण संस्कार किया है और भीली की जोड़ में इसे गरासी कहा है। यह आपको पसंद आयेगा।

४. मैने इसे 'लोक साहित्य' नहीं माना है, केवल आदिवासी गरासिया (गरासी) साहित्य (आदिम साहित्य) माना है।

५. आज इसका राष्ट्रीय ही नहीं आंतरर्राष्ट्रीय महत्व स्वीकारा जा रहा है। इससे युग और समय की मांग पूरी होगी और साहित्य की महत्त्वपूर्ण कमी पूर्ति होगी।

मै इसके लिये श्रीमान जी. एन. देवी और साहित्य अकादमी, बड़ौदा और साहित्य अकादमी दिल्ली को धन्यवाद दूंगा कि मेरा यह प्रोजेक्ट स्वीकृत कर प्रकाशन की व्यवस्था की।

दशहरा २००५ — अर्जुनसिंह शेखावत

भासा अर गरासी बोली

भासा मानवी रै विकास रौ घणा महताऊ साधन। इणरै जरियै मिनख रौ समाज सूं संबंध जुड़ै। भासा रै पांण दूजां रा भाव अर विचार समझै-समझावै। इणसूं आपरी विचार सगति वधै। भासा अर विचार अेक इज चीज रा दो पख है[1]। बुध रै विकास नै भासा रै ग्यान अर सबदां री संख्या सूं कूंतीजै। भासा रै पांण इज मिनख आपरौ भौतिक अर सांस्क्रितिक वाधापौ कर्यौ। मांनखां रै विकास रै साथै साथै भासा रौ पण विकास व्हियौ। भासा री धारोळां सिस्टि रै स्रीगणेश सूं सरू व्हि अर लगोलग बैवती अर वधती गी। भासा रै सरूपोत रै कीं रूप रा नमूना आदिवासियां री भासावां में जोया लाधै। आ मानखां री मूळ भासा ही।

टैम टैम माथै ई भासावां नै 'व्याकरण' अर 'कोशों' रै बंधण मांय बांधण रा जतन कर्या पण फेरू वा बंधण तोड नवी बोली बण जावै। औ धारो जुगां सूं चालतो रयौ। भासा वैग्यानिक इणनै 'टकसाळी' रूप देवणनै खप्या पण वे पार नीं पाय सकिया। सवा सौ बरस पैली जोधाणा रा रामकरणजी आसोपा 'मारवाड़ी भासा री व्याकरण' छापी। सन् १९१४ मांय तैस्सीतरी ई सरावण जोग काम काढ्यौ।

इणरा अलेखू कोस छप्या - डिंगळ कोस, हमीरनाभमाळा, नाम माळा, मुरीरदान रौ डिंगळ कोस, अेकाक्षरी कोस, अनेकाक्षरी कोस आद। कोस लिखण रौ काम अेक जणा रै बूता रौ कोनी, 'भेळप में जतन' जरूरी। नैं सूं छैलो अर सांगोपांग कोस सीतारामजी लालस लिख्यौ। सन् १९३१ मांय राजस्थानी बोलणियां अैक किरोड़ चालीस लाख कूंतीज्या हा जिणमें आदिवासी भासा भेळी कोनी। गरासिया भासा रौ इणमें नाव ई कोनी गिणायौ। डा. ग्रियसन भीली भासा नै राजस्थानी सूं न्यारी मानी है[1]। म्हैं भीली अर गरासी नै राजस्थानी री इज बोली मांनू चूंकी भासा वैग्यानिकता अर व्याकरण री दीठ सूं न्यारी कोनी लखावै। म्हैं गरासियां री भासा नै पेलमपोत भीली रे जोड़ै 'गारसी भासा' (बोली) नांव राख्यौ है अर इण भासा नै पैली वाळ कागज माथै मांडी है, लिपि म्हैं देवनागरी इज राखी है। इण माथै पाड़ौसी बोलियां रौ पण गाढौ रंग चढ्यौ, जिणमें खास है गोडवाड़ी अर गुजराती। भीली अर गरासी भासा खासी मेळ खावै। दोन्यूं राजस्थानी सूं

इज निसरी। औ म्हारौ आपरौ मत है। मेणा जाति कोई टैम आदिवासी रई ही पण आज आदिवासी कोनी, वे गामां मांय बसग्या, धुलमिळ गया। राजस्थानी भासा परवार री भासावां रौ अेक रेखा चितरांम देखण जोग (पृष्ठ क्रं. ११)

भारत री 'आर्य भाषाओं' रै इतियास रौ पूरों खुलासौ कोनी मिळै। थोडी घणी रूपरेखा 'ऋग्वेद' में इज आज ताई मिली लाधी। की विद्‌वान अनार्य भासावां नै छोडनैं सिंसार भर री भासावां रौ मूळ 'वैदिकभाषा' नै इज मानै। वैदिक सूं संस्क्रित, संस्क्रित सूं प्राकृत अर प्राकृत सूं मागधी, सौरसेनी अर डिंगळ (राजस्थानी) नीसरी। राजस्थानी रौ धरपैलड़ौ नांम मरूभासा हो पछै डिंगळ नांव पाड़यौ। डिंगळ मांय धाकड़ साहित सिरजण व्हियौ। तेस्सितौरी अर ग्रियसन सौळवी सायकू तांई आथूणी राजस्थानी अर गुजराती नै अेक इज मानी है"। राजस्थानी सूं भीली अर गरासी रौ गन्नौ बेन-बेटी रौ है।

गरासी बोली अर सबद

वनवासी गरासियां जाति री आपरी खुद री न्यारी बोली है। इणांरी बोली समझणी दरेक रै बूता री वात कोनी। हालतांई इण भासा रौ साहित, सबद कोस, व्याकरण, लिपि, भासा-विग्यान अर् इतियास कोनी लिखिज्यौ। कोई विद्वान इण माथै अंट ई नीं खेंच्यौ। हरफ ई नीं हारीयौ/इयांरी लोक कथावां, लोकगीत, औखाणां अर संस्क्रिति आद हाल इणारै कंठां मांय इज रकेळ्यौड़ा अर अवेरियौड़ा पड़्या है। औ अहम्मै 'संक्रांतिकाल' है। वजै है कै नवी पीढी मजूरी खातर आडवळा रै गोडमांय बस्या मोटा गांमा, कस्बां, स्हैरां मांय आय री है। भौ भागत-भागत भागे है, अठै कीं बस्तियां ई बसी है। उणारै जमाना री हवा लाग री है अर गरासिया री भासा, संस्क्रिति, पोसाक, रीत-रीवाज, रैहणी-करणी अर आचार-विचार मांय भारी बदळाव आय रयौ है। इण वास्तै सैकड़ू बरस री संच्यौड़ी आदिवासी संस्क्रिति अर साहित री रूखाळी राखणी, इणनै संजोयनै राखण री काजू घडी आयगी, नीतर आ हर हमेस सारूं खतम व्है जावैला। इण वास्तै औ जौखमाल अर जरूरी काम म्हैं हाथै झेल्यौ।

इण आदिवासी सहित नै नीं तो शास्त्रीय साहित कैय सका नी लोक साहित। लोक साहित खास करने 'कृषक समाज' रौ साहित है। नगर रै नागरिकां रौ सभ्य समाज रै साहित नै साहित (शास्त्रीय) केवै। औ दोन्यूं सूं न्यारौ नकालो साहित है, इणनै फगत 'आदिवासी साहित' (गरासिया साहित) इज कैय हका। आ म्हारी मानीता है, अर इण भासा नै म्हैं 'गरासी' भासा रौ नांव दियौ जकौ भीली भासा रै जोड़ में बिरोबर फब्बैला। औ नांव भासा वैग्यातिक विदवानां नै ई दाय पण आवैला। इणरै साहित सारूं १९७२ सूं सन् २००३ तांई ३० बरस भाखरां मांय भटकता सैं भाटा भांगणां पाड़्या जरै औ लाटो कारज सरियौ। इण

काम में हाथ घालणौ लाय में कूदणौ हो, केई जणा म्हने बरज्यों पण म्हैं हिम्मत नीं हारी। गरासियां रै साहित पर सांगोपांग आ पै'ली पोथी है, आदिवासी साहित री पैलो फाल है।

गरासी भासा रा कठैई कोई खोज नीं लाधा, पागी ज्यूं घणी खोज करी पण कठैई थाग नीं लागौ। इण भासा रै पेटे कोई लेखो कठैई नी लाधौ। उदीधापुर सूं लगा'र गुजरात रा पंचमहल जिला ताई विस्तारा सूं पसरियौड़ा गरासिया अेक जिसी बोली बोले। आ मरूगूजरी (राजस्थानी) सूं नेड़ी गन्नौ राखै। भारत में गरासिये दूजी जगा कठैई कोनी। पूरा भारत मांय फगत आडावळा मांय इज मिळै।

भाषा और गरासी बोली

भाषा मानव विकास मे अति महत्त्वपूर्ण साधन है। भाषा के द्वारा व्यक्ति का संबंध समाज से जुड़ता है। भाषा से ही दूसरे के भाव-विचार समझे जाते है और अपने विचार समझाये जाते है। इससे मनुष्य की विचारशक्ति में वृद्धि होती है। भाषा और विचार एक ही वस्तु के दो पक्ष है'। बुद्धि का विकास को भाषा के ज्ञान और शब्दों की संख्या से आँका जाता है। भाषा के बल पर मानव ने अपना भौतिक और सांस्कृतिक विकास किया। मानव के विकास के साथ भाषाओं का भी विकास हुआ। भाषा की धारा सृष्टि के प्रारंभ से शुरु हुई और लगातार बढती गई। समय समय पर इसे 'टकसाली स्वरूप' देने का प्रयास किया। भाषा को 'व्याकरण' और 'कोशो' में बांधने का प्रयत्न किया परन्तु पुनः बंधन मुक्त हो कर नूतन बोली का यह सृजन करती रही। एक सौ पच्चीस वर्ष पूर्व रामकरण आसोपा ने मारवाडी भाषा की व्याकरण प्रकाशित की। १९१४ में तैस्सीतोरी ने भी इस संदर्भ में प्रशंसनीय कार्य किया।

इसके अनेको कोश प्रकाशित हुए डिंगल कोश, हमीरनाम माला, अवधान माला, नाम माला, मुरारीदान का डिंगल कोश, अनेकार्थी एवं एकाक्षरी कोश आदि। १९३१ में राजस्थानी बोलने वालो की संख्या एक किरोड चालीस लाख आंकी ही, जिसमें आदिवासी भाषा सम्मलित नहीं थी। डा. ग्रियसन ने भीली भाषा को राजस्थानी से अलग मानी'; मैं भीली-गरासी को राजस्थानी की ही बोली मानता हूँ क्योंकि भाषा वैज्ञानिकता और व्याकरण की दृष्टि से अलग नहीं है। मैने ही सर्व प्रथम इस भाषा का नामकरण भीली भाषा के समानान्तर 'गरासी भाषा' किया है और इस भाषा को सर्वप्रथम कागज पर लिखी है। लिपी मैने देवनागरी ही रखी है। इस पर पड़ौसी बोलीयों का भी गहरा रंग चढा हुआ है जिसमें मुख्य है गोडवाड़ी (राजस्थानी) और गुजराती। भीली और गरासी भाषा काफी मेल खाती

है। दोनो राजस्थानी से ही निकली है, यह मेरा अपना मत है। मेणा जाति किसी समय आदिवासी रही है परन्तु आज यह आदिवासी नहीं है। वे गाँवो में आ बसे है और घुलमिल गये है। राजस्थानी भाषा का परिवार का एक रेखाचित्र दृष्यव्य है। (पृष्ठ क्रं. ११)

भारत की 'आर्य भाषाओं' का स्पष्ट इतिहास नहीं मिलता। थोड़ी बहुत रूपरेखा 'ऋग्वेद' में ही उपलब्ध है। कुछ विद्वान अनार्य भाषाओं को छोडकर विश्व भर की सभी भाषाओं का उद्गम 'वैदिक भाषा' से ही मानते है। वैदिक से संस्कृत, संस्कृत से प्राकृत, प्राकृत से मागधी, सौरशेनी और डिंगल (राजस्थानी) निकली है। राजस्थआनी का प्रारंभिक नाम 'मरू भाषा' था फिर डिंगल नाम पड़ा। तैस्सितौरी और ग्रियसन सौलवीं शताब्दी तक पश्चिमी राजस्थानी और गुजराती को एक ही माना है[४]। राजस्थानी से भीली और गरासी भाषा का रिश्ता बहिन-बेटी जैसा है।

गरासी बोली और शब्द

गरासियों की अपनी स्वयं की बोली है। इसकी भाषा समझना प्रत्येक के वश की बात नही है। अभी तक इनका साहित्य, शब्द कोश, व्याकरण, लिपि, भाषा विज्ञान और इतिहास नहीं लिखा गया है। इनकी लोक कथाएँ, लोकगीत, कहावते, मुहावरे आदि अभी तक इनके कंठो में ही सुरक्षित रह पाये है, जो अब समाप्त प्रायः हो रहे है। यह अब संक्राति काल है, कारण नई पीढी के युवा वर्ग दरिद्रता के कारण मजदूरी के लिये अरावली की तलहटी में बसे बडे कस्बो-शहरों की ओर पलायन कर रहे है और उन पर अधुना युग का प्रभाव जम रहा है और उनकी भाषा, संस्कृति, पोशाक, रहन-सहन तथा आचार-विचार में भारी परिवर्तन आ रहा है। इसलिये युगों से संजोई इस संस्कृति की रक्षा करना अनिवार्य हो गया है। यही समझ कर लिख रहा हूँ, नहीं तो यह सदैव के लिये समाप्त हो जायेगी, यह मारणसन्न है। इसलिये यह जोखम भरा एवं नाजुक काम जरूरी समझ कर हाथ में लिया।

इस आदिवासी साहित्य को न नगरीय साहित्य कहा जा सकता, न लोक साहित्य। 'लोकसहित्य' विशेषतः 'कृषक समाज' का साहित्य होता है और सभ्य नागरिकों (नगरवासी) के साहित्य को 'साहित्य' (शास्त्रीय) कहते है। यह दोनो से ही पृथक साहित्य है, इसे केवल मात्र 'आदिवासी साहित्य' (गरासिया साहित्य) ही कह सकते है। यह मेरा अपना मत है और इस भाषा को मैने 'गरासी' भाषा नाम दिया है जो भीली भाषा की समानता में उचित रहेगा। यह नाम भाषा वैज्ञानिक विद्वानों को भी पसंद आयेगा। गरासिया साहित्य के लिये सन् १९७२ से २००३

तक पर्वतीय आंचल (अरावली) में खूब भटकता फिरा, पत्थरों में ठोकरे खाई जब यह इतना बड़ा काम संभव हुआ। इस कार्य में हाथ डालना और आग में कूदना बराबर था। मुझे अनेक मित्रो ने मना भी किया पर मैने हिम्मत नही हारी। गरासिया-साहित्य पर यह पूर्ण रूप से लीखी गई सर्व प्रथम पुस्तक है। आदिवासी साहित्य की प्रथम फसल है। गरासी भाषा का इस से पूर्व लिखित रूप का कहीं कोई नाम निशान तक नही मिलेगा। सभी साहित्य में खोजा गया पर व्यर्थ गया। इस भाषा के संदर्भ में कोई विवरण नहीं मिला, है ही नहीं। उदयपुर से लगा कर गुजरात के पंचमहाल जिले तक (अरावली में) गरासिये फैले हुये है जो सभी एक जैसी बोली बोलते है। यह मरुगुजरी (राजस्थानी) से गहरा निकट का संबंध रखती है। अरावली के अतिरिक्त भारत मे गरासिये अन्यत्र कहीं नहीं है।

'गरासी भाषा' के मूल रूप को पहचानने के लिये कुछ शब्दों के उदाहरण निम्नांकित है जो हिन्दी-राजस्थानी से आये है -

गरासी	हिन्दी	गरासी	हिन्दी
संबंधी :		सालीण, बाबा	साला
बाई	बहिंन	फळी	मौहल्ला
बापा	बाप	मांडी, खौंचणौ	ब्याह/शादी
मामा	मामा	खाखरा	पलास
काका	चाचा	बाटी	रोटी
बनोई	बहनोई	रोटा	सोगरा
जमाई	जवांई	**शरीर के अंगो संबंधी :**	
छोरा	लड़का	मानवी	मनुष्य
खोलरा	घर	पीपी	स्तन
आई	माता	भोडु	सिर
अन्य :		लेहटी	बाल
मीठु	नमक	कायम	नपुंसक
बेड़ौ	पत्थर	फूंदो	लिंग
बेरकी	फिरसे	गेबकावणु	संभोग
केलरू	बछडा	कातरिया	बालडाढी

पहिनाव संबंधी :

झूलकी	कमीज, महिलाओं व पुरुषों का उपरी वस्त्र
धोत्यौ	धोती
पोतीयु	साफा
बैडी	बनियान
सेरडी	कच्छा (अण्डरवीयर)
सूतणु	पेण्ट, पायजामा
डेरणु	कुण्डल

शस्त्र संबंधी:

भालोर	भाला, तीर
धुतरी, कमोट	धनुष
बेंदुक	बंदूक
बाइणु	छोड़ना, लगान

भोजन संबंधी:

मेकी	मक्की
डार	दाल
टेल	तेल
केरलू	तवा (मिट्टी का)
डोह	घाट, राब (मक्कीकी)
बेइदी	आग
कीटको	ईधन
सीसी	भांग
मेद,मद	शहद
डोडी	भुट्टा
गोट	मांस

आभूषण संबंधी :

वारली	गलेका चांदी का कडा
संडा	करधनी, कंदोरा
कॉवळी	बंगडी, चूड़ी

पशु-पक्षी संबंधी :

केलरू	बछिया
ढाढकी,गं	गाय
डोबु	भैस
घेटु	भेड़
बाकरू	बकरा
बाघ	शेर
आती	हाथी
बेकरी, टेटकी	बकरी
हारपौ, हुडा	तोता

अन्य शब्द:

आलजो	दीजिये
खाआरौ	जूता
एदारी	चश्मा
हेरयु	प्रेम से निहारना
नेदी, वाउर	नदी
भकोर	पर्वत
ईमाडी	इधर
डोडी, डांडी	पगडंडी
कोमाडो	किधर
बाट	रास्ता
रूख	वृक्ष
सीदु	प्रातः
हेजा	संध्या
बेफोर	दोपहर

टेमटीम	टाईम
एसीनु	उधार
झीलवु	स्नान
धीम	दौड़
ताकीद	ताकतवर
पेसण	बाद में

संबंधी:

बाइड़ी	औरत
डोकरी	पत्नी
बाइजी	सालीजी
ससरो, बाबो	श्वसुर
लाडी	दुल्हन
पूरीयो	बेटा
भाइड़ौ	भाई

अन्य शब्द:

हेलो पाड़ौ	पुकारना
वेलां	जल्दी
भोरयारा	नौजवान
हरज्यौ	तीर
जुगे	समय
कराडियु	कुल्हाडी
रूपाळी	सुंदरी
मेडियु	मकान
पूरबीया	राजा
भूरीयौ	अंग्रेज
धनियारी	कुलदेवी
पसमाना	प्रायश्चित
पादरू मानवी	भला व्यक्ति
हेमचार	समाचार
सेणीक	थोड़ी
सोअतरा	शीघ्र
राजो	राजा
झापा, टापरा	झोपड़ा
कलस्यु	लोटा
गेऊं	गेहूँ
होना	सोना
लसु	झूठा
सेवायालु	घमंडी
जापा	दरवाजा
केमनी	किस ओर
छामती	दौड़ती
रेंगणु	बैंगन
कापड़ा	कपडा
पोलका	ब्लाउज
जाहे	जाना
दनड़ो	दिन

इनकी गरासी बोली रा सबदां मांय 'अेकार पूर्वा' लागे मंजै अ पूर्वा सबद रौ पेलड़ो आखर 'ए' सूं सरू व्है। हेटे की दाखलां देखण जोग -

गरासी	राजस्थानी	हिन्दी
बेरद	बळद	बैल
हेरदी	हळदी	हल्दी
थेमो	थे	तुम

बेदूक	बंदूक	बंदूक
पैसरौ	पेसेरो	ओढने का वस्त्र
जेमाई	जमाई	जवाई

भासा विग्यान रै 'प्रयत्न लाघव' अर 'मुख सुख' रै वजै सूं अर अनपढ व्हैवण रै कारण साफ उच्चारण नीं कर सका सूं 'सभ्यसमाज'रा केई सबद आपरे उच्चारण मुजब ढाळ लिया, जिण रा की दांखला -

गरासी	राजस्थानी	हिन्दी
डेबा सायली	दिवासळी	दियासलाई
बैंडी	बंडी	बंडी (बनियान)
रेडोल	रांडोली	विधवा
टेंगरी	तंगड़ी	नेकर, चड्डी
पेइडा	पीया	पैसे

'गरासी भाषा' में अन्य भाषाओ के भी शब्द सम्मलित हुए है और उनकी भाषा में पच गये है, जैसे -

गुजराती	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
पण	परन्तु	मीठ	नमक
सु	क्या	अम्बा	आम
नै	और	लिम	नीम
आपीदो	देदो	मस्का	मक्खन
छै	है	परात	बड़ी थाली (आदा गुंदने की)
बेन	बहिन	वाटकी	कटोरी
		रहात	रहता
अरबी-उर्दू शब्द		ऊंदरौ	चूहा
कत्ल	हत्या	किम	किधर
ईमान	भरोसा	मोट	दादा
नफा	फायदा, लाभ	दादा	बड़ा भाई
कसम	शपथ	पेसण	पीछे
अर्जी	प्रार्थना-पत्र		
कसर	कमी		

गरासी भासारा कीं नमूना औरूं -

१. चाथारूं हू नाम रे ?

२. मोई अलखे के न ?

३. परमो किम जावा रौ है ?

४. थूं हूं कै रे ?

५. यूं केटा रो रैवा वाळौ है ?

६. किमुनै जायते आपो हाते हाते मगरे जोहोला।

७. आजे आपो गौरे रा मेळा में जोहो, पेलो थै मौ नीं थोरे साथेण लेता आवजो।

८. यारे बापारू हू नोम रे ?

९. आलै कराया रे गूंदे रौ हू भाव ? हे बो तै मौ इतो गुंदे वीणवो आयो ?

१०. मा'र अेक कूती मद हारे हेती, कुंआरा हाते लेतो आवजै ती आपां कूती मद कोसोला।

११. हवेर गोरीया गै मेळो है, थे मो ठा है कन। आवाना रौ मतो होवै तो मोड होवेस कैनो नीयर मू थे मांरे वाट न जोवू की है कै मोइती ओढ जावास पर ही - हमोरे ओढ पोरे वाले पंचाते वाकीस है। हेवको पूरा परा पंच मेळा हावला है।

१२. हे वो मात्तर साब हूँ करो, जमानो बोदो आजो है। लरको ई कीढी केरे न मेलो? हेमोती भखो मरो हो, बीजो धेंधो मजूरी न करो तो हू खो ? गाई चाली चारण कुण जाय ? आज लरका इस्कूल भेजो ते हू खवारे ने आखो दन ईस्कूल भेजो।

गाई नै चाळियां ई हूनी कीकर मेला ? आज तो हमो उणौ ऊपर जीवौ। इणां राज मां हूंग कैरी नौकरी करेन हमोई होरा कर ही, पोण आज तो हमो पूरी तकलीफ मां हो नै लेरको काम आवै है।

फेर ई हमो भेजो पौण इस्कूल घर तो सफा टूटोरौ है, लरका बैठवानी जगा न है नै माइनै बैठायै तो लरका कैदीक मकान परे तो मर जावा रौ खतरो, इण वास्तै आप पैला तो इस्कूल हावळ करावौं। थे भो ती रोज आवा जावो करो, नै अठेस रहो तो लरको ई राते राते भणवौ करै नै सुबै ती बेगौ भणनै दनरा काम माथै जाय हकै तो जावा दीयो। हमो तो आखो दन सोकरौ नै थेमो। इस्कूल रै कांनी हूँ चीज नास्ता रै वास्तै देनौ जिण हू लरका देवा बेगा होवेला।

उक्त गरासी भाषा के हिन्दी अनुवाद

१. तेरा क्या नाम है ?

२. मुझे पहचानता है कि नहीं ?

३. परसो किधर जाना है ?

४. तुम क्या कर रहे थे ?

५. तुम कहां के निवासी हो ?
६. अगर कहीं नहीं जाना हो तो हम दोनो साथ पर्वत पर चलेगे।
७. आज हम 'गौर' के मेले में चलेगे, तुम भी अपनी सखी के साथ आना।
८. तेरे पिता का नाम क्या है ?
९. आज कल 'कराया' के गोंद का क्या भाव है ? अब तो मुझे भी गोंद एकत्रित करना पड़ेगा।
१०. वहाँ 'कुती'का शहद है, मुझे पता है, कुल्हाड़ी साथ ले कर चलना जिससे हम मधु निकालेगे।
११. कल 'गोरीया' का मेला है, तुझे मालुम है या नहीं ? यदि आने का इरादा हो तो मुझे अभी बता दो ताकि मैं तुम्हारी प्रतिक्षा करूं । क्योंकि मुझे तो वहां जाना ही है - हमारे तो गत वर्ष की पंचायत भी अधूरी है। इस बार पूरे क्षेत्र के पंच इकट्ठे होगे।
१२. अरे अध्यापकजी, क्या करूं ? जमाना खराब आ गया है ? लड़के को स्कूल कैसे भेजू ? एक तो हम भूखो मर रहे है, दूसरी ओर धंधा-मजदूरी नहीं करे तो क्या खायें ? गायें-बकरियां चराने कौन जाय ? आज बच्चे को स्कूल भेजू तो दिन भर क्या खाकर स्कूल में रह सकेगा?

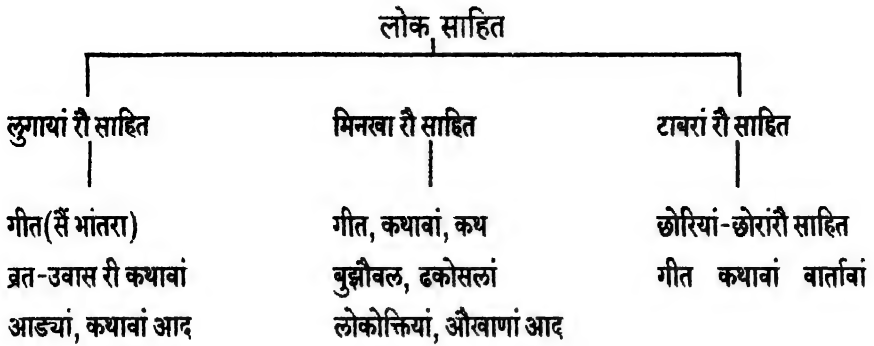
गायों और बकरियों को अकेली जंगल में कैसे भेज सकते है ? आज तो हम इन पर ही जीवित है। इस सरकार में फिर नौकरी है कहाँ ? और नौकरी करके भी हमें क्या सुख देगे ? परन्तु आज तो हमारी तकलीफ में लड़का काम आ रहा है। फिरभी हम अगर भेजे तो स्कूल तो बिल्कुल टूटी-फूटी पडी है। छात्रों के बैठने की भी जगह नहीं है और अंदर बिठावे तो न जाने कब मकान गिर जाय ? मृत्यु का खतरा है, इसलिये पहले विद्यालय की मरम्मत करवा दो। आप भी हमेशा आपके गाँव से आना जाना करते हो। यदि यही पर रहते तो लड़के रात को पढने आ सकते है। प्रातः भी जल्दी पढ कर दिन को काम पर भी जा सकते है। आप तो पूरे दिन बच्चों को रोक लेत हो। विद्यालय की ओर से कुछ नास्ते में खाने को दे सकते हो तो बच्चे भी उस लालच से स्कूल आ सकते है।

१. गिरा अरथ जल बीच सम, कहियत भिन्न न भिन्न - रामचरित मानस, बालकाण्ड-१८
२. Linguistic Survey of India, Vol. IV, Part II, Page 1
3. Element of the Science of Language by Tarapurwala, page 265
४. पुराणी राजस्थानी - तैस्सितौरी, अध्याय १, पृष्ट २०

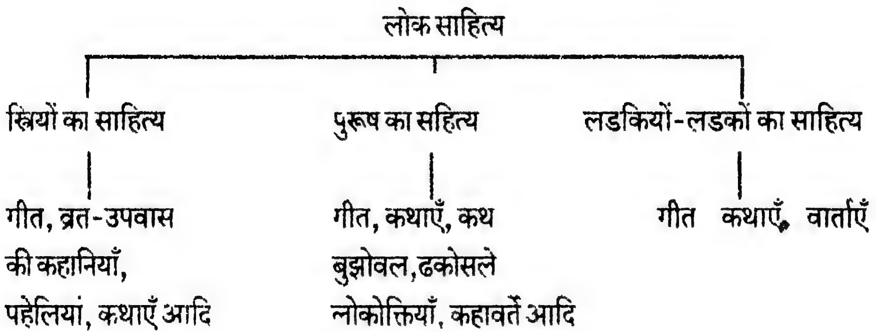


- राजस्थानी समुदाय
  - आंतरिक भारतीय आर्यभाषा
  - केन्द्रि
    - शुद्ध आंतरिक
      - पश्चिमी हिन्दी
        - साहित्यिक उच्च हिन्दी
          - उर्दू रेखता (दिल्ली-लखनऊ)
          - दखनी (हैदराबाद)
        - बोलचाल की हिन्दीस्तानी (पंजाबी)
        - बांगरू (राजस्थानी)
        - मध्यप्रदेशी बोलियाँ
          - ब्रजभाषा (राजस्थानी)
          - कनौजी (पूर्व हिन्दी)
          - बुंदेली (राजस्थानी)
      - राजस्थानी
        - मारवाड़ी
          - थली (मारवाड़ी)
          - मेवाड़ी
        - केन्द्रीय
          - जयपुरी
          - हड़ौती
        - उत्तरपूर्वी
          - मेवाती
          - अहीरवाटी
        - मालवी
          - रागडी
          - निम्बारी
        - लाम्भानी (बनजारी)
    - आध्यारापित बाह्य
      - वन्यभाषाएँ
        - भीली बोलयिाँ
          - भीली सियालगिरी (बंगाली)
        - खानदेशी
          - बाबरी (पंजाबी)
      - गुजराती (दक्षिण
        - साहित्यिक
          - बम्बाई (पारसी)
          - अहमदाबाद (हिन्दू)
        - बोलचाल की भाषायें
          - बम्बाई (मिश्रित)
          - अहमदाबाद
          - सूरत
          - उत्तर गुजरातकी बोलियाँ
          - काठियावाड़ी
      - पंजाबी (पश्चिम)
        - अमृतसर
        - डोगरी

गरासी बोली को भीली के समकक्ष माना जाना चाहिए जो इसमें नहीं है।



औ सैंग साहित मुखजबानी चालै, इण वास्तै विदवान इणनै साहित नीं कैयनैं 'वाङ्मय' कैवै।



यह ससम्त साहित्य मौखिक होता है इसलिये विद्वजन इसे साहित्य न कह कर वाङ्गमाय कहते है।



नांव धरण री रीत

नवां जळम्या टांबरां रै नांव राखण रौ उछब होळी रै टांकणै मंडै। इण टांणै आगती-पागती गांम री छोरयां नै नवा जळम्या टाबर रौ चोखो अर टाळवौ नांव धरण सारू न्यूतै। पेलपोत रै टाबर रौ नांव घणाखरा जीवौ, अमरौ कै जीवली, कै अमरी आद राखै। इण नांवां सूं विस्वास वधै कै टांबर लांबी ऊमर पावेला, आ आसीस कै जुग जुग जीवौ। घणखरा नांव 'सुझावात्मक' अर 'बुद्धिमता पूर्ण' व्है-ज्यूं कै 'अतरी' नांव घणी छोर्‌पा जळम्यां पछै दैवै। तोई फेरूं छोरी जिणै तो नांव दैवे - 'भूली'(भूली चूकी आई) भूंडी। टांबर रौ रंग काळौ व्है तो नांव राखै काळू, काळीयौ, काळी, काळून्दी अर गर' जै रंग गोरो व्है तो नांव राखे भूरो, भूरू, भूरीयौ, भूरी, भूरकी, गोरली आद। काळा घूंघरिया बाल व्है तो बाबरियौ, झीपरियौ, झूथरियौ, भूआरी, भूथरी, बाबरी आद नांव धरै।

टांबरां रा नांव अठवाडिया रै आठ दिनां रै नांव माथै ई राखै। जि दिन जळमै वीं दिन रौ नांव धरै। इणी भांत नांव वीं मी'ना, तिथ, ठौड़, रै नांव माथै राखै। इणी तरै ठौड (flore and faund) अर सात धांनां रै नांवां पर ई नांव राखै। हेटे मंड्या लेखा मांय इस्या द्दष्टांत रा की नमूना देखण जोग -

नामकरण सस्कार

नवजात शिशुओं के नामकरण संस्कार का उत्सव होली पर होता है। इस अवसर पर आसपास गाँवों की लड़कियों को नये जन्मे बच्चों के नाम देने के लिये आमंत्रित करते है। प्रथम जन्मे बालक का नाम अधिकांश जीवौ, जीवली के अमरौ अमरी रखते है। इन नामो पर विश्वास रखते है कि बालक दीर्घ आयु हों, चिरायु हो। बहुत से नाम सुझावात्मक और बौद्धिमता पूर्ण होते है - जैसे कि 'अतरी' नाम अधिक लड़कियाँ जन्म के बाद रखते है कि इतनी नहीं - फिरभी लड़की और होती है तो नाम देते है 'भूली' (भूल से आई) या 'भूंडी' (बूरी) धापी। बच्चे का रंग काला हो तो नाम रखते है -कालू, कालीया, काली, कालून्दी आदि। अगर रंग गोरा हो तो भूरो, भूरू, भूरीयौ, भूरी, भूरकी, गौरी, गोरकी आदि नाम देते है।

काले घने घूंघर बाले वाल हो तो बाबरियौ, झीपरियौ, भूआरी, भूथरी, बाबरी आदि नाम रखते है।

बच्चों के नाम सप्ताह के सात दिनों के नाम पर अथवा महिनो के नाम पर, तिथि के नाम पर, स्थान आदि (flore and faund के नाम पर अथवा सातो अनाज के नाम पर रखे जाते है। इसके लिये नमूने के कुछ उदाहरण दृष्टव्य है -

क्रम नांव रौ आधार	बेटा रौ नांव	बेटी रौ नांव
१ दिन :		
अदितवार (रवि)	दीतो, दीपो, देवो,डीरो	दीति, दीपी, देवी, दीरी
सोमवार (होम)	होमो, होमलो, होमेरो	होमी, होमली, सोमेरी
मंगलवार	मंगळौ, मंगू	मंगळी, मंगूडी
बुधवार	बुधा, बुधिया, वादा	बुधि बुधकी, वादकी
बृहसपतिवार	वहटा, वगता, वासिया,	वासकी, वागी, भेवरी
शुक्रवार	हकरौ	हकरी
शनिवार	थावरौ	थावरी
२. माह :		
चैत (चैत्र)	चेतो, चतरो	चेती, चतरी
जेठ (जेष्ठ)	जेठो, जठीयौ	जेठी, जेठली
भादवो (भादो)	भादो	भादी
सावण (श्रावण)	सावणौ, सरवणौ	सावणी, सरावणी
आसोज (आसो)	आसो, आसीयौ	आसी, आसकी
काती (कार्तिक)	कानो, कातरौ	कानी, कातरी
माह (माघ)	मगो, मघौ	मधी, मगी
पौ (पोह)	पूसो, पाबूड़ौ	पूसी, पाबूडी
फागण (फाल्गुन)	फागो, फागुड़ो	फागी, फागुड़ी
३. अनाज :		
चिणा (चना)	चैना, चेनीया	चैनी, चेनकी
मौढ	मौठीयौ	मोठी
मूंग	मूंगो, मूंगलौ, मूंगीयौ	मूंगी, मूंगली

कूरा	कूरो, कूरीयो	कूरी, कूरकी
कूड़रा	कूडरो	कूडरी
बाट्टी	बाटो	बाटरी

४. तिथि :

दूज, बीज	बिंजौ	बिंजी
तीज	तीजो	तीजी
चौथ	चौथीयौ, चौथो	चौथकी, चौथी
पांचम	पांचीयो, पांचो	पांचकी, पांची
पूनम	पूनो, पूनीयो	पूनी, पूनकी

५. स्थान :

आबू	आबूड़ौ	आबूडी
अंबाजी	अंबो	अंबा

६. वृक्ष :

झांबू(जामुन)	झामूडौ	झामूडी

७. जनावर :

बाघ	बाघौ	बाघली

८. वस्तु :

बंसरी (बांसुरी)	बामुरो	बांसुरी
चिरमी	चीमो	चीमी

नामकरण रै संबंध गरासियां मांय अेक गीत ई है जिणमें वार (दिन) रै नावां पर टाबरां रौ नांव राखण री भळोवण दीरीजी। अैड़ा मोकळा गीत लाधै।

गोरजी कै सांभळौ कक्का, वारे नाम राखजौ।
वारे नाम राखजो कक्का, ते ते [illegible] राखजौ।
सोमवारे सोमलो नै सोमली, मंगळवारे मंगळौ नै मंगळी।
गोरजीकै सांभळौ कक्का, वारे नाम राखजौ।
बुधवारे बुधयौ नै बुधकी, वेस्तवारे वगतो नैं वगनी
गोरजीकै सांभळौ कक्का, वारे नाम राखजौ।

सक्करवारे सकरो नै सकरी, थावरवारे थावरो नै थावरी।
दीतवारे दीतवो नै दीतवी।
गोरजीकै सांभळौ कक्का, वारे नाम राखजौ।

गरासियों में नामकरण के संबंध मे अेक गीत प्रचलित है जिसमें 'वार' (दिन) के नाम पर बच्चों के नाम रखने की राय (प्रेरणा) दी गई है।

हे गोरजी और पिताजी सुनो, बच्चो के नाम दिन (वार) के नाम पर रखना। जैसा वार का नाम है, जिस वार (दिन) को बच्चा जन्म ले इसी दिन (वार) के आधार पर उसका नामकरण करना, जैसे सोमवार को जन्म ले तो 'सोमलो' अथवा 'सोमली', मंगलवार को हो तो मंगला अथवा मंगली। बुध को हो तो बुधिया या बुधकी । बृहसपतवार को हो तो वगता या वगती। शुक्र को हो तो सकरो या सकरी। थावर (शनि) को हो तो थावरो या थावरी। रविवार (अदितवार) को बच्चा जन्मे तो दीतवो अथवा दीतवी नाम रखे। हे पिताश्री मेरी इस बात का पूरा ध्यान रखना।



गरासियां रा गीत

वनवासी गरासियां रा जूना गीत घणा लांबा व्है। केई गीत तो दो-दो घंटा तांई पूरा नीं व्है। अेतियासिक अर पौराणिक कथावां माथै ई मोकळा गीत मिळै, ज्यूं कै राम-रावण माथै, मा'भारत माथै, अम्बावजी रा गीत, दो वीसी नै च्यार रसियां रा गीत, सुमेर परबत रा गीत, दो माछलां रै झगडा सूं व्हिया परलय रा गीत, राधा-किसन अर गोपी-किसन रा प्रेम गीतड़ा अर अंधारीयौ जुग रौ आध्यात्मिक गीत आद।

गीतां री राग-रागिणी मांयै घणौ उतार-चढाव कोनीं व्है। रिग्वेद री ऋचावां रै ज्यूं धीमी-मधरी राग सूं हवळै हवळै गावै। कै सामगान रै ज्यूं गावै। घणखरा गीत नाच रै साथै गावै। नर-नारी केई गीतां में सवाल-जवाब ई करै।

इणांरा गीतां मांयै नीं तो भासा रौ चमत्कार दीसे, नीं परूसण (प्रस्तुति) री त्यारी दीसै। अेक कंठ में अेकण साथै सैंपूचौ समाज बोले। सीधा-सादा सबद, इणिया गिणिया स्वर, सरल सीधी लय, जिणमें नीं घणौ उतार-चढाव, अैड़ौ लागै जाणै बोल चाल री बोली मांयै गीतां री झूलकी पैंरायोड़ी। नाच ई जाणै सै'ज चाल नै इज लयबद्ध कर दी व्है। अेक भाव-विचार सूं गीत उपजे-नीसरे अर ज्यूं गीत री कड़ियाँ आकड़ियाँ खुलती-जुड़ती जाय त्यूं गीत आगे वधतो जाय। घणौ ढोल-ढमको ई कोनी राखै, स्मांति सूं आणंद लेवै देवै।

गरासिया रै लोकगीतां मांय इणरी कला अर अनुभूति दोन्यूं व्है। भावनावां रै वेग में अंतस में दब्योड़ी पीड़ पिघळनै फूटै। इणांरा गीतां मांय कठैई कोयलां टहूका देवै तो कठैई मोरया कुलरावै, कठैई बै'वता झरणां अर नदी-नाळां री कळकळ सुणीजै तो कठैई सावण री झड़ियाँ में भीजोवै, कठैई तप्यौड़ा सूरज रै तावड़ा रै तप रौ हड़तपौ तपै। जीवण री कठोरता नै भुलावा सारू प्रेम इणां री जिन्दगाणी रौ आधार। गीतड़ा मांयै लौकिक प्रेम री धारोळां चालै तो कठैई बायली आपरै गोठा नै उडीकै, कठैई 'अभिसार' रौ न्यूतौ मिळै तो कठैई प्रेमलीला रै परमसुख री मीठी याद में तड़फै। अै सैंग बातां प्रतीक रूप में ई गूंथीजी है अर कठैई खुले रवांप बांतळ पण व्हि है। जाति री वीरता अर देवी-देबतावां रौ सिमरण ई गीतां में करीजै। गीतां रै पांण जिन्दगाणी रा कांटा पाथरयौड़ा मारग पुसपां री सेज बणा'र हंसता-खेलता चालता जीवै। कड़कड़ता तावड़ा में खेत मांय काम करता, चारा-

बळीता रा भारा-भारीयां उखड़ियाँ, दौड़ता-भागता थका गावता जावै। इणारै गीतां मांय ओज अर रस है। न्यारा न्यारा तैवारां रा अर मेळां रा ई गीत मोकळां।

गरासीया-गीतां री खासीयतः

१. इणारै गीतां री भासा सरल है (गरासी भासा)
२. अलेखू गीतां मांय घटनावां रौ लेखो, लोगां रा नांव, ठौड़-ठिकाणां आद रौ लेखो - है-ज्यूं-रौ-ज्यूं मिळै। इण वास्तै अैड़ा गीत गरासिया जात रै इतिहास रा जीवता-जागता दस्तावेज है।
३. इणारा गीतां मांय आपसी रगड़ा-झगड़ा, समाजिक घटनावां जाति रौ संगठण अर 'अेक सारू सगळा अर सगळा सारू अेक' री भावना भरयौड़ी।
४. इणांरा गीतां मांय सिणगार अर वीर रस री मोकळात सुमट दीसै।

गीतां रा रचयिता

गरासियां मांय कविसर अर गीतकार री 'प्रतिभा' ई मिळै। हालां कि अै लोग अनपढ व्है। अठै औ वाकई सही साबित व्हैकै कवि बणै कोनी जळमें। कुदरत री 'गोड गिफ्ट' व्है। गरासिया इण रचनाकारां री कदर करै, मांन देवै, चूंकी अै लोग 'जन साधारण' री भावना नै परखे, गीतां मांय गूथै अर रसीला सबदां मांय परगट करै अर आणंद सारूं सिरजण करै। गावणिया अर सुणणिया रै हिवड़ै हरख उपजावै।

गीतां रौ सिरजण बिना त्यारी रै करै। तुरत-फुरत सही भावनावां नै सरल साबदां मांय बांधै। इणांनै 'सद्यकवि' कै 'आसुकवि' कैय सका। लय, ताल, स्वर अर राग आद खुदरी मौलिक व्है। इण सगला में तालमेल (संतुलन) राखै। अै लोग दरेक औळी नै दो वार गावै। अै गीतड़ा गरासिया संस्क्रिति अर वैवार नै दरसावै। अै इणनै 'बावसी'(देवता) अर अलौकिक शक्तियाँ' सूं बंतळ करण रौ जरियौ मानै। गीतां मांय 'अलौकिक'आत्मावां सूं संबंध जोड़ै। गीतां मांयनै आपरै सामाजिक, धारमिक, अर सांस्क्रितिक दरसाव चितरांम ई संजोवै।

गीत रौ रचनाकार गावती वाळ ई मुख्यौ रेवै अर पूरी 'दक्षता' सूं गावण रौ जिम्मौ निभावै। वो ढोल रै ढमका रै साथै आपरा हाथां पगां सूं क्रियावां करनै भाव-भंगिमा परगट करतो रेवै। वो मुख्य गायक रै रूप में गीत आगूंच उघेरै अर लारला उणरौ साथ निभावै। घण महताऊ टांणा पर खुद नै नाच अर गीत रौ 'निर्देशन' करणौ पड़ै। साथीड़ा उमंग अर उछाव सूं मदद राखै। पूरी टेक राखै।

'समूहगीत' रौ बत्तौ अर खास मकसद रैवै। इणसूं समाज रौ जोर वधै। गीतां रै साथै अंगां रा हाव भाव अर संगीत री लय, ताल, स्वर आद रौ चोखो तोळमेळ व्है। उणियारा

पर नकाब, बादरियां, चितरांम, 'फैंसी ड्रेस' अर डील पर राख आद चोपड़नै अलेखो मायावी रूप अर स्वांग धरनै गीत रै मुजब वातावरण बणावै, प्रभावी बणावै। 'समुह गान' गरासियां मांय घणा चावा नै प्यारा लागै। आदमी-लुगाई अर मोट्यार छोरां छोरीयाँ रा न्यारा न्यारा गीत व्है। 'श्लील-अश्लील' इणारै सबद कोस में कोई सबद कोनी। खुलौ नागौ सिणगार रस गावण री पूरी छूट रैवै।

गरासियां रै गीतां रा विसै परवार रै आगा - नेड़ा रिस्ता, लाड-प्यार रा दाखलां, गोटा-गोटी रौ प्रेम, टाबरां नै सीख, सांची घटनावां रौ वृत्तांत जिणरौ रोजीना रू-ब-रू व्है उणरौ सांगोपांग लेखो व्है।

दरेक गरासियौ पोतानै 'वर्ग' के 'समूह' रौ भाग कै अंस मानै अर आपरै 'वर्ग' री पिछाण गीतां मांय करावै। इण सूं सामाजिक संगठण बधै। अै गीत 'समुह' कै 'वर्ग' री भावनावां परगट करणवाळा व्है।

भीलो रै ज्यूं गरासियां रा गीत अेक समूह तक कै पाळा में नीं रैवै, वे सैपूचा समाज वास्तै व्है। बखत रै साथै इणां मांय कीं बदलाव आवतो रैवै। अै नवी अबखाईयां रौ संकेत देवै।

गरासिया आपरी मरजी मुजब फळ पावण खातर अलौकिक कुदरत री संगतियां नै गीतां सूं राजी राखण रा जतन करै अर वीयां सूं आस राखै। भगति, गीतां (भजन) री सगति सूं मौत तक नै ढाबण नै खपै, रोगां नै रोकै, आक्रमण करै अर अणजाण सगतियां नै कब्जै करण रा जतन करै। मूठ सूं हत्या तक कर सकै।

लोकगीतां रै पांण घण महताऊँ काम सरिया। गीतां नै मूंडै सूं मूंडै, पीढी सूं पीढी आगे धुपता ग्या। समाज रा मोल रै साथै 'अलौकिक' अर 'परासगति' पर भरोसो राखै तो दूजी-कांनी आपरै घण महताऊ चरित नै उजाळै। अठा तांई कै स्रिस्टि रचना रै पैं'ली कांई कुदरत रौ वातावरण हो अर सिंसार रौ सिरजण कियां हुयौ ? इणरौ लेखो इणा रै लोक भजन 'अंधारियौ जुग' मांय सांगोपांग लाधै। इणमें गजब री 'कल्पना' है जकौ 'वेद विग्यान' सूं खासो मेळ खावै।

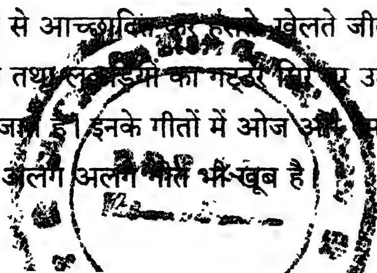
गरासियों के गीत

अरावली के ज्येष्ठ पुत्र गरासियों के प्राचीन गीत बहुत लंबे है। कई तो दो-दो घंटे पूरे ही नहीं होते। एतिहासिक एवं पौराणिक कथाओं पर आधारित गीत, जैसे राम-रावण पर, महाभारत पर, अम्बा माता पर गीत, चौबीस रसियों के गीत, सुमेर पर्वत पर गीत, दो मछलियों के झगड़े से प्रलय, राधा-कृष्ण और गोपी कृष्ण पर गीत, सृष्टि के प्रारंभ के गीत आदि लंबे है।

गीतों की राग-रागिनी में अधिक आरोह-अवरोह भी नहीं होता। ऋग्वेद की ऋचाओं की भांति मंद मंथर गति से धीरे आवाज में गाते है अथवा सामगान की तरह गाते है। अधिकांश गीत नृत्य के साथ गाये जाते है। स्त्री-पुरुष कई गीतो में प्रश्नोत्तर से संवाद भी करते है। (एक एक पंक्ति बारी बारी गा कर)

इनके गीतों में न तो भाषा का चमत्कार है न 'प्रस्तुति' की पूर्व तैयारी दिखाई देती है। एक ही कंठ में समूचा समाज मुखरित होता है। इनके गीतो में सीधे सादे शब्द, नगण्य स्वर, सरल एवं सीधी लय, विशेष आरोह-अवरोह भी नहीं मिलाता। मानो सहज बोलचाल को कविता या गीत का जामा पहिना दिया हो। नृत्य भी इसी प्रकार जैसे सहज चाल को ही लय बद्ध कर दी हो। एक भाव अथवा विचार से गीत निकलता है और ज्यों ज्यों दृष्टि गत होता है और मष्तिष्क सोचता जाता है, त्यों त्यों गीत की पंक्तियाँ खुलती जाती है। अधिक वाद्य भी नहीं रखते और शांति से आनन्द में लीन हो जाते है।

गरासियों के लोकगीतों में इनकी कला और अनुभूति दोनो होती है। भावनाओं के प्रबल वेग में अंतःकरण (हृदय) में दबी हुई पीड़ा- पिघल कर फूट पड़ती हैऔर गीत का जन्म हो जाता है। यही कारण है कि इनके गीत-संगीत में कही कोयलों की कूहू-कूहू की ध्वनि सुनाई देती है, कहीं मोर की गहरी कूक सुनते है, कही नदी-नालों और झरनों की कलकल ध्वनि सुनाई देती है तो कहीं सावन की वर्षा हमें भीगो कर सारोबार कर देती है, कहीं प्रचंड मार्तण्ड की भीषण उष्मा महसूस होती है। जीवन की शुष्कता और कठोरता को भुलाने के लिये 'प्रेम' इनके जीवन का आधार है। गीतों में लौकिक प्रेम की धाराएँ बहती दृष्टिगत होती है। कही प्रेमिका अपने प्रेमी की प्रतिक्षा करती नजर आती है, तो कहीं अभिसार का निमंत्रण मिलता है, तो कहीं प्रेमलीला के परमसुख की मधुर स्मृति में आकुल-व्याकुल है। यह सब बातें प्रतीक रूप में भी गूंथी गई है और खुले नग्न श्रृंगार में भी है। जाति की वीरता और देवी-देवता का स्मरण भी गीतों में किया गया है। गीतों के संबल से कंटकाकीर्ण जीवन-पथ को पुष्पों से आच्छादित कर हंसते खेलते जीते है। कड़ाके की धूप में काम करते हुए, घास तथा लकड़ियों का गट्ठर सिर पर उठाये हुए, दौड़ती भागती जिंदगी में गीत गाते जाते है। इनके गीतों में ओज और श्रम है। अलग अलग मेलो तथा त्यौहारों के भी अलग अलग गीत भी खूब है।



गीतों की विशेषताएँ :

१. इनके गीतों की भासा सरल है (गरासी भाषा)।

२. घटनाओं का वर्णन गीतों में मिलता है जिसमें नाम, स्थान, पता के प्रसंग का वर्णन ज्यों का त्यों मिलता है, इललिये यह सब गरासिया जाति के इतिहास का दस्तावेज भी है।

३. इनके गीतों में आपसी संघर्ष, सामाजिक घटनाएँ, एकता, संगठन तथा एक के लिये सब और सबके लिये एक की भावना प्रबल है।

४. श्रृंगार और वीररस इनके गीतों में मुख्य रूप से रहता है।

गीतो के रचनाकार :

गरासियों में गीतकार और कवि की प्रतिभा भी मिलती है यद्यपि ये अशिक्षित होते है । इनको यह प्रकृति की देन है, 'गोड गिफ्ट' होती है। गरासिया समाज इन रचनाकारों की कद्र करता है क्योंकि कवि जनसाधआरण की भावनाओं को गीतों में पिरोते है और सार्वजनिक करते है। आनन्द देते है। इन गीतों को सुन कर रोमांचित एवं आनन्दित हो उठते है।

गीतो की रचना यह बिना पूर्व तैयारी के करते है। तत्काल भावनाओं को सही शब्दों में बांधते है। इनको 'आशुकवि' कह सकते है। लय, ताल, स्वर, राग आदि स्वयं की मौलिक होती है और इन सबमें संतुलन बनाते रखते है। प्रत्येक पंक्ति को दो बार गा कर दोहराते है। इन गीतों में इनकी संस्कृति और व्यवहार स्पष्ट झलकता है। ये 'बावसी'(देवता) और अलौकिक शक्तियों से वार्तालाप करने का माध्यम गीतों को मानते है। गीतों से दिवंगत आत्माओं से संपर्क करते है। गीतों में यह लोग अपने सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृश्यों के शब्द चित्र भी खीचते है।

गीतों का रचनाकार गाते समय भी नेतृत्व करता है और पूर्ण दक्षता से गाने की जिम्मेदारी निभाता है, ढोल की थाप के साथ अपने हाथ पांवो से भाव-भंगिमा प्रकट करता रहता है. वो प्रधान गायक के रूप में सर्व प्रथम गीत प्रारंभ करता है और अन्य उसका सहयोग करते है। महत्त्वपूर्ण अवसरों पर स्वयं को नृत्य और गीत का 'निर्देशन' करना होता है। साथी उमंग और उत्साह से सहयोग करते है।

'समुह गीतों' का विशेष महत्व एवं उद्देश्य रहता है। इमसे सामाजिक स्थिरता आती है। गरासिये सीधे सादे लोग होते है। अपनी भावनाओं एवं इच्छाओं को सामाजिक उत्सवों के अवसर पर दर्शाते है। गीतों के साथ अंगो के हावभाव और

संगीत के स्वर ताल से अच्छा मेल खाता है। चहरे पर नकाब, मुखौटे, चित्र, फैंसी ड्रेस का उपयोग करते है। भस्म रमा कर अनेक मायावी रूप धर कर गीतों के अनुसार वातावरण निर्माण करते है, प्रभावी बनाते है। 'समूह गान' बड़े लोकप्रिय होते है। स्त्री, पुरुष व बच्चों के अलग अलग गीत होते है। अश्लीलता का बंधन नही होता, नग्न श्रृंगार गाते है।

इनके गीतो के विषय-लाड प्यार, प्रेम, रिश्तेदारी, बच्चों को सीख, सच्ची घटनाओं आदि का वर्णन मिलता है, जिससे रोजमर्रा के जीवन में आमने सामने होते है उसका वर्णन होता है।

प्रत्येक गरासियां अपने को एक 'वर्ग' अथवा 'समूह' का भाग अथवा अंश मानता है और इसका परिचय गीतों में देते रहते है। इससे सामाजिक संगठन की प्रगति होती है। ऐसे गीत एक 'समूह अथवा 'वर्ग' विशेष को मनोभाव प्रगट करते है।

भीलो की भांति गरासियों के एक 'समूह' तक सिमित नहीं होते, वे संपूर्ण जाति-समाज के निमित्त होते है, सबका प्रतिनिधित्व करते है। ये गीत पीढ़ी दर पीढ़ी आगे से आगे मौखिक रूप से चलते रहते है परन्तु समय के साथ परिवर्तन स्पष्ट दृष्टिगत होता है जो नई समस्याओं की ओर संकेत करते है।

गरासिये अपनी इच्छानुसार फल प्राप्ति हेतु अलौकिक एवं प्राकृतिक शक्तियों को प्रसन्न रखने के लिये गीतों से प्रयास करते रहते है और आशा रखते है। भक्ति गीतों की शक्ति से मृत्यु तक को रोकने का यत्न करते है, गीतों से रोगो को रोकते है, चिकित्सा करते है, आक्रमण करते है और आज्ञात शक्तियो को वश में करने का प्रयास करते है। मूठ फेंक कर हत्या तक कर सकते है।

लोकगीतों के बल पर उत्कांकित महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुए। इन गीतों को एक कंठ से दूसरे कंठ तथा पीढ़ी दर पीढ़ी आगे सौपते आये है। सामाजिक मूल्यों के साथ 'अलौकिक' और 'पराशक्ति' पर विश्वास रखते है तो दूसरी ओर इनके चरित्र और व्यक्तित्व को उजागर करते है। यहाँ तक कि सृष्टि रचना के पूर्व प्राकृतिक वातावरण कैसा था? फिर सृष्टि रचना कैसे हुई? इसका उल्लेख इनके एक लोक भजन 'अंधारियो जुग' में विस्तार से मिलता है। इसमें विचित्र कल्पना है जो वेद-विज्ञान से काफी मेल खाती है।

गरासियों के गीत

~ ~ ~

गरासियों के गीत

प्रेम गीत

प्रीत पड़ेली भारी
नव लाख तारा आगे चंदो
जटा मा छिपाद्यूं भीलड़ी अठासूं
भीलड़ी भखियारी आ प्रीत पड़ेली भारी
सेवजी थू तीन लोक अधिकारी
भोळां मत करो प्रीत हमारी
थारै घर में पारबतां, दूजी गंगा माई
गंगा-गवरी नै पीयर मेल द्यूं
थनै बणाऊँ पटराणी
सींघ चढ्ू बळद चढ्ू
मोची बणनै म्नै छळी
बाबा री गत जाणी

अर्थ

पार्वती भीलानी रा रूप बना कर और शिवजी मोची का रूप बना कर एक दूसरे की परीक्षा लेते है।
हे शिव भोले! मेरे से प्रेम मत लगाओ, यह मंहगा पड़ेगा। नौ लाख तारे है पर चांद एक है। शिवजी कहते है - 'मेरी जटा जाल में छिपा कर रखूंगा किसी को पता नहीं लग पायेगा। भीलनी भिखारी कहती है यह प्रेम मंहगा पड़ेगा। शिवजी आप त्रिलोकी नाथ है, हे भोलेनाथ! आप कहाँ मेरे से प्रेम करने लगे। मैं कहाँ आप कहाँ ? आपके घर में पार्वती और गंगा दो दो है फिर मेरी क्या आवश्यकता? तू चल तो सही, गंगा और गवरी (पार्वती) को मायके भेज दूँगा और तुझे पटरानी बनाकर रखूंगा। शेर और बेल की सवारी करती हूँ (पार्वती) पर आपने मोची बन कर मुझे छल ली। अब आपकी कला जानी।

अे मारै गोठीयौ कीदो हेतु रे, धारा-धारा हियौ रोवै।
मारे छाळ्यां मा जाणु हेतु रे, धारा-धारा हियौ रोवै।
मारे सेंदा वाळी थामली रे, धारा-धारा हियौ रोवै।
मारे दोस्ती लागी हेती रे, धारा-धारा हियौ रोवै।
अै मारे गोठीयौ कीदो हेतु रे, धारा-धारा हियौ रोवै।

अर्थ

हे सखि ! मैने प्रेम करके महान भूल की। प्रेमी से ऐसा प्रेम हुआ कि पूछो मत। उसका स्मरण मात्र करने से अविरल अश्रुधारा फूट पड़ती है फिर रुकती ही नहीं। मुझे बकरियाँ चराने जाना था पर मैं तो सब भूल गई। ऐसी दोस्ती लगी की हृदय धारा प्रवाह निरंतर रोता ही रहता है। मैने प्रेमी बनाया, प्रेम का नशा ऐसा चढा कि दुनिया दिखाई नहीं देती, प्रेमी के अतिरिक्त कुछ भी नही दिखता और धारा प्रवाह रोती ही रहती हूं।

लोही पीवा बैठो

आई रे बापा लोही पीवा बैठो
बजारां जाऊं त साथै आवै गोठो
आई रे बापा लोही पीवा बैठो
बाप ने बेटा दोई जणां गोठिया
मारे झूलकी लेवी हती, साथे आवै गोठो
मारे पोलकू लेवु हेतु रे, साथे आवै गोठो
आई रे बापा लोही पीवा बैठो

पांणी जाऊं तो हाते आवै गोटो
आई रे बापा मारुं लोही पीवा बैठो
छाळीया जाऊं त हाते आवै गोठो
भैयां जाऊं त हाते आवै गोठो
गायां जाऊं त हाते आवै गोठो
मगरे जाऊं त हाते आवै गोठो
घट्टी दळू त हाते फेरे गोठो
मासां मा होऊ त हातै होवे गोठो
आई रे बापा लोही पीवा बैठो

अर्थ

हे पिताजी ! मै तो बुरी तरह परेशान हो गई इस प्रेमी से, जैसा यह खून ही पी जाना चाहता है। मैं क्या बताऊं आपको? बाजार जाती हूँ तो पीछे पीछे आ जाता है। उसका पिता और वह (पुत्र) दोनो ही मेरे प्रेमी बन बैठे है। मेरे कमीज (झूलकी) खरीदनी थी और झूलकी (कंचुकी) खरीदनी थी पर संकोच से नहीं खरीद सकी क्योंकि मेरा प्रेमी हमेशा मेरे पीछे आ जाता है।

पानी लेने जाती हूँ तो, वह साथ चलता है जैसे मेरा खून पीने बैठा है अर्थात् अत्यन्त परेशान करता है। बकरियां चराने जाऊं चाहे भैस चराने जाऊँ, चाहे गायें चराने जाऊँ हमेशा साथ साथ चलता है। पर्वत में वन में जाती हूँ तो वहाँ भी साथ, यहाँ तक की चक्की पीसती हूँ तो साथ पिसवाने बैठ जाता है। खाट में सोती हूँ तो चुपके से आ कर साथ सो जाता है। आप ही बताओ क्या करूँ, मैं तो बुरी तरह तंग आ गई ऐसे प्रेमी से। मेरा खून पी रहा है।

ब्याव रा गीतड़ा

ब्याव मंड्या पछै बींद-बींदणी अर दोन्यूं रै माइत ब्याव रौ सामान मोलावण जावै। सामान री आरती उतारने, घरै बधायनै लैवे। घरे पाछा बावड़िया पछै बनडा-बनडी नै ताता पांणी सूं न्हवाड़े, जद आं गीत गावै -

> औ लाडकरे तो गेंगा जळ मा न्हायौ
> रे गेंगा जळ मा न्हायौ अे गोल दियो रे
> अे लाडकरे तो ठंडे ने कुंडी मा न्हायौ
> रे ठंडे री कुंडी मा न्हायां अे गोल दियो रे

इण इज वखत ऊकळ में मकी न्हाखनै मूसळ रै हळ, जूड़ो, हलवाणी अर तीर बांधै अर च्यार-मिनख अर तीन लुगायां, कुल सात जणा मकी रा दांणा खंडै। मां-बाप भेळा नीं रेवै अर कुटती दांण गावै -

> साल खांडी के हेगरी
> हां आं हेगरी बाजीर ग्यौ
> गांव रे गोरादे वाळई हालाने
> हे हेगरी खांड हां रे...

पछै बना-बनी नै बाजोटै बैसावै। इयां रै साम्ही मकी रौ चौक पूरावै। कापड़ौ बिछावै

नै गणपति री स्थापना करै, बंदणा करै। पीटी करै, वीं बखत परदो राखै कै निजर नीं लाग जावै, इण वास्तै पछै पीटी करती थकी औ गीत उथेरे -

ऊबी जावै जाणियौ
पीठी खोले ढाबर ढींगी
रोअें रोअें....
तिल रा तेल तिलां रा तेल
अरे लाडकारी सेरावौ
कैवंची रो तेल कैवंची रो तेल
अरे लाडकारी सेरावौ।

पछै सगळा अठै इज रातवासौ लेवै, ब्याळू करे। रात रा लुगायां आदमी मस्ती सूं गावै-नाचै। बना नै मांछा पर बिठायनै माछो माथा पर उखणै अर सगला मोरीयो नाच करती गावै -

रेम रे लीला मोरीया, गेम गूंगरी वाजै
रेम रे लीला मोरीया, थारे बापे पूरीयो लाड
रेम रे लीला मोरीया, हेरदी रे मोम
रेम रे लीला मोरीया, थारे माताजी रा राजमा
गेम गूंगरी वाजै...

इण गीत मांय सगळा सगा-संबंधी रा नांव ले' र गीत नै लांबो बधावै।

जॉन री निकासी रे पैली बनड़ा रे हेरदी सूं पीठी करे नै न्हवाडै अर नवा गाबां-गैणां पे'रावती वाळ औ गीत गावै -

तोर कुणीजी हेणा गारीयो
तोर गामे रे हेणा गारीयो
वीर गिया हाहुवां बेखणियो मेलराणो।

भाई-भौजाई अर बना रे माइतां रा नांव जोड़ता थकां गीत वधावती जाय। इण टैम अेक फेरू गीत गावै, जिणमें लगन री महातम अर बनड़ा री पोसाक रीं फूटरो बखाण है। अर बेगो चालणरी ताकीद है -

लगनां बेनू भई कुंवारो रेयू रे
लगनां बेनू भई कुंवारो रेयू रे
हाचा चौका लगना कादे आलो
रे लेगनां तूं बेना भई कुंवारो रेयू रे।
चिरमयारी हाटा मोरलेके रे।

जॉन विदा करती वेळा, बेनड़ बेगो व्हिर व्हेवण रौ केवै, अर उतावळ देवै के सासरा मांय सगळा थनै उड़ीकै, साळा-साळी अर सासु-ससुर थांरी बाट जोवै -

साळो-साळो रे नानरिया बीर
साळो रे पेरणावा जाह
थारे सासु रे जोवै बाट

जद बींद लगने री हूस अर उमावा सूं आंछै-आंछै चाल्यौ जावै। सैंग लारे रैय जावै, जद भळोवण घालै कै बनड़ी रो उमायो इतरो उतावळौ मत ना चाल, घाटा में थोड़ोक ढब, जॉनिया सैं लारे रेयग्या है -

वीरजी होंकर रो घाटी में वीरजी ऊभा रीजो
वीरजी थांरो मारळी पूठै आवै, वीरजी ऊभा रीजो
वीरजी थांरी काकी पाहेल आवै, वीरजी ऊभा रीजो
वीरजी थांरी भुवां पुठै आवै, वीरजी ऊभा रीजो

जॉन रा डेरा खुला आभा नीचे दीरीज्या, जठै कीं सगवड़ कोनी पण बीनणी लेजावणी है सो औ दुख ई खमणौ पड़ैला। इण तकलीफ रौ लेखो गीतां मांय यूं गूंथीज्यो -

रेण मा डेरा दीधा रे
हीडो राणो रेण मा डेरा देवारिया
थारे बेटी रे कारणे रे
होडी राणी रेणा मा डेरा देवारिया

लगन रा सुभ मोहरत चूकै नीं, इण वास्तै लुगाया वैवाई नै चेतरावै अर खबरदार करै

जेट करी रा मारा वेंड: वैवाई
लेगन तो व्हेई जाय है
जेट करी रा मारा डाबा वैवाई
मौरत चूकी जाय है
लगना-लगनै होई रया है
वैवाई रेई जाय है।

हथलेवो छूटे जद बीनणी रै मां-बाप ने दान सारू कैवै अर बतावै के कन्या दान रा बड़भागी पुन्नरा हक़दार व्है -

के हाथीमेलो कुंवारी बांधूगो
के हाथीमेलो परो रे सोडावौ

के हाथीमेलो आलो हीरको झोटी
के हाथीमेलो आलो धेवाली गाम
का हाथीमेलो परो रे सोडावौ।

गरासियां री जॉन जद गांम रै गौरवै पूगे जरे औ गीत उधेरीया करै-

पिंघलगढ़े रा ढोला किम जाहो पिंघलगढ़
हेंरदी मा पड्यौ ढोला किम जाहो ?
कुंआरी रहे है कन्या ढोला किम जाहो ?
परणवा री हूस रे ढोला किम जाहो ?
मीडोरा रा मरया ढोला किम जाहो ?
तागो रा थमे भरया ढोला किम जाहो ?
परणे ने घेर जाइजो, ढोला किम जाहो ?
कुण है थारो बापो, ढोला किम जाहो ?
कुण है थारी काकी ढोला किम जाहो ?
कुण है थारो बाधवो ढोला किम जाहो ?
बधवा अेतरो लाड ढोला किम जाहो ?

लगन करवा जावती वाळ बींदराजा ने धीमै धीमै हालण री भळोवण देवै, कै मचकै मोच नीं पड़ जावै -

धीमे धीमे हालो रे राइवर, कोगरली[1] मचकाई
जोनियो रे जोरी हालो रे राइवर, कोगरली मचकाई
धीमे धीमे हालो रे राइवर, कोगरली मचकाई
हालो हालो रे ननरिया वीर, हालो रे परणवा
थम रे बापो पुटर आवी रे वीर, हालो रे परणवा
मायरली अेतरो लाड़ रे वीरा, हालो रे परणवा
धीमै मधरे हालो रे राइवर, कोगरली मचकाई
जोनियो रे जोरी हालो, कोगरली मचकाई

१. पांव में मोच न पड़ जाय

बींद-बींदणी ने लाडे कोडे बतलावण करता केवै के थारां मां-बाप बीजा सैंग हाजर है, ब्याव गाजे बाजे करसी -

रेम कोनेया[1] खेल कोनेया, धमसं[2] मादळ[3] वाजै

कुण है थांरो बापो कोना, धमसे मादळ वाजै
कुण है थांरी माता कोना, धमसे मादळ वाजै
बाधवे[४] लगन मोडीयो कोना, धमसे मादळ वाजै
हेरदी[५] मा रेमो कोना, धमसे मादळ वाजै
तेलीया[६] मा रेमो रे कोना, धमसे मादळ वाजै
वैवाइयां[७] ने जायो कोना, धमसे मादळ वाजै
बापे लाड पूरीयो कोना, धमसे मादळ वाजै
परणु तो मे कनीया[८] कोना, धमसे मादळ वाजै
कंवारी है कनिया कोना, धमसे मादळ वाजै
नीतर तो रहू मे अकन कुंवारौ, कोना धमसे मादळ वाजै

आयो आयो मारे केयो बाधव नुतरियो[९]
आयो आयो मारे केयो मामो नुतरियो
आयौ आयौ धोरीले[१०] बेहेने[११] आयो, मारे देवो मामो नुतरियो
आयो आयो मारे केयो बाधव नुतरियो

१. कन्हैया (दुल्हा), २. धमाधम ध्वनि, ३. मृदंग (मादल), ४. भाई बंधु, ५. हल्दी, ६. तेल, ७. समधि, ८. दुल्हा, ९. न्यौता (निमंत्रण), १०. घोड़ा, ११. बैठकर

गीतां मा गवीजै के हेरदी घणी मूंघी। ब्याव मांड्यो है तो मूंघी-सूंघी ई मोलावणी पड़ैला। मूंघीवाड़ा सूं डरप्या तो सोरो (छोरो) अकन कुंवारो रेय जावेला। इण गीत मा मूळ भाव ओ इज -

हेरदी[१] मोळा माडेर मा हेरदो मूंघी घणी
सूतो सोवन ढोलियो, हेरदी मूंघी घणी
आधी ने मझरात ढोलो सूतो सोवन ढोलिये, हेरदी मूंघी घणी
सूते हपनो[२] आवीयो ढोला, हेरदी मूंघी घणी
मायरली[३] मोनो[४] तो वात सोलू, हेरदी मूंघी घणी
जाइया मोनवा सरकी मोनू, हेरदी मूंघी घणी
लाडा थारे बापो हेरदी मोलावै, हेरदी मूंघी घणी
कुंआरी है कनिया[५], हेरदी मूंघी घणी
परणु तो वे कनिया, हेरदी मूंघी घणी
नीयर तो रहू अकने कुंआरो, हेरदी मूंघी घणी

वाघर[६] वारी धरती, कनिया सपनो आयो, हेरदी मूंघी घणी
वेरीया[७] री धरती जाइया ना जावा रो जोग, हेरदी मूंघी घणी

•

राई ने केवा बोले रे
केवड़ा[८] नीं नाळे सूरज ऊगो रे
जागो मारी माता सूरज ऊगो रे
बापा मारा हीना[९] पोटी[१०] भरिया रे
डीकरी मारी ई लगनां ना भरिया रे
बापा मारा ई लगनां हिने कामे आवे रे
डीकरी मारी नानरियो परणे रे

१. हल्दी, २. स्वप्न, ३. माँ, ४. माने तो, ५. कन्या ६. मालवा की धरती, ७. शत्रुओं, ८. मेवाड़ में एक घाटी विशेष, ९. किससे, १०. बैल

अर्थ

शादी निश्चित होने के पश्चात वर-वधु और दोनो के मां-बाप शादी का सामान खरीदने जाते है। घर लाने पर गृहप्रवेश के समय सामग्री की आरती उतार कर अंदर लेते है, फिर वरवधु को गर्म पानी से स्नान करवाते है, तब निम्नांकित गीत गाते है -
हमारा प्यारा वरराजा तो पवित्र गंगा जल में गोबर घोलकर स्नान कर रहा है, वह ठंडे व गहरे पानी से नहाया है।
इस प्रकार फिर ऊकली में मक्का आदि डालते है और मूसल को हल, जूड़ा, हलवानी और तीर बांधते है तथा चार पुरुष और तीन स्त्रियां, कुल सात व्यक्ति मिल कर मक्का के दाने कूटते है। इसमें मां-बाप भाग नहीं लेते। मक्का कूटते हुए निम्नांकित गीत गाते रहते है।
गांव की सीमा पर चलो और चावल आदि सात अनाज लेकर कूटो। उकली में फिर सात अनाज सम्मलित रूप से डाल कर मूसल से कूटते है।
फिर वर-वधु को पाट पर बैठा कर उनके सन्मुख मक्की का चौक पुराया जाता है। स्वच्छ वस्त्र बिछाकर गणपति की स्थापना करते है। वंदना करते है। 'पीठी' करते है, उस समय पर्दा रखते है ताकि वर-वधुको नजर न लगे, फिर 'पीठी' करते हुए निम्नांकित गीत गाती जाती है -
दुल्हन के पीठी करने तथा तेल चढाने का वर्णन करते हुए महिलाएँ गाती है - 'दुल्हन पीठी करवाने को खड़ी है वह मोटी ताजी एवं मस्त-मस्त लग रही है। तिलो का तेल उसको चढ़ाया जा रहा है। सभी इस प्यारी दुल्हन की प्रसंशा कर रहे है।

फिर सभी यही रात्रि विश्राम करते है। भोजन करते है। रात को स्त्री-पुरुष मस्ती से गाते-नाचते है। वर को खाट पर बिठा कर, औरतें खाट सिर पर उठा कर मोरीया नाच करती हुई औरतें गाती है -

हे हरे मोर (दुल्हा) ! तू दिल खोल कर खूब खेल, तेरे घुंघरू बज रहे है। तेरे पिता ने भरपुर प्यार लुटाया है। तू तो हल्दी और मोम में खेल तेरे माता पिता के राज्यमें, तेरे घुंघरूं बजने दे। इस गीत में सभी रिश्तेदारों के नाम ले ले कर गीत को लंबा बना देते है।

बरात प्रस्थान करने से पूर्व दुल्हे को हल्दी से पीठी करके स्नान करवा कर नवीन पोशाक धारण कराते है, तब यह गीत गाते है -

दुल्हे राजा ! तुझे किसने श्रृंगार करवाया ? हाँ तुझे गाँव वालो ने श्रृंगार करवाया। तुझे तेरे वीर भाईयों ने श्रृंगारा।

इस प्रकार भाई भाई और दुल्हे के पिता आदि के नाम जोड़ते हुए गीत लंबा करते है। इस समय एक और गीत गाते है जिसमें शादी का महत्त्व और दुल्हे की पोशाक का सुंदर चित्रण है - लग्न के महत्त्व और दुल्हे के श्रृंगार की अच्छी प्रसंशा इस गीत में की गई है।

हे बहिन! लग्न के बिना भाई कुंवारा रह जायेगा, अतः तत्काल लग्न निकलवा कर लाओ, चाहे चार सौ रूपये भी क्यों न लग जाय। मनिहारे की दुकान से 'मौड़' खरीद कर लाओ, नहीं तो भाई कंवारा रह जायेगा।

बरात के प्रस्थान करते समय दूल्हे को शीघ्र ही रवाने होने की हिदायत देती हुई कहती है कि ससुराल में सभी तुम्हारा इन्तजार कर रहे होंगे।

चलो चलो मेरे लघु भ्राता, चलो, विवाह करने चले। तुम्हारी सासु तुम्हारी तीव्र प्रतीक्षा कर रही होगी।

जब दुल्हा राजा शादी के उत्साह में जल्दी-जल्दी कदम बढाता चलता है, तो सभी बाराती पीछे छूट जाते है। तब साथी कहते है - 'वरराजा ! इतने उतवले मत चलो, देखो संकीर्ण पर्वतीय घाटी में जरा रुकना, तुम्हारी माता पीछे रह गई है, तुम्हारी चाची पीछे पैदल आ रही है और भूआं भी पीछे छूट गई है - जरा ठहरो।

बारात का 'डेरा' (विश्राम स्थल) खुले आकाश के नीचे दिया गया है, जहाँ कोई विशेष प्रबंध भी नहीं है परन्तु हमें तो दुल्हन को ले जाना है सो सब तकलीफ सहन करनी पड़ेगी। तकलीफ का वर्णन निम्नगीत में-

जंगल में बरात का डेरा क्या दिलाया रे पटेल। तेरी बेटी हमें ले जानी है इसलिये जंगल मे मंगल मानकर सहन कर रहे है पर वन में क्या बारात को ठहराया है ?

शादी का शुभ मुहुर्त निकल न जाय इसलिये स्त्रियां समधी को सचेत करती हुई कहती है

- कि जल्दी करो हे मेरे बडे समधि। लग्न का समय हो गया है, कहीं ऐसा न हो कि मुहुर्त ही टल जाय। हे मेरे दुल्हे के दादीया श्वसुर जल्दी करो।

हथलेवा छोड़ते समय मां बाप को दान के लिये प्रेरित करती हुई कहती है - आज आप कन्यादान देने के अधिकारी हुए है - हथलेवा किसने बंधवाया ? अब इसे छुडवा दो। इसे छुडवाने के लिये दान दीजिये। हथलेवा पंडित ने बंधवाया, इसे छुड़ाने के लिये मै अपनी भैस और दूध देती गाय दान में देता हूँ।

गरासियो की बारात जब गाँव के निकट पहुँचती है तो औरते निम्नांकित गीत गीती है - हे पिंघलगढ़ के ढोले ! किधर जा रहे हो? मैं अपने गाँव पिघलगढ़ जा रहा हूँ। अरे हल्दी चढ़े हुए दूल्हे तुम कहाँ जा रहे हो ?

हे वरराजा तुम कहाँ जा रहे हो ? वधु कुँवारी रह जायेगी। तुम शादी करने के अति उत्सुक हो फिर कहाँ प्रस्थान कर रहे हो ? अभी तो 'कांकड़ डोरे' जो हाथो-पांवो में बंधे है वे भी खोलने है। 'मौळी'के धागो से कई अंग लिपटे है फिर तुम किधर चले जा रहे हो ? ब्याह रचा कर वापस शीघ्र घर लौटना। कौन है तुम्हारा पिता ? कौन है तुम्हारी चाची ? कौन है तुम्हारे बंधु (भाई) ? ये सभी यही है तुम्हारे लाड प्यार में उत्साह और उमंग से शादी के उत्सव में सम्मलित हुए है और तुम कहाँ जा रहे हो? तुम गुप्त रूप से चुपचापँ छिपे छिपे किधर जा रहे हो?

शादी करने जाते समय दुल्हे को धीरे धीरे चलने के लिये सावधान करते है कि पांव के नीचे कंकड़ आदि आने से पांव में 'मोच' न पड़ जाय -

हे वरराजा ! धीरे धीरे चलो कंकड़ो के कारण पांव में मोच न आ जाय। बरातियों के साथ चलो, जल्दी मत करो। हे नन्हे वरराजा चलो ब्याह रचाने पर धीरे धीरे चलो एडी में कंकड़ न चुभ जाय, पांव न मुड़ जाय। अरे धीरे चलो शादी करने का इतना क्या उत्साह एवं जल्दी है। देखो तुम्हारे पिता भी पीछे छूट गये है, इनको भी आने दो, कुछ प्रतिक्षा करो। माता का भी अपार स्नेह है तुम पर। अब चलो लगन करने पर देखो धीरे धीरे चलो तुम इस समय दुल्हेराजा बने हुए हो, कहीं पांव के नीचे कंकड़ आने से मोच न पड़ जाय ?

दुल्हे और दुल्हन को बड़े लाड-प्यार से बतलाती हुई स्त्रियां कहती है कि तेरे माता-पिता सब उपस्थित है, शादी बड़े ही ठाठ-बाट और शौक-मौज से कर रहे है।

हे कन्हैया (दुल्हा) ! तुम खूब मौज से खेलो, कूदो, नाचो, यह मृदंग (ढोलक) धमाके से बज रही है। तेरे माता-पिता कौन है ? कन्हैया बता । देख धमाधम ढोलक (मादल) बज रही है सब नाच रहे है, गीत गा रहे है। तेरे भाई बंधुओ ने तेरा ब्याह रचा है तभी खुशी में ढोलक व ढोल बजाये जा रहे है, नाच गाना हो रहा है। हे काना (दुल्हा) ! तुम हल्दी में खेलो, तेल में खेलो। धमाधम मृदंग (मादल) की मधुर ध्वनि आ रही रही है। हम सब

तुम्हारे साथ बारात में समधि के घर चलेंगे, ढोल-ढोलक बजाते नाचते-गाते चलेगे। तुम्हारे पिता ने कितने लाड-प्यार से शादी का उत्सव आयोजित किया है। तब दुल्हा (काना) कहता है - ' मैं तो कुंवारी कन्या के साथ ही लग्न करूंगा, पूर्व शादीसुधा के साथ नहीं, वरना अखंड ब्रह्मचारी ही रहूँगा।' तब वे बताते है कि 'तुम निश्चित रहो कन्या कुंवारी ही है जिसके साथ हम तुम्हारी शादी कराने जा रहे है ।

वरराजा पूछता है - 'कौन कौन भाई बंधु आये है ? शादी में किस किस को निमंत्रण दिया गया है ? बताये ? वो आये घोडे पर बैठकर, वे तेरे देवा मामा है। इन्होने सभी को न्यौता दिया था। सभी रिश्तेदारों, भाई बंधु एवं मित्रों को निमंत्रित किया था। तुम निश्चित होकर खुशी से शादी करो।

गीतों में गाया गया है कि हल्दी बहुत मंहगी है पर मंहगी सस्ती जो भी है, शादी के लिये तो खरीदनी ही पड़ेगी। मंहगाई से जो डरोगे तो लड़का कंवारा रह जायेगा। गीत का मूल भाव निम्नांकित है -

हे भोले गरासिये हल्दी बहुत मंहगी है पर वह गोगून्दा के पास भाडेर में पैदा होती है और खूब पैदा होती है, चाहो तो वहाँ जा कर ले आओ। इधर दुल्हा सोने जैसे सुंदर पलंग पर गहरी नींद में सोया था। अर्धरात्रि को उसे स्वप्न आया। प्रातः उठकर माता से कहा तुम मानो तो और सुनो तो एक बात कहूँ। हे सुपुत्र ! माने जैसी होगी तो अवश्य मानूगी। एक कुंवारी कन्या देखी है स्वप्न में। इसलिये शादी करूगा तो उसीसे नही तो अखंड ब्रह्मचारी ही रहूगा। स्वप्न में मैने मालवा देस में सुंदर कन्या देखी है। मां ने कहा वो तो हमारे शत्रुओं की धरती है, वहां जाने का संयोग होना संभव नहीं है। हे पुत्र ! हेरदी भी बहुत मंहगी है।

मेवाड़ की केवड़ा की घाटी में आते आते सूर्योदय हुआ। जागो मेरी माता सूर्योदय हो गया। हे पिताश्री बैलो पर 'गुणियों' मे क्या लाद कर लाये हो ? हे बेटी ! इसमें शादी के लिये सारी सामग्री है। पुत्री पुनः पूछती है, शादी क्या होती है ? सामग्री उसमें क्या काम आती है ? हे सुपुत्री ! तेरे भाई की शादी है।

मोरीया

भाणेज मोरीया रे, सु[१] खावो, सु पीवो लीला मोरीया रे
भाणेज मोरीया रे, गीलो[२] दोरां[३], कांकरां[४] लीला मोरीया रे
भाणेज मोरीया रे, कुण है थारो मामो, लीला मोरीया रे
भाणेज मोरीया रे, कुण है थारो काको, लीला मोरीया रे

भाणेज मोरीया रे, हूस[१] करे ने रेमो[६], लीला मोरीया रे
भाणेज मोरीया रे, बापे[७] जगन[८] माड्यौ लीला मोरीया रे

१. क्या, २. निगलना, ३. सफेद, ४. कंकड़, ५. उत्साह, ६. खेलो, ७. पिता, ८. शादी

अर्थ

गरासिया मोर को अपना भांजा मानते है इसलिये उसे संबोधित कर कहते है - हे मेरे भान्जे मोर ! तुम क्या खाते हो ? क्या पीते हो ? मोर तो सफेद कंकड़ भी निगल जाता है। हे हरे भरे मयुर! तेरा मामा कौन है ? और तेरा चाचा कौन है ? अर्थात मैं तेरा मामा हूँ । तुम खूब उमंग और उत्साह से खेलो। सब साधन मैं जुटाऊंगा। हे मोर (दुल्हेराजा) तेरे पिताजी ने ब्याह रचाया है। तुम्हारे लिये दुल्हन लेने चलेंगे।
गरासियों में मोर दुल्हे का भी पर्याय माना जाता है। अतः शादी में 'लीला मोरिाया' खूब गाया जाता है।

मोरीयौ

लीलो मोरीयो[१] रे, मेघा[२] रो भाणेज।
आज है देवीयों वारो[३]
लीलो मोरीयो रे, कांई क नाम कठोर[४]
लीलो मोरीयो रे, रूपा[५] रा है गेडिया[६]
लीलो मोरीयो रे, सोना री है डेरी[७]
लीलो मोरीयो रे, जावू छूटा छापर[८]
लीलो मोरीयो रे, पाड़ा हार जीत
लीलो मोरीयो रे, कुण हारे कुण जीते
लीलो मोरीयो रे, बारे[९] मेघा भाई
लीलो मोरीयो रे, अेके[१०] पगे खोरो[११]
लीलो मोरीयो रे, अेके पगे रेटो[१२]
लीलो मोरीयो रे, खोरो खोरो हाले
लीलो मोरीयो रे, गिरा रे छूटा छापरो
लीलो मोरीयो रे, ऊंचो डोट[१३] न्हाख्यौ
लीलो मोरीयो रे, बारा[१४] दांण चढ़िया
लीलो मोरीयो रे, मोरो रौवण लागो

लीलो मोरीयो रे, काळका[१५] आवैने ऊभी
लीलो मोरीयो रे, काळका मुखरै बोली
लीलो मोरीयो रे, की[१६] रोवै
लीलो मोरीयो रे, काळका मांजी रे मोई[१७]
लीलो मोरीयो रे, बारा दांण चढ़िया
लीलो मोरीयो रे, मेघां रीसा बळिया
लीलो मोरीयो रे, चौबीस दांण[१८] चढ़िया
लीलो मोरीयो रे, मोरीयो मेघो गुस्सा आवै
लीलो मोरीयो रे, मेघां न्हाटा[१९] जाय
लीलो मोरीयो रे, मेघां इन्दरपुरी[२०] में जाय
लीलो मोरीयो रे, मोरीयौ भाणेज मारवो
लीलो मोरीयो रे, मेघां तो नाहैन[२१] गिया
लीलो मोरीयो रे, पाडवा बारे[२२] काळ
लीलो मोरीयो रे, मोरीयौ भाणेज मारवो
लीलो मोरीयो रे, मेघ तो रीयाय[२३]
लीलो मोरीयो रे, मोरलौ विचार मांडै
लीलो मोरीयो रे, कांई खायनै जीवां
लीलो मोरीयो रे, जोगण सपने आई
लीलो मोरीयो रे, काळका सपने आई
लीलो मोरीयो रे, क्यूं छानेमानो[२४] सूतो
लीलो मोरीयो रे, काळका मांजी नीं जीवणां रौ
लीलो मोरीयो रे, तूठे[२५] जगोजग जोगमाया।

१. मोर, २. बादल, ३. समय (युग), ४. ठोस, ५. चांदी, ६. शंकुनुमा डंडा (हॉकी जैसा), ७. गेंद, ८. मैदान, ९. बारह (१२), १०. एक, ११. लंगड़ा, १२. टेढा, १३. शॉट, १४. बारह (१२), १५. कालिकादेवी, १६. क्यों, १७. निवेदन, १८. पाइंट, १९. भाग छुटे, २०. इन्द्र की नगरी, २१. भाग गये, २२. बारह (१२), २३. क्रोधित, २४. चुपचाप, २५. तुष्टमान.

अर्थ

हे हरे मोर ! तू मेघो (बादलो) का भांजा है और आज देवताओं का युग (सतयुग) है, तुम अपना नाम उजागर कर। मेरे प्रिय मोर! इन्द्र के साथ मैच खेल। उसके रजत के बडे

'गेडिये' (हॉकीनुमा)(शंकुनुमा डंडे) है और खेलने के लिये स्वर्ण मंडित गेंद (हॉकी के गेंद जैसी कठोर) है। खुले चौड़े मैदान में आज हार-जीत का निर्णय होगा। बारह बादल भाई खिलाडी के रूप में सामने की टीम में है। देखते है कौन हारता है और कौन जीतता है ? हे मेरे प्रिय रंगीले मोर ! तू लंगडता हुआ क्यों चल रहा है ? तेरा एक पांव 'राटा' (टेढा) प्रारंभ से है और दूसरा चोट से चोटिल होने से लंगड़ा रहा है और वे सब मैदान में सरपट दौड़ रहे है, जोर जोर से गेंद मार रहे है। देख अब तक बारह 'गोल' चढ़ा दिये है तुम पर। मोर निराश होकर रोने लगा। मोर को बादलों पर बहुत क्रोध आया और फिर कालका देवी की मनोती मनाई। कालिका देवी से सहायता की प्रार्थना की तो कालिका ने मदद की। उनकी कृपा से बारह गोल उतार दिये और बादलों (इन्द्र की टीम) पर चौबीस गोल चढा दिये। मयूरराज अब अत्यंत प्रसन्न था परन्तु मेघ अति कुपित हुए और भाग छूटे। मेघ इन्द्रपुरी वापस पहुँचे। दुःखद संदेश राजा इन्द्र को दिया कि वे भांजे मोर से हार गये। इस पर इन्द्र ने कोप किया भारी और निरंतर बारह वर्षो तक भयंकर अकाल की घोषणा कर दी। वर्षा की एक बूंद भी नहीं पड़ी। भांजा मोर भी भूख-प्यास से तड़पने लगा। बादल अपने भांजे की दुर्दशा और दुःख नहीं देख सके तथा अत्यंत आकुल-व्याकुल हुए। उधर मोर भी चिन्तित था कि वह क्या खा कर जीवित रह सकेगा? तब मोर ने पुनः कालिका देवी का स्मरण किया कि अब तेरी शरण में हूँ। देवी स्वप्न में आकर मोर से बोली - 'तुं क्यों चुपचाप उदास पड़ा है? कैसी चिन्ता करता है ?' हरा मोर बोला - 'अब तो मैं जीवित नहीं रह सकता।' तब देवी प्रसन्न हुई और शीघ्र अच्छी वर्षा हुई, प्रकृति हरीभरी हो गई, मोर प्रसन्न हो गया।

रंग रूपाळौ' भई मोरीयौ
के-लो सुण भई मोरीयौ (मोगीयौ)
मोरीयौ उगरो' नीचे थेपाई' रा भई मोरीयौ
उगरो नीचो मोरीयौ।
धीरोत" बोले मोरीयौ, भई, भई धीरो" बोले मोरीयौ
मोरीयौ भई मोई' मत मारे मोगीयो" भई
राणीये पाळीयो' मोरीयौ भई राणीये पाळीयो मोरीयौ
मोरीयौ भई रंग-रूपाळौ मोरीयौ
होमे' बोले मोरीयौ भई
मन मत मारे मोगीया
रंग-रूपाळौ मोरीयौ।

१. सुंदर, २. क्यों, ३. गहरी, ४. धीरे, ५. धीरे, ६. मुझे (देवता), ७. शिकारी ८. पाला (पालतू), ९. सम्मुख

अर्थ

हे भाई मोर ! तू रंगीला और सुन्दर है। तू मेरी बात सुन, इतनी गहरी ठंडी छाया के नीचे बैठा है आराम से, फिर भी तू क्यों रो रहा है ? क्यों चिल्ला रहा है ? तू इतना उदास होकर धीरे धीरे क्यों बोल रहा है ? ऐसे सुन्दर मोर को भई कोई मत मारना। ऐसे रंगीन सुंदर मयूर को महारानी भी महलो में पालती (रखती) है। कितना मीठा सन्मुख बोल रहा हूँ मुझे कोई मत मारना।

आबू वाळी ढाडो पाणी रे, मोरला[१] सीणो[२] रोवै रे
आबू वाळी सीलो[३] छाया रे मोरला सीणो रोवै रे
आबू वाळी ढाडी वेरी[४] रे मोरला सीणो रोवै रे
आबू वाळी नकी[५] झील रे मोरला सीणो रोवै रे
आबू वाळी बेंगलो[६] रे मोरला सीणो रोवै रे
आबू वाळी ऊबो पावो[७] मोरला सीणो रोवै रे
आबू वाळी ढाडो पाणी रे मोरला सीणो रोवै रे
औ तो जेसियामा[८] जेसावै[९] रे मोरला सीणो रोवै रे
आबू वाळी ढाडो पाणी रे, मोरला सीणो रोवै रे

१. मोर, २. क्यों, ३. गहरी, ४. कुँआ ५. नक्की झील ६. बंगला, ७. देवता, ८. पालन (पालतू), ९. जैसा इच्छा हो करना

अर्थ

हे मोर ! तुझे आबू पर्वत पर शीतल जल पीने को उपलब्ध है फिर भी तू क्यों रोता है ? क्यों चिल्लाता है ? आबू पर्वत पर वृक्षो की ठंडी छाया है फिर भी तू क्यों रो रहा है ? आबू पर शीतल जल के कूएँ भरे पड़े है, नक्की झील भी है फिर भी तू क्यों रोता है ? वहाँ राजा-महाराजाओं के दिव्य-भव्य महल-बंगले हैं, देवता तक वहाँ निवास करते है फिर भी आश्चर्य कि तू खिन्न मन हो कर क्यों रूदन करता है। तू वहाँ (आबू पर्वत पर) अपनी इच्छा अनुसार भ्रमण करने को स्वतंत्र है फिर भी उदास क्यों ? हे सुंदर पक्षी ! वहां शीतल जल-पान से हृदय में ठंडक पहुँचती है अतः तू पी और मस्त रह।

गणगौर

सेवाजी ने महादेवजी, महादेवजी औणे[1] आवीया रे
थोबो[2] मारी गेवरी[3], महादेवजी औणे आवीया रे
तूं चूनेरी मोलावू[4], महादेवजी औणे आवीया रे
थाबो मारी गेवरी, नाके री मोलावो रे
कांना रा झेलवा मोलावू, महादेवजी औणे आवीया रे
थोबो मारी गेवरी, लेलाटे री टीलरी[5] मोलावो रे
कीम[6] करेने थोबु, महादेवजी औणे आवीया रे
लीला अर पीळा, महादेवजी तेबू[7] तोणिया रे
सेमदरिया री पारी, महादेवजी तेबू तोणिया रे
आज का वाहो रेहो, गेला रो वीरापु मोलावो रे
कीम करेने थोबु, महादेवजी डोरा काढ़े रे
थोबो मारी गेवरी, छाती रौ कोसुओ[8] मोलावू रे
कीम करेने थोबु, महादेवजी औणे आवीया रे
थोबो मारी गेवरी, छाती रौ कोसुओ मोलावू रे
कीम करने थोबु, महादेवजी औणे आवीया रे
थोबो मारी गेवरी, केरो रो संडो मोलावु रे
कीम करेने थोबु, महादेवजी डोरा काढ़े रे
थोबो मारी गेवरी, देही रो सरलो मोलावु रे
कीम करने थोबु, महादेवजी औणे आवीया रे
कै जावो पेंडा-पेंडा रे भई जावो पेंडा-पेंडा रे
थोबो मारी गेवरी-बाई, महादेवजी औणे आवीया रे

१. लेने आये २. रोको, ३. पार्वती, ४. खरीदे, ५. बिंदिया, ६. कैसे भी ७. तंबू, ८. गले के आभूषण का नाम

अर्थ

गरासणियाँ पार्वती को संबोधित करती हुई, शिवजी को अपने यहाँ रात्रि विश्राम करने का प्रेमभरा आग्रह करती है -
हे पार्वती ! हमे पता है कि शिवजी आपको लेने आ गये है परन्तु आप धीरज रखो और कुछ दिन हमारे यहाँ रहो तथा शिवजी को भी रूकने को कहो। चलो तुम्हारे लिये बाजार से

चूंदड़ी खरीद कर लायें। पार्वती कहती है मै अब नहीं ठहर सकती क्योंकि शिवजी लेने को आ गये है। इस प्रकार औरतें गणगौर को रोकने के लिये विविध प्रलोभन देती है - नाक की नथ, कांनो के झेले, ललाट का टीका और बिंदिया आदि ला कर देने को कहती है कि किसी प्रकार रूक जाओ, जो कहो वह फरमाइश पूरी करने को तैयार है। लो ताजा दही मंगवा दूं। तुम किसी प्रकार रूक जाओ। शिवजी को किसी प्रकार समझा कर रोकने की कृपा करो। परन्तु घणगौर (पार्वती) नही ठहर सकने की मजबूरी बताती है। समुद्र के किनारे हरे-पीले तंबू शिवजी ने तान दिये है।

दीवाळी रो गीत

आयौ रो वीरो वाळमो[१] परव[२] जावो बैन रे औणे रे
दीवाळी सरखो वागलो[३] जावो बेन रे औणे रे
रोटा-रोटली करे मायरी, जावो बैन रे आणे रे
घोरावळी[४] मा जावो रे जाइया[५] घओरीलो ले आयो रे
सासरू[६] तंग भीड़ रे जाइयै, खोटा समणा होया रे
पैलो रोटो भागो रे जाइया, जावो बेन रे औणे रे
ठेके[७] असवार होयो रे जाइयो, जावै बेन रे औणे रे
पड्यो लांबो मारगो जाइयो, घुघुळी[८] अंडी रेत रे
सेका सेक गीयो रे जाइयो, बेनरी कोनी दीठी रे
बेनरी घेर गीयो रे जाइयो, गियो बेने रे देस रे
सास सासेरू बोल बेनोई, बेनरी केमु गीयी रे
सास भासेरू मु बोलु रे साला, बेन झोटीयो[९] गी रे
झोटी तो घर दीठी रे, बेनरी कोनी दीठी रे
सास सासेरू बोल बेनवी, बेनरी कीमु गयी रे
सासु सासु मु बोलु रे साला, बेन सालीयो[१०] गीयी रे
सालीयो तो बारे दीठी, बेनरी कीमु गयी रे,
सासु सासु मु बोलु रे साला, बेनरी परी मारिये रे
नणद रे खारी[११] हूथा रे[१२] बेनरी साला परी मरिये रे

१. प्यारा, २. त्यौहार, ३. त्यौहार, ४. गांव का नाम, ५. पुत्र, ६. ससुराल, ७. शीघ्र, ८. झीनी, ९. भैस, १०. बकरीयां, ११. दुश्मन, १२. होने से

अर्थ

गीत भाई-बहिन के संबंध में है। भाई दीवाली के त्यौहार पर बहिन को लेने उसके ससुराल जाता है परन्तु बहनोई ने बहिन की हत्या कर दी है, इसका वर्णन है-
भाई को पवित्र प्यारा त्यौहार पर बहिन को लेने के लिये उसकी माँ भेजती है। माता रोटी बना कर 'भाता' करती है। ससुराल वाले आर्थिक संकट में है। 'भाते' की प्रथम रोटी टूट जाती है, यह सगुन खराब हो रहे है पर जाना तो है ही। वह घोड़े पर सवार हो कर जा रहा है, ससुराल दूर है, रास्ता लंबा है, रास्ते में धूल अधिक है पर जैसे तैसे बहिन के ससुराल पहुंच गया वहाँ गया तो घर में बहिन को नही देखा तो पूछा कि - 'मेरी बहिन कहाँ है ?' हे बहनोई ! बताओ मेरी बहिन कहाँ है ? बहनोई बोला - 'वह तो भैस चराने गाई है। भैंस को तो मैने अभी घर देखी थी पर बहिन को नही देखा । हे जीजाजी ! बहाना मत बनाओ सच्च बताओ वह कहाँ है ? सच पूछो तो वह बकरिये चराने गई होगी। बकरियों को तो मैने बाहर देखी थी, सच बोलो। सच्च तो यह है कि उसे मैने मार दिया क्योंकि ननद भाभी को नही पटती थी।

होळी रा गीत

आयी रे सोदरणी[1] रात, होळीयो कुण जाई रे
रेमणा[2] सरकी[3] रात रे, धोरी रमणा आवो रे
किये वैने परदेस, होळीयो कुण जाई रे
जावो मारा वीरा, कीणा वधवै औणु रे
होळीयो कुण जाई रे।

१. चांदनी, २. खेलने, ३. जैसी

अर्थ

होली के त्यौहार का महत्व आंकते हुए गरासिया महिलायें कहती है - देखो, आ गई चांदनी रात। होली को किसने जन्म दिया ? यह कितनी सुंदर है। यह पूर्णीमा की रात्रि खेलने जैसी है। आओ 'धोरी' पर खेलने चले। उनको जाके परदेश में कहना कि होली को किसने बानाया ? हे मेरे भाई ! उनको निमंत्रण देकर ले आओ। होली आ गइ है। होली जैसा सुंदर त्यौहार किसने रचा?

मेळां रा गीत

रई नै कैवां बोले रे, डोलर[1] कड़का करे।
औगणा वाळे सोरे, डोलर कड़का करे।
ओळी री आमेली, डोलर कड़का करे।
धनजी है गेराइयो, डोलर कडका करे।
मेळां नी हुंसिलो, डोलर कड़का करे।
आपणे गेळे जावु, डोलर कड़का करे।
जोड़ी रे जोडी ना, डोलर कड़का करे।
सोरीयो आपणे मेळे जाव, डोलर कड़का करे।
पीळी नै परभाते, डोलर कड़का करे!
सोरी हूँ पेरीनै जाय. डोलर कड़का करे।
भाबी वाळी सुंदड़ी, डोलर कड़का करे।
भाबी वाळो घाघरो, डोलर कड़का करे।
सूनड़ी नो रमसोळ, डोलर कड़का करे।
धनजी है गेराइया, डोलर कड़का करे।
धनजी कैड़े सरी राखे, डोलर कड़का करे।
धनजी हाथै तरवारी, डोलर कड़का करे।
हाथै डिडिया लैवे, डोलर कड़का करे।
करगणी नी कोली, डोलर कड़का करे।
पीळी नै परभाते, डोलर कड़का करे।

१ डोलर शब्द दुहरे अर्थ में प्रत्युक्त हुआ है - ऊपर से नीचे की ओर गोलाकार घुमने वाला लोहे का झूला और प्रतीक अर्थ में मेले के लिये भी प्रत्युक्त हुआ है इसलिये 'डोलर कड़का करै' पंक्ति हर बार दोहराई गई है।

अर्थ

सब मिल कर गाते है - 'डोलर हींडा' (नीचे से ऊपर चलने वाला झूला) कट-कट की ध्वनि कर रहा है । होली का मेला भरा है। धनजी नामक गरासिया युवक मेले में जाने को अत्यन्त उत्सुक है। हमें भी मेले में चलना है। सबकी समान जोडी है। युवतियां कह रही है -हमें भी मेले मे जाना है। पीली प्रभात को वे मेले चली। गरीबी के कारण पूरे कपड़े भी नही है इसलिये अपनी भाभी की चमकदार चुंदडी और घाघरा पहिना है। धनजी पूरा

'मेळा रा खेळा' है - धनजी गराया कमर में कटार तथा हाथ में तलवार और डंडीयां रखता है। चलो, चलो जल्दी करो, प्रभात का पीला प्रकाश फैल रहा है।

सूनरी पैरे ओढे नै रेमवा नेरीयू
हो पाणला पगेरा होनीरा री हाटां
हो मोजरी मोलावौ मोचीड़ा री हाटां
केपड़ा मौलावौ वाणीया री हाटां
हो टीलरी माथा री बजोजी री हाटां
के नाक री नथेरी मोलावौ सोनीरा री हाटां
के चूड़लो मोलावो लेकारा री हाटां
हो लगेने लकावो जोसीजी री हाटां
ले करने घेर आवो साते।

अर्थ

गौर को मेले के चौराहे पर गणगौर रख कर उसके सम्मुख यह गीत गाया जाता है। इसमें चूंदड़ी औढ़ कर गणगौर खेलने के लिये कहा गया है, परन्तु केवल मात्र चूंडड़ी ही पर्याप्त नहीं है। अन्य श्रृंगार भी आवश्यक है इसलिये सोनी की दुकान से पांवों की पायल, मोची की दुकान से जूतियां, बनिये की हाट से पड़ला, बजाज की दुकान से टीका, लक्षकार की दुकान से चूड़ी (चूड़ा) खरीदी और फिर जोशीजी (पंडित) से लग्न लिखवा कर घर लाये।

पांच पुजारी नै पांच पुजारा
जावांज वाई केट्यौ रौ जळम
पांच मांरो जळम कुण रे लेवरावियो गौर
कुण हे थआरो बापो नै कुण है थारी माव
मोटे मोटे रे गोर होवै कै पटोरा लेवरावियै

अर्थ

इस गीत में स्त्रियाँ और गवरी (पार्वती) के बीच संवाद है - पांच तो तुम्हे पूजने वाले पुजारी है और पांच ही आप पुजवाने वाले है (शिव परिवार के पांचो सदस्य)। आपके लिये जाजम बिछा रहे है पर 'गोर' कौन लायेगा ? गोर गाँव वाले लिवा लायेगे और वे ही खर्चा करेगे। स्त्रियाँ पूछती है - तुम्हारे माता-पिता कौन है? गोर कहती है - 'गांव के पटेल ही मेरे सब कुछ है, उन्होने ही मुझे यहां ला कर बिठाया है।'

मेळौ

कोई सांमळाजी[1] रौ मेळौ, छतरी रे छोयलै[2]
सांमळाजी रौ मेळौ
भाभी ने देवरियो छतरी रे छोयलै
राई ने केतु बोले छतरी रे छोयलै
आपणे जाणु मेळा मांय रे
आबरथायौ[3] मेळौ छतरी रे छोयलै
यूं राई ने केवु बोले छतरी रे छोयलै
न मोकलोत[4] जाई रे छतरी रे छोयलै
आबरथायौ मेळौ छतरी रे छोयलै
कांई सारलौ[5] औढे जाई रे छतरी रे छोयलै
नंणदे वाळो सारलो छतरी रे छोयलै
वो सारलो ओढेने जाई रे छतरी रे छोयलै
न मोकळौ[6] तोई जाई रे, छतरी रे छोयलै
आबरथायौ मेळौ छतरी रे छोयलै
ओ तो सामळाजी रो मेळौ, छतरी रे छोयलै
भाभीवाळौ पावलौ[7] पैरे ने जाई रे, छतरी रे छोयलै
भाभी ने देवरियो छतरी रे छोयलै।

१. एक मेले का नाम, २. छाया में, ३. विराट-विशाल, ४. नहीं भेजेगे, ५. औरणा, ६. भेजेगे, ७. पायल

अर्थ

सांमळाजी का मेला भरने जा रहा है। मे छाते की छाया में मेले जाऊंगी। देवर भाभी दोनो ही छाते की छाया में मेले जाने का कार्यक्रम बना रहे है। यह मेला अन्यन्त विराट-विशाल रूप में भरता है। मै सच कहता हूं छाते कि छाया में हम दोनो अवश्य मेले में जायेगे। छाता नहीं भी देगे तो भी हम मेले मे जायेंगे - यह हमने पक्का निश्चय कर लिया है। तुम कौनसा 'ओरणा' ओढकर जाओगी? मै ननद का ओरणा ओढ कर मेले जाऊंगी। वो 'ओरणा' नहीं भी देगी तो नया न सही, मेरा पुराना ही ओढकर चली जाऊंगी पर जाऊंगी जरूर, छाता की ठंडी छाया में। यह सांमलाजी का मेला बड़ा प्रसिद्ध है। जाना जरूर है। भाभी के पायल पहिन कर मेले जाऊंगी। देवर-भाभी छाते की छाया में सांमळाजी के मेले चले। यह देवर भाभी का प्रेम-प्रणय गीत है।

पइसा ओछा परिया

मारे आबूरोड जाणू होतू रे,
पइसा ओछा परिया
मारे झूलकी लैणी हेती रे,
पइसा ओछा परिया
मारे बजारा जाणु होतू रे,
पइसा ओछा परिया
मारे राणकपुर जावु होतू रे,
पइसा ओछा परिया
मारे गप्पा गोळी खावी हेती रे,
पइसा ओछा परिया
मारे निरमोळी खाणी होतू रे,
पइसा ओछा परिया
मारे पोलकु लेवु हेतो रे,
पइसा ओछा परिया
मारे बेसे में बेवु होतू रे,
पइसा ओछा परिया
टिगस लेवो हेतू रे,
पइसा ओछा परिया
मारे मेलिया मा जावु होतू रे,
पइसा ओछा परिया
मारे मरमरिया खावी होती रे
पइसा ओछा परिया
मारे ठंडा-मीठा खावा हेतू रे,
पइसा ओछा परिया
धोळा बेकल लेवा होता रे,
पइसा ओछा परिया
लाल मोजा लेवा होता रे,
पइसा ओछा परिया

अर्थ

गीत में प्रेम-श्रृंगार और गरीबी की मजबूरी दोनो का मिश्रित वर्णन है -
हे प्रिय ! मुझे घूमने आबू रोड जाना था परन्तु पैसे कम पड़ गये सो नहीं जा सकी। मुझे वहाँ बाजार भी जाना था, मेरे लिये झुलकी (कमीज) लानी थी परन्तु पैसे नही थे अतः नही लाई। मैने रणकपुर मन्दिर भी जाने का सोचा था पर वहाँ भी इसी कारण न जा सकी। मेरी गोली खाने की इच्छा भी हुई थी और नमकीन भी खाना चाहती थी पर क्या करूं मजबूरी थी पैसे कम पड़ गये। मुझे ब्लाउज (कचुकी) भी खरीदनी थी पर पैसे के अभाव से नहीं खरीद सकी। मुझे बस यात्रा का भी शौक है पर पैसे समाप्त हो जाने से पैदल आना पड़ा। मुझे मेले मे भी जाना था, वहाँ कुल्फी भी खानी थी, बालों के लिये क्लिप भी लाने थे, मेरे लिये लाल मौजे भी लाने थे, पर यह सब मन की मनमें रह गई पैसे नहीं होने से। गरीबी सबसे बुरी है।

मजूरी रा गीत

रई[1]ने कैवा बोलो रे, पांणी नोव हाथ माथै[2]
कुण राजा वाजै[3] रे, पांणी नोव हाथ माथै
राजा सजणसिंघ वाजै रे, पांणी नोव हाथ माथै
मगरे मे'ल मंडावे रे, पांणी नोव हाथ माथै
हलावटां[4] तेड़ावौ[5] रे, पांणी नोव हाथ माथै
कारीगर तेड़ावौ रे, पांणी नोव हाथ माथै
भसतियां ने घेरो रे, पांणी नोव हाथ माथै
दनको घेरो पड़ रे, पांणी नोव हाथ माथै
ओडां नो है घेरो रे, पांणी नोव हाथ माथै
मजूरां नो है घेरो रे, पांणी नोव[6] हाथ माथै
दनको सपाई आवे रे, पांणी नोव हाथ माथै
दनको केलू फोड़े रे, पांणी नोव हाथ माथै
सपाई आवै न थांरीमारी करे रे, पांणी नोव हाथ माथै

१. पार्वती, २. नीचे, ३. कहलाते, ४. शिल्पि, ५. बुलाओ, ६. नौ (९)

अर्थ

राजा-रजवाड़ों के समय किसान-मजदूरों से बेगार लेना एक आम बात थी। एक तो

निःशुल्क श्रम और ऊपर से सिपाहियों की गाली-गलौच एवं मारपीट। गरासिया ने इस गीत में तत्कालीन सामंती व्यवस्था के प्रति अपना आक्रोश व्यंग में प्रकट किया है। राणा सज्जन सिंह ने सज्जन गढ़ महल बनाया जो ऊँची पहाड़ी पर था जहाँ पानी तलहटी से ले जाना पड़ता था, उसकी व्यथा कथा इस गीत में है -
राजा सज्जनसिंह पर्वत पर महल बनवा रहे है जिसका नाम रखा था - 'सज्जन गढ'। इसके लिये जाओ शीघ्र ही शिल्पियों को बुलाओ, निर्माण करने वाले कारीगरों को बुलाओ, पानी के लिये भिस्तियों को बुलाओं, गधो से मिट्टी मंगवाने के लिये 'ओडो' (एक जाति विशेष) को और मजदूरों आदि को शीघ्र बुलाओ, काम शुरू करो। दिन में राज के सिपाही आते है, गाली-गलौच, अभद्र व्यवहार और मारपीट तक कर जाते है पर देखो तो सही पानी पर्वत की तलहटी से लाना है, जो नौ हाथ गहरे है, कितना दुष्कर कृत्य है।

उदीयापर रा राणाजी

राजो माथै उदीयापर रो राज रो मारी सेली रे लो
इत बळदो[1] रो कमोण[2] न खाये रे लो, मारी सेली रे लो
कोदाळ्यौ[3] रौ गोडियौ[4] अनाज खाय रे लो, मारी सेली रे लो
इत गायों भैसीयो रो घी न खावै रे लो, मारी सेली रे लो
इत नारेळो[5] रो तेल राणा खावै रे लो, मारी सेली रे लो
इत सोळै[6] रे राणी राजा परणीयो रे लो, मारी सेली रे लो
इत लोरकी[7] राणी मुखरे बोली रे लो, मारी सेली रे लो
राणा थारो रे जाजो खोज रे, मारी सेली रे लो
बालपणा मा रंडापो भोगीयो रे लो, मारी सेली रे लो
इत लोरकी रे राणी मौसा[8] बोले रे लो, मारी सेली रे लो
इत हिन्दवा रे सूरज गादी तपे रे लो, मारी सेली रे लो
इत सवा रे पाइली[9] मोती न्हाखै रे लो, मारी सेली रे लो
इत फूला रे तड़कैने खोळयां[10] पडीया रे लो, मारी सेली रे लो
इत हिन्दवा रौ सूरज गादी तपे रे लो, मारी सेली रे लो
राणिया इ एकई नीं जायो बाळको[11] रे लो, मारी सेली रे लो

१. बैल, २. कमाई, ३. कुदाली, ४. खोदा हुआ, ५. नारीयल, ६. सौलह, ७. छोटी, ८. ताने, ९. एक नाप, १०. गोद में, ११. बच्चा

अर्थ

समस्त राजाओ के राजा उदयपुर के राजा रहे है अर्थात सर्वश्रेष्ठ राजा है। उदयपुर के एक महाराणा ऐसे भी हुए कि वे बैलो की कमाई अर्थात् बैलो से पैदा किया हुआ अनाज नहीं खाते थे और खेती, कोदाला आदि से खोद कर अन्न उत्पन्न करके खाते थे। वे गाय भैस का घी नहीं खाते थे उसके स्थान पर नारीयल का तेल खाते थे। इधर उस राणा को सैलह रानियां थी।

सबसे छोटी रानी लाज शर्म तोड़ कर मुख से बोली कि महाराणा तुम्हार वंश नष्ट हो, हम सभी रानियां बालपन और यौवन में भी विधवा जीवन बिता रही है। हमें शादी करके क्यूं लाये। इस प्रकार छोटी राणी ताने कसने लगी। दासी ने जवाब दिया कि हिन्दुओं का सूरज सिंहासन पर तप रहा है। रोज सवा पाइली (एक नाप विशेष) मोती सिंहासन पर डालते है तो फूले तड़क कर उछल कर वापस गोद में आते है, इतना तप है सिंहासन का इसलिये रानियां को एक भी राजकुंवर नहीं जन्मा।

गरासियों का यह गीत उदयपुर महाराणा श्री भोपालसिंहजी के विषय में बताते है।

काळ रा गीतड़ा

लखा लागी जीवा[1] जूण[2]
डूगरां भाखरो[3] रो सारो खूटो[4]
नदी रां नीर आंगे[5]
नरो[6] साडी[7] नारी
नारियो[8] साडीयो[9] बाल
कोठीयो खूटो धांन
जाव[10] लागो खो[11] बीजो[12]
ओट[13] धून गालू[14]
हपनियो[15] उछरियौ[16]
होम व्हू होडू है
खाई मा है डोंग है
होडो वाळी धरती सारवा
लोगो मा पाडो टगरो सारवा लेगो

१. प्राणी, २. जीवन, ३. पहाड़ों, ४. समास, ५. नष्ट, ६.नर, ७. छोडा, ८. नारिया, ९. छोडा, १०. जाने लगा, ११. वंश (खोज) १२. बीज, १३. यहाँ, १४. गळना, १५. १८५६ वि.स. १६. शुरू

अर्थ

जीवो का जीना हराम हो गया। कष्ट की पराकाष्टा हो गई। पहाड़ों और जंगलो का घास (चारा) समाप्त हो गया। नदियों का नीर सूख गया। नरो (मनुष्यों) ने अपनी नारियों (पत्नियों) को त्याग दिया। नारियो ने अपने बच्चो तक को छोड दिया। कोठो का धांन समाप्त हो गया। जैसे जीवों का बीज (वंश) ही नष्ट हो जायेगा। ऐसा प्रतीत होता है यहाँ सबका नाश हो रहा है, ऐसा यह छप्पन का अकाल पड़ा है।

छनवा[1] थारै माथै बिजुरी जी पड़जौ
नैन्यौ[2] धांन निजरे, नीं देख्यौ
टाबर भूखा ई रोवै रे छिनवा
कंकोड़ा कड़वा खजूर नीं देख्या
टीबीम्रा बोर झरे रे छिनवा

१. १९९६ का काल २. बच्चोंने

गराया अलेखू काळ रा झपाटा में चढ़या।
वि.सं. १८९६ रै काळ रा गीत हाल ई भाखरां में गूंजै।

हे १८९६ के आकाल ! तुझ पर बिजली क्यों नहीं गिर जाती। नन्हे मुन्ने ने अनाज देखा तक नहीं कि कैसा होता है। बच्चे भूखे ही रो रो कर सो रहे है। अरे छप्पनिया अकाल ! अन्न तो दूर रहा कड़वे कंकोड़े, खजूर, टीमरू और बोर तक नही दिखाई देते। भयंकर अकाल की चपेट में पूरा देश है।

काळ

परीयो कोडी[1] काळ राई[2] नै रे ढोला[3] रे
परीयो बारै काळ राई नै रे ढोला रे
मरे धरावो ढोर, राई नै रे ढोला रे
मरे सेरकी[4] झोटी रे राई ने रे ढोला रे
चारो पांणी भारवो रे बारी रे
खेरीयो[5] तको जाय मारको राइका रेबारी रे

फिरे फिरे ने चारो भारे रे राइका रेबारी रे
ओठे ठाडो पांणी रे राइका रेबारी रे
ओठे मातो चारो रे राइका रेबारी रे
चारो भाळै ने पाछा आवै राइका रेबारी रे
आया घेर झोपले[७] रे राइका रेबारी रे
आटा कोतल[८] घाली के राइका रेबारी रे
चोरी ने रे हावो रे राइका रेबारी रे
गयी रे सेक्का सेक रे राइका रेबारी रे

१. कोडिया (एक अकाल का नाम), २. पार्वती, ३. शिवजी, ४. बारह, ५. सेर घी देने वाली भैस, ६. दौडता, ७. झोपड़ी, ८. थैला

अर्थ

भयंकर 'कोडिया' अकाल पड़ा है। हे शिव पार्वती ! जानवर मर रहे हैं। सेर घी देने वाली सेरकी भैस भी कहीं मर न जाय। हे देवासी ! कही चारे पानी का पता करो अथवा इस अकाल के क्षेत्र को छोड कर दौडते वहाँ से चले चलो जहां पानी की व्यवस्था संभव है। इस व्यवस्था हेतु राइका (ग्वाला) मारा मारा भागा भागा फिर रहा है। घूम धूम कर चारे पानी को तलाश कर रहा है।

इन्दर जमी रूटी ने जंगल रूठीया
मगरियां[1] भाटा तपियां[2], परवी उजपड़िया
पांणी बिन वाणी बंधनी वाछरू म[3]
ढाडो सोपाया जींणो छोरिया
काळो जी काळ अकाळ गै।

१. पर्वत, २. तप गये. ३. बछड़े

अर्थ

इन्द्र देव रूष्ट होने से पृथ्वी और जंगल सभी रूठ गये है। पर्वतो की चट्टाने तप रही है, जल रही है। पक्षी पलायन कर गये है। पानी के बिना प्यासे बछड़े मूक हो गये है। जानवरो का जीना हराम हो गया है। विकराल अकाल की छाया काली और अधिक काली होती जा रही है।

काळ नो कोमठी

अे सपेनियो[1] काळ पढ़ियौ, मामा कोमठी[2] धरि आलो[3]
डूगरां सारो[4] खूटो[5] रे मामा कोमठी धरि आलो
आटो[6] सांमले नीर रे मामा कोमठी धरि आलो
कोठा री धांन खूटो रे मामा कोमठी धरि आलो
जग मा भूंडो व्हैग्यौ रे मामा कोमठी धरि आलो
धवळा ढोर री नसो रे मामा कोमठी धरि आलो
हूरली[7] तो बाउरौ डोलीयो रे मामा कोमठी धरि आलो
मीडा[8] बाकरा री नसा कढावो रे मामा कोमठी धरि आलो
भंमता-भंमता[9] रा पांखडां रे मामा कोमठी धरि आलो
जग मांय भूंडो थायो रे मामा कोमठी धरि आलो
धरि आलो क लेई दियो रे मामा कोमठी धरि आलो

१. सन् १८५६, २. धनुष, ३. घड़ाओ, ४. घास, ५. समास, ६. सूखा, ७. विशेषजात का बांस, ८. भेड़, ९. गीध

अर्थ

सन् १८५६ का भयंकर अकाल पड़ा था। मामाजी अब तो मुझे धनुष -बनवा कर दे दो, इसके अलावा जीने का कोई चारा नहीं है। क्योंकि पर्वतों पर घास सूख गया है। तालाब-खड्डो में पानी सूख गया है। कोठा-कोठिया में अनाज खत्म हो गया है। दुनिया में लोगो के बुरे हाल हो रहे है। मुझे तो मामा धनुष बाण बनवा कर दे दो। वही मेरी जीविका का आधार होगा।

धनुष बनाने के लिये गाय आदि सफेद पशु की नसे निकालनी पड़ेगी क्योंकि उसीसे 'पणुच' (तीर के पकड़ने की जगह) बांधा जायेगा।एक विशेष जात का बांस जिसे 'हुरली' कहते है, यह पक्का बांस होता हैजिस पर सूरज का हमेशा प्रथम प्रकाश पड़ता है, पहाड़ की इतनी ऊंची चोटी पर होता है। वह लाना पड़ेगा। फिर भेड़ या मीडा बकरे की नसे निकालकर लानी पड़ेगी। इससे तीर के पीछे के पंख बांधे जाते है। फिर गीध या गिरध के पंख लाने होगे। तीर के पुच्छ भाग में इसके छोटे छोटे पंख भेड़-बकरे की नसो से गांठ कर बांधने पड़ेगे। इतने परिश्रम से धनुष बाण तैयार होगा। मामा मेरे लिये यह धनुष बाण बनवा दो न। बनवा न सके तो बना बनाया ही खरीद कर दिला दो न। इससे मै शिकार करूंगा, परिवार का भरण पोषण करूंगा।

हुंओर रौ सिकार

मामो नै भाणेज रे मोमोजी हुओर जातो रयु
    मामो ने भाणेज रे...
आबू रा गोडेमा मामोजी हुओर जातो रयु
    आबू रा गोढेमा...
कातरिया जोडेमा मामाजी हुओर जातो रयो
हीणाक है डोळीयु मोमोजी हुओर जातो रयु
    हीणारू है ओळीयु...
धामणा रू है ओळीयो मामोजी हुओर जातो रयो
    धामणा रु है ओळीयु...
हीणारो है हरीयो मोमोजी हुओर जातु रयु
    हीणारो है हरीयो...
कायणा रो है हरीयो मोमोजी हुओर जातु रयु
    कायणोरा है हरीयो..
टोमट रे है हरीयो मामाजी हुंओर जातो रीयौ
मोमा गाटीयो राजे मोमोजी हुओर जातु रयु
    मोमा गाडीयो राजे...
डावे अंगे तीर लगो, लोही पेरवा लागो
    मामो ने भाणेज लारे लारे जावा लागा
भाणेजा घेरवा मोमोजी हुओर जातु रयु
    भाणेज गेरवा जाजे...

अर्थ

मामा-भांजा शिकार पर निकलते है। भांजा मामा से कहता है। मामाजी तीर लगा हुआ सूअर चला गया। दोनो बातें करते,उसका पीछा करते है। आबू की तलहटी में सूअर खो गया। 'धामण' वृक्ष का धनुष बना हुआ है फिर भी सूअर निकल गया, गजब हो गया। तीर किसका बना हुआ है? 'टोमट' वृक्ष की लकड़ी का तीर बना हुआ है। मामा घाटी में सूअर खो गया, छिप गया। बाई ओर तीर लगाया इसी दिशा में इसकी धार गिरती गई है। भांजा तुम सुअर का घेराव कर, झाड़ी से निकलते ही अचूक निशान लगा दूंगा।

अतर्कथा : मामा और भांजा पालनपुर के पास रहते थे। उन दोनो को स्वप्न में सूंधामाता (चामुंडा) ने कहा कि तुम दोनो मेरे गुफा मंदिर में पूजा-सेवा करने को आ जाओ पर वे नही आयी। वे राजपूत थे। तब सूंधामाता सूअर बन कर पालनपुर के आसपास पर्वत शृंखला में आये। उधर ये मामा-भांजा शिकार आये हुए थे। उन्होने सूअर देखा और पीछा किया। तीर लगता ही नही। अंत में भांजा के एक तीर सूअर के पुट्ठे पर लगा, खून की धारा छूटी। वे खून की धारा के निशान से पीछे पीछे जाते रहे। कभी वह अलोप ही हो जाता कभी घायल अवस्था में पास खड़ा दिखाई देता। यों करते करते सूंधा पर्वत ले गया और सूंधामाता के मंदिर में घुस गया, वे भी घुसे तो दरवाजा बंद हो गया, सूंधामाता असली रूप में आई और बोली यही मेरी पूजा-सेवा में रहो और फिर वे वही रहे। आज भी राजपूत पूजा करते है। सूंधामाता जालोर में है।

दारू

हमो मेलजो जेद दारू पीयेन जो
ओट जायेन ढोल वजारी वेल काचो
पेचण मेळा मा फिरो
पेचण सोरा-सोरी खोरापी करो
पेचण सोरे राजु होवत घेर ले आवो
वानको सोरीर आई न बापो आवे वी आवेती
घेर भालेन-देखने जावै, पचेक सोरीर काका भाई
आवै पेचण अेक बोकरजु लावो ने दारू लावो पीयान
राजीपो करो ने दापारा रिपिया हजार आलो
हमोर राजीपो होजो
पेचण सोरा नै सोरी आई बापा रेट जोएन आवै।

अर्थ

मेला भरा हुआ था। मेले में ढोल बज रहा था। युवक शराब पी कर मेले में आया। उसने लड़की से छेड़खानी की। माता-पिता शादी नहीं करना चाहते थे सो घर जा कर समझौता कर लिया। लड़की के चाचा भाई आदि घर-वर देखने को गये कि समधि आदि कैसे है? तब एक बकरा और शराब लाये और समझौता हो गया तथा वैवार (दापा) के लड़की के माता-पिता को दिये और शादी कर दी।

(वीरमल) रौ गीत (टोटका रौ मिंतर)

गेला वाळा मेघला जाते रौ गरासियो खणण वाटकी वाजै
रेता वाळौ नवलो खण्ण वाटको वाजै
गढ़ैत गाम मा आवै रे, खण्ण वाटकी वाजै
बाई त मोदी परी रे, खण्ण वाटकी वाजै
आपोर गेढ़ धूजै रे, खण्ण वाटकी वाजै
पाइली जोव उतारो, खण्ण वाटकी वाजै
आखा मुट्ठी भाळी रे, खण्ण वाटकी वाजै
जेबरो देख वळियौ रे, खण्ण वाटकी वाजै
इक वीरि इक मल (देवीमां) रे, खण्ण वाटकी वाजै
सौळे रे लीबू लावो रे, खण्ण वाटकी वाजै
रातो औछार लाजो रे, खण्ण वाटकी वाजै
धौलो औछार लावो रे, खण्ण वाटकी वाजै
रेता वाळा नवळा रे, खण्ण वाटकी वाजै
गेला वाळा मेघा रे, खण्ण वाटकी वाजै
रगतियौ वीर भेळौ रे खण्ण वाटकी वाजै
लटकै मलरी धूणै रे, खण्ण वाटकी वाजै
वीर नै नळ तो भेळो रे, खण्ण वाटकी वाजै
लटकै लटकै धूणै रे, खण्ण वाटकी वाजै
हीणा रे बारा मा रे, खण्ण वाटकी वाजै
पांच भाणौ रौ गणणौ, खण्ण वाटकी वाजै
गणण हाथै आयो रे, खण्ण वाटकी वाजै

अर्थ

गेला का पुत्र मेघला जाति से गरासिया और रेता का पुत्र नवला दोनो गढ़ से आ रहे है, और उनकी बहिन बीमार पडी है - इसलिये खणण कटोरी बज रही है अर्थात उसके लिये मंत्र तंत्र हो रहा है। इस मंत्र बल से 'अपोर गढ' तक थर्राता है। लाओ, पाइली (करीब एक किलो) जौ ऊपर अवार (फेरकर) कर, फिर उसमे से मुट्ठी भर कर देखो, गहनता एवं गंभीरता से अंतदृष्टि से देखा, वह खण्ण कटोरी बज रही है। एक मुट्ठी उस प्रेतात्मा के और एक देवी मां के लिये है।

तंत्र मंत्र की प्रक्रिया हेतु विभिन्न साधन जुटाओ - चलो लाओ सौलह नींबू, लाल 'औछार' (थाली पर ढ़कने का कपड़ा) और धौळो 'औछार' मंगाओ और खणूण कटोरी बजने दो। रेता का नवला, गेला का मेघा और रगतियो वीर भी सामिल है। इनके पांच मण का चढ़ावा (प्रसाद) चढ़ावो, यह माप भी मिल गया। लो खणूण कटोरी बजती चली।

विशेषः यह किसी रोग के लिये मंत्रो से झाड़ फूक करने की विधि का एक नमूना दिया गया है।

आजादी रा गीत

मूं तो लाडू नीं खावूं, मूं तो पेड़ा नी खावूं।
मनै हबड़ राबड़ी पादे रे मा'राणा परताप
मूं तो बेदूकां नी डरपू, मूं तरवारियां नीं डरपू
मारो तीर घणोई चोखो रे मा'रणा परताप।

अर्थ

वनवासी गरासिया महाराणा प्रताप से कहता है कि मुझे लड्डू या पेड़े नहीं चाहिए, मुझे तो केवल मात्र मक्की की राबड़ी पिला दो बस। मैं अकबर की सेना की तोपें, बंदूकें और तलवारों से नहीं डरता, मेरा तीर 'रामबाण' है, हे राणा प्रताप ? इस पर मुझे पूरा भरोसा है।

पाड़वा-पाड़वा भूरीयौ आवै रे
भूरीयौ सा'ब देगो दैतो आवै रे
भूरीयो सा'ब मेवाड़ सांमी आवै रे
मेवाड़ रौ राणो, धूजण लागो रे

अरावली पर्वत श्रृंखला में लुकता-छिपता फिरंगी आ रहा है। यह गोरा साहब विश्वासघात करता हुआ आगे बढ़ता आ रहा है। अब वह मेवाड़ की ओर बढ़ता जा रहा है। मेवाड़ के महाराणा भी भयभीत हो रहे है।

भूरीयौ मगरो जोतु आवै रे
भूरयौ दरपण देतु आवै रे
आबू मोटो मगरो रे
हिरोई वाळू राजा रे
राजा भोळू राजा रे

अंग्रेज पर्वत-पर्वत खोजता-खोजता आ रहा है। यह दूरबीन से दूर तक देखता निहारता आ रहा है। आबू पर्वत बड़ा है, वहाँ सिरोही वाला राजा का राज्य है, वह राजा भी महान है परन्तु, बड़ा सज्जन एवं भोले स्वभाव का है इसलिये इस अंग्रेज की कूटनीति की चाल नहीं समझ पा रहा है।

गांधी : आजादी रौ बाप

राई ने कैवा बोले रे
गांधी आजादी रो बाप
गांधी हंई आवै रे
गोडा तांई धोतीयो रे
धोळी टोपी पेंरे रे
लांबो कुरतो पैंरे रे
अंगरेज नु राज रे
गुलामी नीं करणी रे
मळी करी ने रेवु रे
भूरीयो भगावो रे
एमके तो आवै गांधी
कूड़ा खोदतो आवै रे
तळाव बांधतो आवै रे
फरी रिपियो आले रे
इनो हूं विसार रे
राज लैतो आवै रे
गोरां भगवतो आवै रे
मेटिंग करतो आवै रे
भासण ठोकतो आवै रे
आजादी लैतो आवै रे

अर्थ

महात्मा गांधी सचमुच आजादी को जन्म देनेवाला पिता है। वह बापू इस ओर आ रहा है। इसने घुटनों तक धोती पहिन रखी है। और सिर पर सफेद टोपी पहिन रखी है। अंग्रेजों का राज्य है परन्तु अब हमें उनकी गुलामी नहीं करनी है, न सहन करनी है। इस फिरंगी को

अब भारत से भगा ही देना है। इसका साम्राज्य समाप्त करना है। हम सब मिलजुल कर संगठित रह कर लड़ेगे तो इसे अवश्य देश से भगा सकेगे। गांधीजी का यही उपदेश है। अंग्रेज प्रलोभन देने के लिये कुंए-बावडियाँ खुदवादे है। तालाब खुदवाते है, बांध बंधवाते है। मुफ्त धनराशि लुटाते है। पर इन सबका क्या उदेश्य है ? इसे समझने की जरूरत है। गांधीजी अंग्रेजो को भगाने के लिये सभायें करते है और भाषण देते है। गांधीजी देश को आजादी दिलवा रहे है। गरासिये गांधी को देवता तुल्य मानते है।

मू मार जाणती नहूँ

आबूलो[1] सिवाय सा'ब, मू तो मार[2] जाणती नहूं[3]
भूरीया वाळ बेंगला[4], मू तो मार जाणती नहूं
भूरीयो[5] बैठो कुर्सी[6] सा'ब, मू तो मार जाणती जाणती नहूं
ऊठ-बैठ करावै सा'ब, मू तो मार जाणती जाणती नहूं
आबूलो सीणाय[7] सा'ब, मू तो मार जाणती जाणती नहूं
नीमो[8] टौकी नकालो[9] सा'ब, मू तो मार जाणती नहूं

१. आबू पर्वत, २. मेरे, ३. नहीं, ४. बंगला, ५. अंग्रेज, ६. कुर्सी, ७. निर्माण, ८. नींव, ९. प्रारंभ की

अर्थ

आबूपर्वत और जंगल के अतिरिक्त मैं कुछ भी नहीं जानती। वहाँ अंग्रेजों के बंगले किधर है? मै नही जानती। गोरे साहब कुर्सी पर बैठे रहते है, ऐसा कहते है परन्तु मैं तो उनको जानती नहीं। सुना है वे डंड-बैठक लगाने की भी सजा देते है पर मै तो अंग्रेजो को नहीं जानती, न मैने उनको कभी देखा है। यह भी सुना है कि आबू पर्वत पर अपने महल-बंगले का निर्माण करवानेका हेतु नींव खुदवा रहा है पर मुझे तो इसका पता नहीं। इस प्रकार एक गरासनी कहती है -

मेवार[1] जला[2] मा अंगरेजी राज जळेरीयो[3] है
गांम-गांम रा मेल्या[10] भेळा होया[4]
वरला[5] हौजा[6] करो रेस अंगरेजी राज जलेरीयो
देवलो[7] नाळ वरल[8] सा'ब आवै रे
जागा-जागा हड़को[9] काढी वरली सा'ब आवै रे

१. मेवाड़, २. जिला, ३. जम रहा है, ४. हुये, ५. वटवृक्ष, ६. सफाई, ७. एक नाम, ८. वट, ९. सडकें, १०. मुख्या

मेवाड़ के जिले में (राज्यमें) अंग्रेजो का राज जम रहा है। हमें सावधान रहने की जरूरत है। देखो सभी गाँवों के मुख्या सम्मलित हो रहे है। उस विशाल वट वृक्ष के नीचे अच्छी सफाई कर दो, अंग्रेज आ रहा है। उदयपुर में (साई बंधे के पास) देवला गाँव के वट वृक्ष के नीचे सभा होगी। जगह-जगह तक सड़क निकाली है वहांसे गांव जायेगे।

भूरीयुं

रई ने केवां बोले रे
वैवाणजी आवणु पण है
खडक माए खेर वाडु
नवी कपणी मांडै
भुरीयुं नवी सावणी मांडै
जमी मोल लिये
पाडा वारी खाल जतरी
खालडे जमी मापे
खालड़े जतरी जमी माते
भूरियूं बंगलो मांडे
भूरियुं हड़क कडारै
रे वैवाणजी हामलज्यो मारी वातां
खालड़ा नी हेवी काडै
हेवो लाम्बो करे
धरती मापणे लागु
हेवे हेज धरती मापे
मगरा मांय भोलु राजा
राजा मोलवी लीदु
हिन्दु राजा हिन्दु
भूरियुं मोरूं लोक
भूरियुं दगा नुं भरियुं
दगो करवे आयुं

बीजु नाणुं सलावै
कळदार ने कावडिया
नवा दूकडा नवा
मजुरांए तेडावै
मजल भरती करे
वन रा दूकड़ा नवा
मजुरांए तेड़ावै
मजल भरती करै
वन रा दूकड़ा आले
गेती फावडा आले
आवणु तीते आवणु
भूरा रे मुंडा नु है
भूरीयु बेंगलौ मांडै
भूरीयुं हड़क काढै
भूरियुं नवी कळा काढै
राजाए ठगवे आज्यु
राजा ठगाई गियुं

अर्थ

मैं सच्ची बात कहती हूँ समधिजी कि कोटरा छावनी के पास खेरवाड़ में नई छावनी टैंट-तंबू तान कर अंग्रेज छाबनी बना रहे है। अंग्रेज भैसा बैठे जितना स्थान सिरोही दरबार से अपना बंगला बनाने के लिये मांगता है। सड़कें भी वहां निकालना चाहता है। सिरोही राजा ने भैसे की खाल जितनी जमीन देने का वादा किया था पर अंग्रेज ने चालाकी से भैसे की खाल की डोर निकाल कर आबू पर्वत की सारी धरती नाप ली। भोला राजा फिरंगी की बातो में आ कर ठगा गया। अंग्रेज धोखाघड़ी से भरा पड़ा है। वह नया सिक्का चला कर रोकड़ कलदार दे रहा है। नये नये मजदूर दूर दूर से बुला रहा है। जंगल को टुकडों में बांट रहा है। गेती, फावड़ा दे रहा है, बंगला बन रहा है। सडकें निकाल रहा है। अंग्रेज महाधूर्त, चालाक तथा कलाकार है। राजा को ठग लिया।

भूरीयौ फेरोंगी

भूरीयो[1] फेरोंगी आवै, लीली रे टोपी रो आवै
आबू रा झाड़ां मा आवै, धीरू[2] रे ने वातां सोळै
हेवा बेंगलो[3] बाधवो छे, धीरा रे ने दरबार बोलो
आधो है नवलाख देवियां रो, आधो है रिखियां[4] रो
धीरू रेयने भूरीयौ बोले, मारे हेवाबेंगलो बांधवो है
पाडा[5] री खालो[6] जितरो दीयो, हिरोई[7] दरबार लिखे दियो
खाले रे त डोरा काढ़िये, डोरा काढेन आबू मापियो
पूरो आबू कब्जे कीदू, धीरू रेयनें दरबार बोल्या
भूरे साइब आबू लीदो, चतराई ती धोको कीदू।

१.अंग्रेज, २. धीरे, ३. बंगला, ४. ऋषिमुनि, ५. भैसा, ६. खाल, ७. सिरोही

अर्थ

इस गीत के पीछे एतिहासिक अंतर्कथा गरासियो में प्रचलित है। आबूपर्वत गर्मियों मे ठंडा रहता है, अंग्रेजो के अनुकूल था। अतः सिरोही महाराजा से भूमि मांगी पर नहीं दी तो किस चालाकी से पूरा पर्वत ले लिया, इस कथा का वर्णन इस गीत में है -

हरि टोपी वाला अंग्रेज आ गया है। वो देखो आबू पर्वत की झाडियों मे आता दिखाई दे रहा है। वह आकर अपने सिरोही दरबार से धीरे धीरे घुसफुस कर रहा है, अग्रेजी में। अपने दरबार भोले है, कहीं ठग न लें। वो तो आबू पर्वत पर हवादार बंगलो का निर्माण करवाना चाहता है।इसके लिये दरबार से जमीन का पट्टा मांग रहा है। दरबार ने कहा आबूपर्वत तो नौ लाख देवी-देवताओं का है और आधा ऋषिमुनियों का है। फिर मैं कैसे दे सकता हूँ ? पर अंग्रेज धीरे धीरे कहता है - 'आप मुझे भैसे के खाल जितनी सी भूमि दे दें। तब दरबार ने लिख दिया।

बस अंग्रेज की चुंगल में राजाजी फंस गये। अंग्रेज ने भैसे की खाल (चमड़ा) का बारीक चर्म डोरा निकाल कर पूरा आबू पर्वत नाप लिया तब दरबार की आँख खुली पर क्या करते मजबूर थे। लिख कर दे चूके थे, वचनबद्ध थे। तब सिरोही नरेश बोले - 'पूरे आबू पर काबू अंग्रेजो ने बड़ी होंशियारी से किया।

भूरीयौ

आबूजी मने आलो हिरोईवाळा[1] राजा
आबू थाने किया आलू[2] भूरीया फेंरोंगी
आबू है देविया रो भूरीया आधो रिखिया[3] रौ
आबूजी आलो रे हिरोई वाळा राजा
मारे हेवा बेंगलो[4] बाधू रे हिरोईवाळा राजा
मारे आबू तो रिखिया रो भूरिया
आधो है, देविया रो भूरा
पाडा रे खाल जित्तो रे हिरोईवाळा राजा
खाले जितरो आलो रे हिरोईवाळा राजा
मारे हेवा बेंगलो बांधू रे हिरोईवाळा राजा
धीरा रैयने बोलो है हिरोईवाळा राजा
थाई खाले जितरो आलू रें भूरीया फेंरोंगी
तो लखो कागदो माथै हिरोईवाळा राजा
कागदा सरता[5] लेखो हिरोईवाळा राजा
वदले[6] कोई न हको हिरोईवाळा राजा
पाकौ[7] काम कीदो भूरीयो फेरोंगी
आंकळ पाडो लावै भूरीयो फेरोंगी
गोळियां सू उडायौ भूरीयो फेरोंगी
खाला रे उतरावै आकल पाडा री
खाल पेरी रे रंगावै भूरीयो फेरोंगी
डोरा मा कढावै भूरीयो फेरोंगी
रेसम डोर काढे झीणी भूरीयो फेरोंगी
रेसम जेडी डोर काढे भूरीयो फेरोंगी
खाले री डोर काढी भूरीयो फेरोंगी
पतलो धागो काढै भूरीयो फेरोंगी
तेरेन[8] लावो रे हिराईवाळा राजा
धागो लांबो कीधो भूरीयो फेरोंगी
ओले जोळै डोर न्हाखी भूरीयो फेरोंगी

पूरो त आबू लीधो भूरीयो फेरोंगी
बाकी वची डोर भूरीयो फेरोंगी
टोडा मगरी मापी भूरीयो फेरोंगी
काळीयौ मगरो लांबो लीधो भूरीयो फेरोंगी
सारो मगरो लीधो, भूरीयो फेरोंगी
अबे नटे[९] न हके हिरोईवाळा राजा
पाकी सरतो कीधी भूरीयो फेरोंगी
सारो आबू लीधो भूरीयो फेरोंगी
थोरी मांगणी कीदी भूरीयो फेरोंगी
हिरोईवालो राजा मांगे भूरीयो फेरोंगी
मारे हेवा बंगलो बांधवो भूरीयो फेरोंगी
उत फीता ऊं मापै आले भूरीयो फेरोंगी
भूरीया री कळा भारी हिरोईवाळा राजा
हाकै धाकै लीधो आबू-धूंधळौ भूरीयो फेरोंगी
चौडे धाडै हड़प्यौ आबू धूंधळौ भूरीयो फेरोंगी

१. सिरोहीवाला, २. देना, ३. ऋषि, ४. बंगला, ५. शर्ते, ६. पलटना, ७. पक्कास ८. बुलाओ, ९. मना करना

अर्थ

सिरोही के महाराजा जिनके आधीन आबू है अंग्रेजो से कह रहे हे कि आबू पर्वत आपको कैसे दे दूं? वो तो आधा देवी-देवताओं का और शेष आधा ऋषि मुनियों का है, वे वहाँ तपस्या करते है।

परन्तु मुझे वहाँ 'हवा बंगला' बनाना है अतः अधिक नहीं तो भैसे की खाल जितनी ही भूमि दे दो, इतने में ही मै छोटा-सा बंगला बांध लूंगा। तब सिरोही महाराजा ने स्वीकार कर लिया। अग्रेज तो कागज पर लिखा पढ़ी कर के शर्ते आदि लिखवा दी ताकि बदल नहीं सके। इस प्रकर पक्का काम कर दिया।

एक बड़ा भैसा ला कर उसे गोलियों से मारा। उसकी खाल उतरवाई। वह चमड़ा रंगवा दिया और उसको काट कर बारीक चर्म धागे निकलवाये। रेशम के समान कोमल, पतली डोरा (धागा) निकलवाया। फिर सिरोही के महाराजा को बुलाया। पूरे चमड़े से बारीक धागा निकाल कर जोड़कर तैयार किया और आबू पर्वत के चारो ओर डोर (डोरा) डाली और पूरा आबू पर्वत नाप लिया। फिर भी कुछ धागा शेष बच गया उससे पास की पहाड़ी

'टोडामगरी' (जालोर) नापी गई। सिरोही वाले महाराजा वादा कर चुके, लिख कर दे चुके अतः मना नहीं कर सके और अंग्रेज ने बड़ी चालाकी से आबू पर्वत ले लिया। अब सिरोही महाराजा को स्वयं को आबू पर्वत पर जमीन की जरूरत पड़ी कि उनको भी बंगला बनवाना था तो फीते से नाप कर फुट व इंचो में भूमि दी। अंग्रेज बड़े धूर्त, चालाक, होशियार और कलाकार थे। खुले आम चालाकी से आबूपर्वत कब्जे कर लिया था।

नोट-आबू पर्वत लेने की यह कथा अलग-अलग गीतों में भिन्न भिन्न रूपों से कही गई है।

भूरीयो

आगळ-आगळ[१] झारी[२] कटाय दियो देवळ दूरो भारी
वाह रे भूरया वाह वाह, वाह रे फेरोंगी वाह वाह
नवा नगर रे चीला माथै चाले रेलगाडी
आगळ-आगळ पुला[३] बांदाया देवळ दूरो भारी
वाह रे भूरया वाह वाह, वाह रे फेरोंगी वाह वाह
नवा नगर री सड़का माथै चाले रेलगाडी
आगळ-आगळ ठेसण[४] बांधायो देवळ दूरो भारी
आगळ-आगळ तार खेंचावो देवळ दूरो भारी
वाह रे भूरया वाह वाह, वाह रे फेरोंगी वाह वाह
नवा नगर री सड़का माथै चाले रेलगाडी
आगळ-आगळ झंडी लगाय देवळ दूरो भारी
वाह रे भूरया वाह वाह, वाह रे फेरोंगी वाह वाह
ठेसण-ठेसण[४] तार लगाया, भूरया री कळा भारी
हड़कां-हड़कां[५] मोटर गाडी, वाह रे भूरीया वाह वाह
नवा नगर री सड़का माथै चाले रेलगाडी
हड़का हालो मोटरगाडी आकासे हवागाडी[६]
वाह रे भूरया वाह वाह, वाह रे फेरोंगी वाह वाह
नवानगर री हड़का माथै हाले रेलगाडी

१. आगे-आगे, २. झाड़ी, ३. पुल, ४. स्टेशन, ५. सडकें, ६. वायुवान

अर्थ

जंगलो ले आगे आगे घनी वृक्षावली कटवा कर अंग्रेजो ने कई बड़े कार्य किये, विकास किया। वाह भाई अंग्रेज वाह तुमको लाख लाख धन्यवाद।
नये नये नगरो में पटरियो पर रेलगाडियां चलने लगी। स्थान स्थान पर आवश्यकता अनुसार नदी-नाले पर पुल बंधवाये। स्थान स्थान पर स्टेशन बनवायेऔर तार खींयवाये। सारी व्यवस्था की। वाह रे अंगरेज वाह वाह, तुमको बहुत बहुत धन्यवाद।
स्टेशनो पर रेलगाडियां रोकने व रवाना करने के संकेत हेतु झंड़ियां, लाइटें, सिगनल आदि बनाये। हर स्टेशन पर तार (टेलिग्राम) आदि का भी प्रबंध किया और फोन आदि का भी, सूचना लेने देने हेतु व्यवस्था की। अंग्रेज तेरा विज्ञान, आविष्कार और कला कौशल विचित्र है। पटरी पर रेल, सडक पर मोटर और आकाश में वायुयान चला दिये है। वाह रे अंगरेज तेरी कला।

रातीजगा रा गीत

मांजी[1] औ ! थारां देसा मा कुण है मोटा देव रे।
मांजी औ ! थारां देसा मा सारीन भगवान रे।
मांजी औ ! थारां देसा मा वो है मोटा देव रे।
मांजी औ ! थारां देसा मा जण लोरा[2] कुण देव रे।
मांजी औ ! थारां देसा मा बीं कवाय[3] देव रे।
मांजी औ ! थारां देसा मा बीं जुग[4] रा देव रे।
मांजी औ ! थारां देसा मा बीं जण लोरा कुण देव रे।
मांजी औ ! थारां दसा मा बीं अनाज[5] मोटा देव रे।
मांजी औ ! थारां देसा मा वी कवाय मोटा देव रे।
मांजी औ ! थारां देसा मा बीं [illegible]ण लोरा कुण देव रे।
मांजी औ ! थारां देसा मा बीं धवला न वीं धोरा[6] रे।
मांजी औ ! थारां देसा मा वीं कवाय[7] मोटा देव रे।
मांजी औ ! थारां देसा मा बीं जग लोरां कुण देव रे।
मांजी औ ! थारां देसा मा वीं [illegible]य देव रे।
मांजी औ ! थारां देसा मा बीं पांणी न पवन[8] देव रे।
मांजी औ ! थारां देसा मा वीं काय देव रे।
मांजी औ ! थारां देसा मा बीं जग लोरा कुण देव रे।
मांजी औ ! थारां देसा मा बीं धवळा नबी घोरा रे।

मांजी औ ! थारां देसा मा वीं कवाय देव रे।

मांजी औ ! थारां देसा मा वीं जुग रा देव रे।

मांजी औ ! थारां देसा मा नव लख हवी तारा रे।

मांजी औ ! थारां देसा मा वीं जुग रौ देव रे।

मांजी औ ! थारां देसा मा अेक है भैरवी[९]।

मांजी औ ! थारां देसा मा जग लोरा कुण देव रे।

मांजी औ ! थारां देसा मा चांद सुरज देव रे।

मांजी औ ! थारां देसा मा जग लोरा कुण देव रे।

मांजी औ ! थारां देसा मा वीं जग रा देव रे।

मांजी औ ! थारां देसा मा अंबा[१०] माता सोल[११] रे।

मांजी औ ! थारां देसा मा जग मा लोरा कुण देव रे।

हाबळौ[१२] लाली[१३] वातां रे आपणा होय[१४] तैरावण[१५] देव रे।

लीबरी वाळ चोर[१६] रे।

मांजी औ ! हबळै लाली वांतां रे।

चोरू लाल जमरावौ रे।

हा जालो बुआरा रे।

जाजम रळावौ[१७] रे।

कावळी न कसमाली रे।

लीली कै वरमाळी रे।

पीळी कै पटाळी रे।

आंबां वाता सौळै रे।

हाबळै लाली वांतां रे।

चोरा[१८] भूटा[१९] परिया रे

होय[२०] तैरावणौ[२१] देव रे

लाले धांमा दोर रे

होय तैरावणियौ देव रे

होय देव आव मकोर[२२] लारे रे

लीबरी वाळ चोर[२३] रे

धामेन[२४] मिलना मिले रे

आवौ पामणौ बेहो रे

आंबां बातां सौले[२५] रे
हाबळे लाली बातां रे
भरो होका सलपा रे
हरां के मनवारां रे
होए हाबळौ[२६] देव रे
अेक न आयो मोरीयो[२७]
थाळीया अमल गाळौ रे
खोबां[२८] भर भर पावो रे
हरा करा मनवारां रे

१. अंबा, २. छोटा, ३. कहलाते, ४. युग, ५. अन्न, ६. बैल, ७. कहलाते है, ८ पवन देव, ९.भैरव (काला-गोरा), १०. अंबा माता, ११. वार्तालाप, १२. सुनो, १३. छोटी बहिन, १४. एक सौ, १५. तेरानवे, १६. चबूतरा, १७. बिछाओ १८. चबूतरा, १९. काला (कचरा), २०. एक सौ. २१. बुलाना, निमंत्रण देना (नीबू देना), २२. चीटियां, २३. चबूतरा, २४. प्रसन्नता, २५. वार्तालाप, २६. सुनो (संभालो), २७. मोर, २८. अंजली, हथेली भरकर (लप)

अर्थ

हे अंबा देवी ! तुम्हारे देस में बड़ा देव कौन है ? हे मात ! आपके देश में श्री भगवान महान है। उनके अतिरिक्त कौन बड़ा हो सकता है ? यों मांजी आपके देश में सभी सतयुग के देवता है, कोई छोटा बड़ा नहीं है, फिर भी अन्न देव बड़ा है। और छोटा कौई भी नही। मांजी आपके देश में कौन छोटे और कौन मोटे देव कहलाते है? वहां श्वेत बैल (नंदी) भी देव माना जाता है। पानी और पवन भी देव कहलाते है। यह सभी सतयुग के देवता है। औ माता ! तुम्हारे देस में नौ लाख तारे सदैव उदित होते है। काला और गोरा भैरव नृत्य करते रहते है। संसार में ये भी देव है। किसे छोटा बड़ा कहे। सब बड़े ही है। चांद और सूर्य भी देवता है। यह सब उस सतयुग के समय के देवता है। अंबा माता वार्तालाप करती हुई कहती है - 'हे लाली (छोटी बहिन) तू ध्यान से यह गंभीर बाते सुन और समझ कि अपने एक सौ तेरानवे देव है। नीम वाले चबूतरे पर सब चलो, वही के लिये निमंत्रण है। वहाँ सफाई करो। झाड़ू लगा कर साफ करो फिर दरी-जाजम बिछाओ। वो काबरी कसमाली अर कसूंबल जाजमें लाओ और बिछाओ। अंबा माता कह रही है लाली सुन रही है। (लाली और रंभा देवी अंबा माता की सहेलिया सेवामें हमेशा साथ रहती है।)
मंदिर की चौकी-चबूतरो पर कूड़ा करकट पड़ा है सब सफाई करो। जल्दी करो। सैकड़ो

देवी, देवताओं को निमंत्रण दिया है। वे सब आ रहे है। जैसे चींटियाँ पंक्तिबद्ध आती है वैसे ही वे आ रहे है। नीम वाले चबूतरे (चौकी) पर पहुँच रहे है। सभी प्रसन्न हो कर आपस में गले मिल रहे है। मेहमानो का स्वागत हो रहा है। यथा स्थान (आसन) बैठाया जा रहा है। माता अंबा उनसे बातें (वार्तलाप) कर रही है। सभी आ गये या नहीं अतः लाली को संभालने को कह रही है। होका और चिलमें भर कर उनकी मीठी मनुहारें की जा रही है। संभाले गये तो सभी सैकड़ो की संख्या में देवता आ पहुँचे है मात्र एक 'मोरीयो' (मोर) नही आया। थालियाँ भर भर कर अफीम घोट कर भर रखा है और भर भर हथेली एक दूसरे को पिला रहै है, बार बार मनुहार लेने की हठ कर रहे है।

गुरूगणपति धाया

वांरी देव कळा दरसीजै, ज्यारे परम धरम परसीजै
ज्यां चढै सिकर पर आया, ज्यारे गुरू गणपति छाया औजी ऽऽऽ (टेर)
बीयांने सिमरू औ सरस्वत माई, थे सरब गुणां सु भाया
सुखदायी आलम पदम चढ़ाया, ज्यां गुरु गणपति धाया औजी ऽऽऽ
वांरी देव कळा दरसीजै, ज्यारे परम धरम परसीजै
वांरी नाभ कमल सूं जागी, वा डोर गगन सूं लागी
वढै निरभै थम्ब ठहराया, ज्यां गुरू गणपति धाया औजी ऽऽऽ
वांरी देव कळा दरसीजै, ज्यारे परम धरम परसीजै
वांरी उलट चढे कोई वादी, ज्यारे छूटे जाल उपाधि
चढने संक बजाया ओजी...
ज्यां गुरु गणपति धाया औजी ऽऽऽ
वांरी देव कळा दरसीजै, ज्यारे परम धरम परसीजै
वारै इला-पिंगला आवे
ज्यां सुखमय संक बजावे, ज्यां सुखी तार मिलाया
ज्यां गुरु गणपति धाया औजी ऽऽऽ
वांरी नट वारत पर नासे ज्यां ब्रह्म वेद कु वास
ज्यां धणी लख्य पर आया, ज्यां गुरु गणपति धाया औजी ऽऽऽ
सतगुरु अनोपदासजी सरणे, भ्रम समाधि लागी
वांरी देव कळा दरसीजै, ज्यारे परम धरम परसीजै
अलेखू गरासिया अनोपस्वामी रा भगत है, अर इण वास्तै जैन धरम रौ विरोध

ई करै, सिरोही अर नाणा आद रै आगती पागती जैन साधुवा रै साथे कूटा मारौ ई करयौ जकौ वाजव कोनी अै लोग केई अैड़ी निरगुण वाणियां गावै जकौ अनोपस्वामी री है।

अर्थ

प्रथम स्मरणीय गणपति की आराधना से सभी सिद्धिया एवं आध्यात्मिक सफलताएँ उपलब्धियां संभव है। इस भजन (वाणी) में बताया गया है कि -
जिस पर गणेशजी की कृपा हो जाय उसे देवी देवताओं की कला का आभास हो जाता है। मनुष्य के परम धर्म के ज्ञान का उदय हो जाता है। हे शारदा माता ! मुझे इनके स्मरण की शक्ति दे जो सर्वगुणों से सम्पन्न है। उनकी भक्ति से नाभी से प्रारंभ होकर सभी अष्ट कमल जागृत हो जाते है जिनका सीधा संबंध ब्रह्म रन्ध्र से हो जाता है। वहाँ निर्भय होकर तपस्या की परिपक्कता आती है। वहाँ उलट-पलटकर चढने पर भी सांसारिक (भौतिक) जाल-जंजाल छूट जाते है। तब जीवन और जगत पर विजय शंख बज उठता है। श्वास प्रश्वास के नियंत्रण (योग) से इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ी जागृत हो जाती है जिसका परम सुख से संबंध जुड़ जाता है। उनकी वाणी में संयम और वेदो की ध्वनि होती है। गुरु गणपति की साधना से यह सब सध जाते है - एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय। अनोपदासजी स्वामी की कृपा से मेरी ब्रह्म समाधि लग गई है।

भजन (आध्यात्मिक) : अंधारियौ जुग

धरण[1] नै असमान[2] जगमें न होतो[3] रे लो, म्हारा[4] लालजी रे लो।
अंधारीयौ खंडो[5] थो, सूरज चांद न होतो रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
दरीया[6] रे खेड़त[7] भरीयो, पेरीवा[8] र लो, म्हारा लालजी रे लो।
इत पीयाळी[9] रै पड़ियौ[10] म्हारा परसराम[11] रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
डूटीयौ[12] मांय रे ऊगा रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
उणरै फुलड़े खोमद[13] उपना रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
सवा हाथे री रे अचलो[14] लेवीयो रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
बारै रे जगत नींद लीदी[15] रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
तेरमा रे बरसे री साया[16] आई[17] रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
निंदड़ली[18] आई ने ढबकी[19] आई रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
ढबकी आई ने अमी[20] सूटी रे लो, म्हारा लालजी रे लो।

बारे[२१] रे जोजन[२२] मा अमी पूगी रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
सेवजी[२३] धूणीत अमी पूगी रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
भोलो संकर विचार[२४] मौडे रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
परथी[२५] रै माथै रे जोधौ उपनो रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
उणरे जोधा री अमी आई रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
कोरे[२६] रे गरत[२७] अभी लीहत[२८] रेलो, म्हारा लालजी रे लो।
कोरे रे कटोरे अमी लीदी रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
नवे दनोमा[२९] अमीया जळमीया रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
भोले रे संकर[३०] पूछीयो रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
धीरा रे रहीने अमीया बोली रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
इत मोरे रे खोमद जळे उतारे लो रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
साभळो रे अमीया म्हारी वातो रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
आपरे खोमद रा दरसण करावो रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
अमिया ने संकर विसार मांड्यौ रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
आपणे रे जावूं रे धोढा[३१] मात रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
अमी रे पाण रे चढवा लागी रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
भोळो संकर ने अमीया आवै रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
कुण रे दामण[३२] ने रजू जोगणे रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
नेह रे दामण नेह जोगण रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
तागे[३३] रे हमेरियो होठ तणो रा रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
अमिया हाची[३४] रे वात जग में होई रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
साभळौ रे अमियाजी म्हारी वात रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
अमीया पीयाळी[३५] गीया नै कांई देख्यो रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
धारण रे माता रे दियो देख्यौ रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
सवा रे सेरत[३६] रोग लाई रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
रोग रे लाइने कबद[३७] कीनी रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
अमिया काला रे माथा रो माणस कीदो रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
अमिया खोटी रे वेणो[३८] री जग मे वातो रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
खोमद हाथो रे हाथ जैर[३९] पाइयो रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
सवा रे पाव रोग रीयो रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
अडारे[४०] जात (पार) वनास्पतिवा[४१] रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
उतरे रोग रे वनास्पति रे लो, म्हारा लालजी रे लो।

१. पृथ्वी, २. आकाश, ३. था, ४. मेरे, ५. खड्डा, ६. समुद्र, ७. समुद्र तल, ८. प्रकाश, ९. पाताल, १०. सो रहे थे, ११. परसुराम, १२. नाभी, १३. ईश्वर, १४. कपड़ा, १५. ली, १६. छाया, १७. आ गई, १८. निन्द्रा, १९. झपकी (तंन्द्रा), २०. अम्बु (लार) २१. बारह, २२. योजन, २३. शिवजी, २४. विचार मग्न, २५. पृथ्वी, २६. खाली (नया), २७. कटोरा (घड़ा), २८. लेली. २९. दिनो में ३०. शंकर, ३१. धैर्य पूर्वक, ३२. डायन, ३३. धागा, ३४. सची, ३५. पाताललोक ३६. सवासेर, ३७. भूल (गल्ती), ३८. होने वाली है, ३९. विष, ४०. अट्ठारह(१८) ४१. बनस्पति (जडीबूटी).

अर्थ

जब न पृथ्वी थी, न आकाश था, न हवा थी, न सूर्य था, न चन्द्रमा था न नौ लाख तारे थे, हे मेरे लालजी ! तब केवल गहरा विशाल विराट खड्डा था जो जल से भरा था और चारो ओर काला अंधकार ही अंधकार भरा पड़ा था। विराट सागर के पेंदे (पाताल) में असख्य हीरे पड़े थे, जिसका प्रकाश सागर तले से बाहर तक विकीर्ण हो रहा था। पाताल लोक में परसुरामजी लेटे हुए थे। उनकी नाभी से कमल उत्पन्न हुआ। हे मेरे लालजी ! उस कमल पुष्प में 'खोमद' ने जन्म लिया। डेढ़ फुट का 'अचला' (वस्त्र) ओढकर खोमद सो रहे थे। बारह वर्ष तक 'खोमद' गहरी नींद में सोये रहे। जब तेरह वें वर्ष की छाया पड़ी तब तक गहरी नींद में सोये रहे। गहरी नींद नहीं टूटी। इस निन्द्रा-तन्द्रा की अवस्था में 'खोमद' के मुँह से 'अमी' (अंबु) छूटी जिसका तार बारह योजन तक पहुँचा और भगवान शिव के तपःस्थल तक जा पहुँची तो भोले शंकर विचार करने लगे कि यह कहां से आई, अवश्य पृथ्वी पर कोई योद्धा पैदा हुआ लगता है। उस महान योद्धा की लार (अम्बु) यहाँ तक पहुंची लगती है। एक खाली कमण्डल में अमी (अम्बु) एकत्रित हो गई। नवमें दिन (माह) अमिया पैदा हुई उससे तब शंकर ने इसका रहस्य पूछा। तब अमिया बडे धैर्यपूर्वक बोली - 'मेरे पिता (जनक)''खोमद' है जो जल की सतह पर है। भोलेनाथ ने 'खोमद' से मिलने (दर्शन) की इच्छा व्यक्त की। अमीया और शिवजी ने सोचा वहाँ कैसे पहुँचा जाय। समुद्र की सतह भी हजारो योजन लंबी चौडी है, खोमद का पता कैसे किया जाय ? अंत में उस अमी (लार) के तार के सहारे ऊपर चढने लगे, शंकर और अमिया दोनो चढने लगे। बारह खण्डों से यह धागा आया है (भेजा गया है)। इन दोनो वजन से धागा (अमी का तार) में खींचाव एवं तनाव आया इससे 'खोमद' के होठ भी खीचा जाने लगा। अमिया की बात सच्ची निकली तब खोंमद ने अमिया से पूछा कि मेरी बात सुन कर उत्तर दो - 'अमीया ! तू पाताळ लोक जा कर आई है, वहाँ तुमने क्या क्या देखा?' हे मेरे लालजी सुनो। 'धरती माता के लिये जो लाई हूँ वह देखो। वहाँ से मै सबके लिये रोग भी लाई हूं।' 'अमिया तुमने गजब किया, रोग ला कर तुमने भारी भूल ही की है।' उसके पश्चात काले मष्तिष्क का

मनुष्य पैदा किया। अमिया यह जगत में नाम करेगा, विचित्र काम करेगा। 'खोमद' ने अपने हाथो से रोग रूपी विष अमिया को पिला दिया पर सब नही पिलाया और सवा पाव अठारह भांति की वनस्पति (जडी बूटियों) को दिया, जो उन रोगो की औषधी के रूप में पैदा हुई। (विष विषस्य औषधम्)

अंधारीया जुग मुजब स्रिस्टि रचना :

इण गीत मांयै स्रिस्टि वीं रूप में परगट करै जकौ उणा रै परबत अर वनवासी जीवण रै सांचै खांचै सही ढ़ळै -

औ 'स्रिष्टि गीत' (भजन) पांच ततबां सूं सिंसार रौ सिरजण बतावै - पवन, माटी, अगन, जळ अर आभौ, धरपैला परगटिमा अर 'बिरमाण्ड' मांय विस्तारौ कीधौ। पेलपोत रा नर-नारी रा नांव इणमें 'इमीया' कै 'अमजा' अर 'खोमद' कै 'कोमद' धरीयौ। इस्लाम धरम मांय 'आदम' अर 'हऊवा' ते हिन्दू धरम में इणानै 'मनु' अर 'इडा' मानै। 'अमिया' रौ ब्याव सिवजी सूं व्हैणौ बतावै। इण गीत मांय 'सृष्टि रचना' बारली 'अलौकिक' शक्ति सूं कोनी मानी, बस 'कुदरत रौ करिश्मा' रौ फळ बतायौ। इण गीत रै जोड़े 'रिग्वेद रा स्रिष्टि गीत' बिरोबर फबै, रिग्वेद रै मुजब - 'जद नीं हवा ही, नीं आभौ, कीं चीज कोनी ही। तो दरीयाव किया भरीज्यौ ? औ सैंग कठै हा ? जल भरीया समंद रै गरभ में पोखीजता हा। इण गीत में गरासिया रौ दरसण (दर्शन) झलकै -

धरण नै असमान जगमें न होतो रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
अंधारीयौ खेंडो थो, सूरज चांद न होतो रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
दरीया रे खेड़त भरीयो, पेरीवा' रे लो, म्हारा लालजी रे लो।
जळ दरीया में हीरां रो परगास पे दरीया मात रे लो, म्हारा लालजी रे लो।

अंधारिया जुग अनुसार सृष्टि रचना :

इस गीत में सृष्टि का सृजन उस रूप में माना है जो उनके पर्वत और वनजीवन के अनुकूल पड़ता है -

इस गीतमें सृष्टि रचना पंचतत्वों से होना बताई है। पवन, मिट्टी, अग्नि, जल और नभ सर्व प्रथम प्रकट हुए और 'ब्रह्माण्ड' में फैले। सर्व प्रथम 'स्त्री' और 'पुरुष' का नामकरण 'अमीया' या 'अमीजा' और 'खोमद' या 'कोमद' किया गया है। इस्लाम धर्म में 'आदम' और 'हव्वा' माना तो हिन्दू धर्म में 'मनु'और 'इड़ा' माना है। अमिया की शादी शिव से होना बताते है। इस गीत मे सृष्टि रचना प्राकृतिक चमत्कार के फल स्वरूप माना है। ऋग्वेद में भी ऐसा ही वर्णन मिलता है - 'जब न हवा थी, न आकाश, कोई चीज नहीं थी तो समुद्र कैसे भरा ? ये सब कहां थे ?'' इस गीत में गरासियों का दर्शन झलकता है -

न जल था न पृथ्वी, न आकाश था न सूर्य चन्द्र और न ही नौ लाख तारे थे। केवल गहन अंधकार था और गहरे खड्डे थे जो जल से लबालब भरकर समुद्र बन गये। सागर तले प्रकाश विकीर्ण हो रहा था, क्योंकि समुद्र तल में हीरे पड़े प्रकाश दे रहे थे। पाताल में परसुरामजी लेटे हुए थे, उनकी नाभी से कमल उत्पन्न हुआ और उस शतदल-पुष्प में 'खोमद' पैदा हुआ।

* अंधारीयौ जुग (दूजी कथा)

इण 'कथात्मक गीत' में की मतभेद चालै। गीत री ओळ्यां अर सबदां में पण खासो फेरफार है -

आ वीं बखत री बात है जद नी आभौ हो, नीं धरती, नीं चांद-सूरज हा अर नीं नवलाख तारां । भगवान 'खोमद' समदरिया माथै पोढिया हा। खामद रै मुंडा सूं नींद मै 'लार' टपकी लार वासग नाग कनै पूगी। वा लार अेक ठाव में भेळी व्हैगी। वीं अमी रै रस सूं अमजा (अमीया) जळमी। अमजा ऊपर सरग कांनी गी अर वठै जायनै जामी 'खामद' नै पकारियौ 'भाबोसा म्हे अठै हूं ।' खामद पूछ्यौ थू कुण है ? कठा सूं आई ? म्हे थारो बाप किया ? वा पडुतर दीधौ - 'म्हैं आपरै अम्बु (अमी) सूं ऊपनी। पछै वा धरती रौ बीज लैवण नै आगे गी अर सरब सगतिमान् पवन देवता नै वीणती करी कै वे जल माथै रातवासौ लेय'र धरती रै पैदाइस खातर तपसा करै। आ अरज करतां थका पांणी माथै धरती रा बीज पण बिखेरिया जरै धरती जळ मा जळमी। समदर रै गरभ सूं जी ठौड़ जलमी उठै धुंऔ ऊठीयौ धुंआधार। धुंआं रा मगसा उजास मा अेक लीलो बांस अड़ीजंत ऊगो अर धुंआ रै चौफेर दरिया झाड़-बाठकां ऊगण लागा, लील जमी अर हरियाळी पसरी। इण तरै धरती रौ जलम पांणी री 'सतह' पर व्हियौ।

अर्थ

इस कथात्मक गीत में कुछ मतमतान्तर भी प्रचलित है। गीत की कुछ पंक्तियों और शब्दों में भी काफी अंतर है और अर्थ में भी -

यह उस समय की बात है जब न आकाश था, न पृथ्वी, न चन्द्र-सूर्य और न नौ लाख तारे ही थे। भगवान 'खोमद' क्षीर सागर पर सो रहे थे। खोमद के मुँह से लार टपकी लार शेषनाग के पास पहुँची। वह लार (अमी) एक पात्र में एकत्रित हो गई। इसी अमी के रस से अमजा पैदा हुई। अमजा ऊपर स्वर्ग की ओर गई, वहाँ पहुँच कर उसने 'खामद' को

* यह कथा अलग अलग क्षेत्र के गीतों में अलग-अलग ढंग से आई है, उनमें कुछ अंतर है।

पुकारा। 'पिताजी मैं यहाँ हूँ।' खामद ने पूछा - तुम कौन हो ? कहाँ से आई ? मैं तेरा बाप कैसे ? उसने उत्तर दिया - 'मै आपके अम्बु अमी) से पैदा हुई हूँ। फिर वह धरती का बीज लेने आगे चली और सर्वशक्तिमान पवन देवता को प्रार्थना की कि वे जल पर रात्रि विश्राम लेकर धरती के जन्म हेतु तपस्या करै। यह कहने के साथ जल पर पृथ्वी के बीज भी बोये तब पृथ्वी का जल में जन्म हुआ। समुद्र के गर्भ में जिस स्थान पर जन्मी धुंआधार धुंआ उठा। दुग्धवर्णी पारदर्शी मंद मंद प्रकाश में एक विशाल-विराट बांस उग आया और उसके चारो ओर काई और हरियाली के साथ पेड़ पौधे भी पैदा हुए। इस प्रकार पृथ्वी का जन्म पानी की सतह पर हुआ ।

हूरजी नै चांदजी रौ गिरण

चांदजी हूरजी (सूरज) नै सुक्कर तारो तीन्यूं नैना-मोटा भाई है। तीन्यू जणा अेक कुंवारी टोगड़ी ही जिणरी गोमाता रै ज्यूं वे रोजीना पूजा करता। समाजोग सूं अेक दिन वा मुई परी। तो नैनकिया भाई सुक्कर नै उणरी ल्हास नै पेटा चाक कारण रौ कह्यौ। उण कह्यो करतो थूं पण म्हारै साथै दगौ नीं व्हैणौ चाइजै। उण लोगा हाथ वचन दियौ के आ वात भवेई नीं व्है, हपनो आवै तोई खोटो। पेटाचाक करनै वो न्हाय-धोय नें आयौ तौं पण सोनावाणी न्हावनै अबोट व्हैने चौका मांय बड़वा रौ कह्यौ, नै सुक्करजी नै रीस आई जाणै काळा री पूछड़ी पग दीधौ अर झगड़ौ लागो भारी। इण सगळी वारदात रौ लेखो हेटे मड़्या गीत में नुंदीज्यौ है -

चांद हूरज बांधवा, ढोलो माऊ ले रै
लोरको बांधवो सुक्कर तारो, ढोलो मांऊ ले रै
ढोर[1] मा समाणो[2], ढोलो माऊ ले रै
आपणै सेच[3] कुण दैहे, ढोलो माऊ ले रै
चांद-हूरज बोल्या, ढोलो रमणौ ले रै
लोर का बांधव सुक्कर, ढोलो रमणौ ले रे
ढोर सीके[4] देवै, ढोलो रमणौ ले रे
मोइती[5] पेरो टाळवौ, ढोलो रमणौ ले रे
थाई न टाळौ रमणौ रै, ढोलो रमणौ ले रे
विस्वाघात करवौ तो, ढोलो रमणौ ले रे
विस्वाघात न करो रै, ढोलो रमणौ ले रे
सोनपौठ[6] सर[7] रे, ढोलो रमणौ ले रे

ढोरो सेको दे दो, ढोलो रमणौ ले रे
सेक देने सिनान कीधौ, ढोलो रमणौ ले रे
झीले नै पाछो आयौ, ढोलो रमणौ ले रे
रसोई त्यार होई रे, ढोलो रमणौ ले रे
सोनावाणी न्हावै रे, ढोलो रमणौ ले रे
सुक्कर मुखड़े बोले, ढोलो रमणौ ले रे
कीधौ विस्वासघात रै, ढोलो रमणौ ले रे
उत सुक्कर रीहाणौ, ढोलो रमणौ ले रे
उत[८] सुक्कर न्हाटौ जाय रे, ढोलो रमणौ ले रे
आथम[९] री दिसा मा जाय, ढोलो रमणौ ले रे
न्हाटा थकौ हालियौ जाय रे, ढोलो रमणौ ले रे
झापा है डुंगरी[१०] रे, ढोलो रमणौ ले रे
उठै सुक्कर पूगा रे, ढोलो रमणौ ले रे
किम जावौ किम आवौ, ढोलो रमणौ ले रे
मूं तो मजूरी नै आयो रै, ढोलो रमणौ ले रे
झापो डुंगरी बोले, ढोलो रमणौ ले रे
सुक्कर थनै हाळी राखू, ढोलो रमणौ ले रे
बा'रै बरस राखू रे, ढोलो रमणौ ले रे
सुक्करजी हाळी रैयग्या, ढोलो रमणौ ले रे
कूरै[११] न मणीचौ[१२] कमावै, ढोलो रमणौ ले रे
उत[१३] खोडा[१४] भरया भारी, ढोलो रमणौ ले रे
भरीया खोडा कोठी भरीया, ढोलो रमणौ ले रे
झापो डुंगरी बोलै रे, ढोलो रमणौ ले रे
थे परणीया कै कुंआरा रै, ढोलो रमणौ ले रे
अेक इज है बेटी मारे, ढोलो रमणौ ले रे
थानै मूं परणाऊ जी, ढोलो रमणौ ले रे
इत घरजमाई राख्या, ढोलो रमणौ ले रे
खायनै मजा मांडै वे, ढोलो रमणौ ले रे
अनाज मोकळौ कमायौ, ढोलो रमणौ ले रे
धीरौ सुक्कर बोल्यो, ढोलो रमणौ ले रे

आपणै अनाज नीं वेचणौ, ढोलो रमणौ ले रे
दीयौ तो लीजो वाडी[१५], ढोलो रमणौ ले रे
सवाई[१६] है वाडी जी, ढोलो रमणौ ले रे
साख ये वाय लीजौ, ढोलो रमणौ ले रे
मूं तो परामणौ[१७] जाऊं रे, ढोलो रमणौ ले रे
मूं अैवो परामणौ जेऊ क, ढोलो रमणौ ले रे
पाछो बा'रै बरसां आवी रे, ढोलो रमणौ ले रै
थेमो खाजो नै मजा मांडजौ, ढोलो रमणौ ले रे
खैरीयौ[१८] थकौ जाय रै, ढोलो रमणौ ले रे
दरीया[१९] माथै गिया रे, ढोलो रमणौ ले रे
पाळौ-पाळौ[२०] फिरे रै, ढोलो रमणौ ले रे
इत गिया भंमर[२१] कुण्डली पड़ै, ढोलो रमणौ ले रे
उत जळ लैयनै डूब्या रे, ढोलो रमणौ ले रे
इत कुण्डली[२२] जाय सूतौ रे, ढोलो रमणौ ले रे
उत मून[२३] ले पोढ्या[२४अ] जी, ढोलो रमणौ ले रे
दरीया मांय जाय पोढ्या रै, ढोलो रमणौ ले रे
बा'रै[२५] बरसां री मून[२६] झाली रै, ढोलो रमणौ ले रे
बा'रै पड्या काळ रै, ढोलो रमणौ ले रे
पांणी कोई न मिळै, ढोलो रमणौ ले रे
उत डूंगरां चारा खूटा र, ढोलो रमणौ ले रे
अन-धन रौ टोटो[२७] पड्यौ, ढोलो रमणौ ले रे
आया रै दोरा दनड़ा, ढोलो रमणौ ले रे
अबै चांद-हूरज काराकोरी[२८] करै, ढोलो रमणौ ले रे
अरे सुकरियौ केमौ न्हाटौ रे, ढोलो रमणौ ले रे
उणरी खबर काढौ रै, ढोलो रमणौ ले रे
उणैरौ पतो कोइना लागै, ढोलो रमणौ ले रे
चांद-हूरज बांधवा, ढोलो रमणौ ले रे
इत आया दोरा दन, ढोलो रमणौ ले रे
अन्न रो आयो टोटो रै, ढोलो रमणौ ले रे
अनाज कोई न मलतो, ढोलो रमणौ ले रे
धीरा रैयनै बोले, ढोलो रमणौ ले रे

हालो झापा डुंगरी रै घेर[30], ढोलो रमणौ ले रे
अनाज लेवा झापां डुंगरी रै घेर, ढोलो रमणौ ले रे
चांद-हूरज जाय रै, ढोलो रमणौ ले रे
झोपा डुंगरी री घेर जाय रै, ढोलो रमणौ ले रे
धींरै रैयनै पूछै जी, ढोलो रमणौ ले रे
माने अनाज आलो, ढोलो रमणौ ले रे
वीयांनै आलीयौ कूरो मणीचौ, ढोलो रमणौ ले रे
वाडी हाटै[31] दीधो रै, ढोलो रमणौ ले रे
साख सवाई है वाडी जी, ढोलो रमणौ ले रे
लेने पाछा आवजौ, ढोलो रमणौ ले रे
करजौ माथै होइयौ, ढोलो रमणौ ले रे
उत वाडीणौ है करजौ, ढोलो रमणौ ले रे
चांदो नै हूरज वातो सौले[32], ढोलो रमणौ ले रे
करजौ वधतो[33] जाय, ढोलो रमणौ ले रे
परिया बा'रै काळ, ढोलो रमणौ ले रे
तांबां धरणी तपै, ढोलो रमणौ ले रे
इत पांणी रौ टोटो रै, ढोलो रमणौ ले रे
नव लख है देवी जी, ढोलो रमणौ ले रे
बैठी विचार मांडे रै, ढोलो रमणौ ले रे
अब आया दोरा दन, ढोलो रमणौ ले रे
न जीवणा रौ जोग रै, ढोलो रमणौ ले रे
अंबा माता बोलै, ढोलो रमणौ ले रे
हामली[34] भैरवा बातों, ढोलो रमणौ ले रे
आपणै कोनी जीवणा रौ जोग, ढोलो रमणौ ले रे
भाळौ सुक्कर तारो रै, ढोलो रमणौ ले रे
काळौ-गोरौ भैरव, ढोलो रमणौ ले रे
सुक्कर भाळवा जाय, ढोलो रमणौ ले रे
सुक्कर तारो भाळी रै, ढोलो रमणौ ले रे
इत सरिया[35] चढिया धोला माथला, ढोलो रमणौ ले रे
बठा सूं भाळीयौ है, ढोलो रमणौ ले रे
दरीया मांयै सूतो रै, ढोलो रमणौ ले रे

सूतो सुक्कर तारो रै, ढोलो रमणौ ले रे
भैरूं रै निजरै आयौ, ढोलो रमणौ ले रे
उत जळ लैयनै डूबौ, ढोलो रमणौ ले रे
भैरूं आयौ पाळौ-पाळौ, ढोलो रमणौ ले रे
दरीया वाळी पाळ पूगौ, ढोलो रमणौ ले रे
हाथ मा गुरूज वलम[१६], ढोलो रमणौ ले रे
भैरवो भालो झीकै[१७], ढोलो रमणौ ले रे
पाणी मांय विंदोणौ[१८], ढोलो रमणौ ले रे
उत विंदाय[२०] ऊपरै आयौ, ढोलो रमणौ ले रे
औ सुक्करियौ तारौ रै, ढोलो रमणौ ले रे
वो दरीया माथै आयौ, ढोलो रमणौ ले रे
बोल्यौ हामलौ भेरूडा वातो रै, ढोलो रमणौ ले रे
इत कुतरौ[२१] कैय बोलावी, ढोलो रमणौ ले रे
थे दौरया थका आवजौ, ढोलो रमणौ ले रे
रैवैला अमर नाम रै, ढोलो रमणौ ले रे
भैरूजी रा रैयौ अमर नांव, ढोलो रमणौ ले रे
हाबलौ माकी वात रै, ढोलो रमणौ ले रे
कैवे बेटी झापारी सुक्करी बै लाडी, ढोलो रमणौ ले रे
बेटी वातो सोलै हाबलौ बापू वातो, ढोलो रमणौ ले रे
आपणे मांगणौ लेवा जाऊं, ढोलो रमणौ ले रे
आपणे कठै मांगणौ बाकी रै, ढोलो रमणौ ले रे
चांद-हूरज कैड़े रै, ढोलो रमणौ ले रे
वाडीणौ है मांगणौ, ढोलो रमणौ ले रे
झांपो डुंगरी जावै है, ढोलो रमणौ ले रे
इत हूरज कडै आयौ, ढोलो रमणौ ले रे
झांपौ डुंगरी आडौ ऊभौ, ढोलो रमणौ ले रे
लैणायत आय पूगो रै, ढोलो रमणौ ले रे
उत हूरज तो कालवणौ[२१] पा, ढोलो रमणौ ले रे

१. जानवर (बछडी) २. मरगई ३. चीरफाड, ४. चीरना, ५. मुझको, ६. सोनेका ७. छूरा, ८. उधर, ९. पश्चिम, १०. व्यक्तिका नाम, ११-१२. अनाजों के नाम, १३. उधर, १४. कोठे, १५. उधार, १६. सवागुना, १७. मेहमान, १८. दौडता हुआ, १९. समुद्र, २०. पाळ, २१.

भंवर, २२. चकराकार, २३. मौन, २४. सूता २५. बारह, २६. मौन, २७. घाटा (हानि) २८. बातें करना, गपशप करना ३०. घर, ३१. बदले में, ३२. बातें करते है ३३. बढ़ता जाय, ३४. सुनो, ३५. स्वर्ग,आकाश, ३६. भाला. ३७. झोकना, वेधना, ३८. बिंधा गया,३९. कुत्ता ४०. बिंधा हुआ, ४१. काला पड़ गया, लज्जित होना (ग्रहण होना)

अर्थ

सूर्य, चन्द्र और शुक्र ग्रह तीनो भाई है। शुक्र सब से छोटा है। एक बार गाय की बछड़ी मर गई, जिसकी वे सब गऊ माता की तरह हमेशा नियमित पूजा करते थे। इसका शव-छेदन (पोस्टमार्टम) कौन करे ? सूरज चांद बोले -'शूक्र तू सबसे छोटा है अतः तू इसकी चीरफाड कर दे।' शुक्र बोला -'तुम फिर मुझे अछूत समझ कर भेदभाव मत करना। विश्वासघात नहीं होना चाहिए।' उन्होने वादा किया कि ऐसा कभी नहीं होगा। शुक्र ने बड़े भाईयों के आदेश की पालना की और शव छेदन किया। स्नानादि कर पवित्र होकर रसोई में प्रवेश करने लगा तो उसे रोका और स्वर्ण डूबो कर जल के छींटे लेने को कहा। शुक्र क्रोधित होकर बोला -'यह विश्वासघात है।' वह नाराज होकर भाग छूटा। वह पश्चिम दिशा की ओर भागा और झापा डुंगरी के घर पहुँचा, उसने कुशल खेम पूछी । वह बोला मैं मजदूरी करना चाहता हूँ।

झापा डूंगरी (हरिजन) ने कहा 'शुक्र तुझे मै मेरे यही कृषक-मजदूर रख दूं और बारह बरस के लिये रखूगा। वो वहा 'हाळी' (कृषक बंधुवा मजदूर) रह गया। कूरा और मणीचा (दो प्रकार के अनाज) बोया और खूब मेहनत की इससे फसल बहुत अच्छी हुई, अनाज से कोठे भर गये। झापा नै देखा इसके पग फेरे से और इसके परिश्रम से इस बार कई गुना अनाज पैदा हुआ है क्यो न आजीवन इसे यही रख ले सो एक दिन बोला - 'शुक्र तुम कुँआरे हो या शादीसुदा।' वह बोला -'कुँआरा हूँ।' झापा ने कहा - ' मेरी एक ही बेटी है, आपके साथ शादी करूँगा और आपको यही घरजमाई रखूगा। फिर ब्याह कर दिया - दोनो खाय पीये और आनंद करते। अनाज खूब पैदा किया। एक दिन शुक्र ने कहा - 'सुनो ससुरजी, अपना अनाज बेचना मत, यदि देना ही हो तो 'सवाई वाडी' (उधार देना, सवा गुण लेना) और फसल आदि बो देना। मै तो मेहमान बन कर जा रहा हूँ, बारह बरसो से लौटूगा, आप खाना-पीना आनन्द करना और प्रस्थान कर गया। समुद्र के किनारे पहुँचा और चारो ओर किनारे किनारे फिरता रहा। अवलोकन करते करते उसे एक भंवर दृष्टिगत हुआ जैसे सागर की कुण्डलिनी ही (मंथन की) हो। बस मौन धारण करके उसमे कूद गया और समुद्र तल में पहुँच कर सो गया, बारह बरसो के लिये।

उधर बारह अकाल पड़ गये, पीने का पानी भी नही मिल रहा। पर्वतो पर घास और धरती पर अनाज समाप्त, पीने का पानी समाप्त। अन्न और धन का अभाव खलने लगा। बड़ा

विकट समय आ गया। उधर सूर्य तथा चाँद बाते करते रहे है कि शुक्र गया किधर? कहाँ भाग गया? इसकी खोज करे, खोजे कहाँ है ? अनाज की भयंकर कमी हो गई। खायें तो खायें क्या ? जायें तो जायें कहाँ ? पता चला कि झापा डुंगरी के घर अनाज खूब पड़ा है। सूर्य - चन्द्र दोनो गये, विनम्रता से आग्रह पूर्वक निवेदन किया कि हमें अनाज देने का कष्ट करें। झापा ने 'सावई वाडी' पर कूरा-मणीचा दे दिया। इस प्रकार कर्ज बढ़ता गया। सूर्य-चंद्र बातें करते है- कर्ज बढ़ रहा है, अकाल पर अकाल निरंतर बारह बरस हो गये। पृथ्वी तांबे-सी तप रही है, पानी है नहीं। तब नौ लाख देविया विचार करने बैठी। क्या अब जीवन जीने का जोग नहीं लगता ? अंबा माता बोली - 'सुनो हे भेरू मेरी बात। भयंकर अकाल में जीवन-मरण का प्रश्न है। अब एक ही उपाय है - 'तुम शुक्र को ढूंढ कर लाओ। जहां भी हो ढूंढ निकालो। काला और गोरा दोनो भेरू शुक्र तारे को ढूढने निकले। वे आकाश मार्ग से स्वर्ग तक जा चढे और वहाँ से सूक्ष्म दृष्टि से ढूढने लगे। वहाँ से देखा तो पता चला कि शुक्र तो समद्र में सो रहा है, समाधी लगा रखी है। भैरव को यह दृष्टिगत हुआ। सागर किनारे आया, जहाँ से शुक्र ने जल समाधी ली थी। हाथ में भाला था, वह शुक्र को लक्ष्य कर जल में दे मारा। शुक्र पानी में ही बिंध गया और बिंधा हुआ भाले के साथ जल सतह पर आया। सबने देखा कि यह तो शुक्र तारा है। फिर शुक्र बोला - 'सुनो भैरव मेरी बात। 'तुम दौड़ते हुए आना और मुझे कुत्ता कह कर पुकारना। आपका नाम अमर हो जायेगा।

उधर झापा डुंगरी की सुपुत्री और शुक्र की पत्नी। बाता करती कहती है - 'आप उधार दिया हुआ अनाज लेने जाओ। किस किस में मांगते है। चंद्र-सूर्य के पास 'वाडीनो' मांगते है, लेनें जाना है। झापो डुंगरी जाता है। सूरज चांद के बीच जाय खड़ा हुआ तो सूर्य-चन्द्र लज्जा से काले पड़ गये, क्योंकि देने को कुछ नहीं था।

(सूर्य-चन्द्र और शुक्र का झगड़ा आज भी ज्यों का त्यों है, ऐसी इन आदिवासीयों का लोक विश्वास है, इसलिये अकाल पड़ता है और सूर्य-चन्द्र ग्रहण होते है।)

'काग पडंता झूपड़ी नै सीता लेग्या चोर'

पै'ला रे जाजौ पै'ली झूपड़ी, वळता[1] म्हारै घर आवजौ
म्हारै मकट[2] मा लछमण जती, नीं विश्राम रै रामजती
भख्या[3] रै घालो सीता राणी, कणवध[4] भख्या घालू रै
म्हारै मकट मा लछमण...
किणविध भख्या घालू जोगीड़ा, अगनि री कार घाले दीवी रै
किणविध भख्या घालू रै...
सिनान करवारौ सोवन पाटलो[5], कार[6] रै माथै मेलो रै
भख्या रै घालो सीताराणी...
आगा रैयनै भख्या घालै, झड़प दैयने हाथ अपड़ियौ
सीता राणी नै झोळी मांय लीधा रै
म्हारै मकट मा लछमण...
ले जोगीड़ो मारग पड़यौ, अधर[7] लैयनै जातो रीयौ
जाय वागा[8] मांय डेरा दीधा, आधा भाटा[9] बणिया रै
जाय वागा मांय...
म्हारै मकट मा लछमण...

१. लौटते हुए, २. मुकुट, ३. भिक्षा, ४. किस प्रकार, ५. पाटा, ६ रेखा, ७, आकाश मार्ग, ८. बाग, ९. पत्थर।

अर्थ

सीता साधु (रावण) को कहती है - पहले आगे वाली झोपड़ी जाऔ और लौटते मेरे घर आना। मेरे मुकुट में राम और लक्ष्मण जती है। रावण पुनः पुनः भिक्षा देने का आग्रह करता है तब सीता कहती है कि लक्ष्मण रेखा खिंची हुई है जो अग्नि रेखा है फिर इससे बाहर आकर मै कैसे भिक्षा डाल सकती हूँ ? रावण कहता है स्नान करने का पाटा (बाजौट) कार पर रख कर भीक्षा डाल सकती हो। पाटा पर दूर खडी रहकर सीता भीक्षा डाल रही थी कि झपट कर रावण ने सीता का हाथ पकड़ लिया और खींच कर अपनी झोली में डाल दिया।
वह नकली (छल कपटी) जोगी (रावण) आकाश मार्ग से लेकर चला गया और लंका में मनोदरी के बाग में डेरे डाले। सीता ने यह विकट परिस्थिति देख कर अपने नीचे के आधे अंग को पत्थर का बना लिया। सीता कहती है मेरे केशपाश रूपी मुकुट में राम-लक्ष्मण का निवास है।

मिरग रौ छळ

रैनो[1] बीजो मांय धुणी[2] घाली रै, लिछमण देवरिया
धूणी घाली रे लिछमण देवरिया।
धीरा-धीरा त रामजी वातां सौलै[3] रे, लिक्षमण बांधवा[4]
धीरा बोले रे लिछमण बांधवा।
आज को हूरज[5] भलो ऊगो रे, लिछमण बांधवा
भलो ऊगो रे लिछमण बांधवीया।
जाणु आयो रे डूंगरां-भाखांरां रे, लिछमण बांधवीया
डूंगरा-भाखरां जाणो आयो रे लिछमण बांधवीया
आपणै फळ-फूल भाळै नै लावौ रे, लिछमण बांधवीया
फळ-फूल भाळै नै लावौ रे लिछमण बांधवीया
सीता रामजी त धूणीया बैठा रे, लिछमण बांधवीया
धूणिया बैठा रे लिछमण देवरिया
सीता रामजी त वातो सौळै रे, लिछमण देवरिया
वातो सौळै रे, लिछमण देवरिया।
लिछमण देवरियो डूंगरां गिया, डूंगरा गियो रे लिछमण देवरिया
डूंगरा ढळिया रै लिछमण देवरिया।
फळ-फूलत भाळेन लावो रे, लिछमण बांधवीया[6]
फळ-फूल लावो रे, लिछमण देवरिया
डोड[7] टीमरू[8] त लाधो रे, लिछमण बांधवीया
डोड टीमरू त लाधो रे, लिछमण देवरिया
अेक टीमरू जटा मा घाली रे, लिंछमण देवरिया
जटा मांय घालीयौ रे लिछमण देवरिया।
अेक टीमरू त लेने आया रे, लिछमण देवरिया
अेक टीमरू रे लिछमण देवरिया
पाछा धूणिया त माथै आया रे, लिछमण देवरिया
धूणिया पूगा रे लिछमण देवरिया।
अेक फळ त रामजी नै आलीयो[9] रे, लिछमण देवरिया
अेक फळ आलीयो रे लिछमण देवरिया।

सीता-रामजी बांटने खावै रे, लिछमण देवरिया,
बांट ने खावै रे लिछमण देवरिया ।
आधो-आधो रे टीमरु खावै रे, लिछमण देवरिया
आधो-आधो खावै रे लिछमण देवरिया
राम नै लिछमणजी धूणीया बैठा रे, लिछमण देवरिया
बांधवा धूणिया बैठा रे लिछमण देवरिया

बीजा दन ती उगवा लागा रे, लिछमण देवरिया
देवर-भाभी धूणीया ऊपरे, लिछमण देवरिया
धूणीया ऊपरे लिछमण देवरिया
रामजी गिया रे डूंगरां-भाखरा, लिछमण देवरिया
रामजी गिया रे डूगरा, लिछमण देवरिया
टीमरू फळ भाळवा लागा रे, लिछमण देवरिया
टीमरू भालवा लागा, लिछमण देवरिया
डोड टीमरू त परो मळ्यौ, लिछमण बांधविया,
डोड टीमरू परो रै खादो रामजी, लिछमण देवरिया
टीमरू परो रो खादो, लिछमण देवरिया
बीजो टीमरू पाछा भालवा लागा रे, लिछमण बांधवीया
पाछो भाळै रै, लिछमण देवरिया
फिरै फिरैन थाका रे रामजी, लिछमण देवरिया
बीजो टीमरू कोई नीं मिळ्यौ रामजी, लिछमण देवरिया
टीमरू कोई नी लाधो रे, लिछमण देवरिया
भूख सूं भागा रामजी धूणीया आवै रै लिछमण बांधवीया
धूणिया आवै रे, लिछमण देवरिया
पूरब खंडेरा पवन बाजिया रे लिछमण देवरिया
नाग[९] पानड़ा उडै रे लिछमण देवरिया
पानड़ा उडे गिया रे, लिछमण देवरिया
छेटी[१०] ऊभा रामजी भाळे रै, लिछमण देवरिया
ऊभा सोचै रै, लिछमण देवरिया
मन मां हीणा[११] जावा लागा रे, लिछमण देवरिया

उघाड़ा[१२] देखने हीणा गिया रे रामजी, लिछमण देवरिया
हीणा गिया रे, लिछमण देवरिया
छेटी[१३] जाय खैंखारो कर्यौ रामजी, लिछमण देवरिया
खैंखारो करयौ रामजी, लिछमण देवरिया
झड़प[१४] नीन्द्रा उड़ी रे सीताजी उठिया रे, लिछमण देवरिया
झडप निन्द्रा उडी रे, लिछमण देवरिया
मन माठौ[१५] तो लागो रे रामजी, लिछमण बांधविया
मन माठौ लागो रे लिछमण देवरिया
लिछमण जैड़ौ बांधवो मोही न मळै रै, लिछमण बांधविया
न मळै रै, लिछमण बांधविया
धूणीया माथै मजा मांडै रे रामजी, न मळै रै, लिछमण बांधविया
मजा मांडै रे, लिछमण देवरिया।
धूणिया बैठा वातो सौलै रे, लिछमण देवरिया
वातो सौलै रे, लिछमण बांधविया
धीरा-धीरा त रामजी बोले रे, लिछमण बांधविया
धीरा बोले रै लिछमण बांधविया
रैनो बीजो मांय बेरो[१६] खोदो रै, लिछमण बांधवीया
वेरो खोदो रै लिछमण बांधवीया
धीरा-धीरा त रामजी बोले रे, लिछमण बांधविया
धीरा त बोले रै लिछमण बांधविया
धीरा-धीरा त वेरो खोदे[१७] रे रामजी लिछमणजी
वेरो खोदे रे रामजी लिछमणजी
सीता मांजी ओडी उखणै रे, सीता मांजी लिछमण देवरिया,
ओडी झेले रे लिछमण देवरिया।
इण ने वेरी मांय पाणी आयो रे, लिछमण देवरिया
पांणी आयो रे लिछमण देवरिया
पेग-पावटी[१८] त बेरो गरवौ[१९] रे, लिछमण देवरिया
पेग-पावटौ गेरवौ रे लिछमण देवरिया
खाखरां[२०] खोदेन जेड़[२१] काढ़ो रे, लिछमण देवरिया
जेड़ काढ़ो रे, लिछमण देवरिया

माळ[२२] वणैन[२३] घेर[२४] लावणी रे, लिछमण देवरिया
　　घेर लावणी रे लिछमण देवरिया
घेर लावैन माळ माथै बांधो रे, लिछमण देवरिया
　　घेर बांधो रे लिछमण देवरिया
रामजी ढाळै रे पेगपावटो, लिछमण देवरिया
　　पावटो फेरे रे लिछमण देवरिया
सीता मांजी त पोणत[२५] करै रे लिछमण देवरिया
　　पोणत करै रे लिछमण देवरिया
आपणे वाड़िया[२६] मा डेमडो[२७] वावीयौ[२८] रै लिछमण देवरिया
　　डेवडो वावीयो रे लिछमण देवरिया
रात दन[२९] रा पोतरा[३०] करै रे लिछमण देवरिया
　　पोतरा करे रे लिछमण देवरिया
सेजा रा वाड़िया मा डमडो ऊगो रे लिछमण देवरिया
　　डेमडो ऊगो रे लिछमण देवरिया
डेमडौ त फूलो चढ़ियौ रे लिछमण देवरिया,
　　फूल आया रै लिछमण देवरिया
मोटो-मोटो डेमडौ हुयौ रे, लिछमण देवरिया
　　मोटो-मोटो वधियौ रे लिछमण देवरिया
उलटा-सुलटा त पेवन वाजै रे, लिछमण देवरिया
　　पेवन वाजै रे लिछमण देवरिया
पूरब खेडे[३१] पवन वाजै रे, लिछमण देवरिया
　　पेवन वाजै रे लिछमण देवरिया
इणा डमडा रौ धोरो[३२] पैरे[३३] रे, लिछमण देवरिया
लंका गढ़े मांय धोरो पूगो रे, लिछमण देवरिया
　　लंके गढे धोरो पूगो रे लिछमण देवरिया
लंका रौ राजा रावण वाजै रे, लिछमण देवरिया
　　राजा रावण रे लिछमण देवरिया
वठै इण डेमडा रौ धौरो गियो रे, लिछमण देवरिया
　　राजा रावण रे लिछमण देवरिया
राजा रावण त मुरवड़े रे, लिछमण देवरिया

मुखड़े बोले रे लिछमण देवरिया
धीरो त धीरो रावण बोले रे, लिछमण देवरिया
धीमौ मधरो बोले रे लिछमण देवरिया
मनोदरी राणी त धीरे हाबळै रे लिछमण देवरिया
वातो हाबळै रे लिछमण देवरिया
लंका रौ रावण वातो सौले रे, लिछमण देवरिया
वातो सौलै रे लिछमण देवरिया
सीता रामजी वाड़ी वावी रे, लिछमण देवरिया
वाड़ी फूलाणी रे लिछमण देवरिया
इण वाडी[34] री सुगंध फूटी रे, लिछमण देवरिया
रावण रै सुगंध पूगी रे, लिछमण देवरिया
वाड़ी री सुगंध पूगी रे लिछमण देवरिया
लंकारौ रावण तो मिरगौ[35] मेले रे, लिछमण देवरिया
रावण तो मेलै मिरगो रै लिछमण देवरिया
सियार[36] आंख्यां रौ मिरगो आयो रे, लिछमण देवरिया
सियार आंख्या रौ मिरगो आयो रे लिछमण देवरिया
बे[37] आंख्यां सूं लारै भाळै[38], लंका रो मिरग रावण रौ
लंका रौ मिरग आयो रे लिछमण देवरिया
बे आंख्यां सूं डमडो चरै, मिरगो लंका रौ चरै रे
मिरग लंकारौ चरै रे लिछमण देवरिया
रावण रै मेल्यौड़ो मिरगो आयो रे, लिछमण देवरिया
मिरगो आयो रे लिछमण देवरिया
रामजी-लिछमणजी वाड़िया फिरे रे, लिछमण बाधविया
फेरो दे रूखाळी[39] राखे रे लिछमण देवरिया
इणौ वाड़िया मा पेग[40] जोया रे, लिछमण देवरिया
घी आधी रात रामजी बोल्या रे लिछमण देवरिया
आपणै वाड़िया चोरटो हिळ्यौ[41] रे लिछमण बांधविया
चोरटो हिळ्यौ रे लिछमण बांधविया
रावण रै मेळ्यौड़ो मिरगो हिळ्यौ रे, लिछमण देवरिया
मिरगो हिळ्यौ रे लिछमण देवरिया

आपणौ डेमडु त परो खादो रे लिछमण देवरिया
    डेमडो खादो रे लिछमण देवरिया
सीता मांजी त मुखड़ै बोले रे, लिछमण देवरिया
    मुखड़ै बोले रे लिछमण देवरिया
आपणै वाड़िया मा मूळ[४१] घालवौ रै लिछमण देवरिया
    मूळ घालो रै लिछमण देवरिया
मिरगड़ौ हिळ्यौ आवै है, लिछमण बांधविया
    मिरगो हिळ्यौ आवै रे लिछमण देवरिया
होदी मूळ[४३] त घालवा लागा रे, लिछमण देवरिया
    हौदी खोदवा लागा रे, लिछमण देवरिया
इण मूळा मा मोरचौ लीधो रे, लिछमण देवरिया
    मोरचौ लीधो रे लिछमण देवरिया
आज मूळै मा कुण बैसे रे, लिछमण देवरिया
    आज कुण बैठे रे लिछमण देवरिया
आज मूळै मा रामजी बैंठै लिछमण देवरिया
    रामजी बैठा रै लिछमण देवरिया
वा'रै[४४] मेणौ[४५] रौ कबाण[४६] झाले रे, लिछमण देवरिया
    रामजी बैंहैरै लिछमण देवरिया
ते'रा मेणौ रौ भलको[४७] साध्यौ रे लिछमण देवरिया
    रामनै लिछमणजी भलको साध्यौ रै लिछमण देवरिया
लिछमण नै सीताजी धूणीया आया रे, लिछमण बांधवीया
    धूणीया आया रे लिछमण देवरिया
सैजा रे वाडियै रामजी गिया रे, लिछमण देवरिया
    वाडियै रामजी गिया रै, लिछमण देवरिया
डेमड़ा री रूखाळी रामजी गिया रै, लिछमण देवरिया
    रामजी रूखाली गिया रै, लिछमण देवरिया
इणा हौदी पूढै रामजी बैठा रे, लिछमण देवरिया
    रामजी बैठा रे, लिछमण देवरिया
अधरात्या[४८] मिरगो आया रे, लिछमण देवरिया
    मिरगो आयो रे, लिछमण देवरिया

ते'रा मणीयौ[९] भलको साध्यौ रे लिछमण देवरिया
भलको साध्यौ लिछमण देवरिया
रामजी भलको साध्यो रे, लिछमण देवरिया
साध्यो रे लिछमण देवरिया
सैजा रै वाड़िये मिरगो मारियौ रे, लिछमण देवरिया
मिरगो मारियो रे, लिछमण देवरिया
अेक भलका मा नीचो पाड़ियो रे, लिछमण देवरिया
नीचो पाड़ियो रे, लिछमण देवरिया
होनमी[१०] छरी हाथा झाली रे, लिछमण देवरिया
हाथआ झाली रे, लिछमण देवरिया
रामजी रै सीवणौ झालरियो मकट[११] रे, लिछमण देवरिया
मकट सिवणौ रे, लिछमण देवरिया
विसार मांडै नै खालड़ौ[१२] पाड़ै रे, लिछमण देवरिया
खाल पाडै रे लिछमण देवरिया
हूरज ऊगै नै पोमी[१३] आयो रे, लिछमण देवरिया
पोमी आयो रे, लिछमण देवरिया
धीरै रैयनै सीताजी बोल्या, लिछमण देवरिया
सीता बोली रे, लिछमण देवरिया
अजी[१४] रामजी धूणीया नह आया रे, लिछमण देवरिया
रामजी धूणीया नी पूगा रे, लिछमण देवरिया
रामजी री खेबर[१५] परी काडौ रे, लिछमण देवरिया
खबरा मंगावो रे, लिछमण देवरिया
धीरो रैयने लिछमण बोले, हामळौ भौजाई अे, लिछमण देवरिया
हामळौ भौजाई अे लिछमण देवरिया
रामजी घेणा आई रे, धूणीया आविस रे, सीता भोजाई
रामजी घेणा आई रे सीता भौजाई
झट[१६] जावो सैजारे वाड़िये रे, लिछमण देवरिया
झट जावो रे, लिछमण देवरिया
खारा बोल[१७] त सीता बोलिया रे, लिछमण देवरिया
खारी बोली रै लिछमण देवरिया

लिछमण ने री[५८] आई रे, लिछमण देवरिया
    रीस आई रे लिछमण देवरिया
अगन[५९] कार[६०] घाली रै, लिछमण देवरिया
    अग्नि कार घाली रै लिछमण देवरिया
दौरिया[६१] गिया सैजा रै वाडिया रै, लिछमण देवरिया
    दौरियो जावै रै लिछमण देवरिया
मरग री खाल त रामजी पाड़ै, लिछमण देवरिया
    दौरियो जावै रै लिछमण देवरिया
मरग री खाल त राम्जी पाड़ै, लिछमण देवरिया
    मिरग नै खालेंटे लिछमण देवरिया
वेरी[६२] तीतर बोलवा लागो रे लिछमण देवरिया
    तीतर खोटो बोले रे, लिछमण देवरिया
खाल चेटे[६३] उकले[६४] नी रामजी आफळै[६५] रे लिछमण बांधविया
    खाल रे रे ने चेटे रे, लिछमण देवरिया
खाले खूंटी[६६] ठौको[६७] रे, लिछमण बांधविया
    खूटी दीवी रै लिछमण बांधविया
तीतर बोलत खूटी ठौकी रे, लिछमण बांधविया
    खूटी ठौकी रे लिछमण बांधविया
वेरी तीतर बोलवा लागो रे, लिछमण बांधविया
    तीतर अपसुकन दैवै रे, लिछमण बांधविया
खूंटी देनै खाल पाड़ी रे, लिछमण बांधविया
    छेवट[६८] खाल काढी[६९] रै, लिछमण बांधविया
खाल लैयने धूणीयौ आया रे, लिछमण बांधविया
    धूणीया पूगा रे, लिछमण बांधविया
धीरो रैयनै मोरो[७०] बोल्यौ, लिछमण देवरिया
इड़तो-फिरतो[७१] जोगीड़ौ आयो हो, लिछमण बांधविया
    जोगी आयो हो, लिछमण बांधविया
सीता मांजी झोळ्या घालीया रै, लिछमण देवरिया
मू घणौ करळीयौ[७२] घणौ बोलियो, लिछमण देवरिया
    घणौ करळायौ रे, लिछमण देवरिया

सीता नै लैयनै रावण गियो,लिछमण देवरिया
    सीता ने रावण लेग्यौ रे, लिछमण देवरिया
लेने आकास-मारग[७३] जातो रीयो रै, लिछमण देवरिया
    आकासे मारग गियो रे, लिछमण देवरिया
रामजी-लिछमणजी धामा[७४] लागा रे,लिछमण देवरिया
    धामा लागा रे, लिछमण देवरिया
रैनो[७५] बीजो त मांय जाता रैया, लिछमण देवरिया
    रैनो बीजो त जाता रैया, लिछमण देवरिया
भरी बेपारै लैयग्यौ रै, लिछमण देवरिया
    भरी बेपारी लेग्यौ रे, लिछमण देवरिया
थोरे धोरे तिरस[७६] लागी रै, लिछमण बांधविया
    तिरस लागी रे, लिछमण बांधविया
पाणी लायनै पावरै, लिछमण बांधविया
    पाणी पाव रै लिछमण बांधविया
पाणी लैयने पाछा बावड़िया[७७] रै, लिछमण बांधविया
जळै रौ लोटीयो आगो कीदौ रे, लिछमण बांधविया
    आगो कीधो रे, लिछमण बांधविया
हाथै मा लोटीयो न रामजी भाळै रे लिछमण बांधविया
    रामजी भाळैं रै, लिछमण बांधविया
बांधवा दरिवया[७८] नै पाणी क्यूं पावो रै, लिछमण बांधविया
    पाणी क्यूं लायो रै, लिछमण बांधविया
लारे भाळवा हालो रे, लिछमण बांधविया
    लारे भाळवा हालो रै, लिछमण बांधविया
आडे मारग हरवु बैठो रे, लिछमण बांधविया
    हरवु बैठो रे लिछमण बांधवा
धीरा रैयनै लिछमण बोल्या हरूवा दाणवा[७९] रे लिछमण बांधविया
    हरूवा दाणवारे लिछमण बांधविया
हरूवो वांदरी नै लाखो[८०] लेग्यो, लिछमण बांधविया
    रौवणौ आवै रै, लिछमण बांधविया
इणां वातो सूं रौवणौ आवे रै, लिछमण बांधविया

रौवणौ आवै रे, लिछमण बांधविया
धीरा रैयनै लिछमण बोल्या हरूवा नै लिछमण बांधविया
धीरा रैयनै लिछमण बांधविया
हाबळै हरूवा मारी वात हरूवा, लिछमण बांधविया
हाबळै मारी वात हरूवा, लिछमण बांधविया
मारे भौजाई[८१] नै रावण लेग्यौ रे हरुवा बांदरिया
सीता हरकी मारै भौजाई रै हरूवा बांदरिया
सीता हरणकी, भौजाई हरुवा बांधविया

१. वन, २. आश्रम, ३. करे, ४. सूर्य, ५. भाई, ६. डेढ़, ७. फल का नाम, ८. दिया, ९. सागवान १०. दूर खड़े, ११. हीनता, १२. नम्र, १३. दूर जा कर, १४. झटपट, १५. मन मसौस कर, १६. कुँआ, १७. खोद रहे है, १८. पांवो से चला कर पानी निकालना,ने की पावटी १९. कम गहरा, २०. पलासवृक्ष २१. जड़मूल, २२. अरठ की माल २३. बुन कर, २४. घेड़, २५. सिंचाई, २६. खेत, २७. तुलसी जैसा एक घास, २८. बोया २९. रातदिन, ३०. उगना, ३१. क्षेत्र, ३२. सुगंध, ३३. फूटी, फैली, ३४. बाग, खेत, ३५. मृग, ३६. चार, ३७. दो, ३८. देखता है, ३९. सुरक्षा, ४०. पांव, ४१. नियमित, ४२. पौध ४३. शिकार हेतु हौदी (मोर्चा)४४. बारह, ४५. मण, ४६. धनुष, ४७. तीर, ४८. आर्धरात्रि, ४९. तेरह मण का, ५०. सोने की, ५१. मुकुट, ५२. खाल, ५३. सिर पर ५४. अभी तक ५५ पता करे '५६. तत्काल, शीघ्र, ५७. कड़वी बात, ५८ क्रोध, ५९. अग्नि, ६०. रेखा, ६१. दौड़े गये, ६२. शत्रु, ६३. चिपकना, ६४. उखड़ती, ६५. प्रयास करना, ६५. कील, ६७ गाडना, ६८. अंत में, ६९ निकाली, ७०. मोर, ७१. घूमता-फिरता, ७२. चिल्लाया, ७३. आकाश मार्ग से, ७४. दौड़भाग, ७५. बन, ७६. प्यास, ७७ लौटे ७८. दुखिया ७९. दानव, ८०. एक बंदर का नाम, ८१. भाभी

अर्थ

हे लक्ष्मण ! समय की बलिहारी है। रजमहल में रहने वाले आज वन-पर्वत में पर्ण कुटी बना कर रह रहे है। राम धैर्य और शांति से समझा रहे है और अनुज और सीता से बातें कर रहे है। आज का सूर्योदय और कुछ शुभ संदेश ले कर ही आया होगा। भाई लक्ष्मण ! तुमको वन-पर्वतों मे जा कर फल-फूल लाना है। देवर लक्ष्मण गये, फल-फूल ढूंढने पर केवल डेढ़ टीमरू (एक फल) मिला। लक्ष्मणने आधा टीमरू तो अपनी जटा में डाला और एक आश्रम पर ले कर आये। लक्ष्मण भैया ने वह फल रामजी को लाकर दिया। राम और सीता बांट कर खा रहे है, दोनो ने आधा आधा बांट कर खा लिया। राम और लक्ष्मण पर्ण कुटी में बैठे बातें कर रहे थे।

सीता ने मन में सोचा लक्ष्मण पेट भर फल खा लेता होगा और हमारे लिये केवल एक टीमरू ले कर आता होगा, सो राम से कहा - आज आप वन में फल - फूल लेने जाय। वे गये। देवर-भाभी पर्ण कुटी में ही रहे और राम-पर्वत पर गये, फल फूल लेने। खूब फिरे, खूब ढूंढ़ा पर केवल मात्र डेढ़ टीमरू ही मिला। डेढ़ टीमरू राम ने खा लिया कि अब जो मिलेगा वो देवर-भाभी के लिये ले जायेंगे और फल ढूंढ़ने लगे। परन्तु फिर फिर के थक गये, परेशान हो गये परन्तु दूसरा टीमरू नहीं मिला। भूख से घायल हो गये और अंत में परेशान होकर आश्रम की ओर प्रस्थान किया। उधर देवर-भाभी आश्रम में सो रहे थे, पूर्व दिशा से मंद मंद गति से शीतल पवन चल रहा था अतः दोनो को नींद आ गई और पवन के झोको से दोनो के सागवान के पत्ते अधो भाग में लपेटे हुए थे, वे उड़ गये थे और नग्न रूप में सो रहे थे, उन्हे ध्यान-ज्ञान भी नहीं था। राम आये और यह दृश्य देखकर आवाक रह गये, दूर खडे रहकर देखते रहे। मनमें हीनता की भावना आई। फिर राम ने दूर जा कर खांसी की तब सीता हड़बड़ाकर उठी, बहुत शर्मींदा हुई, तीनो को मन में बहुत बुरा लगा। पर राम ने मन मारकर उसे सकारात्मक ही लिया कि लक्ष्मण जैसा बंधु और सीता जैसी सती मुझे नहीं मिलेगी। आश्रम पर सभी पुन· आनन्द मंगल से रहने लगे।

एक दिन रामने एक योजना सोची और बोले - हे लक्ष्मण बंधु ! हम सब मिलकर एक कुँआ खोदे और खुदाई शरू की। राम-लक्ष्मण खोद रहे है और सीताजी तगारियाँ डाल रही हैं। अंत में पानी निकल गया।

हे देवर जी ! देखो कुँए मे पानी आ गया। अब पग पावटी (पावो से पानी निकालना) बनना है। पलास वृक्ष की जड़ खोद कर निकालो। उसकी छाल से 'माळ' (पानी निकाल ने की माला) बुन कर तैयार करो। लिछमण देवर ! फिर 'घेडें' (पानी निकलने का मिट्टी का पात्र) लाओ और 'माळ' पर बांधो। रामजी 'पग पावटा' चला रहे है और सीताजी 'पाणत' (क्यारियो में सिंचाई) कर रही है। खेत (जाव) में 'डेमडो' (तुलसी जैसे पौधे) बोये है। दिन-रात तीनो खेती में परिश्रम कर रहे है। वाड़ी (खेत) में 'डेमडौ' अनाज ऊग आया है रे देवरजी। अब फसल पकने आई है, फूल आ गये है परन्तु पवन उल्टा पुलटा चल रहा है। पूर्व दिशा का पवन दक्षिण में बह रहा है।

लंका तक इन फूलो की सुगंध वायु से पहुँची है लंका का राजा रावण कहलाता था। इन 'डेमडा' के पुष्पों की सौरभ व खुशबु वहाँ तक पहुँच गई। तब रावण ने मनोदरी से कहा - यह सुगंध कहाँ से आ रही है। पता लगाने के लिय उसने मृग (राक्षस) भेजा। इस मृग को चार आँखे थी, लंका के रावण ने भेजा। वो दो आँखों से 'डेमडौ' चरने लगा और पीछे की दो आँखो ले सचेत एवं सावधान हो कर ध्यान रखता था। खा कर चला गया और पता लगाकर रावण को संदेश दिया। इधर राम और लक्ष्मण वाडी में गये तो उन्होने मृग के पाँव के निशान देखे और खाया हुआ 'डेमडा' भी देखा। राम बोले - 'हे बंधु लक्ष्मण ! अपने

खेत में चोर 'डेमडो' खाने के लिये आता है। देख ये सब 'डेमडा' खा गया है। सीता ने सुझाव दिया कि हे देवरजी ! अपने खेत में उसकी शिकार करने के लिये हौदी (मोर्चा) बनाओ और हौदी में छिप कर रात को बैठ जाओ, हमेशा ध्यान रखने पर पकड़ में आयेगा, जायेगा कहाँ ? यह जरूरी है वरना हमारी सारी मेहनत और फसल वो चट कर जायेगा। आज 'हौदे' में मौर्चा ले कर रामजी बैठे, आज उनकी बारी है।

बारह मन का धनुष राम ने संभाला और तेरह मन का बाण चढा कर बैठ गये। धनुष-बाण साध कर बैठे। 'हौदी' (मोर्चा) में बैठ कर खेत की रखवाली कर रहै है। ठीक अर्धरात्रि को मृग आया। सीता और लक्ष्मण आश्रम में है। राम ने तेरह मन (साढ़े पाँच किंवटल) का तीर से लक्ष्य साध कर छोडा जो ठीक निशाने पर लगा और मृग पल भर में धराशायी हो गया। मरते-मरते वह राक्षस (मृग) जोर जोर से चिल्लाया - 'हे लक्ष्मण, हे लक्ष्मण !' मृग लक्ष्मण का भाँजा कहलाता है। सैजा की वाड़ी में मृग मर गया। एक ही बाण में मृग मर गया। सोने की कटारी से मृग की खाल उधेड़ने लगे, चूंकी सीता माता के कुंचुकी सिलवानी थी, लक्ष्मण के लिये झालरीदार टोपी बनवानी थी और राम को भी उसकी खाल का मुकुट बनाना था। यह सब विचार करते हुए खाल उधेड़ने लगे परन्तु सूर्योदय तक अभी राम आश्रम में नहीं आये देख कर सीताजी का चिन्तित होना स्वाभाविक था। फिर भी धैर्य पूर्वक बोली - हे देवरजी अभी तक रामजी क्यों नहीं लौटे ? क्या बात हुई ? आप जा कर पता करे। लक्ष्मणने कहा - 'भाभीजी आप चिन्ता न करे, वे आते ही होंगे, आ जायेंगे। सीता माता कहती है - ' नहीं, तुम जल्दी जाओ - ' सेहजा की वाडी'। यह सुनकर अंत में लक्ष्मण को क्रोध आ गया क्योंकि वे कड़वे बोल बोलने लगी। अंत में वे अग्नि-रेखा (लक्ष्मण रेखा) खींच कर चले गये और भीभीजी को उससे बाहर निकलने का मना कर गये। वे तत्काल दौड़ते हुए ' सेहजा की वाडी' पहुँचे। जाकर देखा की मृग की खाल रामजी उधेड़ रहे है परन्तु आश्चर्य यह कि उधेड़ी हुई खाल वापस चिपक जाती थी। लक्ष्मण ने कहा कि उधेड़ी हुई खाल के खूंटी (कील) गाड कर रोक दो। यही किया। जंगली तीतर अशुभ बोल रहा था, अतः कीलें गाड गाड कर मृग की खाल उधेड़ी। खाल लेकर दोनो भाई वापस पर्ण कुटी में लौटे तो पर्ण कुटी में सीता नहीं थी। सीता का पालतू मोर बोला - 'इधर-उधर घूमता फिरता एक जोगी आया था. वह सीताजी को झोली में डालकर ले गया। मै खूब चिल्लाया पर एक नही सुनी और आकाश मार्ग से उड़ा कर ले गया। राम-लक्ष्मण घबराये और भागदौड करने लगे। जंगल एवं पर्वतों में ढूंढने निकल पडे। राम बोले - ' हे लक्ष्मण बंधु ! कंठ सूख रहा है, पानी पिलाओ। दूर से वृक्ष दिखाई पडे, उधर गये तो पानी मिल गया। पानी ले कर वापस आये और जल भर कर लोटा दिया। राम लोटा हाथ में लेकर लक्ष्मण का मुँह तकने लगे और कहा - हे बंधु, पानी क्यों लाया? दुखिये को पानी क्यों पीला रहा है ?' फिर दोनो भाई सीता को ढूंढने निकले। आगे जाकर

देखा कि रास्ते के बीच में जाली पर हनुमान बैठा है। शांति से लक्ष्मण ने पूछा - 'तुम खिन्न क्यों बैठे हो ? हनुगान बोला - मेरी बंदरी को लाखा बंदर ले गया है, सो इस दुःख से दुःखी होकर रोना आ रहा है। हनुमान को ढाढ़स बंधाते हुए सांत्वना देते हुए लक्ष्मण बोले - 'मेरी बात सुन हनुमान, मेरी भाभी को रावण ले गया, सीता सती मेरी भाभी थी परन्तु पहले तेरी बांदरी लायेंगे फिर तुम हमारी मदद करना।

अमरजोत

लछमण कू बाण लागो लावो अमरजोत रे,
जागो जोधार भाई, जागो जोधार, होवै प्रकास रै।
करै हाक हड़मत उठ्या, लाऊ अमरजोत रे,
जागो जोधार भाई, जागो जोधार, होवै प्रकास रै।
करै हाक हड़मत उडिया, जाय पहाड़ा पूगो रै,
डाळ पांन-पांन जोतां जळै अर की है अमरजोत रै,
जागो जोधार भाई, जागो जोधार, होवै प्रकास रै।
चुगे चुगे जोत दरीया मा न्हाखवी झूठी बुझै, सांची दरीया मा लागै,
जागो जोधार भाई, जागो जोधार, होवै प्रकास रै।
सांची जोत तो आवै पूगी, ले आयो अमरजोत रै,
जागो जोधार भाई, जागो जोधार, होवै प्रकास रै।
लेने जोत धूणीया आया, धीरा रैयनै रामजी बोल्या,
जागो जोधार भाई, जागो जोधार, होवै प्रकास रै।
आळस मौरेनै बैठा व्हिया, जागो जोधार भाई, जागो जोधार, होवै प्रकास रै।

अर्थ

मेघनाथ की अमोध शक्ति से जब लक्ष्मण मूर्छित हो गये तब राम विलाप करते हुए कहते है - लक्ष्मण को मेघनाथ का बाण लगने से वे बेहोश हो गये है इसलिये शीघ्र संजीवनी बूटी लाओ। राम विलाप करते हुए कहते है कि ऐ मेरे परमवीर भ्राता तुम होश मे आओ तो मेरे अंधेरे जीवन में फिर प्रकाश आ जाय।

वीर हनुमान हुँकार करते उठ खडे हुए और बोले मै लाता हूँ संजीवनी बूटी, ये अभी जाग जायेगे श्री राम के वीर अनुज। हुँकार करते तुरंत पवनपुत्र उडे और जा पहुँचे उस पर्वत पर जहाँ संजीवनी बूटी (अमरजोत) थी।

परन्तु मायावी रावण ने प्रत्येक पेड़ पौधे की डालडाल और पत्ते-पत्ते पर दीप जला दिये ताकि असली संजीवनी पहिचान न सके। हनुमान 'जोत' चुन-चुन कर समुद्र में फेंकते गये, जो नकली थी वो बुझ गई और असली थी, वह सागर में भी प्रज्वलित होती रही। असली चुन कर ले ली और जा पहुँचे राम के पास तब रामजी बोले अब तो मेरे प्रिय वीर भाई जाग जा। तब लक्ष्मण अंगडाई लेते हुए जैसे नींद से ही उठे।

(रामायण में राम-रावण युद्ध में मेघनाथ के बाण से लक्ष्मण मुर्छित हुये, उसी प्रसंग पर उक्त गीत आधारित है।)

महादेवा री ब्याव

केई गरासिया परबतां नै अमिया री इज रूप मानै अर महादेवा रै साथै ब्याव री जिक्र, गीतां मांय करै। महादेवजी पारबतां नै परणवा जावै जद वींदराजा कीकर सिणगार करै, वीं री बखाण गरासिया आपरै गीत (भजन) में इयां गावै -

हेमाचळ[1] री डावड़ी[2] लाई, हर बोलो रे
अमीया सरखी डावड़ी रे हर बोलो रे।
संकर लग्नहे हाळीया रे हर बोलो रे
भवो[3] जुगो रो डोकरो रे हर बोलो रे ।
हेमाचळ रो डावड़ी लाई, हर बोलो रे
अमीया परणवा आविया, राइवर हर बोलो रे
अरे पगां काचबां[4] पैरीया जी हर बोलो रे
कमर में चीतळ[5] बांधीया जी हर बोलो रे
कणरे वदळै पेरीया जी हर बोलो रे
कणीया[6] रे वदळै बांधीया जी हर बोलो रे
हांप गळे लपटिया रूजी हर बोलो रे
कणरे बदळै लपटिया जी हर बोलो रे
कैठी[7] वदळै नागजी लपटाया हर बोलो रे
कांनां मा बिछिया[8] राइवर घाळीया हर बोलो रे
काणा रे वदळै घालिया रे हर बोलो रे
झेला रे वदळे पैरीया हर बोलो रे

१. हिमालय, २. पुत्री (लड़की), ३. जन्म जन्मांतर के पुरातन पुरुष, ४. कछुए, ५. एक विशेष चितकबरा सांप, ६ कमरबंध, ७. कंठा, ८. बिच्छु

शिव की शादी

कई गरासिये पार्वती को अमीया का ही दूसरा जन्म मानते है और शिव के साथ शादी का वर्णन गीतों में करते है। शिव पार्वती से शादी रचाने जाते है तब दुल्हे के रूप में कैसे श्रृंगार करते है उसका वर्णन गरासिये अपने एक गीत में निम्नांकित प्रकार से करते है -
पर्वतराज हिमालय की पुत्री से शादी करने शिवजी सजधज कर प्रस्थान करते है। जय शिव शंकर का जय घोष हुआ। अमीया जैसी कन्या से ब्याह रचाने प्रस्थान कर रहे है। युग-युग का यह पुरातन पुरुष (अनादि) हिमाचळ राजा के द्वार पर पहुंचता है।
पांवों में कुछुओं के जूते पहिने हुये है। कटिप्रदेश में 'कुंभारिया' सर्प बांधे हुए है। यह

किसके स्थान पर लपेटे है ? यह कटिबंध के स्थान पर बांधे है। गले में कंठी(हार) के स्थान पर सर्प लपेट रखे है। कानों में झेलो के स्थान पर बिच्छु लटका रखें है। देखो, किस किस श्रृंगार के बदले क्या क्या धारण कर रखे है। देखिये शिव ब्याह रचाने चले है।

भारथ गाथा

गरासिया पूरा 'श्रमजीवी' और 'धर्मजीवी'। देवी-देवतावां माथै भरोसे राखै भारी। पूरा 'आस्तिक' अर 'स्वावलंबी'। नौरतां मांय देवी री इस्तुतियां 'भारत गाथा' नांव सूं गावै। इणरी राग-रागणी ऊंची, तीखी नै 'शक्ति परख'। देवियां मांय अंबा, चामुण्डा, कालका अर भैरू खास। 'ढाक' रा साज-बाज खास करनै इमै बजावै इण वास्तै 'भारथ' के 'ढाकळियौ भारथ' कै फगत 'ढाकळियो' नांव पड़यौ। इणमें मूळ रूप सूं देवी-देवतावां री इस्तुतियां व्है। अघूट दीवो बाळे। धूप अगरबत्ती रोज करै। लुगायां ई रातरा हरजस गावै।

'भारथसगळा भेळा व्हैनै गावै। आगे उघेरण वाळा नै 'भारत गायक' कैवे। औ गायक अेक आंकड़ी (ओळी) उठावै, दूजा सगळा साथीड़ा आपरै 'स्वर' सूं पूरी करै। गायक इज 'वादक' व्है। इणरै बाबत अेक लोककथा चाले कै अेकर दसरावा नै अंबा, कालका, अर चामुण्डा रै साथै नवलख देवीमां मानसरोवर मांय पाती विसरजन करबा नै जावै। इणसूं पांणी डकोळीजण सूं गूंदळौ व्है जावै। पणियारियां खाली गी। जिनावर तिरसा गिया। औ समचौ 'हठिया राजा' नै व्हियौ। हठियै वारी-वारी 'सेणा', अर हंसण्या आद राकसां नै मेलीया पण सगला देवीयां रै हाथै मार्‍याग्या। पछै छेवट हठियौ खुद आयौ। वींनै देखतां ई देव्यां ई तैतीसा मनाया। भागती वाळ अंबा रौ चीर हठिया रै हाथै झिलग्यौ। अंबा रौ 'अलौकिक सौन्दर्य' वींनै मोय लीनो। जरै हठीयौ ब्याव रौ 'प्रस्ताव' भेज्यौ। अंब बोली ब्याव इज करणौ चावै तो भाड़िया नम (असाढ सुद नम) नै गाजे बाजे जॉन लेनै आयौ रीजे। हठीलो आयग्यो। अंब सरत राखी कै चंवरी मांय जीतेला तो ब्याव करस्यू नीतर माथौ लेस्यू। हठीये सरत मंजूर करी पण हारग्यौ। अंबा नै तो माथौ लेवणौ इज हो। इणरै रूप काळका रौ हौ। वीं दिन सूं चितौड़ रा गढ मांय मानीता व्ही। राणा परताप ई काळका री धावना-भावना सूं अकबर रा पग पाछा दिराया। काळका 'महिषासुर मर्दनी' रै रूप मांय भारत में यूं गवीजे।

वैकुण्ठ बैठी काळी रौ सिंधासण धूज्यौ
मांजी भगवान मा पूछवा गया
सतजुग री है वार
जूना जोस्यां नै बुलाया

काळी वेद वंचावै
अन्नदाता मनै छुट्टी दो तो भारत लोक में जाऊं
काळी अंद्रासन सूं ऊतरी
काळी रै गळै वासक रौ हार
काळी रै लिलाड़ मोतीड़ा तपै
काळी रै काळा और गोरा लाल
काळी रै माथै झाळरियौ टोप
काळी भरत लोक मा आई
मांजी मगरे डेरा दिया
खूंटै भालो रै रोपणौ
मांजी गडा री नीमा जे धारी
भाटा पाण्डोलीऊ पड़ाया अे
काळौ सूरज तीरे जावै
सूरज नै गोडा तीरे दीठो अे
छै-छै मी'ना री रात कीधी
मजूर रागसां ने कीधा
मांजी धबसा-धबसा मौ'रां बांटै
मांजी किलौ जो बंधायौ
किलै पे तीन लाख टांकी वाजी।

नौरतां मांय रोज नव दिन देवी-देवतावां रै सूरवीरता री गाथावां गवीजै। 'ढाक' यूं तेज व्है तो जाय, भारथ गायकी ई तेज व्हैती जाय। थाळी साथै साथै बजती जाय। सुणवा वाळा भोपां नै भाव आवै। आ इज भारथ री सफलता है। इण वास्तै औरवाणां रा छमका दीरीजै -

गोडा मा ढाक' गमतीज' नजर आवै।
डाकणियां वठै रमतीज' नजर आवै।

'भारथ' नै दो भागां मांय बांट सका - (१) देव भारथ (२) देवी भारथ

देव भारथ मांय - भैरूं, रामसापीर, केसरीया कंवर, हड़मान, मामा देव, डेरावीर अर भूत बीजा आवै।

देवी भरत मांय - काळका, चावंडा, अंबा, मेलड़ी, सिकोतरी आद नै मानै।

इणरै सिवाय पूरबज (मोगा) हठीया, बड़ल्या, बेलवाणिया, माताजी आद रा ई भारथ न्यारा गवीजै। 'भारथ' कदैई अधूरौ नीं गवीजै, पूरौ गावणौ जरूरी समझै। अधूरा भारत

री दोसण लागै, पूरौ भारथ गावणनै 'घर आसमान री भारत' अर अधूरा नै 'अबदू' कैवै।

वाणी

गरासिया अनोपस्वामी नै ई घणा मानै। स्वामीजी रा भजन घणा कोड सूं गावै। आ वाणी अनोपस्वामी री इज रच्यौड़ी है, जकौ गरासिया गावै।

चुन[4] ले सुरता[5] सेली[6] थू कियू फिरे अदवेली[7] रे
थू राम भजन हारू[8] आई रे
कियु फिरे अधवेली हरि भजन हारू आई रे,
कियू फिरे अधवेली रे
गरू रो केणौ मान ले अधवेली रे
मे'ला[9] मं मौज कर्‌यौ सुण नै सुरता हेली कियु फिरे अदवेली रे
आगल जमारा जाई रे थू वेट गधेरी होइला,
वेट गधरी[10] वेंइला सुणेन सुरता सेली
कियू फिरे अदवेली रे
वेट गधेरी वइला, थार भर गुणता[11] देई
भर गुणता देई थू भर मंठा[12] में रोई[13]
चुन ले सुरता सेली थू कियू फिरे अधवेली रे

१. जडमरूनुमा सानज़, २.ध्वनि, ३. खेलती, ४.सुन ले, ५. आत्मचेतना (ध्यान) ६. सहेली (आत्मा) ७. उदास, ८. लिये, ९. महल, १०. गधी, ११. वजन, १२. मन,दिल, १३. रोयेगी

भारथ गाथा

गरासिये पूर्ण रूपेण श्रमजीवी अर धर्मजीवी होते है। देवी देवताएं में पूर्ण आस्था रखते है। सच्चे आस्तिक और स्वावलंबी होते है। नवरात्रि में देवी की स्तुति 'भारथ गाथा' नाम से गाते है। इसकी राग-रागिनी ऊँची, तीखी और शक्ति परख होती है। इसमें अंबा, चामुण्डा, कालिका और भेरू आदि मुख्य होते है। 'ढाक' का वाद्य-यंत्र मुख्य रूप से इसमें बजाया जाता है इसलिये इसको 'भारथ' या ढाकलिया भारत अथवा केवल 'ढाकलिया' कहते है। इसमें मुख्य रूप से देवी-देवताओं की स्तुतियाँ गाते है। अखंड ज्योति के रूप में दीपक संजोते है। धूप अगरबत्ती करते है। महिलाएँ भी रात्रि में 'हरजस' (भजन) गाती है। 'भारथ' सब लोग सम्मलित होकर गाते है। गाने में आगे नेतृत्व करने वाले को 'भारथ गायक' कहते है। गायक नेता एक पंक्ति आगे गाता है। अन्य साथीगण आगे का स्वर पूरा करते है। गायक स्वयं ही वादक होते है। इसके पीछे कई लोक कथाएँ भी प्रचलित है। बिजयादशमी को अंबा, कालिका तथा चामुण्डा आदि के साथ नौ लाख देवियाँ मानसरोवर

में 'पाती विसर्जन' करने जाती है। इससे पानी गंदा हो जाता है और पनिहारियाँ खाली लौटती है। जानवर प्यासे जाते है। जब यह सूचना 'हठीया राजा' को मिलती है तो वह 'सेणा'और 'हंसण्या' आदि राक्षसो को भेजता है परन्तु सभी देवी के हाथों मारे जाते है। अंत में हठिया स्वयं आता है। उसे देखकर देवियाँ भाग छूटी। अंबा का चीर हठिये के हाथ लग जाता है। हठिया अंबा के औलोकिक सौंदर्य पर वह मोहित हो गया। वह शादी का प्रस्ताव रखता है।

अंबा ने कहा - यदि शादी करना ही चाहते हो तो असाढ़ सुद नवम को बारात लेकर आ जाना। तदनुसार हठीया आ गया। अंबा ने एक शर्त रखी कि वेदी में मुझसे जीतेगा तो लग्न करूंगी अन्यथा तेरा सिर उतार लूंगी। हठिया शर्त हार गया, अंबा को तो सिर काटना ही था। इसके पीछे कालिका देवी का सहयोग था। उस दिन से चितौड़ गढ़ में इसे स्थापितकर मान्यता दी गई। कालिका के इष्ट से ही महाराणा प्रताप ने अकबर के छक्के छुडा दिये थे। कालिका 'महिषासुर-मर्दनी के स्वरूप का 'भारथ' में यश गाथा निम्न प्रकार गाते है -

वैकुण्ठ में बैठी कालिका देवी का सिंहासन डोला। तब वह भगवान से अनुमति लेने गई। सतयुग की बात है। ज्योतिषी को बुलाकर मुहुर्त दिखाया और बोली - 'अन्नदाता, मुझे भी भारत देश में जानेकी अनुमति प्रदान करें। स्वीकृति प्राप्त करके वह इद्रासन से नीचे उतरी। काली के गले में शेष नाग के हार था, उसके ललाट पर मोती चमक रहे थे, सिर पर लाल-श्याम रंग की टोपी पहिन रखी थी। महाकाली ने मृत्यलोक में आ कर पर्वत की चोटी पर आसन जमाया। देवी के आते ही पर्वत कंपायमान हो उठा और आगे आगे भागने लगा, तब वह दूसरे पर्वत पर आश्रय लेने गई। उस पर्वतने दहाड़ कर और आगे बढ़ करके देवी का स्वागत किया।

देवी ने उसे भाले से 'खूंटा' गाड कर रोका और किले की नीव रखी। पत्थर 'पांडोली' से मंगवाये। सूर्य को घुटनों के नीचे दबा कर रखा, इस कारण से छः छः महिनो के रात दिन किये। राक्षसो ने मजदूरी का कार्य किया। देवी माता अंजली भरभर कर स्वर्ण मुद्राएँ मजदूरों को मजदूरी बांट रही है। किले में तीन लाख कारीगर काम करते थे। इस प्रकार किले का निर्माण किया।

नवरात्रि में हमेशा नौ दिन तक देवी-देवताओं की शौर्य गाथाएँ (भारथ गाथाएँ) गाई जाती है। 'ढाक' वाद्य-यंत्र ज्यों ज्यों तेज होता है, त्यौं त्यौं भारत की गायकी तीव्र से तीव्रतम होती जाती है। थाली साथ बजती जाती है। सुनने वाले भोपों को भाव आता है। यह 'भारथ' की पूर्ण सफलता मानी जाती है इसलिये यह कहावत प्रचलित है -

गोडा में ढाक गमतीज नजर आवै।

डाकणियां वठै रमतीज नाजर आवै।

गरासी भाषा में उक्त कहावत प्रसिद्ध है 'भारथ' को हम दो भागो में विभक्त कर सकते है -

(१) देव भारत (२) देवी भारत.

देव भारत में भैरव, रामदेव, केसरिया, कंवर हनुमान, मामादेव, डेरावीर अर प्रेत आदि आते है।

देवी भारत में कालीका, चामुण्डा, अंबा, मेलड़ी, सिकोतरी, आदि को मानते है।

इसके अतिरिक्त पूर्वज, हठिया, बड़विया, वेल वाणिया, माताजी आदि के 'भारथ' भी होते है। भारथ अपूर्ण नही गाये जाते, संपूर्ण करना अनिवार्य होता है। अपूर्ण को दोषपूर्ण मानते है। संपूर्ण 'भारथ' को 'घर आसमान रौ भारथ' और अपूर्ण को 'अबदू' कहते है।

अर्थ - आत्मा ! तू क्यों मोह माया के जाल-जंजाल में फंसकर, क्यों उदास खोई खोई सी रहती है? हे सखी ! तुझे संसार में प्रभु का गुणगान करने, एवं हरि भजन के लिये भेजा था फिर व्यर्थ प्रपंच में पड़ कर क्यों खिन्न मन हो कर फिरती रहती है।

तू गुरूदेव का कहना मान ले पागली, और छोड दें असार संसार के झूठे झगड़े। तुमने महलो की मौज लूटी, भौतिक सुख को असली आनन्द मान बैठी परन्तु अब अगले जन्म में गधा बनना होगा और बिना मजदूरी से पीठ पर भार ढोना पड़ेगा, फिर दिल भरकर रोयेगी पर फिर पछताने से कुछ नहीं होगा। इसलिये हे सखि (आत्मा) ! तू अभी से सचेत होकर संभल जा।

अंतर नै अेहमद

पीण्डू[१] राजा जगन[२] मांडवौ[३] रै
होना[४] टक्कौ पोन बीड़ौ[५] रै
भरीये कचेड़ी पोन-बीड़ौ फिरे रै
अरजन[६] पांडव बीड़ो झेलीयौ रै
असली गेंडा री ढाल[७] लावणी रै
अरजन लावणी ढाल गेंडा री रै
निकलंग[८] पांडव बीड़ौ झेलीयो रै
कठै रै जावा रौ बीडौ झेलीयौ रै
कवारौ[९] होनो[१०] लावानै झेलीयो रै
भीमे रै पांडवे[११] बीड़ौ झेलीयो रै
दूज रै देसां मा जावणौ आयु[१२] रै
झाली झींतर[१३] रौ मायौ लावणौ रै
दूरां रै देसां मा जाणौ आवीयौ रै
पांचो रै पांडव बिखरे गिया रै
कैरव-पांडवे रौ झगड़ौ चेतीयो रै
धौळे कागदिये काळा आखर मंडिया रै
पांडव धौळा पर आखर काळआ मांडया रै
राज चावौ[१४] तो झगड़ौ लियौ रे
नीतर छोडो परो हथनापुर[१५] रै
आज रौ सूरज भलो ऊगो रै
हिम्मत[१६] बीड़ौ झेलियौ रै
मारे अहमद[१७] बीड़ौ झालीयो रै
कठै रे जावा रो पान-बीड़ौ लो रे
उतरीये[१८] मुंडै घरै आयो रै
अहमद बीड़ौ झेलीयो रै
उतरिये मुंडै किणविध आयो रै
अधूरो जाणू चक्करो भेदन है
माता मूं न जाणू चक्करौ[१९] पूरो भेदण रै

बीड़ी पण झेलियौ चकरो[१०] तोड़ा रौ
जाया हरीयो[११] रे बारी धरम भाई रै
जाय धरम भाई ने तेड़व रै
बीड़ी जे झेलियो चकरियो तोड़ाव रे
बालो अहमद ढाणी राइका री जातो रीयौ
हरिया देवासी[१२] तेड़ेन गयो रे
धीरो रैयने हरियो बोल्यो रै
कुण रौ धांनो[१३] कोईना भेळियो[१४] रै
पछै क्यूं रे रावळै बुलावै रै
म्हारी तो माता थनै बुलावै रै
राणी होदरा[१५] थनै बुलावै रै
हरियो रेबारी रावळै आयौ रै
देवासी रे होदरा मुखड़ै बोले रे
सांभळौ बांधवौ मारी वात रै
जावु रे आयो है विराट नगरी रै
राणी अंतरा[१६] नै आणै[१७] जाणौ रै
रातो-रात आणौ लावणौ है रै
उतरिये मुंडे हरियौ ढाणी आयौ रै
काळी ने डोरी हाथै लीधी रै
सांडियो[१८] टौळै[१९] फिरवा लागो रै
कोई नीं झेले जी काळी डोर[२०] रै
लांबी ने गाबड़[२१] करैन सूती रै
कोई न झेले काळी डोर रै
धीरो रैयने हरियो आखर बोल्यौ रै
मू बाळपणै छोड्या मां नै बाप रै
आछा ने आछा पांनां[२२] थानै चारीया रै
पण सांडियां आज ना झेले डोर रै
घर नै छोड्या नैना बाळकां[२३] रै
थाणै रै खातर सै छोड्या रै
अर थारै रै लारै मूं फिरूं रै

पण आज डोर क्यूं ना झेलो रै
छेटी ती बैठी पांगळ[३४] सांड रे
बैठी रै बैठी आवाज दीवी रै
हरिया मोही[३५] दे दे काळी डोर रै
थारोड़ौ[३६] बेडो पार लगावु रै
थारी तो हालण री आसंग[३७] ना रै
क्यूं थू झेले काळी डोर रे
थाकी नै थाकोड़ी मत ना जाण रै
वातो थारी काळजे करवत कादै रै
हरिया थारा बोल खारू लागे रै
थारोड़ौ[३८] बेड़ो पार लगाऊं रै
सौळयौर सिणगार[३९] सांड मांगे रै
पेरा लावो काळा नै डोरा रै
नै लावो रे धवळी कवडी[४०] रै
म्हारे गोडे बांधो धवळी कौड़ी रै
काळी रै गोपा[४१] मा पोय बांधो रै
मोतीड़ा जड़ियौ होनो[४२] लावो रै
ताड़ै[४३] ताड़ैन तंगड़ा[४४] भीर[४५] रै
गळमा गळगौर[४६] परी न्हाखौ रै
वाजणी[४७] गळा मा न्हाखौ रै
सांभळै सांड मारी वात रे
जाणु रे आयो विराट[४८] नगरी रै
सांभळजै[४९] हरिया मारी वात रै
विराट नगरी त उरमण[५०] रैवै रै
मारी रै माता रे कनड़ी[५१] वन मा
घणी रै चरती नागर वेल रै
वाटै[५२] म रेती विरट नगरी रै
म्हारी रे माता कनड़ी वन में रै
घणई रे चरती नागर वेलडी[५३] रै
पाछी वळता[५४] नै पीती पांणी रै

विरट नगरी पांणी पीती रै
मारली[५५] पेटे में ध्यान राख्यौ रै
सांभळ[५६] हरिया मारी वातड़ी रै
मारे माथै[५७] टांगडी[५८] वाळ रै
नीतर[५९] पड़ै[६०] त मरे जाय रै
हरियो ठेके ठेके[६१] नै असवार हुयो रै
मारी ने डोर ऊँची खांच रे
हरिया पवन रे झोलै सांडणी जावै रै
डोर रे खाचतां सांड उडी रै
लगंते लीधी विराट नगरी रै
डोर रे खांचीये सांड उडी रे
जातो रीयौ विराट नगरी रै
हरियौ ढलती राते[६२] पोळ पूगो रै
पोळी रे बारणै चौकीदार बैठो रै
सांभळे चौकीदार मारी वात रै
पोळ रौ किवाड़ परो खोल रै
ढलती राते ने पोळ न खोलू रै
हरिया ढलती राते ने पोळ ना खुलै रै
अे धीरे रे धीरे सांडणी बोली रे
डोर रे मोरे पाछी खांच रै
हरिया मनै पाछपगी[६३] लेले रै
फदकै[६४] न सांड परवी रै
अंतरा राणी जागती हेती[६५] रै
अंतरा ने मारली[६६] वातो सौले रै
साभल जे मारली मारी वातो रै
मनै हावरा[६७] रौ हपनो[६८] आयो रै
घणौ नै खोटो हपनो आयो रै
धीरो रे रैयनै हरियो बोले रै
माणक चौक मा ऊभौ बोले रै
सांभळौ अंतरा राणीजी मारी वात रै

हसनापरे ती मूं तो आयो रै
सूता होवो तो परा जागो रै
जागता हुवौ तो बारणै आवो रै
बारणे आवै न मुखडै बोलिया रै
सांभळजै हरिया मारी वात रै
कणवध[६९] आयो रै विराट नगरी रै
राणीजी आपरै औणु आयु रै
रात रे रात आणौ ले जावु रै
नवा रे कापड़ा[७०] लेवा हाली रै
पड़ियौ काळा रै गाबा[७१] पर हाथ रै
खोटा रै हकन[७२] व्हैवण लागा रै
साभळौ राणीजी मारी वात रै
झटकै[७३] उतावळ[७४] परी करो रै
जाणु रै आयो हथनापर रै
सांभळौ मारली मारी वात रै
खावौ ने पीवो ने मजा मांडजो रै
मनै जाणौ इज पहेला हतनापर रै
ठेके-ठेके ने असवार व्हिया रै
सांड रे माथे बैठा रै
अंतरा राणी पिलाणै[७५] बैठी रै
धीरो रैयनै हरियो बोल्यो रे
ढमो[७६] रै कंवराणी हेटा[७७] रेजो रे
परै[७८] जावो तो मरे जावोला रै
सांड रै उडियेला[७९] तारा[८०] मंडला रै
पवन रे झोले जावा लागी रै
ऊगती[८१] किरणां जाय ठाणै[८२] पूगा रै
हथनापर मा लडाई चेती रै
अंतरा-अहमद रौ छेलो मिलणौ रै
राणी रै अंतरा आवै पूगी रै
हिम्मत ने चकरियो भेदण विदा दीवी रै
कैरवा पांडवा रै झगडौ लागौ भारी रै

१. पांडु, २. यज्ञ, ३. प्रारंभ ४. सोना, ५. बीड़ा, ६. अर्जुन, ७. ढाल, ८. नकुल, ९. अछूता, १०. स्वर्ण, ११. पांडव, १२. आया, १३. एक खूंखार वन्यजीव, १४. चाहो १५. हस्तिनापुर १६. अभिमन्यु, १७. अभिमन्यु, १८. उदास, खिन्नमन, १९. चक्रव्यूह, २०. चक्रव्यूह, २१. गडरिये का नाम, २२. गड़रिया, २३. अनाज, २४. खिलाया, २५. सुमित्रा, २६ उत्तरा (अभिमन्यु की पत्नि) २७. लेने के लिये, २८. ऊंटनी, २९. दल (ग्रुप), झुंड, ३०. मूरी, डोरी ३१. गर्दन, ३२. पत्ते, ३३. छोटे बच्चे, ३४. दुबली-पतली, ३५. मुझे, ३६. तेरा, ३७. शक्ति, हिम्मत ३८. तुम्हारा, ३९. सौलह श्रृंगार, ४०. कौड़ी, ४१. एक काला डोरा विशेष, ४२. जीण, आसन, ४३. कसकर, ४४. जोरदार, ४५. बांधो, ४६. गोरबंध, ४७. बजनेवाली, ४८. विराट नगर, ४९. सुनना, ५०. नजदीक, इसओर, ५१. कजली (कदली), ५२. रास्ते में, ५३. बेल, ५४. लौटते ५५. माता, ५६. सुनो, ५७. ऊपर, ५८. पांव, ५९. नहीं तो, ६०. गिरेगा, ६१. मजबूती से ६२. रात को, ६३. उल्टा पीछे चलना, ६४. कूद कर, ६५. थी, ६६. माता, ६७. ससुराल, ६८ स्वप्न, ६९. किस कारण, क्यों ? ७०. कपडा. ७१. कपड़े, ७२. खराब, अशुभ, ७३. जल्दी, ७४. फुर्ती, ७५. आसन, ७६. रूको, ७७. मजबूत, ७८. गिरोगे तो, ७९. उडी, ८०. आकाशमार्ग, ८१. सूर्योदय, ८२. गंतव्यस्थान

अर्थ

पांडवों के राजा युधिष्टिर महाभारत युद्ध की योजना बना रहे थे। स्वर्ण मुद्रा के साथ पान का बीड़ा भरी कचहरी में फेरा जा रहा था। प्रथम बीड़ा अर्जुन ने उठाया जो गेंडे की ढाल (खाल) लाने के लिये था। दूसरा नकुल ने उठाया परन्तु वह कहाँ जाने के लिये था ? वह समुद्र के गर्भ से अनछुआ पवित्र सोना लाने के लिये था। तीसरा बीड़ा भीम ने 'झाली झीतर' नामक खूंखार वन्य जीव का सिर काट कर लाने के लिये उठाया।

इस प्रकार पांडव चारो दिशाओं में निकल पडे और बिछड गये। कौरवों और पांडवो में युद्ध की आग भडकने लगी। पांडवों का निर्णय धवल पत्र पर काले अक्षरों में अंकित हो गया कि या तो हस्तिनापुर के राज्य का परित्याग कर चले जाय अथवा युद्ध करें। करो या मरो। अतः युद्ध अवश्यमभावी हो गया था, इसके अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं बचा था। पीछे एक दिन का सूर्योदय कुछ नवीन संदेश ले कर आया। कौरवों ने पीछे चक्रव्यूह की रचना कर दी, जो अर्जुन के सिवाय कोई तोड़ना नही जानता था, और वो वहाँ नहीं था। और अभिमन्यु ने साहस के साथ बीड़ा उठाया, यद्यपि अभी उसकी किशोरावस्था थी। जब वह उदास हो कर माता के पास मिलने गया तो माता सुभद्रा बोली - 'बेटा तूने किस उद्देश्य से बीड़ा उठाया है, मुँह उतार कर, उदास हो कर घर कैसे आया है ? तब बालक अभिमन्यु बोला - 'मैं पूर्ण रूपेण चक्रव्यूह भेदन नहीं जानता पर कोई तैयार नहीं था अतः मैने बीड़ा उठा लिया चूंकी चक्रव्यूह भेदन कोई जानता ही नहीं, मै कुछ जानता तो हूँ।

माता सुभद्रा बोली - 'हरिया गडरिया तेरा धर्मभाई है, जा उसे बुला कर ला'। अभिमन्यु उसे बुलाने 'राईका की ढ़ाणी' पहुँचा और हरिये को साथ चलने ता कहा। हरिया घबराया पर धैर्य से पूछा - 'मैने क्या गुनाह किया है ? मैने किसी के खेत की खडी फसल क्या ऊँटो को चराई है? कोई अन्य अपराध भी नही जानता, फिर भी मुझे 'रावळै' (राजमहल) में क्यों बुलाया गया है ? बालक अभिमन्यु ने कहा - ' मुझे पता नहीं माताजी ने बुलाया है। हरिया चला आया। सुभद्रा बोली - हे बंधु मेरी बात शांति से सुनो।
हे हरिया ! तुझे उत्तरा को लेने विराट नगर जाना पड़ेगा और रातो रात उसे ले कर वापस लौटना भी अनिवार्य होगा। (चूंकी अभिमन्यु का मिलन करवाना है, प्रातः चक्रव्यूह में न जाने क्या हो ? उत्तरा गर्भावस्था में थी, प्रसव हेतु गई हुई थी) उदास खिन्न मन हरिया अपनी ढाणी पहुँचा। विचारों मे डूबता उतरता काले रंग की रस्सी हाथ में ले कर, ऊँट-ऊँटनी के बैठे झुंड में फिरने लगा, परन्तु कोई ऊंट या ऊँटनी काली डोर ग्रहण करने को तैयार नही है (इतने कम समय में इतनी लंबी यात्रा तय करना असंभव लगा। सभी लंबी गर्दन कर असमर्थता व्यक्त करती सो गई।
तब हरिया सबको कहने लगा - 'तुम्हारे कारण मैने बाल्य काल में ही मा-बाप को छोड़ा, , नन्हें नन्हें दुधमुंहे बच्चो को छोडा, और वन-वन भटकता फिरता रहा तुम्हारे पीछे पर आज मेरी लॉज रखने को कोई इस यात्रा पर चलने को तैयार नहीं। पत्नी और बच्चों से दूर रह कर तुम्हारी सेवामें रहा। यह विलाप सुन कर दूर बैठी दुबली-पतली ऊँटनी ने हरिया को पुकारा और बोली - 'हरिया तेरा विलाप सुना नहीं जाता, ला मुझे दे काली डोर (नकेल की रस्सी)। वो बोला - 'तू इतनी दुबली-पतली, चलने की शक्ति नहीं, क्यों यह नकेल ग्रहण करना चाहती है ?' ऊंटनी बोली - 'तु मुझे दुबली पतली या कमजोर मत समझ।
'तुम्हारी बातें मेरे कलेजे में करवत चला रही है। हरिया तेरे शब्द मुझे अत्यन्त कड़वे लग रहे है, तुम निश्चित रहो, तुम्हारा काम पूरा करूंगी। आप मुझे सौलह श्रृंगार करवा कर सजाधजा कर तैयार करें, उत्साहित करें। काली गोप की डोरी में सफेद कौडी पिरो कर मेरे घुटनो के बांधो। मोतियों से जड़ा जीण (आसन) लाओ और वह पिलाण (आसन) जोरदार तंग कसकर बांध दो। गले में घुंघरू की माला और घोरबंध बांधो, जो बजती रहेगी, मुझ में उत्साह का संचार करेगी।' तब हरिया बोला - मेरी बात भी सुन 'हे ऊंटनी, मुझे विराट नगर जाना है पर यह कहाँ है ? रास्ता किधर है? ऊंटनी ने प्रत्युत्तर दिया - 'हरिया ! विराट नगर तो मेरे लिये निकट ही है, वहाँ पहुँचना मेरे लिये बांये हाथ का खेल है। मेरी माता तो रोज कदली वन मे नागर वेल के पत्ते चर कर आती थी। विराट नगर रास्ते में पड़ता है, वापस लौटते विराट नगर के सरोवर में जलपान करती थी।

मै माता के गर्भ में थी अतः मैने इस बात का ध्यान रखा और याद रखा। अतः मै विराट नगर और उसका रास्ता जानती हूँ। तू मेरी पीठ पर चढ़ जा परन्तु सावधानी और मजबूती से बैठना अन्यथा गिर सकता है और मर सकता है। इतनी द्रुत गति से उड़ूगी सो सचेत कर रही हूँ पहले से। कूद-कूद कर हरिया रेबारी ऊँटनी पर सवार हो गया। पुनः ऊँटनी ने सावधानी से मजबूती के साथ बैठने को आगाह किया। अब मेरी नकेल की काली डोरी खींच ले। नकेल खींचते ही ऊँटनी पवन वेग से उडी और पहुँच गई शीघ्र विराट नगर। उस समय आधी रात ढल चुकी थी; किले व राज महल के प्रवेश द्वार बंद थे। दरवाजे पर चौकीदार पहरा दे रहा था। उसे हरिया ने द्वार खोलने का आग्रह किया तो जवाब मिला कि रात को द्वार नहीं खुलेगा। ऊँटनी बोली - 'ठहर-ठहर रे हरिया ...मेरी नकेल (डोर) से जरा पीछे खींचना, अरे हरिया मुझे पीछा खींच तो सही, मै अभी बताती हूँ। हरिये ने ऊँटनी को पीछे खींचा। ऊँटनी पीछे सरक कर उछल कर कूदी और उतर गई छत पर, महल के माणेक चौक में। महल में उत्तरा और उसकी माता बातें कर रही थी - मां ने कहा - 'उत्तरा आज मुझे नींद क्यों नहीं आ रही है ? उत्तरा बोली - 'माँ मुझे भी ससुराल के संदर्भ में स्वप्न अच्छा नहीं आया। धैर्य रख कर हरिये ने माणक चौक से पुकारा - 'सुनो उत्तरा राणीजी मेरी बात, मै हस्तीनापुर से आया हूँ और आपको लेने के लिये आया हूँ। सोये हो तो जाग जाओ और जागते हो बाहर आओ। उत्तरा जनाना महल से तुरन्त बाहर आई और पूछा - 'हरिया विराट नगर से अचानक और रात को कैसे आया ? मुझे इसी समय आपको ले कर हस्तिनापुर रातोरात पहुँचना है। यह सुभद्राजी का आदेश है।

जल्दी करो, रातोरात वापस हस्तिनापुर पहुँचना जरूरी है। उत्तरा नवीन पोषाक पहिनने के लिये मंजूषा में हाथ डाला तो सर्व प्रथम काले कपड़े (विधवा का सूचक) ही हाथ लगे। इस प्रकार अशुभ शुकन होने लगे। हरिया बोला - 'फुर्ती करो, विलंब न करो। उत्तरा माता से बिदा लेते बोली - माँ! खाना-पीना और मौज मस्ती से आनन्द पूर्वक रहना, मुझे तो अब हस्तिनापुर जाना ही पडेगा। कूद कर दोनो ऊँटनी पर सवार हुए। हरिया धैर्य से धीरे से बोला - 'राणीजी मजबूती से बैठना, ऊँटनी पवन वेग सी तीव्र गति से उडेगी, गिरे तो मरे समझो! ऊँटनी पवन वेग से तारा मंडल में होती हुई उड चली और सूर्योदय के पूर्व पो फटते-फटते हस्तिनापुर पहुँच गई। चक्रव्युह भेदन के लिये अभिमन्यु के प्रस्थान करने से पूर्व अंतिम मधुर मिलन हो गया पति को विदा दी। महाभारत का युद्ध हो रहा था।

भीमौ जाडीयौ

अेजी मांजी सूता देवल मालियो[१] घोराधोर[२]
भीमो सूतो खड़ियेदेवल[३] सूताने सपनो आवीयो।
अेजी मांजी सूता देवल मालियो घोराधोर
झझके ने जागीयो भीमो दाणवो, काळी कांबळ री मारी गातरी
हाथै लीदी टांकी ने हथौडी, सुकन लेने रे भीमो हालीयो
जीमणी रे बोले काली डूचकी[४], डावो बोले काळे रौ भैरवो[५]
जीमणी दीधी दारू री धार, डावा चढे रे मीडा खाजरूं
मारे हरणियो फाल दाणवो फाल
छोटकड़ो छापर ला अेवरे[६] मेलीयो
अे लगतो लीदो है रे मई माळवो[७], मारो लीदो माळवो
लगता लीधा है रे वरला-पीपळा
लगतो मारो करवो लीमड़ो[८]
जातो रीयो देवलमाळीये
घेरो घालीयो देवळमाळीये
झरझर ध्रुजे देवळमाळीयो
घणी रे कीमत रो है देवळमाळियो
टोकी हथोडी रोळवै[९] भीमो दाणवो
पैलो टसको[१०] मार भीमो जाडीयौ
दूदां रा फुंआरां[११] बारे आवीया
दूजो रे टसको भीमे ठौकीयो
रगतां रा फुआरां बारे आवीया
तीजो टसको मारीयो भीमो जाडीयौ
पांणी रा फुंआरां बारे आवीया
देवळ फांडो[१२] पाडियो जी भीमो दाणवो[१३]
बडियौ मा है चौरा[१४] रो लीमडो[१५]
तळेम[१६] करे भीमो चौरा रे लीमड़े
सूतां नींदा मा घोर अंबा मांजी
पैलो हाथ न्हाख्यै भीमे जाडीये
पगां रा उतारे सोवन झांझरा[१७]

बीजो हाथ न्हाख्यौ भीमो दाणवो
मांजी रे उतारी सोवन टीलरी[१८]
झझके ने जागीया आंबा मांजी
हाथे झाळीयौ कोरडो[१९] जी
अंबे मा धाकल[२०] कीधी
नवलख[२१] देव दौडता आया
धोरिया[२२] आवे चौसठ जोगणियां
धोरियो आवै काळौ भैरूं
धोरिया आवे चांवंडा माता
पैरो धोरव्यौ[२३] है रे भीमो दाणवो

१. मालवे का एक मंदिर विशेष, २. गहरी नींद, ३. एक खंडित मंदिर विशेष, ४. एक विशेष प्रकार की काली चिड़िया, ५. एक मोटा मांसाहारी पक्षी, ६. पीछे छूट गये, ७. मालवा देश, ८. कड़वा नीम, ९. चोट मारना, १०. चोट, ११. फव्वारें (धारायें) १२. छेद, १३. दानव, १४. चबूतरा (चौकी), १५. नीम, १६ नमस्कार, १७. पायल, १८. बिंदिया, १९. कोड़ा, २०. हुंकार, २१. नौ लाख, २२. दौडे, २३. भाग छूटा

मोटा भीम

अंबामाता 'देवळमाळीये' मंदिर में गहरी नींद में सो रही थी। उधर भीम एक खंडित मंदिर में सो रहा था। नींद में उसे स्वपन आया और वह चौक कर उठा। काली कम्बल ओढ़ कर प्रस्थान किया। हाथ में 'टांकी' और हथौड़ा साथ लिये। शकुन देख कर भीमा आगे वढा। शकुन में बांई ओर 'काली डूचकी' चिड़िया और दांई ओर 'काल भैरव' पक्षी बोला। दांई ओर शराब की धारा और बांई ओर भेड़ की बलि चढाई और हिरण की भांति 'फाल' भरता हुआ अर्थात् लंबी छलांग लगाता तीव्र गति से दौड़ा। छोटावाला मैदान को पल भर में पीछे थोड़ दिया और पलक झपते ही मालवा देश में पहुँच गया। वट वृक्ष, पीपल के पेड और नीम आदि सब पीछे छोड़ते हुए 'देवलमाळिया' मेंदीर में पहुँचा। विशाल काय बलिष्ठ भीम को देख कर मंदिर थरथर काँपने लगा। 'देवलमाळिया' मंदिर बहुमूल्य एवं ऐतिहासिक तथा कलात्मक था। भीम टांकी और हथोड़ी तैयार कर रहा था। मंदिर मानवी भाषा में बोल कर तोड़ने के लिये मना कर रहा था। पहली चोट भीम बली ने मंदिर के मारी तो दूध की धारा फूट पड़ी। दूसरी चोट मारी तो रक्त की धारा छूटी।
टांकी हथोडी की तीसरी चोट मंदिर के शिल्प-पाषण पर विशाल काय भीम ने की तो शीतल जल का स्त्रोत फूट पड़ा। इस प्रकार चोट पर चोट कर अंत में मंदिर के आर पार छेद कर दिया और भीम ने अंदर प्रवेश कर दिया। मंदिर में अंदर चौक और उसमें चबूतरा

(चौकी) जिस पर नीम खड़ा था, वहाँ सर्व प्रथम भीम ने दण्डवत सष्टांग नमस्कार किया। फिर नींद में सो रहे अंबा माताजी के पास गया और हिम्मत करके पहला हाथ भीमने पायल पर डालाऔर सोने का पायल उतार दिये। दूसरा हाथ ललाट कि सोने की बिंदिया पर डाला तब अचानक चौक कर अंबा माता उठी और हाथ में कोड़ा लिया और जोर से दहाड़ की तो नौ लाख देवता, चौसठ योगिनियाँ, काल भैरव और चामुण्डा आदि नंगे पांव दौड़ते हुए अंबा माता के पास पहुँचे और कहा- आज्ञा दीजिये। यह सब देख कर भीमला दानव भाग छूटा।

नोट : यहां भीम को दानव कहा है, पांडवों का भीम है या अन्य, प्रमाणित नहीं होता।

चौबीस रसिया

भोजा रसिया, भोजा अेके रातरा जणिया[1], भोजा रसिया
भोजा पारख[2] कोई न करै, अेके रात रा जणिया
भोजा सेबळी[3] वाळौ चौरौ[4a] रे, भोजा सेबळी वालो...
भोजा बैठा चौरा ऊपरे वातों सौले[4b] रे, भोजा रसिया...
टिमरू फळै जोवै रे भोजा रसिया, टिमरू फळै...
भोजा डूंगरां-भाखरा जावू रे, भोजा डूंगरा ....
भोजा फळ फूल खावा रे, भोजा रसिया ...
भोजा पाछा सोरो ऊपरे रे, भोजा रसिया ...
भोजा बाणु[5] लाख मालवो रे भोजा, बाणु लाख ...
भोजा रावजी न्हाटा आवै रे भोजा रसिया ...
भोजा सिमला वाळौ सोरो, भाटजी न्हाटा आवै ...
भोजा रावजी वातों सौलै रे भोजा रसिया ...
अैथ अमला भांगरौ नेसो परे टूटो रे भोजा ...
अथ अमले रा डळा दीधा, नसो करवा दीधा रे ...
इतै भाटजी वाता सौले रे भोजा रसिया ...
महाणै घेणौ वक्कौ[6] पड्यौ रे भोजा रसिया ...
अेत फौज मालवा मा आलै रे भोजा रसिया ...
आ तो गढे घेरो घाल्यौ रे, भोजा रसिया ...
राजा सेकिया गेढे रौकिया रे, भोजा रसिया ...
अे तो कोरे कोरे[7] फौजा रे, भोजा रसिया ...
मूं तो न्हाटै भागेन[8] आयो रे भोजा रसिया ...
भोजा धीरे रैयने बोले रे भोजा रसिया ...
म्हनै तरवाणौ[9] आवै तो भोजा रसिया ...
म्हां फैज पाछी वाळौ[10] रे रावजी म्हारा रै
इतो लिख्यौ है पेरवाणो[11] रे
राजा जे दे परवाणो रे रावजी म्हारा रै
म्हैं तो दोड्या थका आवां रे भाटजी म्हारे रै
भाटजी पाछो जातो रह्यौ
अेतो वातो सांभळै ने गिया रे भोजा रसिया

रावजी धम्मिया[१२] पूगारे पर माळवे
राजा ने जाय कया समिचार खरा रै भोजा
आप परवाणौ लिखो रे माळवा रा राजा
मूं तो सुवा[१३] भाळैन आयो रे राजा
थे तो दौत[१४] कलम हाथे झेलो रे माळवा रा राजा
थैने आसरा[१५] रौ परवाणौ लेखो रे राजा माळवारा
लेखो कागद देखत आवजो रे भोजा रसिया
भाटजी आयो सौरो ऊपरा रे भोजा रसिया
अे तो तरवाणौ नै आले[१६] रे भोजा नै रसिया
रावजी ले तरवाणो पूगा रे भोजा रसिया
औ तो धीरो रैयने बोले रे भोजा रसिया
आपणा लीला सोटा[१७] काढौ रे भोजा रसिया
होटा ठौके न मारे कूटै रे रावजी म्हारा
इत माळवा मा गिया रे भोजा रसिया
वठै मगरा सांमी बारी रे भोजा रसिया
बड़िया[१८] किल्ला माये रै भोजा रसिया
जाय रामास्यामा करिया रे भोजा रसिया
अेतो राजा मुखडै बोले रे भोजा रसिया
आपणै खाणौ नै बणावौ रे रावजी म्हारा
आपा पेसण जीमै न फौज मा उतरा रे राजा
ओ तो तेजो है तरवारियो रे भोजा रसिया
तेजो किलै चढ़नै फौज भाळै रे भोजा रसिया
वडवा[१९] रौ है डाळी रै, तेजो डाळी अपडै चढियौ रे...
डाळी भागने[२०] फैजा मा पड़्यौ रे भोजा रसिया
फौज तो न्हाटी भागी रे भोजा रसिया
तेजो अेकलो फौजा मांय लड़ियो रे भोजा रसिया
पटकै पटकै न तेजो फौज मारी रे भोजा रसिया
फौज तो न्हाई[२१] नै भागेगी रे तेजा रसिया
तेजो पाछो किल्ला मा आयो रे भोजा रसिया
तेजो धीरे रैयनै बोले रे भोजा रसिया

राजा सांभळौ म्हारी वातो रे भोजा रसिया
आपरे कठै फौज परी रे राजा माळवा रा
फौज मारे नजरें कोयना[२१] आवै रे भोजा रसिया
वठै नेह्रो रावजी बोले रे भोजा रसिया
तेजे थे अेकले फौज काढी[२२] रे भोजा रसिया
दूजां नै वारी नह आई रे भोजा रसिया
राजा खूब खुसी व्हियौ रे भोजा रसिया
राजा सांभळजौ मारी वात रे भोजा रसिया
मौहने मजो कोनी आयो रे भोजा रसिया
आपणै खुसी नै मनावो रे भोजा रसिया
राजा रैयनै वातो सौलै रे भोजा रसिया
आपणै अैड़ा सूबा[२४] जोइजे रे भोजा रसिया
राजा धीरो रैयने बोले रे भोजा रसिया
थेमो परण्या क कवारां रे भोजा रसिया
मोरो खाचणौ[२५] नह कीधो रे भोजा रसिया
आपणै दूरो राजा बोले रे भोजा रसिया
मारे कंवरी परणाऊं रे भोजा रसिया
कंवरी रौ नोम[२६] तो बतावो रे मालवे रा राजा
कंवरी रौ नोम साडू भटियाणी रे भोजा रसिया
बीजी कंवरी रौ नोम कैवौ रे मालवे रा राजा
औ तो है नेता भटियाणी रे भोजा रसिया
नेतो नै रावजी परणै औ भोजा रसिया
साडू परणै भोजो रसियो रे मालवे रा राजा
आपणै गूजरी तेडेन[२७] लावो रे मालवा रा राजा
राजाजी सांबळौ म्हारी वात रे भोजा रसिया
गूजरी तेजा ने तरवारीये परणावौ[२८] रे राजा मालवेरा ।

१. जन्मे, २. परीक्षा, ३. सैमल - एक वृक्ष, ४अ. चबूतरा, चोकी ४ब. बातें कर रहे है, ५.बराणु (९२) एक वृक्ष का नाम, ६. संकट, विपत्ति, ७. किनारे किनारे, ८. दौडकर, ९. निमंत्रण, १०. लौटाना, ११. परवाना (बुलाने का पत्र, मदद हेतु निमंत्रण) १२. दौड़ा, भागा, १३. परमवीर, १४. दवात, १५. आश्य, १६. दिया, १७ लाठियाँ, १८. प्रवेश किया १९. बट वृक्ष, २०. टूट कर, २१. भाग छूटी, २२. नहीं, २३. भगाई, २४. शक्तिशाली, २५. शादी, २६. नाम, २७. बुलाकर, २८. लग्न।

अर्थ

हे भोजा रसिक ! तू और मै एक ही रात को जन्मे परन्तु कोई परीक्षा नही करता। सैमल वृक्ष की चौकी (चबूतरी) पर भोजा और उसके साथी बातें कर रहे थे। पर्वत पर टीमरू फल लेने के लिये जाने का विचार कर रहे थे, फल-फूल खाने की इच्छा थी। इतने में देखा कि रावजी (भाट) दौड़ते भागते भोजा की ओर आ रहे है। रावजी बेले - 'भोजा ! मलवा २ लाख लोगो का क्षेत्र है, रावजी बात कह रहे थे पर भोजा का नशा उंतर गया। अफीम और भांग का नशा करता था इसलिये रावजी ने अफीम का बड़ा टुकड़े की मनवार करके दिया। फिर बोले - मालवा नरेश बड़ी आपत्ति में है। सेना ने किले को चारो ओर से घेर लिया है, पूरे मालवे में फौज ने मोर्चे ले रखे है। किनारे किनारे दुश्मन की फौज पड़ी है और राजा गढ़ मे बंद है। भोजा नै दृढ आत्मविश्वास से कहा कि मुझे निमंत्रण मिले और मदद मांगे तो जरूर करूंगा।

हे रावजी ! उस सेना को हरा कर भगा दूंगा परन्तु यह तब संभव होगा जब मालवा नरेश मदद के लिये मुझे आमंत्रित करें तो मै मदद के लिये दौड़ा आऊँगा। रावजी यह सब सुन कर भोजा के समाचार ले कर मालवा लौटे। और राजा को सारे समाचार कहे। हे मालवी नरेश ! आप मदद के लिये उन्हें आमंत्रित करें। मै महान वीर ढूढ़ कर आया हूँ। आप कलम उठाओ और पत्र शीघ्र लिखो। पत्र लिखा कि पत्र पढ़ते ही मेरी रक्षा करने तत्काल प्रस्थान करने की कृपा करें। रावजी वापस पत्र लेकर भोजा के पास आये। मालवे के राजा का संदेश और पत्र दिया। दृढ़ आत्मविश्वास के साथ भोजा बोला - 'अपनी लाठियाँ बाहर निकालो। लाठियों से मार-मार कर खदेड़ देंगे उनको। इस तैयारी के साथ भोजा रसिया तथा अन्य चौबीस रसिये मालवा पहुँचे। किले में पर्वत के समाने खिड़की थी, उससे किले में प्रवेश किया और मालव नरेश को अभिवादन किया।

राजा नै भोजा से कुशल क्षेम पूछी और भोजन की तैयारी के लिये कहा। भोजा ने कहा - ठीक है खाना वाना खा कर निश्चित हो कर ही युद्ध में उतरेगे। चौबीस रसियो मे से तेजा ने किले पर चढ़ कर दुश्मन की सेना का सिंहावलोकन किया। वहाँ एक वट वृक्ष था, उसकी डाल पकड़ कर तेजा चढने का प्रयास कर रहा था। वट वृक्ष की वह विशाल डाली टूट कर सेना के बीच जा गिरी। यह अचानक वज्रपात देख कर सैनिक घबराये और हड़बड़ा कर भाग छूटे। सेना तितर-बितर हो कर भाग गई। कुछ शेष बचे सैनिको को उसने पटक-पटक कर मार डाला। अकेले तेजा रसिया ने फौज खदेड़ दी।

तेजा वापस किले में आया और बोला - 'राजा मेरी बात सुनो, आपके दुश्मन की सेना कहाँ पड़ी है ? मैने तो किले पर से देखा कहीं कोई -दृष्टिगत नहीं हो रही। रावजी बोले - 'वाह रे तेजा वाह !' अकेले ने ही फौज को वापस खदेड़ दी और विजय का डंका बजा

दिया, दूसरे रसियों की किसी की बारी नहीं आने दी। मालव नरेश अत्याधिक प्रसन्न हुआ।

भोजा कहता है - 'हे मालव नरेश ! हमें युद्ध करने का आनन्द नही आया।' राजा बोला - 'खैर, अब खुशी मनाओ, विजय के लिये आप सबको बहुत बहुत बधाई। राजा और भोजा रसिया आपस में बाते करते हुए राजा पूछता है कि आप शादीसुदा है या कुँवारे ? हमें एसे पराक्रमी चाहिए। भोजा ने कहा - 'अभी मेरी शादी नहीं हुई। राजा बोला - 'तो मेरी कुँवरी की आपके साथ शादी करना चाहता हूँ।

आपकी कुँवरी का नाम तो बताओ ? मेरी राजकंवर का नाम साडू भटीयाणी है और दूसरी का नाम क्या है ? दूसरी का नाम नेता भटियाणी है परन्तु वादे के अनुसार नेताकी शादी रावजी के साथ करनी होगी। इस प्रकार रावजी का नेतो के साथ और भोजा के साथ साडू का ब्याह निश्चित हुआ। तब भोजा ने कहा तेजा तरवारिया गूर्जर है इसलिये ऐसी ही एक गुजरी ढूढ़ कर लाओ और तेजा के साथ उसकी शादी भी साथ साथ करो।

दी माछळां री झगड़ी (परलय)

ईंगर[१]-भींगर[२] माछा डोळमणी रे लो
वे बापी रा कुण्ड[३] छोड डोळमणी रे लो
अे तो समदो पार म्या डोलमणी रे लो
वे दरीया[४] मा जाता रैया डोलमणी रे लो
रोई[५] है वो माछो रे डोलमणी रे लो
रयौ कुण्ड मांय सूतो, डोलमणी रे लो
उत बारै बरस बीता डोलमणी रे लो
आयो समाजोग[६] रे डोलमणी रे लो
उत धोबी कापरा[७] धोवै डोलमणी रे लो
उत माछा ने ई जीमारै[८] डोलमणी रे लो
टूटो काचो ताग रे, डोलमणी रे लो
उत जाय माथै मे विटोणो[९], डोलमणी रे लो
माछो वातो छोले[१०], डोलमणी रे लो
के साबळै[११] धोबी वात, डोलमणी रे लो
आपा विया धरम रा बांधवा[१२], डोलमणी रे लो
धरमे रा हो भाई, डोलमणी रे लो
साबळै बांधवा भाई, डोलमणी रे लो
माछो वातो छोलै, डोलमणी रे लो
ओ जग तो डुळै[१३] जाहो, डोलमणी रे लो
कान धरै न सांबळौ, डोलमणी रे लो
ओ तो जग तो डुळै जाहो, डोलमणी रे लो
कैदी जग डुळै जोहे रे, डोलमणी रे लो
उत आंवळी इग्यारस[१४], डोलमणी रे लो
उत कैदी जग डुळै , डोलमणी रे लो
उत आंवळी इग्यारस, डोलमणी रे लो
इत आवै बांधवा पाछा, डोलमणी रे लो
कैवै मोरे कुण्ड वाटवी[१५] है, डोलमणी रे लो
केठे कुण्ड वाटवो है, डोलमणी रे लो
धुरे[१६] री तारो मा वाटवो, डोलमणी रे लो

धुरे रे तारे रे, डोलमणी रे लो
वठे कुण्ड वाटवौ है, डोलमणी रे लो
माछो वाता छोळे, डोलमणी रे लो
सांबळै धोबी वाता, डोलमणी रे लो
आपां धरमे रा हा बांधवा, डोलमणी रे लो
थू त खट पांजरी[१७] घड़ाव[१८] रे, डोलमणी रे लो
उत वाळ[१९] न हाचरे[२०] नीं रे, डोलमणी रे लो
उत लेजेजी जीवा जूण,[२१] डोलमणी रे लो
उत जीवाजूण लेजे, डोलमणी रे लो
उत न्हाखजे दरीया माहे, डोलमणी रे लो
उत घूरेने[२२] मेघ वरसे, डोलमणी रे लो
बाळने हांचरे नीरे, डोलमणी रे लो
इत आयो बोहमण[२३] देवता, डोलमणी रे लो
उत कांन धरैने सांबळै, डोलमणी रे लो
सांबळने पाछौ वळीयौ, डोलमणी रे लो
बोहमण पाछो वळीयौ[२४], डोलमणी रे लो
जायरे देवळमाळीये[२५], डोलमणी रे लो
जाय पोळ रे बारणे ऊभो, डोलमणी रे लो
ऊभा बोहमण देवता, डोलमणी रे लो
हीरा[२६] वातो छोळै, डोलमणी रे लो
सांबळी बोहमण देवता, डोलमणी रे लो
किम जावो किम आवो, डोलमणी रे लो
बोहमण मुखरे बोलो रे, डोलमणी रे लो
मूं कासी भणै न आयो, डोलमणी रे लो
सो दरसण करवा आयो, डोलमणी रे लो
इत अंबाजी रे वकायौ[२७], डोलमणी रे लो
मूं दरसण करवा आयो, डोलमणी रे लो
अंबा सूती निन्द्रा घोर, डोलमणी रे लो
बारा बरसां री निन्द्रा, डोलमणी रे लो
मूं तो दरसण करवा आयौ, डोलमणी रे लो

हीरली धीरी रैयनै बोले, डोलमणौ रे लो
मांजी कांची निन्द्रा जागो, डोलमणौ रे लो
कोरळा[१८] पाडै खाल मारी, डोलमणौ रे लो
इत मारचा[१९] माथै भुरकै[२०], डोलमणौ रे लो
हीरो रेजे थांबै[२१] आडी, डोलमणौ रे लो
चिट्ठी आंगळी दाबो[२२], डोलमणौ रे लो
मांजी कोरळी न घुमावै, डोलमणौ रे लो
थंबे कोरळी लागै, डोलमणौ रे लो
लौठीयौ[२३] करजौ आगो, डोलमणौ रे लो
मांजी झझकेन[२४] बैठा व्हिया, डोलमणौ रे लो
खट[२५] लोठीयौ आगो की दी, डोलमणौ रे लो
मांजी हाथै पगै धोवै, डोलमणौ रे लो
मुखरो धौवण लागा, डोलमणौ रे लो
मांजी ऊंचा कुर्ळा न्हाखै, डोलमणौ रे लो
नीचे पड़े सोना रा पोपटा[२६], डोलमणौ रे लो
सोना रा पोपटा नीचा परै, डोलमणौ रे लो
हीरवा विणवा[२७] लागी, डोलमणौ रे लो
मांजी धीरा रैयने बोले, डोलमणौ रे लो
बेटा कांई परियौ काम, डोलमणौ रे लो
मांजी आयौ बोहमण देवता, डोलमणौ रे लो
आयो आयो पोळौ रे बारणै, डोलमणौ रे लो
तो आडो परदो बांधो, डोलमणौ रे लो
हरने दाणव[२८] वचै, डोलमणौ रे लो
धोरे धोरे दाणवा वसै, डोलमणौ रे लो
धीरो रैयनै बोले मांजी, डोलमणौ रे लो
अंबा वातां छोलै छोलै, डोलमणौ रे लो
बोहमण किम जावो किम आवो, डोलमणौ रे लो
मूं त कासी भणेन आयो, डोलमणौ रे लो
तो जूना चौपड़ा[२९] वांचौ, डोलमणौ रे लो
आपणै सुगाळ[३०] केदी आवै, डोलमणौ रे लो

उत सांभळी देवियो वातो, डोलमणी रे लो
आपणे आया दोरा[४१] दन, डोलमणी रे लो
उते जग डुळै जाहो, डोलमणी रे लो
केदी जग डुळै डुळमणी[४२], डोलमणी रे लो
आंमळी है इग्यारस, डोलमणी रे लो
जगत डुळै जोहै, डोलमणी रे लो
देवियां आया है दोरा देन, डोलमणी रे लो
पण देविया रै जीवण री जोग, डोलमणी रे लो
बोहमण सांचा चौपड़ा वाचै, डोलमणी रे लो
देविया जाजो थळवट[४३] धरती, डोलमणी रे लो
सुमेर[४४] लगतो लीजो रे, डोलमणी रे लो
सुमेर है परब मोटो, डोलमणी रे लो
उठै ऊंगैला अळूप[४५] रूखडो, डोलमणी रे लो
थे वीं रूखड़ा रै वेळूम्बजो[४६], डोलमणी रे लो
वगत वीतो, देवी भूले गेई रे, डोलमणी रे लो
उत घुमा[४७] बिजळी चमकै, डोलमणी रे लो
ने आई औगत मांजीने, डोलमणी रे लो
आई याद वात बोहमणरी, डोलमणी रे लो
माळी आंबा धीरो रैयनै बोले, डोलमणी रे लो
सांबळ अे बेटा हीरो, डोलमणी रे लो
थूं जाव खार समंदां, डोलमणी रे लो
आपणे भेरूवो[४८] तेड़ेन लावौ, डोलमणी रे लो
हीरो धामीये धोरीये[४९] गीये, डोलमणी रे लो
धमीयो धोरीये गी हीर, डोलमणी रे लो
इत गीयौ पराग वरले, डोलमणी रे लो
भैरवौ चम्पा[५०] री रूखाळी, डोलमणी रे लो
हीर पूगी, भैरवो सूतो निन्द्रा घोर, डोलमणी रे लो
हीरलो देई बदळी[५१] करनै, डोलमणी रे लो
बणीयौ लीलो सूमटो[५२], डोलमणी रे लो
चम्पा री काटै फूल रे, डोलमणी रे लो

फूल परियौ भैरवारी छाती, डोलमणौ रे लो
भैरवो जजकेन[१३], जागो रे, डोलमणौ रे लो
गोपणियो फटकारे रे, डोलमणौ रे लो
हीरली हंसती थकी उतरी, डोलमणौ रे लो
हीरो थू केठा[१४] हूं आई, डोलमणौ रे लो
मोई त मांजी मोकळीजी[१५], डोलमणौ रे लो
अंबा माता मोकळी[१६] जी, डोलमणौ रे लो
थाने मांजी बेगो[१७] बोलावै है, डोलमणौ रे लो
भैरवा ने मांजी बोलावै, डोलमणौ रे लो
भैरवो खेरीयौ[१८] लांबो मारग, डोलमणौ रे लो
घूर मा मेघ गाजीया, डोलमणौ रे लो
खेमे[१९] आभा बीजळी, डोलमणौ रे लो
वरसाद वरतो थको आवै, डोलमणौ रे लो
उत भैरवो दौरीयौ आवै, डोलमणौ रे लो
गियौ देवळ माळीये, डोलमणौ रे लो
अंबे मुखरे बोले रे, डोलमणौ रे लो
भैरवा इतरी वार कांई लगाई, डोलमणौ रे लो
खूटीयौ झूले छओगी[२०] ढोल, डोलमणौ रे लो
उत देवळ चढेन जाय, डोलमणौ रे लो
उत जुंजारू[२१] री ढोल बजाड़ रे, डोलमणौ रे लो
देवियां न्हाटी आंवे है, डोलमणौ रे लो
जित्ते घुरै घुरै न मेघ वरसे, डोलमणौ रे लो
देवियां न्हाटी जावै, डोलमणौ रे लो
जावै थळवट धरती, डोलमणौ रे लो
देवीयां गी समेर परबत, डोलमणौ रे लो
समेर परबत जा विळूम्बी, डोलमणौ रे लो
वे तो मगरो-मगरो घैरे, डोलमणौ रे लो
उत छाती आयौ नीर, डोलमणौ रे लो
उत आगौ अळूप रूंख, डोलमणौ रे लो
ऊंरौ तांबां वरणौ गोड, डोलमणौ रे लो

उत रूपा[१२] वरणां डाळा, डोलमणौ रे लो
सोना[१३] री कूपळियां, डोलमणौ रे लो
इत थाळी जैड़ा पांन, डोलमणौ रे लो
देवियां रूंखड़े अळूम्बी, डोलमणौ रे लो
रूंखडौ वचन मांगे, डोलमणौ रे लो
अंबा वाचा-वचन आलौ, डोलमणौ रे लो
मने पियाळा सूं कुण लावै, डोलमणौ रे लो
अंबा बीड़ौ झाळीयो रे लो, डोलमणौ रे लो
पीयाळा[१४] सूं लावू धरती थनै, डोलमणौ रे लो
पाचण[१५] रूंखडै वळूम्बी, डोलमणौ रे लो
डाळ-डाळ पांन-पांन बैसी, डोलमणौ रे लो
उत घूरै-घूरै न मेघ बरसे, डोलमणौ रे लो
अळूप रूंखड़ौ वधतौ जाय, डोलमणौ रे लो
वधियौ तारां मंडला ताई, डोलमणौ रे लो
सांभळौ मांजी वातो, डोलमणौ रे लो
मूं त माथळौ[१६] जाय वळूम्बे, डोलमणौ रे लो
आपरै खांडौ है क ना, डोलमणौ रे लो
मांजी चोटले[१७] बांध्यौ हो खांडो, डोलमणौ रे लो
उत माछला लडाई लीये, डोलमणौ रे लो
मांजी खांडा नै फटकारो, डोलमणौ रे लो
मांजी चोटलो खांडौ छोडियौ, डोलमणौ रे लो
उत जीमणै हाथै लेदू, डोलमणौ रे लो
हाथां लैयनै खांडां नै फटकारै, डोलमणौ रे लो
इत माछा[१८] पूरा पाड़िया रे डोलमणौ रे लो
इत माछा पूरा वाड़िया[१९], डोलमणौ रे लो
उत नीरा नै अमरावतियौ[२०], डोलमणौ रे लो
उत मिट जाता रया, डोलमणौ रे लो
माछा रौ खून उडियौ[२१] गियो, डोलमणौ रे लो
मेघा तो जता रया, डोलमणौ रे लो
मांजी वाता छोळै रे, डोलमणौ रे लो

छोरीया (देवियां) डेली-डेली[71] मांस, डोलमणी रे लो
पैली-पैली खून वांटो पीवौ, डोलमणी रे लो
उत खून ने उडारियौ, डोलमणौ रे लो

१. विशिष्ट विशाल मछली का नाम, २. दूसरी विशाल मछली का नाम, ३. पैतृक कुण्ड, ४. समुद्र, ५. मछली का नाम, ६. संयोग, ७. कपड़े, ८. खान खिलाना, ९. लिपटा, १०. बाते करना, ११. सुनो, १२. भाई, १३. डूबेगा, १४. आंबला ग्यारस, १५. बांटना, १६. दक्षिण दिशा, १७. पेटी, बाक्स (वाटर टाइट) १८. निर्माण करवाना, १९. बाले, केस, २०. प्रवेश, २१. जीवन लीला, २२. गर्जन-तर्जन, २३. ब्राह्मण, २४. लौटा, २५. देवी-देवताओं का विराट निवास स्थान, २६. दासी का नाम, २७ पुकार दुःख की २८. कोड़े, २९. मिर्चे, ३०. बुरकाना, डालना, ३१. स्तम्भ, ३२. दबाना, ३३. लोटा, ३४. चौक कर, ३५. तत्काल, ३६. बुलबुले, ३७. चुगने लगी, ३८. दानव, ३९. पंचांग, ४०. बरसात, ४१. कठिन आपत्ति, कष्टपूर्ण, ४२. जग डूबना, प्रलय, ४३. रेगिस्थान, ४४. सुमेरू पर्वत, ४५. देव वृक्ष, ४६.लिपटना, ४७. दक्षिण दिशा, ४८. भेरू, भैरव, ४९. दौड़ते हुये, ५०. चम्पा पुष्प का पौधा, ५१. देह परिवर्तन, ५२. तोता, ५३. चौक कर, ५४. कहाँ से, ५५. भेजा है, ५६. भेजा, ५७. तत्काल, ५८. प्रस्थान, ५९. कौंधती, ६०. जंगी, विशाल, ६१. युद्धा या खतरे का ढोल, ६२. चांदी, ६३. स्वर्ण, ६४. पाताल, ६५. बाद में, ६६. सिर अटक गया, ६७ चोटी, वैणी, ६८. माछला, ६९. वध किया, ७०. अपवित्र, ७१. उड़ गया, ७२. बोटी-बोटी

अर्थ

एक विराट कुण्ड में पांच विशाल माछे (मछले) रहते थे। अकाल भयंकर पड़ा तो ईंगर और भींगर मालवा से आगे समुद्र में चले गये पर रोही माछा पैतृक कुण्ड छोड कर नहीं गया, कीचड में भी पड़ा रहा। बारह बरस हो गये बरसात नहीं हुआ। थोड़ा-सा पानी था, वहाँ कुण्ड में कपड़े धोने धोबी आता था। धोबी रोज मोतीचूर का लड्डु उसे खिलाता था। एक दिन कपड़े का एक धागा टूट कर छूटा और रोही माछा के सिर से लिपट गया। वह बोला हम दोनो धरम के भाई हो गये। राधो अर वाधो दो माछे और थे, वे भी चले गये थे। इस प्रकार के पूरे कथानक को निम्नांकित कथा-गीत में पिरोया गया है जो इस प्रकार है-

ईंगर और भिंगर दो माछे थे जो अपने पैतृक कुण्ड मे रहते थे भयंकर आकाल के कारण पानी सूखने लगा तो यह दोनो माछे मालवा से पार समुद्र में उतर गये। परन्तु रोई मछली वही रही। कुण्ड के छिछले जल और कीचड में वह दिन काट रहा था, संयोग से एक धोबी थोड़ा पानी देख कर कपड़े धोने आया। वह रोही को रोज मोचीचूर का लड्डु खिलाता था। एक बार कपड़े से कच्चा सूत टूट कर रोही के सिर से लिपट गया। उसने धोबी से कहा आज से हम दोनो धर्म के भाई हो गये (पोतीया बदल भाई)।

एक दिन मछली बोली - बंधु! जल प्रलय होने वाला है, ध्यान से सुनो। धोबी बोला कब प्रलय होने जा रहा है? उसने उत्तर दिया - 'आंवला ग्यारस' को। यह बात अळूप वृक्ष ने ब्राह्मण का शरीर धारण कर सुन ली थी।

उधर ईंगर-भींगर वापस लौट आये और पैतृक कुण्ड बांटने का प्रस्ताव रखा। रोही बोला तु म तो छोडकर चले गये थे अतः तुम्हारा अधिकार नहीं रहा। जब बात अधिक बढ़ी तो रोही ने कहा चलो ध्रुव तारा के पास, वहाँ न्याय करेंगे। रोही ने धोबी से कहा तुम मेरे बंधु हो एक ऐसी पेटी बनवा लाओ की बाल जितना भी छेद न हो, पानी न जा सके। दुनिया की जीवन-लीला समाप्त होने वाली है।

एक दिन उमड़-घुमड़ कर गर्जन-तर्जन करते काले काजरारे बादल मंडल में चढ़ आये। उधर वह ब्राह्मण देवता सुन कर वापस लौटा और देवी के निवास 'देवलमाळीये' पहुँचा। प्रोल के बाहर खड़ा था कि हीरो दासी आई और पूछा कहाँ से आये? कैसे आये? ब्राह्मण (अळूप वृक्ष) ने कहा मै काशी जा कर शिक्षा पूरी करके आया हूँ। अंबा माता के दर्शन हेतु आया हूँ। हीरो बोली देवी तो बारह वारसो की घोर गहरी नींद में सोई है। हीरो शांति से धैर्यपूर्वक बोली - कच्ची नींद में जगाऊँगी तो व मेरे कोड़े पड़ेगे, खाल उतर जायेगी, जिस पर मिर्च बुरकाई जायेगी। ब्राह्मण बोला मैं तरकीब बताता हूँ - हीरा तू थम्बे की ओट में रहना सो कोडे पत्थर के स्तम्भ के लगेगे। हीरा ने अंबा माजी के पाव की छोटी अंगुली दबाई। माजी ने कोड़ा घुमा कर मारा जो थम्बे के लगा। हीरा ने तत्काल जल का लोटा आगे कर दिया। अम्बे मां हाथ पांव मुँह धोये कुर्ला करने लगी तो नीचे स्वर्णिम बुलबुले उठने लगे, हीरा दासी इकट्ठा करने लगी। फिर अंबा देवी बोली - बेटा क्या काम पड़ गया सो मुझे कच्ची नींद से जगाना पड़ा। हीरा बोली - 'मांजी एक ब्राह्मण देवता आया है, प्रोल के बाहर खड़ा है। पर्दा बांधा गया कि कोई अन्य दानव न आ जाया। छोटे मोटे राक्षस यहाँ बहुत है। अंबा मां ने पूछा ब्राह्मण देवता! बोलो कैसे आये हो? उसने कहा - कासी से विद्या ग्रहण करके आया हूँ दर्शन हेतु उपस्थित हुआ। तो नया पंचाग पढो, बरसात कब है, लंबे समय से अकाल है। ब्राह्मण ने कहा - सभी देवियों के विपति के दिन आ गये है। प्रलय होने वाला है, सारी दुनिया डूब जायेगी। कब? आंवला ग्यारस को। ब्राह्मण सच्चा कह रहा है। ब्राह्मण ने कहा - 'सभी देवियाँ मरूथल के उस पार सुमेर पर्वत पर चली जाना। सुमेर पर्वत बड़ा पर्वत है। वहाँ एक 'अळूप' वृक्ष उग आयेगा, उसके सब लिपट जाना।

समय बीत गया। इस बात को सब भूल गये। ज्योंही दक्षिण से बिजली कौधी और अंबाजी को ब्राह्मण की बात याद आई और आज आंवला ग्यारस भी है। अंबा ने धीरे से कहा हीरा बेटा जा शीघ्र समुद्र पार बैठे भेरू तो बुला कर ला। हीरा दौड़ी-दौड़ी गई। वह 'पराग' वट

वृक्ष गई जहाँ भीरव चम्पा वृक्ष की रक्षा में था, जहाँ से चम्पा के फूल अंबा को चढने जाते थे। भैरू गहरी नींद में सोया था। अब उसे कैसे जगाना। हीरा नारी होने से शरीर नहीं छूना चाहती थी। तब हीरा ने देह परिवर्तन कर तोता बन गई और चम्पा के फूल काट कर भैरवा के सीने पर गिराया। भैरू चौक कर उठ बैठा और गोपण फटकारने लगा, इतने में हीरा हँसती हुई असली रूप में प्रकट हुई। भेरू बोला - 'हीरा तू कहाँ से आई? क्यों आई? मुझे अंबा ने भेजी है और आपको शीघ्र बुलाया है। भैरू ने तत्काल लंबे रास्ते प्रस्थान किया। दक्षिण में मेघ गरज रहे थे, बिजली चमक रही थी। बरसात आ रहा था। भैरू देवलमालीये पहुँचा।अंबाजी बोली विलम्ब से आया भेरू। अब शीघ्र खूटी से जंगी ढोल उतार और देवल पर चढ कर खतरे का ढोल बजा। बज़ाते ही देवियां दौडी आई, गरज-गरज कर मेघ बरस रहे थे। वे मरूथल पार सीधी सुमेरू पर्वत पहुँची। पर्वत के किनारे किनारे दौड़ती गई। सुमेरू पर्वत चढ़ते-चढ़ते छाती तक पानी आ गया। उधर सुमेरू पर्वत पर अळूप वृक्ष उग आया, जिसका तना तो ताम्र वर्ण था, डालिया चांदी की थीं, कोंपले सोने की थी, थाली जैसे बड़े बड़े पत्ते थे। सभी देवियां इस वृक्ष से लिपट गई। अळूप वृक्ष ने बचन मांगा कि मुझे पाताल लोक से पृथ्वी पर लाओ तो मुझ पर चढ़ना। अंबाजी ने वचन दे दिया। सभी देवियां डाल-डाल और पत्ते-पत्ते पर बैठ गई। उधर गरज-गरज कर मेघ जम कर बरस रहे थे। ज्यौ ज्यौ पानी चढ़ता गया अलूप वृक्ष बढ़ता गया। और बढ़ गया तारा मंडल तक। तब अळूप ने कहा अब मेरा सिर आकाश के अटक गया है आगे नहीं बढ़ सकता। आपके पास खाण्डा (तलवार) है या नहीं? यह दो मछले लड़ रहे है, इनको काटो, मारो। मांजी के वैणी (चोटी) के बांधा हुआ खाण्डा खौला और हाथ में ले कर वार किया और दोनो माछला को मार दिया। जल गंदा हो गया, अपवित्र हो गया पर माछलो का खून उडा दिया, आज भी मछली के खून नहीं होता, केवल थोड़ा सा सिर में होता है। अंबाजी सभी देवियों को मांस की बूते-बोटियां और दूने भर भर कर रक्त बांटा।



गरासिया कथावां

~~~
~~~

गरासिया कथावां

स्रिस्टि सिरजण रै उपरांत सिंसार मांय सै सूं जूनो नै जाणीतो साहित गर'जे कोई है तो फकत 'लोकसाहित'। लोक साहित में सै सूं जूनो है, - 'आदिवासी साहित'। सै सूं लोकप्रिय साहित विधा है - 'कथा साहित'। आ विधा जूनी संस्क्रिति री बापूनी आपानै सुपरद करै। लोक कथावां रौ मूळ लोक मांय व्है अर लोक अेक सैपूची इकाई है जिणनै जात-पांत में कोनी बांटीजै। 'अध्यापन' सुविधा' रै वास्तै भलेई सांचा-खांचा में बांटनै न्यारा न्यारा कर द्यो। आदिवासी लोक कथावां मांयै इयारैं जिंदगी सूं जुड़ी थकी कथावां है, जिणरै जरीये इणांरौ लोक विस्वास, आचार-विचार अर 'जीवन शैली' रौ ठाह पड़ै। लोककथावां लोक जीवण री छवि है। 'लोकमानस' री 'छीया' है। इणां मांय कलपनावां, भावनावां, अनुभूतियां रै साथै इणारै इतियास रा चितरांम ई सुभट दीसै। 'मनोरंजन' रै साथै सखरौ मारग बतावै। इण वास्तै इणारी लोककथावां, देस, समाज, जात रै इतिहास, सभ्यता, संस्क्रिति री जाणकारी दैवे। इणारी अलेखू कथावां में जिणमें डाकण-भूतण, देवी चमत्कार अर लोक विस्वास मिळै। केई पीढियां खपगी पण हालतांई अै आदिवासी गरीबी सूं झूंजै। इण वास्तै इयांनै अैड़ी कथावां घणी दाय आवै जिणमें चमत्कार सूं कै जंतर-मंतर सूं रात्यूरात लखेसरी अर मोटो मिनख बण जावै। इणांरी कथावां में इणरौ गाढ़ौ रंग चढयौड़ौ।

आदिवासी री कथावां :

आदिवासी गरासियां री कथावां नै दो भागां में बांट सका -

१. घटनात्मक कथावां : इणांरौ मूळ सांची घटनावां में व्है। इणमें ठौड़, ठिकाणो, नांव. ठांव सागै है-ज्यूं-रा-ज्यूं व्है। इण कथावां मांय अेतियासिक बाकर घणौ लाधै। घटनावां माथै लोकगीत ई रचिज्या अर कथावां ई सिरजी, इणमें कथा ततब रै साथै गीत ततब भेळा भिळै।

२. काल्पनिक कथावा : इणां में साधआरण लोक कथावां रा सगळा ततब मौजूद व्है। इण कथावां मांय परी, पसु, पंखेरू, देवी-देवता, राकस आद पात्र (किरदार) मनवी भासा मांय सैंग बंतळ करै। इण कथावां मांय 'कल्पना' रौ पुट खासो भलो व्है।

अै कथवां चावै जिसी हो, इणारै आगती पागती 'सामाजिक वातावरण' अर कुदरत रौ 'परिवेश' सांगोपांग व्है। जीवतो-जागतो चितरांम साम्ही दीसै। केई वार सुणिया पछै ही अै ताजी लागै इर वार-वार सुणबा री इंछा व्है।

वर्ण्य विषय :

गरासियां री लोक कथावां में 'वर्ण्य विषय' रौ घणौ विस्तारौ है पण खास खास नीचे मुजब-

प्रेम अर ब्याव : 'प्रेम' मानवी रै काळजै री कोर नै हिवड़ै रौ हार। प्रेम बिना मांनखौ अेक घड़ी भर ई कोनी जीवै। प्रेम कोनी तो मिनखपणौ नीं। प्रेम रौ ऊंधो रूप है घिराणी। जकौ जितरी हियै गै'राई सूं प्रेम करै उतरी ई गै'राई सूं घिरणा पण करै। सभ्य समाज रा 'कुलीन वर्ग' रा लोग बाग 'प्रेम' अर घिराणी दोन्यूं लुकावै, लुक छिपनै करै, चौड़े धाड़ै नी कैवे। गरासिया समाज मांय अैड़ी कोई मजबूरी कै बंधण कोनी सो खुल्ले खआंप पूरा दिल सूं प्रेम अर धिराणी दोन्यूं करै। दोस्ती में जीव झौक सके तो दुस्मी रौ जीव ई लैय सकै। अै माथौ देवणौ ई जाणै अर लैवणौ ई जाणै। इण लोक कथावां मांय प्रेम रा हब्बोळा खावणनै मिळै। प्रेम जात पांत, ऊंच नीच, कुळ-समाज अर ऊमर कीं कोनी जोवै ? आ व्हैती गंगा है, अबोट है, चिमकी लगावता ई सैं पाप धुप जावै, भेद भाव मिट जावै।

जुद्ध अर दुस्मी : वनवासी गरासिया अेक बा'दर कौम है। अै सै सह सकै पण अपमान कोनी सह सकै। अपमान चावै कबीला रौ व्हौ चावै फळी कै पाळ रौ व्है। वैर-वदळौ लैवणनै घणा उतावळा पड़ै। उदड़ा जाय।

अै लोग सुगनां मांय घणौ भरोसो राखै पण झगड़ा मांय व्हीर हुयौड़ौ सुगनां री परवा नीं करै। सैंग बरजै पण ढब्यौ ई नीं ढ़बै, सुभ-असुभ कोनी भाळै। कै इण पार कै उण पार। इणांरी कथावां मांय गरासिया 'धीरोदात्त' नायक व्है।

आपसी कलैस : कीं लोगां मांय पीढ़ियां सूं दुस्मणी चालै तो करैई नवी ईड पड जावै। आपसरी रै कलेस रौ कारण खास करनै लुगाई इज व्है।

छळबळ : गरासिया बळी, निरभीक अर आंणमांन रौ धणी व्है। अर उतरौ ई भोळौ ढ़ाळौ व्है। बळी व्है पण छळी नीं, सो हमेस आप ठगीजै।

चोरी, धाड़ा आद अपराध : गरासिया अेक मै'णती कौम है। अै वनपूत पसीना री गाढी कमाई खावै, फोगट री नीं खावै, मांगनै कदैई नीं खावै। मांगणौ अर मरणौ बिरोबर समझै। धरती इणां री माँ, भाखर अर जंगळ इणांरौ घर, धराव-ढ़ाडां इणांरा दोस्त, कुदरत इणांरी रखाळू अर वळू रैवै। बिरखा व्है चोखी तो खेती-मजूरी में लाग जावै। काळ बरस व्है तो लूटपाट, धाड़ा अर चोरी झारी मजबूरी सूं करै। आ इणांरी 'अपराध वृत्ति' कोनी। मरता क्या नीं करता। बुभुक्षुतो किम न करोति पापम्'।

भाखर रा भौमिया (गरासिया) रौ अेकौ जोरदार व्है। मुख्या रौ हुकम हमेस सिर आंख्यां पर राखै। हमलौ बोलण री टैम झुंजारू ढोल इणारै वास्तै 'साइरन' है। औ सुणता पांण हजारां कांम छोडनै सैं लोग भेळा व्है जावै। उड मांखी झुंड भेळी।

लुगायां री हालत : गराया मांय बहुपत्नी ब्याव चालै पण इणां री हालत बोदी कोनी, वजै आ कै लुगाई पोते कमाऊं करै अर कबीला पर भार कोनी, परजीवी कोनी। परवार री मददगार करै। लुगाई री घर रा कामकाज में सल्ला लीरीजै, वीनै महताऊं ठौड़ दीरीजै। लुगाई भारीखम्मी व्है, धीरज राखै। स्यांति पण राखै। नेक सल्ला देवै। आलतू-फालतू झगड़ा सूं आगी रेवै। लुगायां हिम्मती व्है। जुळम छानै मानै सहन कोनी करै। मिनख नै नी धारे। बेटी री सगाई-ब्याव वी रै मन मुताविक नीं व्है तो पूरी ताकत सूं साम्ही पग रोपै। बेटी खुद ई मन पसंद मोट्यार साथै भाग जावै (खैंचणौ करै) अै सगळी बातां इणांरी अलेखू कथावां मांय गूंथीज्योड़ी मिळै।

समाज रौ वातावरण : इयांरी कथावां मांय इयारै समाज रै वातावरण रौ खासो भलो असर जतावै ज्यूंकै थोड़ीक जमी माथै खेती करणी, मजूरी करणी, माटी कै घासफूंस कै थपेड़ा रा खोलड़ा मांय रैवणौ, पसु पालण, जिनावरां रौ सिकार करणौ आद। अै लोग सिणगार रा पूरा सौकीन व्है, नाच-गीत रा पूरा रसिया, सौक मौज करणीया अर 'अय्यासी' व्है। गरीबी रौ गम कोनी, दिखावौ इयांनै पसंद कोनी। बस मस्त फकीरी अर आजादी सूं जीवन जीवै। मेळां मांय खेळा बणनै बणठण नै जावै। मेळां मांय जावण री घणी हूस अर उमावौ। अै लोग ना 'भूतकाल' री परवा करै, नीं 'भविष्य' री फगत 'वर्तमान' री मौज लूटे। काले री काले देखीजेला, अै फगत आज नै महताऊ मानै, दिन अस्त नै मजूर मस्त। वे अणदेख्या काले सारू आज रौ नास नीं करै, मजौ नीं गमावै।

अपमान रौ बदळौ : गराया आपरै अपमान रौ बदळौ लिया बिना नीं छोडे। अैड़ी कथावां लाधै के कोई ठाकर कै राजा गरासिया री लुगाई नै आपरै म्हेलां दाखल कर दी तो उणनै मारनै लुगाई पाछी लाया। हमलौ बोलनै गढ किला री ईंट ईंट उडाय दीवी। अकाल पडया बीघौडी-देवण नै नट ग्या अर झगड़ौ आदरियौ। अै हर जुळम रौ विरोध करै।

अतिन्द्रिय तकात री मानीता : गरासियां री कथावां मांय अतिन्द्रिय तकात रौ घणौ महातम है। इण मांय देव, देवियां, दैत, राकस, पसु, पंखेरू, कदैई इणांरी मदद करै तो कदैई रोड़ा अटकावै।

गरासिया सिव-पारबतां रा पूरा भगत। इणांरी कैवणी है कै महादेवो की आडम्बर कै दिखावौ नीं राखै। भाखर (कैलास) में रैवै, आक्र-धतूरौ खावै, झाड-बांठकां पत्ता मांगै

(चढै), राखौड़ौ रमावै, बाघम्बर पै'रे अर द्रोबडी अर जळ रौ 'अभिषेक' सीकारै। अै सगळी चीजां वन में सैंग ठौड़ मिळै। भोलानाथ रै ज्यूं गरासिया ई भोळां। पारबतां ई परबत (हिमाचल) री बेटी-अर गरासिया ई परबत रा मोबी पूत। इण भांत सगळौ ताळमेळ जमै।

वात मांडण रौ तरीकौ : परबतवासी गरासिया वात सरू करवा रै पै'ळी वातावरण रौ मंडाण करै, 'भूमिका' बणावै, इणरौ अेक दांखलौ नीचे मुजब -

वात-वात बाबा वात
वात में हुँकारौ, फौज में नगाड़ौ
हुंकारा सूं वात प्यारी
वनमें ऊभी वोकी लाकरी
मसाला सूं सधरे दार
लाकरी सूं सधरे नार।।

गरासियों की कथाएँ

स्रिस्टि सृजन के पश्चात संसार में सबसे प्राचीनतम साहित्य यदि कोई है तो वो केवल 'लोक साहित्य' ही है। और उसमें भी सबसे प्राचीन है 'आदिवासी साहित्य'। सबसे लोकप्रिय साहित्य विधा 'कथा' (कहानी) मानी जाती है। 'लोककथाएँ' हमें प्राचीन संस्कृति की बपौती सौपती है। लोक कथा का मूल 'लोक' में होता है और उसकी उपज भी किसी व्यक्ति विशेष से न हो कर लोक से होती है। 'लोक' एक संपूर्ण इकाई है जिसे जाति-पांति अथवा वर्ग में नहीं बाटा जा सकता। 'अध्ययन की दृष्टि' से भले कुछ वर्गो में पृथक कर दिया है। आदिवासी लोक कथाएँ इनके जीवन से जुडी हुई है, जिसके माध्यम से इनका लोक विश्वास, आचार-विचार और जीवन शैली का पता चलता है। लोक कथाएँ लोक जीवन की शोभा है, लोक मानस का प्रतिबिम्ब है। इसमें कल्पनाएँ, भावनाएँ, अनुभूतियाँ के साथ इनमें इतिहास की झांकियों के चित्र स्पष्ट दिखाई देते है जो मनोरंजन भी करते है और मार्गदर्शन भी करते है। इनकी लोक कथाएँ देश, समाज के इतिहास सभ्यता एवं संस्कृति की जानकारी देती है। इनकी अनेको कथाओं में डायन, भूत-प्रेत दैविक चमत्कार के प्रति लोक विश्वास मिलता है। अनेक पिढ़ियाँ बीत गई पर अभी तक ये दरिद्रता से झूंज रहे है, इसलिये इनको एसी कथाएँ अधिक पसंद है। जिसमें चमत्कार से अथवा मंत्र, तंत्र से रातोरात लखपति और बड़ा आदमी बन जाय। इसका इनकी कथाओं पर गहरा प्रभाव है।

आदिवासीयों की कथाएँ :

आदिवासीयों की कथाओं को दो भागों में विभक्त कर सकते है -

१. घटनात्मक लोक कथाएँ : इसका आधार सच्ची घटनाएँ होती है। इस में स्थान, पता, नाम सभी वास्तविक एवं ज्यौ के त्यों रहते है। इनमें अनेक एतिहासिक तथ्य एवं प्रमाण मिलते है। इन पर लोकगीत भी रचे गये है और कथाओं मे भी कथा-तत्वों के साथ गीत तत्व भी मिलते है।

२. काल्पनिक कथाएँ : इसमें साधारण तथा लोक कथा के सभी तत्व मौजूद होते है। इन कथाओं में परी, देवी, देवता, पशु, पक्षी, राक्षस आदि पात्र भी मनुष्य को मिलते है और मानवी भाषा में वार्तालाप करते है। इन कथाओं में कल्पना का पुट पर्याप्त होता है।

यह कथाएँ चाहे जैसी हो इनके आसपास सामाजिक वातावरण और प्राकृतिक परिवेश शानदार होता है, जीता-जागता चित्र स्पष्ट दिखाई देता है। अनेक बार सुनने के बाद भी ताजी लगती है और बार बार सुनने की इच्छा होती है।

वर्ण्य विषय :

गरासियों की लोक कथाओं में 'वर्ण्य विषय'का अत्याधिक विस्तार है परन्तु मुख्य-मुख्य निम्नांकित है -

प्रेम और शादी : 'प्रेम'मानव के हृदय का गुण है जो सबको प्रिय है। प्रेम बिना मनुष्य पल भर भी नहीं जी सकता। प्रेम नहीं तो मानवता नहीं। प्रेम का विलोम है 'घृणा', जो जितनी गहराई से प्रेम करता है इतनी ही गहराई से घृणा भी करता है। सभ्य समाज के कुलीन वर्ग के लोग प्रेम और घृणा दोनो गोपनीय रखते है, छुपाते है, परन्तु गरासिया समाज में ऐसी कोई मजबूरी या बंधन नहीं इसलिये तहे दिल से खुले रूप में प्यार और नफरत करते है। दोस्त या प्रेमी के लिये प्राण दे सकते है तो शत्रु के प्राण ले भी सकते है। सिर देना भी जानते है और लेना भी जानते है। इन कथाओं में भरे प्रेम में डुबकियाँ खाने को मिलती है। प्रेम जाति पांति, ऊंच नींच, कुल, समाज कुछ नहीं देखता। यह बहती गंगा है, पवित्र है, डुबकी लगाते ही सब पाप धुल जाते है, भेदभाव मिट जाते है, एकमेक हो जाते है।

युद्ध और शत्रु : वनवासी गरासिया एक बहादुर कौम है। यह सब सहन कर सकते है पर अपमान नहीं सहन कर सकते। अपमान चाहे स्वयं का हो चाहे कबीले का, चाहे गांव का हो चाहे समाज का हो, उसका बदला लेने को तत्पर रहते है। बहुत स्वाभीमानी होते है। यह लोग शकुन में विश्वास रखते है परन्तु युद्ध में प्रस्थान करते समय, शकुन की परवा नहीं करते, रोके भी नहीं रूकते, शुभ-अशुभ नहीं देखते, इस पार या उस पार, ऐसा सोचते है। इनकी कथाओं में गरासिया 'धीरोदात्त' नायंक होता है।

आपसी क्लेश : कुछ लोगो में पीढ़ियों से शत्रुता चलती है, तो कुछ नई दुश्मनी भी बन जाती है। आपस में संघर्ष का कारण खास करके औरत ही होती है।

धोखा घड़ी : गरासिये शक्तिशाली, निर्भीक और आनमान पर मिटने वाले होते है। और उतना ही भोला भाला तथा सीधा-सादा होता है। यह बली होता है पर छली नहीं होता इसलिये हमेशा स्वयं ठगा जाता है।

चोरी, डाक आदि अपराध : गरासिया एक परिश्रमी कोम है। ये वनपुत्र पसीने की गाढी कमाई खाते है, मुफ्त की नहीं खाते। मांग कर भी कभी नहीं खाते। मांगना और मरना बराबर समझते है। पृथ्वी इनकी माता, पर्वत-जंगल ही इनके घर, पशु-पक्षी इनके मित्र एवं परिवार, प्रकृति इनकी रक्षक है। ये सच्चे पृथ्वी पुत्र है। वर्षा होती है तो खेती करते है और मजदूरी में भी लग जाते है। परन्तु अकाल में ये मजबूर होकर लूटपाट करते है पर यह इनकी अपराध वृत्ति नहीं है। मजबूरी है - मरता क्या नहीं करता या बुभुक्षुतो किम नकरोती पापम्' वाली बात है। कथाओं में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते है।

इन 'भाखर रा भौमिया' में एकता और संगठन गजब होता है। मुख्या का आदेश सदैव मान्य होता है। अक्रमण के समय झूंझारू ढोल इनके लिये साइरन है। यह सुनते ही सारे काम छोड कर सब लोग एकत्रित हो जाते है।

स्त्रियों की स्थिति : गरासियों में 'बहुपत्नि' व्यवस्था है परन्तु फिर भी इनकी स्थिति खराब नहीं है, कारण औरत खुद कमाती है, कुटुम्ब पर भार नहीं है, 'परजीवी' नहीं है बल्कि परिवार की सहायक है। औरत के घर के काम काज में राय ली जाती है। इसमें इनकी मह्त्तवपूर्ण भूमिका रहती है। ये सहनशील भी अधिक होती है। शांत स्वभाव होता है, धैर्य भी रखती है। नेक सलाह देती है। व्यर्थ झगड़े करने से रोकती है।

गरासणिया हिम्मतवाली होती है। जुल्म चुपचाप सहन नहीं करती। मनुष्य के वशीभूत नहीं रहती। बेटी का संबंध इसकी इच्छा के विरुद्ध होता है तो पूरी शक्ति से विरोध करती है। बेटी भी स्वयं की इच्छानुसार वर चुनती है। उसके साथ भाग जाती है। ऐसी अनेक बातें इनकी कथाओं में गुंफित है।

समाज का वातावरण : इनकी कथाओं में इनके समाज के वातावरण का विशेष प्रभाव रहता है। मामूली भूखंड पर कृषि करना, मजदूरी करना, मिट्टी, घासफूस और खपरेल के घरों में रहना, पशुपालन करना, शिकार करना आदि इन के जीवन के अंग है। यह लोग श्रृंगार के पूरे शौकीन होते है, नृत्य संगीत के रसिक होते है। शौक मौज करने वाले 'अय्यासी' होते है। गरीबी का गम नहीं होता। बाह्याडम्बर इनको पसंद नहीं होता। बस मस्त फकीरी जैसा आजाद एवं आनन्दपूर्ण जीवन जीते है। मेले में बन-ठन कर जाते है। मेले में जाने की बड़ी उमंग रहती है। यह न भूत की न भविष्य की चिन्ता करते है, केवल

वर्तमान की मौज लूटते है। वे आज को महत्त्वपूर्ण मानते है। अदृश्य कल के लिये प्रत्यक्ष आज को नष्ट नहीं करते, उसका आनन्द लेते है।

अपमान का बदला : गरासिये अपने अपमान का बदला लिये बिना नहीं रहते। ऐसी अनेक कथाएँ मिलती है। एक कथा में राजा इनकी स्त्री का अपहरण करके ले गया तो राजा को मार कर स्त्री को वापस लाये। इसके लिये सबने किले पर आक्रमण किया। और इंट से इंट बजा दी। अकाल में लगान देने से मना कर दिया और चुनौती दे कर संघर्ष किया। हर जुल्म का विरोध करते है।

अतिइन्द्रिय ताकत की मान्यता : इनकी कथाओं में 'अतिन्द्रिय शक्तियों' का महत्व स्वीकारा गया है। इसमें देव-दानव, पशु-पक्षी सभी इनको महयता करते है तो कही कहीं बाधक भी बनते है।

गरासिये शिव-पार्वती के परमभक्त होते है। इनका कहना है कि महादेव कोई आडम्बर नहीं रखते। पेड पौधों के पत्र-पुष्प स्वीकारते है। बाघम्बर या मृगछाला पहिनते है। भस्म रमाते है। जल और दूर्वा का अभिषेक स्वीकारते है। यह सब वन-पर्वत में सुलभ है। भोलेनाथ की भांति गरासिये भी भोले भाले होते है। पार्वती भी पर्वत पुत्री और गरासिये भी पर्वत पुत्र है। सब बातों का तालमेल अच्छा बैठता है।

कथा प्रारंभ का ढंग : पर्वतवासी गरासिये कहानी प्रारंभ करने से पूर्व वातावरण बनाते है, भूमिका बनाते है। इसका एक उदाहरण निम्नांकित -

कथा-कथा बाबा कथा
कथा में 'हुँकारौ', सेना में नगाड़ौ
'हुँकारा' से कथा प्यारी
वन में खड़ी टेढी लकडी
कोई करता घाव तो निकले टेढी मरोड़
मसाले से सुधरे दार
लाठी से सुधरे नार॥

आदिवासी वनवासी क्यूं ?

अेकर सारा आदिवासी मादेवा ने मिळवा गिया। अमीया बोली - 'अे सारू मार भाई है। आप मने परण्या हो सो इणाने 'वधु मूल्य' देणौ है।' सेवजी बोल्या - 'मारे कने तो त्रिसूल कमडल अर बाघम्बर रे सिवाय कांई कोनी। वे सारा जणा जाता रीया। पण पेसे बाबा ने दीया उपनी अर उणर मारग मा चांदी री सोकी वणार बेलवी। वा किण ई रे नजरे ना आवी। अमीया धौड़ी-धौड़ी लारे गी अर बोली - 'थे सगळा आंधला हो कांई रे, मारग मा चांदी री मोटी चौकी थाने न दीसी। इ तरे सूं तो थे कदेई सुखी नीं रैय सकोला। खैर अबै मूं थाने अेक फूटरौ नांदीयो देवू। इणरी थूंबी मा रतन है। इणने सोरो राखजो अर इणसू कमारेह खाजो। सेवा करजो। प्रेम सूं वैवार राखिजो।

सारू घणा खुसी व्हिया। नांदिया ने रतन देवण री अरज करी। पण वो कांई देवै। आखर वीने मार इज काढ़ियो। थुंबी चीरने जोयो तो कांई न लादो। अबै बांग मेली अर डाडे-डाडे रोवण लागा। अमीया परगटी अर रोवारी वजै पूछी। सारी वात सुणनै बोली - 'अरे कालो, गरासिया तो थे भोळा इज रीया। काठी दीधौ हो खेती करवा ने। खेतर में रतन नीपजे। साख में मोती नीपजे। थे भारी जुळम कीदो। जावो इण पाप सूं थे वन वन ठोकरां खावता रोवता फिरोला। इतौ सराप दैयने अमीया अलोप व्हेगी। जद सूं आदिवासी जंगळ अर भाखरा मा रूळता फिरे।

आदिवासी क्यूं है वनवासी ?

एक बार चार आदिवासी शिव भोले से मिलने पहुचे। वहां पार्वती बोली - 'भगवन। यह चारो मेरे भाई है। आपने मुझसे शादी रचाई थी उस समय इनको 'वधु मुल्य' देना रह गया था। आज लेने आये है। कृपया देदे।' बाबा बोले - 'मेरे पास तो यह त्रिशुल, कामण्डल और वाघम्बर के अतिरिक्त कुछ नहीं है। क्या दूं ?

वे चारो चले गये। पर भोलेनाथ जो ठहरे, दया आ ही गई और उनके रास्ते मे चांदी को चौकी बना कर रख दी, परन्तु चारो मे ले किसी ने नहीं देखी, नजर नही पडी। तब पार्वती दौड़ती हुई पीछे भागी और बोली - 'तुम सब अंधे हो क्या ? रास्ते में चांदी की इतनी बड़ी चौकी रखी थी, तुमने किसी ने नहीं देखी ? इस तरह तो तुम कभी सुखी नही रह सकोगे। खैर अब तुमको एक सुंदर नंदी देती हूँ। इसके कुबड़ में रत्न रखे है इसको आराम से रखना। इससे कमाई करना। सेवा करना। इससे प्रेमपूर्ण व्यवहार करना।'

चारों बहुत प्रसन्न हुए। नंदी से रत्न देने की प्रार्थना की पर वो क्या देता। अंत मे सबने मिलकर उसको मार डाला। और कुबड चीर फाडकर रत्न ढूंढे पर कुछ भी नही मिला। वे जोर जोर से रोने लगे। पार्वती पुनः प्रकट हुई और रोने का कारण पूछा। वह कथा सुन कर बोली - 'अरे पागलो। तुम गरासिये भोले ही रहे। बैल दिया था, खेती करने को। खेत में रत्न मिलते है। फसल में मोती उत्पन्न होते है। तुमने महान जुल्म किया इस महा पाप से तुम जंगलो ओर पहाड़ो में ठोकरे खाते फिरोगे।' पार्वती अंतर्ध्यान हो गई। तब से आदिवासी जंगलो, पर्वतों में भटकते फिर रहे है।

एकौं

अेक गायों वालो होतो। उणारू नोम हेतु विसो। उणार बे गाइ होती। अेक रू नाम भूरी ने एक रो नोम काळी। अेकी-अेक हु वना हाऊ नं लागतु। भूरी अेकली काळी वना हूं हाऊ ने लागतु। काळी हुं भूरी वना होऊ ने लागु। विसो सोडन ओडा माई काडतो। हाते-हाते सरवै जाती। हाते-हाते घेर आवती। मगरा मा अेक वाघ रेतो। वु गायाई सरतो दखतो वो होसतो इयो खावा मळे तो मजो आवै। वीं असीक ती सेटी ने परती। अेक देने री वात - काळी ने भूरी मगरा मा सरती हती। सरती-सरती काळी आगी गी पेरी। वागे भूरी अेकली देखने खावा धोड़्यो। भूरी अेकी हेड़ी डगजे वे जोरे हूँ आलीये। काळी ने होबलियु काळी धोमने देखयु। वाघ भूरी ने खावा वाळो है। काळी घोमने भूरी ने वागेर विमे मा आवे उणी वाघेई लराई होगी। पेसे वाघे त काळी मुडा पगेहु सिलाई। उणा केरी वाघे भूरी उपरे पग लावयो, वाघर पग गाबरी मा पर्‌यो। भूरी उठहोय उणा केर काळी वाघेर पेटे मा हींग जीका। वाघ काळी हरे धोमनो भूरी ने हींग पेटे उपर मारयो। वे वारी-वारीउ हीग जीकया मोकला। वाघ थाको। उणार पेटे माहु लोई नीरवा ढूकू। वाघ नावार वास्ते होसियु नाउ तो कीय नाउ। अेकी हेडी भूरे अेके हेडी काळी।

बाघ जोरे हु कुद्‌यौ ने पेसे बाघ न्हाटौ। उणा केरे भूरी काळी अेकी अेकी गाबरी मा गळे लागी। लोई परवा लागु। अेकी अेकी लागो राइ जीभे हु लुसवा लागी। पैसे वे हवळै-हवळै घेर गेई। विसो देखयु दखी होयो। लोई लागोरू लुसयु। उणा केर दवा देदी। उणा केरे माको बीजो ने बैठे कापलाहु ढाकयु। विसो होसयु आप खाव धोमनो है। बेयो रे डीगरे ऊपर हाथ फेरीव्यौ पसे केयु - 'हाउ कीदू भूरी, हाऊ कीदू काळी।

एकता

एक गाय वाला था। इसका नाम विसा था। उसके पास दो गाये थी। एक का नाम भूरी और दूसरी काम काली। दोनो एक दूसरी से सुंदर लगती थी। काली से भूरी अधिक सुंदर थी। तो कभी भूरी से काली सुंदर लगती। विसा घर से विदा करता तो दोनो साथ साथ चरने जाती और साथ साथ घर आती। पहाड़ी में अेक बाघ रहता था। इसने गायों को चरते देखा तो सोचा ये अगर खाने को मिले तो मजा आ जाय। दोनों थोड़ी ही दूरी पर थी।

एक दिन की बात। काली व भूरी पहाड़ में चर रही थी। चरते चरते काली थोडी दूर चली गई। भूरी को अकेला देख कर वाघ उसे खाने को आक्रमण किया। भूरी अकेली थी इसलिये वह जोर जोर से चिल्लाई। उसने काली को आने को कहा। काली ने उधर देखा तो बाघ भूरी को खाने वाला था। काली दौडकर बाघ और भूरी के बीच में आ गई और उन दोनो में लडाई ठन गई। बाद में वाघ ने मुँह पर पैर से चीरा लगाया। उसके बाद बाघ ने भूरी पर पैर मारा। बाघ का पैर गरदन पर पड़ा। भूरी रूक गई लेकिन तत्काल कालीने बाघ के पटे में सींग मारा। बाघ काली की और दौडा तो भूरी ने दौड़ कर बाघ के पेट में सींग मारा। इस प्रकार बारी बारी से बाघ के पेटमें सींग मारती गई। बाघ थक गया। उसके पेट से रँक्त निकलने लगा। बाघ ने दौड़ने का सोचा। दौडू तो कैसे दौडू। एक ओर भूरी दूसरी ओर काली।

बाघ जोर से कूदा और भाग छूटा। असके बाद दोनो एक-दूसरे से गले लगी। खून गिर रहा था, सो एक दूसरे का खून चाटने लगी। फिर धीरे धीरे घर चली गई। विसा ने जब यह हाल देखा तो बहुत दुःखी हुआ। बहता रक्त पौछा और दवा की। मख्खियाँ आदि नहीं बैठे इसलिये घावों को कपड़े से ढक दिया। विसे ने सोचा कि बाघ इन्हें खा जाना चाहता था। उसने दोनो के शरीर पर हाथ फेरते हुए कहा - 'अच्छा किया भूरी, अच्छा किया काली।'

~

वदळी

अेक गरासियो हतो। नांव हो वेस्ता। वीरे मोकळी गायां हती। दो काका रा बेटा भाई हता। वेस्तारी वू रौ नांव हो 'वदळी' वा गायां सरावा भाखर मा गी। गयां रै लारे लारे खासी छेटी निसरगी। आगे अेक गांम हतो। वठा रो ठाकर सुभाव सूं कड़क, मन रौ मैलो, नीत रो खोटो, चाल चलण रो बोदो। पग बारे हो।

ठाकर रो गढ कोई किला सूं फोरो ना हो। अचाणचक हाकादरबड़ नै हाको सुणीज्यौ। गायां भड़की, चमकेने न्हाटी। अेक बूटकी गा वठै रेयगी। भागे ना हकी। बदळी देख्यो

सांमी सूं कीं लोग भागता दौड़ता वींरे कांनी आय रीया हा। वा पाछल फोरन दौड़वा लागी जित्तेक ठाकर ने वींरा सिपाई चौफेर घेरो घाल दियौ। वदळी डरूफरू व्हि, डाफाचूक व्हेगी क ओ कांई खलखो। हिम्मत राखने बोली - 'कुण हो थे लोग ?' 'मूं ठाकर समसेर सिंघ। थने ऊचायने ले जाऊंला म्हारा मेहल मा, राणी बणायनै राखूला ।' ठाकर गरज्यौ। वदळी देख्यौ क आज तो मरिया। क्यूक इतरा सस्तरधारीयां रो सामनो करणौ अेकली रे वस री वात नीं ही। जे अेक बे व्हेता तो नीं धारती। छेवट ठाकर वींनै अपड़ने लेग्या। बूढकी गा ओ रासो देख्यो तो आंख्यां डबडबी व्हेगी अर आसूड़ा नीतारीया। घर जायने घराधणी ने विगतवार नै टांका सुदा सगळी वात कानां घाल दीवी।

वेस्ता आ वात आपरा माइतां अर गामवाळा ने वताई। गमेती 'वार' रो ढोल देयने पंचायत मा सगळा नै भेळा करिया। जाजम राळई, दारू री डोडी मनवारां व्हि।

पछै पटेल बोल्यो - 'भाईयों ! वेस्ता री बैर वदळी ने ठाकर समसेरसिंघ जोरामरदी उठायनै हवेली लेयग्यो। वेस्ता रै बैठा थका आ वात व्हैणी/सगळा गरासिया समाज माथै कलंक है। डूब मरणौ चाइजे। सगळा नै झगड़ा सारू त्यार व्है जाणौ है।

पटेल रे हुकम री इज जेज ही। सेंग तीर तरवार सूं सजधज ने आय ऊभा। गाम माथै हमलौ बोल दियो। योजना मुजब पैली वेस्ता ने लुगाई रा गाबा पैरायने मेहला दाखल करयौ। ओ इत उत लुकतो घूमतो जाय पूगो ठीक ठिकाणे। वदळी बंघणा सूं बंध्योड़ी दीसी। रोय रोय ने रूदन करती ही। वठै वीं टैम कोई कोनी हो। जोग संजोग री वात ही उण फटाफटा डोरी खोली अर वड़ी हुस्यारी सूं मेहला बारे निकळग्या।

वेस्ता अर वदळी रै खैर कुसल बारै आया पछै ठाकर रै मेहला पर गोळी चलाई अर चेतरायनै हवेली रै लापो लगाय दीधो। बारणे आदिवासी रंग सूं होळी रमवा ढूका। बारे ढोल बाजा बाजै। हवेली में कूकवो पडयौ। पल में परलय व्हैगी। हवेली बळ भसम व्हेगी। पछे जीत री खुसी मा मैफला जुड़ी। वदळी रौ बदळौ ले लीनो।

बदला

एक गरासिया था। नाम था वेस्ता। उसके पास खूब गायें थी। दो चाचा के बेटे भाई थे। वेस्ता की पत्नी का नाम बदली था। वह गायें चराने पहाड़ मे गई। गायों के पीछे काफी दूर निकल गई। आगे एक गांव था। वहाँ का ठाकुर स्वभाव से तेज, मन का गंदा, अनीति पर चलाने वाला और चरित्रहीन था।

ठाकुर का गढ़ किसी किले से कम नहीं था। अचानक शोर सराबा और हल्ला गुल्ला सुनाई दिया। गायें भड़की, चौक कर भागी। एक पूंछ कटी गाय भाग न सकी। वही खडी रह गई। बदली ने देखा सामने से कुछ लोग भागते हुए उसकी ओर आ रहे है। वह पीछे मुड

कर भागने लगी इतने मे तो ठाकुर और उसके सिपाही चारो ओर घेरा डाल कर खड़े हो गये। बदली घबरा गई कि यह क्या नजारा है ? फिर भी हिम्मत रख कर बोली - 'कौन हो तुम लोग ?' 'मै ठाकुर समशेरसिंह हूँ। तुझे उठाकर ले जाऊंगा। मेरे महल में रानी बना कर रखूगा।' ठाकुर गरजा। बदली ने सोचा आज तो मर गये। क्योंकि इतने सशस्त्र लोगो से अकेली का मुकाबला करना बस की बात नहीं थी। एक दो होते तो दाव नहीं देती। आखिर ठाकुर उसे पकड़ कर ले ही गया। बूढी गाय ने ये सब दृश्य देखा, उसकी आँखों में आंसू छलछला गये। घर आकर मालिक को विस्तार से सारी बात बता दी। वेस्ता ने यह बात अपने माता पिता और गांव वालो को बताई। गरासियो ने 'आक्रमण का ढोल' बजा कर सबको पंचायत में एकत्रित किया। जाजम बिछाई। शराब के प्यालो की मनुहार हुई। फिर पटेल बोला - 'भाइयों वेस्ता की पत्नी बदली को ठाकुर समशेरसिंह जबरजस्ती उठाकर अपनी हवेली में ले गया है। वेस्ता के जीवित रहते हुए यह बात बनना गरासिया समाज पर कलंक है। हमें डूब मरना चाहिए इसलिये युद्ध के लिये तैयार हो जाओ।

बस फिर क्या था ? पटेल को आदेश की ही प्रतीक्षा थी। सब अपने धनुष, तीर, तलवार लेकर आ खडे हुए। योजनानुसार सर्व प्रथम वेस्ता को औरत की पोशाक पहिना कर महल में भेजा। वह इधर उधर ढूंढता सही स्थान पर पहुँच ही गया। बदली रस्सी से बंधी हुई दिखाई दी। फूट फूट कर रो रही थी। उस समय वहां कोई नहीं था, संयोग की बात थी। उसने जल्दी से उसे खोल कर बड़ी चालाकी से महल के बाहर ले ही आया।

वेस्ता और बदली से सकुशल बाहर आ जाने के बाद ठाकुर के महल पर गोली चलाई गई और उसे चेतवनी देकर महल को आग लगा दी। महल की होली जल रही थी और गरासिये बाहर होली खेल रहे थे। महल में हाय तोबा बची थी, सब चिल्ला रहे थे और गरासिये बाहर नाचते गाते थे। हवेली जल कर राख हो गई। फिर जीत की खुशी में महफिले जुडी। बदली का बदला ले लिया गया।

वैर

अेके घेर में हात भाई होता ने हातो भायो रे अेक बैन होती। वी जाता धोने वावणा। हातो हळो रे खर लेन जाते। टालोर वासत हातो भायो रै रोटा पोणी हाणु लेन जाते, पेसे गणगोर जरे आये जोन पुसयु कै हळ वाळो पोणी है क ने। नाकाजी उणी केरे वने कयु - 'पोणी अेक जणा'र हेजे एवरू है।' तो हारो जोणो पीदो तोई पोणी रो लोटे भरजारो रयो। पेसे जोने वाले ने मने मा होसियु। पसे हातो भायोई मारेन उणोर बेने ई लेन गियो। हात जोरी टाली नै उणारी बने राक दिया कै रोज रोज हेरणो होवजो।

वडा भाई र अेक डीकरो हौतो। उणार हातो मोटी आई हौती। डीकरो चोण उपराव तो गेडा हुश्वेर खेर करता। मोटी आई कयु इयो टणको होये ते थार वापाई ने काकोई मारे भुआ ई लेन गियो हिडयो। धुणेर ने हरया लेन आगल गियो। कालकी माता मोडबोर होते, गणगौर जारे देस जेतने आवू तो पेट मालू काळजू काडेन धूक देन घेर आवू। पेसे गियोने पुसयु गायो वालाई - सालोवाल पुसयु। जीवण गेलो जाओ वीरा गणगोर जारे देस। डोकरी पुसयु घेर आवे ते टिलकी मा काडेन आवै। थार भुआ काले होव रये आवा। उणार बापार हापेर विले नोकजे पेसे सोराई ने गिया। कोटा रे आडो कपारियो पेसे उणार कुवो आयो। पुसयु के मलेरु मानवी आयु है। पेसे हुअर नै होबर मारवु। जोधा हारा घाटयो-घाटयो रेहया, अेक लाई घाटी मा बेवारयो। जीने जी भारत उणाई मारवु, सोरे हुअर मारयु। सोरे हारो ही मोकीला ती हरजी काडेन लावो तो किणाहु ने निरयो। वो गियो अेकलो काडेन लायो। पेसे मोकियो। टोलरी भरतावो हारो हेमान ने हारी सीज लायो, समसो भूलो ने पेसो लेवा मोकिला ने गियो।

भुआ भतरीजी व्हिर होया, कुतर मिनकी बोलिया। भुआ आज घेर पेसे वार रिदो। बंदूक, लाकरी, कामठो घेर लेन आवो, हवळे-हवळे जावो। सोरो पाखो के धीरे धीरे आवो कुआई जुआर झेलवा आवो। सोरो धुणेर हरयो, के दस पन्द्रह हाथो पार कुओजी जीकमे कोई न होजै। आज तो भुआ कजु वार मा बैठो, मु हगवास उतर करेन गियो, काली माता ई बोलमा कीदीती, पेट माथू काळजू काडेन चडावजु। सोरो भुओ। पसे भुआ पगे आई, सोरा ने मुओ देख्यौ नै रोवण ढूकी। सेवजी पारबतां उठी कर नीरता हता, मलेरु मोनवी आयो। हरंग जीवतो कीदो। अमाइरो नोकमो न होतरो कीदो। राजी खुसी होर घेर आया। खादा पीदा नै अणंद कीदा।

शत्रुता

एक परिवार में भाई और एक बहिन थी। वह बैलों के घास लाती। भाईयों के लिए खाना लेकर खेत पर जाती। गणगौर के दिन एक राहगीर उधर से निकला और पीने का पानी का पूछा। उसने कहा - 'पानी तो है पर एक व्यक्ति पीये उतना ही है परन्तु सबके पीने के बाद भी लोटा भरा था। राहगीर मन ही मन हंसा और उसके मन में छल कपट आया और सातों भाईयों को मार कर उनकी बहिन को उठा ले गया। बैलो की जोड़ी भी ले गया।

बड़े भाई का एक पुत्र था। वह अब बड़ा हो गया था। वह अपने को बड़ा होशियार और बलवान मानता था। उसे चाची ने ताना दिया कि ऐसा है तो पिता और चाचाओं को मार कर तेरी बुआ को जो ले गया उसका बदला ले। उसने महाकाली को मनौती मानाई और प्रतिज्ञा कि कि गणगौर तक भुआ को ले आऊँगा तो काली माँ को कलेजा निकाल कर चढ़ा दूंगा। एक बुढ़िया ने उसकी मदद की और वह भुआ को चालाकी से घर से निकाल लाया।

भुआ-भतीजा रवाना हुए। कुत्ते व बिल्ली बोलने लगे। शकुन खराब हुए। मनौती के अनुसार असने महाकाली माता को अपना कलेजा निकाल कर चढ़ा दिया। भुआ रोती हुई, विलाप करने लगी। उधर शिव-पार्वती आये। भुआ को दुःखी देख कर उसे उन्होने पुनर्जिवित कर दिया। फिर खाया पिया और आनन्द किया।

अहिंसा (दीया धरम)

अेक मोटो हतो मगरो। ओट मोटा मोटा केई होता रूंख। मगरा मा जनावर इमा-विमा फिरता। केई पेदको उड़ता फिरता। ओट अेक बंदो होतो। हारो पेदको बंदा मा आवले पोणी पीता। बंदा ऊपरे अेक माराज री धूणी होती। जमी ऊपरे लीलू-लीलू खर होतु। खूब फूल आजोर रूंख होतो अेक देन हिरणु उणारे निजरू आयो। उणार ननकु टेटू हाते होतु। वो लीलू लीलू खर खातो माराज देखजो ही रजो, अर उणो हरे हीडजो माराँज आवतो देखजो। हेरणु बिनु उणार आयुर पगो मा वळयु। माराज उणाई कोलू आलवा ढूको, तर वो नावा ढूकूं। माराज उने बुसकारयु। हेरणु ऊपर आयु, उणार टेटू आयु। माराज उणार डूगर माथै हाथ फेरवियो। वी होइ केलो खवरावियो। पेसण हेरणु व टेटू बेने बीतो। वे घेर उपर रेवा ढूका। टेटू रमतो फिरतो डासू मेलतो। सापरे मा बेवा ढूको। खूब दिनां ती टेटू मोटो होयु। हेरणु वणयु। अेक देन अेक अेदमी धुणेर लैने फिरवा आवीयो। हेरणु उणै मोटू देख्यु। अेदमी राजी होयो। अेदमी सौने सौने रूखै रै गोढे मा बैठो। धुणेर ले रे मा हेरयो। खाली हेरणा हामै आवीयो। माराज घेर माही ती बारे आवीया। माराज उण आदमी नै देख्यौ। उणे अेदमी हेरणा रे मा रही। माराज जोर सूं आलीयो, हाको कीदो, उबोर थू कुण है ? अेदमी उबो, माराज थोमनै धकै आवयो। वो आदमी ढबग्यौ। माराज कवा ढूका - 'हिरणा ने मती मारो।' अेदमी बोल्यौ - 'इणाई हीरणा मेले उत मार खावा रीज है। माराज बोल्या - 'मारी त मोई मारो हरणा जिकौ मुई। अेदमी विसार मा पड़ियौ, कियौ माराज है बीजोर जीवेर वासत खुद मरै। अेदमी मन बोटु होयु। उणै अेदमी माराजे हु हाथ जोरवा ढूको। माराज बोलियु मार सोरा हरकू हरणो है। अेदमी ने केयु थू बेटा हरको है। थू आव रो सीताफल खा। माराज रे कहवाकू हेरणु वसियु।

अहिंसा (दया धरम)

एक विशाल पर्वत था। वहाँ भाँति भाँति के वृक्ष थे। पर्वत में कई जानवर इधर उधर घूमते थे। वहाँ कई पक्षी भी थे जो उड़ते फिरते थे। वहाँ एक बाँध था, उसमे पक्षी पानी पीने आते थे। बांध पर एक महात्मा की कुटिया थी। आस पास हरा हरा घास था। वहाँ फल फूलो से लदे वृक्ष थे। एक दिन हिरण उसमे से निकला, उसके साथ उसका एक मृग छोना भी था। साधु ने दोनो को हरा हरा घास चरते हुए देखा। उनको उधर आता देख कर साधु भी सामने गये। हिरण और बच्चा साधु के पैरो में आ गये जैसे शरणागत हो गये। महात्मा ने हिरण के बच्चे को केला खिलाने लगे तो वह भागने लगा। साधु ने पीठ पर हाथ फेर कर पुचकारा। धीरे धीरे विश्वास करने लगे और वे वही आसपास ही चरने लगे। कभी कभी खेलता हुआ काटने का उपक्रम करता इस प्रकार खाते पीते रहने से बच्चा शीघ्र मोटा ताजा हिरण बन गया। एक दिन एक शिकारी धनुष बाण ले कर उधर से घूमता निकला। हिरण को देख कर शिकारी प्रसन्न हुआ और चुपके जा कर एक पेड़ के तले की आड़ में जा बैठा। धनुष से तीर का निशाना मृग पर लगा ही रहाथा कि साधु कुटिया से बाहर निकला और चिल्लाया - कौन हो तुम ? ठहरो जरा, और दौड़ के सामने आ गया। शिकारी रूक गया। साधु ने कहा - 'इसे मत मारो।' शिकारी बोला - 'यह तो मार कर खाने की ही चीज है।' साधु बोला - 'मारना है तो पहले मुझे मारो, मै तुम्हारे सामने हूँ। शिकारी सोच में पड़ गया। सोचा, यह कैसा दयालु साधु है, दूसरे के प्राण बचाने के लिये स्वयं प्राण गवाना चहता है। शिकारी का मन कमजोर पड़ गया। उसने साधु को हाथ जोड़े। साधु बोला - 'मेरे लिये तुम दोनो बेटे के समान हो।' धनुष रख दो और आ कुछ सीताफल खा ले। इस प्रकार साधु ने शिकारी का हृदय परिवर्तन कर दिया।



सावकी माँ

अेक वेला री वात, अेक राजा होतो। उणरे बे सोरा होता। अेक सोरो आठवीं मा बीजो छटी मां भणतो। बीं वे भणवा जाता। घणा थोरा देन होजा, रानी मरे गी। राजा रडीजीयो। पेचण राजा राजार बिजे बाई रे लावणे होते। पेचण वु राजा छांटा रोठा करने उणा सोरोई आलतो वी सोरा इसकोले जावता। बार वगे सोरा सुट्टी होवता वी डेटो खेलता थका घेर आवता। उणा राजार ने बीजी राणीर दोस्ती होजे। वि खातो पीतो मजा करतो।

पेचण राजा थोरा देन होजा उणी बाईरी वु लेन उणार घेर आजो। पेचण उणीन राणी उणा राजई कहाजु - 'अे राजा इणो सोराई एटाह्य पोरा काडत मु थार रहु नितर ने रहु।'

राजा बोल्यु - 'अे राणी मु इणो बीयो सोराई पोरा काडी। अेक देन राजा बोलायो - 'अे राणी मु इणो बीयो सोराई पोरा काडी अेक देन राजा रोठा करेन उणाई अलजा वी इसकोले गिया। बार वगीया सुट्‌टी होजी घेर आवे त बे सोरा डेठो खेलता आजा नानके भाई डेठु उसु नीकालु तो राणी र मेहल मा पेरियु। राणी गाळ दे दी, ई कोडजा कुण है। भाई डेढु जीकलु है। राणे रीहो बलजे। पेचण राजाई कहाजु राजा मुत मार बापारेह जाऊं नीत इनो सोरोनै काड। राजा विसारेन कमारू देन कमारा उपर लिखजु बियो भाई कहजु लीला पग काळू मुहडु करेन उगमणी दसा जाजो। नानका भाईर नजर उणा कमारा उपरे परीजे भाया, देख बापु ह लिखजु है।

मोटे भाई कमाराई लात जीकले कमारू हेटु घर मा गीया। गीरी लेदी तरवार बेदूक लेन देन उगीया खाना होजा। रातरा रनवास मा गिया। रात परजे नानको भाई बालल्लो आयो। वाघ गोरर रजको लीयो कीटको भालिन पोरो हुव हो। मगरा मा वाघ आजे और हुता मोटो भाई बालजो आयो। अेक जणो सुवो अेक जागतो रहो नितर ओपोई जनावर खाई के गोराई खाई। पेचण हो नैनको भाई हुतो वडो जागतो। ओत बे पेदको आजी बालजे। मकवो खाई वु उजर नगरी रो राजा हो वही सकवे खाई वु लाखा वणजारर बेटे पर वीती। मोटे भाई भूटको कीदो वो पेदकी मारजो हेकली सकवो। बडे भाई खादो सकवे, सोटो भाई खादे।

रात री अेक वजी। नानका भाई उठो कीदो। हव मु सुवु यु जागतो र। पेचण नानको भाई बेदूक लेन बैठो। रात रू छुहर आजु। बेदूक ओकतो ओकतो वण मगरा मा गयो। बे भाई सेठी परजा छोटी मोटी काई विसार कर मु अेठ हुतो न मार भाई केम गीयो, विसार करवा लागो। पेचण मोटो भाई उणा केरे विराजो ती आगले गियो ने ही उण विसार कीदो लाकरो मुती, परो जाऊँ। लाकर गीयो ती उण वात कीदे ती उणाई उजर नगरी रो राजा वनावजो।

पेचण छ सोटो भाई दुसर न धारजु ती वु सोटो अेक माने मा मुडु धोवणा गीयो, ती नागे खादो ती मरे गयो। ओत लाखा वणजारार सो सोरे पूजा करवा आवते, वो सोरे उणी वावे उपर आवे। मुओरो देखती रोवण ठुके। जाऊ तेर इणारस नितर कुहारे रह। पेचण नाग पासो बारे आयो खादो ओर पासो खादो वु जीवतो होयो। वे सोरे घर लेन गियो। विवा होयो। पेचण मन की वात की देती वे भाई भेळा होया।

सौतेली माता

एक समय की बात है। एक राजा था और एक रानी थी। उनके दो लड़के थे। एक लड़का आठवी और दूसरा छटी कक्षा में पढ़ता था। दोनो साथ साथ पढने जाते। थोडे दिनो में राणी का देहान्त हो गया। राजा विधुर हो गया। बाद में राजा ने दूसरी रानी लाने

की सोची। तब तक वह राजा बच्चो को रोटियां करके देता और लड़के स्कूल जाते। छुट्टी होने पर गेंद खेलते वापस आते। राजा ने दूसरी शादी कर ली। उसके साथ राजा खाता पीता और मौजा करता।

बाद में काफी दिनो बाद उस रानी (पत्नी) को ले कर घर आया। रानी ने राजा से कहा 'हे राजन ! इन लड़को को यहाँ से निकालो तो मैं तुम्हारे यहाँ रहू नहीं तो चली जाऊँगी'। राजा बोला - 'मै इन दोनो को निकाल दूंगा।' एक दिन राजा ने बच्चों को खाना खिलाया और वे स्कूल चले गये। बारह बजे छुट्टी के बाद घर आते समय गेंद खेल रहे थे। छोटे भाई ने गेंद के किक लगाई और गेंद रानी के महल में चली गई। रानी ने गालियों दी की ये कोढ़िया कौन है जिसने अन्दर गेंद फेंकी। रानी क्रोधित हुई। बाद में राजा को कहा - 'मैं तो मेरे मायके जाती हूँ, नहीं तो इन लड़को को निकालो। राजा विचार में पड़ गया। उसने उनके दरवाजे पर लिख दिया कि दोनो भाई काला मुँह कर हरे पांव करके पूर्व दिसा में निकल जाओ। छोटे भाई की नजर उस पर पड़ी और उसने कहा - 'देख भैया पिताजी ने क्या लिखा है ?

बड़े भाई ने दरवाजे को लात मारी, दरवाजा टूट गया। दोनो अंदर गये। तलवार व बंदूक लेकर प्रस्थान कर गये। मध्य रात्रि छोटा भाई बाहर गया, चारो ओर ध्यान दिया और सोचा सब सो रहे है। जंगल में निकल गये। पर्वत में बाघ आदि थे सो बारी बारी पहरा दिया। बड़े भाई की बारी आई। एक जग रहा था, दूसरा सोने लगा। अन्यथा कोई जानवर या अजगर आया तो अपने को खा सकता है। बाहर एक पक्षी को जोड़ा आया और कहानी कहने लगा।

उज्जैन नगरी का राजा था। लखा बिणजारा की बेटी की शादी.., बड़े भाई ने धमाका किया बंदूक से पक्षी को मार दिया। चकवे को बडे भाई ने खाया और चकवी को छोटेने खाया। बडे ने छोटे से कहा - अब तुम पहरा दो मैं सो जाता हूँ। छोटा भाई बंदूक लेकर बैठ गया।

रात्रि में एक सूअर आया। बंदूक लेकर वह पहाड़ पर चढा। दोनो के बीच दूरी बढ़ती गई। बड़ा भाई जगा तो सोचा मैं तो यहाँ हू पर मेरा छोटाभाई कहाँ गया। बड़ा भाई भी उसकी खोज में रवाना हुआ। चलते चलते सोच रहा था काश ! मैं भी उज्जैन का राजा होता।

छोटा भाई सूअर के पीछे जा रहा था एक छोटी-सी बावड़ी में मुँह धोने को उतरा परन्तु वहाँ सांप के काट खाने से मृत्यु हो गई। वहाँ लाखा वणजारा की लड़की पूजा करने आई। उसने राजकुमार को मरा हुआ देखकर रोने लगी और बोली - ' जाऊंगी तो इसी के साथ, नहीं तो मैं अखंड कुंवारी ही रहूगी। बाद में फिर सांप वापस बाहर आया और फिर विष चूस लिया। वह पुनः जीवित हो गया। वह लड़की उसे घर ले गई। दोनो का विवाह हो गया। थोड़े दिन बाद भाई आदि सब मिल गये।

~

गरासिया री चतराई

गरासिया घणा 'अय्यासी' व्है। पण सुभाव रा कड़क ओर लड़ाकू ई व्है। ताकतवर व्है 'ओर' बुद्धिमान' ई व्है। इणां री चतराई ओर 'बुद्धिमानी से पेटे अेक लोक गाथा चालै -

अेक वाळ अेक गराया अर दैत रे दोस्ती व्हेगी। दोनू सिरोळी करसण करण री मतो कर्‌यौ। करसण सारू इकरारनामौ करीज्यौ। गरासियो लिखांण करवायौ। ओ ई खुलासो करयौ कोई हकनाक राड़ नी घालेला अर लिखत परवांण काम करेला।

करारनामां मा मंडीज्यौ अर नक्की व्हियौ कै पैली खास जमी मांयली गरायो लेवेला अर साख रो बारलो भाग दैत - (भूत) रौ रैवैला। दूजी साख में जमी रे बारली साख रै भाग रौ गरासियो हकदार व्हेला अर जमी मांयली पैदा रो धणी दैत व्हैला। दैत ने नियाव री वात दाय आई अर वचन कोल कवळ घलीजगी। अंगूठा दसरवतां सूं सही करने दो साख घलीजगी। दोनू राजी बाजी कमतर ढूका।

गरायो चतराई करी के पैलाड़ी साख मा मूंगफळी, गाजर अर सकर कंद बीजा घालीया। इकरारनामा मुजब साख पाका दैत रै हाथै गाजर रा पानड़ा अर मूंगफिळी रा डाकळां पोती आया अर माल माल गरायो लेग्यो। दूजी साख मा गऊं अर राइड़ौ आद वायो। तो अबकाळै ई दैत रै माग मा गवां और राइड़ा री जडिया रा ख़ूंटा हाथै लागा। दैत (भूत) आदिवासी रै बुधबळ आगे हार खायने जातो रीयो, अैड़ी करी गरासियो।

गरासिये की चतुराई

गरासिये बहुत अय्यासी होते है। स्वभाव इनका तेज होता है। लड़ाकू होते है। शक्तिशाली और बुद्धिमान भी होते है। इनकी चतुराई और बुद्धिमानी के संदर्भ में एक कथा प्रचलित है। -

अेक बार एक गरासिये और दैत्य (भूत) के दोस्ती हो गई। दोनो ने सम्मलित रूप से खेती करने का विचार किया। खेती के लिये 'इकरारनामा' लिखा गया जो गरासिये ने ही लिखवाया। यह भी स्पष्ट कर दिया कि व्यर्थ कोई झगड़ा नही करेगा और 'इकरारनामा' की पूरी पालना करेगे।

'इकरारनामा' में लिख कर निश्चित किया गया कि पहली फसल में भूमि के अंदर का भाग गरासिया लेगा और भूमि के ऊपर का हिस्सा दैत्य (भूत) का रहेगा। दूसरी फसल में भूमि के बाहर का भाग (फसल का) का अधिकारी गरासिया होगा और भूमि के भीतर का भाग दैत्य का रहेगा। दैत्य को न्याय संगत बात पसंद आई और एक दूसरे को वचन दिया। अंगूठा एवं हस्ताक्षर तथा दो गवाह आदि के हस्ताक्षर हो गये। दोनो खुशी खुशी खेती करने लगे।

गरासिये ने चतुराई की कि पहली फ़सल में मूंगफली, गाजर और शकरकंद बोये। इकरारनाने के इनुसार फसल पकने पर दैत्य के हिस्से में शकरकंद और गाजर के पत्ते और मुगफली के तिनके हाथ आये और पूरा माल गरासिया ले गया। दूसरी फसल में गेहूँ और राइड़ा बोया। इस बार भी दैत्य के हाथ भूमि के अंदर की जड़े आई और गराया गेहूँ, रायड़ा सब ले गया। दैत्य आदिवासी की बुद्धिबल से हारा और भाग छूटा। ऐसी गराया ने की।

भलाई री भूंडाई

अेक हेतु गरासिया बेकरियां सरावा वन में जावतो। वाटे में परियो मगर मिळ्यौ। मगर मानवी भासा मा बोल्यौ - 'अे वनवासी भाई, नेरी दूरी मा पांणी है कै ना ? राइको पाछो बोल्यौ - 'पाणी पड्यौ है पण कोसेक आगो है, बठै अेक तळाव है।' मगर कह्यौ - म्हना बारा दिनां सूं पांणी मिले ना, महूं तरसो मरू। थू मार भाई हो, मदत करो। गरासियौ दो सौ साळियौ सोडेन गियो। पछेड़ा रौ मोटो ईडोड़ौ कीधौ नै मगर ना माथा माथै उपाड़्यौ। मगर करड़ो व्हेग्यौ जाणे लाकड़ो इज है, जिणसूं सोरो उपाड़ हकियौ। ठेट बंकर तळाव पूगो। गोडे-गोडे पांणी में छोडा लागो। मगर कियौ थोड़ो आगे ऊंडे पांणी हाल वठै छोड जै। वठै छोडता ई मगर वनवासी री पींडी पकरी। वनवासी बोल्यौ - 'यू यूं कांई करै भई, अेवड़ ई छोड्यौ नै थारी मदत करी जान बचाई जिणरौ ओ फळ पाको कै अबै म्हारो पिराण लेई क। भलाई री भूंडाई मिळै क। मगर बोल्यौ पंच बलाव, फैसलो कराव, जितरेक तो गऊ माता आई। वनवासी बोल्यौ 'गऊ माता मारो नियाव कर कै भलाई रौ वदलौ भूंडाई कीकर ? गऊ माता बोली - 'दनिया री आ इज रीत, इत्ती इज प्रीत। म्हूं बारै मी'ना री बा'रा मी'ना ब्यावती, ओडी भरया कपाया रौ वाटो नै लीलो भारो खावानै देवता चूंकी सवा घड़ो दूद देवती।

वीं बखत म्हनै घणौ लाड करता। अबै दस बरस सूं कोनी ब्याई तो मारो वाटो अर भारो बंद व्हग्यौ। मगर पग नै दबावतो बोल्यौ - 'नियाव मारे पख में व्हेग्यौ। भलाई रौ वदळौ बुराई सूं मिळै। गऊ बोली ढब तो सही, फेर कोई आवै तो नियाव कराऊं। थोडीक ताळ सूं अेक बळद आयो उणनै सगळौ किस्सौ कयो अर नियाव करण रौ कयौ। बेळद बोल्यौ - 'सात फेरा पांणी काढतो, जमी खड़तो खूब, जरे मारी पूछ ही। वांटा री ओडी नै लीलो भारो धपाऊ ठच्यौ आवतो। खातो पीतो ने मजा माडतो। पण अबै बूढो व्हेग्यौ तो नाक मांही ती नथ काढनै छूटो कर दियो। रोवतो·फिरू। खावा रा फोरा पड़ै, भूखो मरू।

मारा मा मुसकल व्ही। मनै ई भलाई री वदळी भूंडाई सूं इज मिळियौ। मगर कयौ - ओई फैसलो मारा पख में हुयौ।' सियाळयौ झाड़कां मा सैंग वात सुण ली। पछै वो ताळाव मा पांणी पीवा आयो। रेबारी नियाव मांग्यौ पण सियाळियौ हुस्यारी करी वो बोल्यौ 'म्हूं कम्म सुणु सो थोड़ो नैड़ो आव थू कांई कैवे। फांसी काढणी ही। रेबारी नैड़ौ आयौ पण सियाळौ कयौ - 'म्हनै पाणी री आण है, म्है नियाव करूंला पण पूरो सांभळिजै कोनी थोडो फेर नैड़ो आवा जरै फेर ल्गतो आयो।' कड़िया तांई पांणी में ऊभौ हो। पण वो फेर नैड़ो बुलायौ। यूं करता किनारे ले आयो। स्याळ नै मगर रौ पूछ दिस्यौ। सियाळ्यौ बोल्यो - 'थूं कोरो रेबारी इज दीसै, इत्तौ भोळो। थारे खादे कवाडियौ पड़यौ। कर दे अेकड़ रा दो। राइका नै चेत आयो, वंग ई आयो, मगर पांणी बारे हो सो दी क्वाड़िया री नै करे दिया दो बटका। सियाळयौ बोल्यौ - 'जा दौड़ थांरी बकरिया मगरे गी परी, म्हारे ई पन्दरेक दन री सळ व्हे ग्यौ।'

भलाई का बदला बुराई से

एक गरासिया था। जंगल में भेड़ बकरियाँ चराता था। एक दिन रास्ते में एक मगरमच्छ पड़ा मिला। मगर मनुष्य की भाषा में बोला -'ए वनवासी ! कहीं नजदीक पानी है या नही। वनवासी बोला -'पानी तो है पर दो-तीन किमी. दूर है। वहाँ एक विशाल तालाब है। मगरने कहा - 'मैं बारह दिन से भूखा प्यासा हूँ। तुम मेरी मदद करो, मुझे तालाब तक ले चलो। देवासी अपनी दो सौ बकरियो का धन जंगल में सूना छोड कर गया। उसने 'पछेड़ा' (ओढने का कपड़ा) का सिर पर 'इंडोना' बना कर रखा और मगर को सिर पर उठाया। मगर लकड़ी के लट्ठे के समान कठोर बन गया जिससे वह आसानी से उठा सके। उस विशाल तालाब में घुटने तक पानी में उसे छोडने लगा तो मगर बोला - 'थोडा आगे गहरे पानी मे ले चल, वहां छोड देना।' वहाँ छोड़ते ही मगर ने गरासिया का पांव पकड़ लिया। वनवासी बोला 'भाई तू यह क्या कर रहा है, तुझे यह शोभा नहीं देता, मैने तेरी मदद की। प्राण बचाया जिसका यह प्रतिफल दे रहे हो? मैने तेरे प्राण बचाये, तू मेरी ही प्राण लेना चाहता है ? भलाई का बदला बुराई से। क्या यह न्याय संगत है।'

मगर बोला - 'पंच बुला कर फैसला करवा दे ।' इतने में तो गऊ माता आई। उसने न्याय करने का निवेदन किया कि यह भलाई का बदला बुराई से कैसे चुका रहा है ? गाय माता बोली - 'संसार में यही रीत है, इतनी ही प्रीत है, स्वार्थ सिद्ध होने तक। मैं प्रति वर्ष ब्याती थी तब कुण्डा भरकर बिनौले और हरी घास का गठ्हर खाने को भर पेट मिलता था क्योंकि मैं उस समय पांच किलो दूध दैती थी।

उस समय मुझे सब प्यार करते। अब दस वर्ष से नहीं ब्याई तो मेरा बिनौला और हरा चारा बंद कर दिया गया। स्वार्थ था तब तक था। मगर पाव दबाता बोला - 'न्याय मेरे पक्ष में है, भलाई का बदला बुराई से ही मिलता है।' गाय बोली 'ठहर जरा, और कीसी को आने दे, न्याय मिलेगा। थोडे समय में एक बैल आया। उसे सारी कथा कह कर न्याय करने को कहा। बैल बोला - 'सात फेरो से मैं पानी निकलता, खेत जोजता तब मेरा खूब ख्याल रखा जाता। बिनौला व हरा घास भर पेट निरंतर मिलता। खाता-पीता और मजा करता पर जब अब वृद्धावस्था आई तो नाक से नाथ (नकेल) निकल कर आवारा छोड दिया। भटकता फिरता हूँ। भूखो मरता हूँ। मुझे भी भलाई का बदला बुराई से ही मिला है। मगर बोला - 'दूसरा फैसला भी मेरे पक्ष में हुआ है।' सियार झाड़ियो में बैठा पूरी बातें सुनकर योजना बनाई और तालाब पर पानी पीने गया। देवासी ने न्याय माँगा। सियार ने चालाकी की और बोला - मैं कम सुनता हूँ। इसलिये नजदीक आओ। देवासी की फांसी काटनी थी। वो दोनो निकट आये पर सियार ने कहा 'मुझे पानी की कसम है मैं न्याय करना चाहता हूँ पर करू क्या उंचा सुनता हूँ और निकट आयें। कमर तक पानी आ गये पर और नजदीक ले आया। तब सियार बोला ' तू केवल भोला देवासी ही है। तेरे कंधे पर कुल्हाड़ी है। कर दे एक मगर के दो टुकड़े। देवासी को ध्यान आया, उधर मौका भी आया कि मगर पानी से बाहर दिखाई दे रहा था। उसने आव देखा न ताव चलाई कुल्हाडी और कर दिये दो टुकड़े। सियार बोला - जा दौड बकरियें पहाड में चली गई है। मेरे भी महिने भरका भोजन तैयार हो गया।



कुतको वडी किताब

अेक हौ भीमो गरासियो। भाखर रौ वासी। आसी अैड़ौ के हाथां रै आळस मूंछ मुंडा मा जा। कमाये ने रोटी ना खाहकतो। पेण मादेवा रो भगत हाचोरो।

भीमा री बायरी रोज लेड़ती, मौसा दैती, ठौला ठोकती पेण नेकटौ ई खरो। के फरक ने परतो। टाळां खातो, मैणत सूं औळा लैतो। वा काठी धापगी। बापड़ी अेक बाण्या रे खेतर काम केरती। खेतर मा मेजूरी करेन पेट भेरती। भीमा रो इ भख भेरती।

अेके दन बेर मोदी व्हेगी। भीमा रा भूंडा हाल हवाल व्हैवणा इज हा। भूख सूं भेजर भाग गिया। तीन दन नरणो रह्यौ। आखर फूटो - 'बड़ भागण ! थूं निरोगी व्हे ना अर मारू भूखो रैवीजै ना, सो मूं सै'र जावूं, वठै मजूरी करा।' आ वात सुणने बाइड़ी आंसूड़ा नीतारिया - टपक, टपक, टपक। बैमार व्हैता थका राजी व्हैन बोली - 'जिंदगाणी मा आज पैली वाळ कांम धेदा री वात केरी। थे सैर जावा री त्यारी करो मूं थारे रोटी पोय

घूं।' वा चूला कांनी गी अर भीमो आपरा गाबा सांवटा ढूको। रोट्यां बणगी, भातो बांध्यो, भीमो पूठियो ले'र निसरयौ। बाइड़ी री आंख्यां भरीजगी।

धर मजलां धर कूंचा चालतो गियो। पेट मा कूकरियां बोला ढूका। अेक वावडी वळाके देखी, पांणी रौ वंग हो। व्हेमो लीयो। भातो खोल्यो। देखी के दोनू रोटा तो राख रा। माथौ धूणतो रोटा बगाय दिया। भीमलो अेत उत झाबां काढ़े पण बठै जंगी झाड़-बांठकां रे सिवाय कीं ना हतो। पाछो घेर जावा रो विसार कर्‌यौ। भूखे पेट मजूरी किम होई। भूखे भजन न होय गोपाळा, आ ले थांरी कंठी माळा।

भीमा रो हेलो भोळेसिंभु सुण्यौ। गोरी नै मादेवा परगटिया। पारबतांजी बोल्या - 'भोलानाथ ! ओ आपरो भगत है। भूखो तिरसो अर दुखी है। दया करावो। इणारा दुखड़ा मेट करो। बाबा ने दीया आई भीमा ने कैयो - 'ले ओ जादू रो कमडल। इणसु जको मांगेला, मिलेला।' अर दोनू अलोप व्हेग्या। अहम्मै भीमो व्हियो सूरमो। अबै वो कांई धारे। घेर पूगो तो धरती पग ना टके। आभो टोपाळी जिरतो दीसे। बेर बोली - 'लो अे आया घण कमाऊ। अरे पाछा कांई खावा ने आया। मूं ने घेर तो अठे इ हा। लौट के बुद्धु घर को आये।' भीमो बोल्यौ - 'कमावान गियो हो, कमायन लायो हूं। बेर बोली - 'अेकड दाड़ा मा कै कमार लाया।' भीमो कमडळ उणारे हाथे सुप्यो। वा क्यौ - 'इणसु कांई पेट भरीजेला। ई रे साथै झोळी झंडा ई ले लो अर व्है जावो जोगी।'

भीमो बोलो चालो मन मा घरवाळी ने निरोगी करण री कामना धावना करी तो तुरत वा निरोगी व्हेगी। उणरे कीं समझ ने परी कै वेमारी कीकर गी परी ? भीमे बीजी अरदास पेट पूजा री करी। पलक झपंता चांदी रा थाळ मा पांच पेकवान हाजर। देखता ई लुगाई री आंख्यां फाटी रेयगी क ओ कांई खलको। भीमे सगळी वात बतावी। मांडनै पूरी वात कीवी। दोनू घणा हेत सू भेळा जीम्या। मौजां मांडी।

भीमा रे मरजी मुजब सगळा ठाट-बाट व्हेग्या। नवोई नंद व्हेग्या। कमंडल के चमत्कार री बात सैंग गांम मा फूटी। ठाकर रे कानां पूगी तो वो भीमा रे घेर आयो अर मार कूट करेन कमडल खोस लीयो। भीमो दखी व्हियो अर पाछो वीं इज वावड़ी पूगो। शंकर ने अरदास करी। भोळो बाबो परगटियो। भीमो सगळी वात वताई अर गाम धणी सूं वदळौ लेवण रौ अर कमडल पाछै देरावण रौ केयो।

भेगवान जादू रो अेक डंडो देता थका कयौ - 'औ ठौकणियौ डंडो' है। थू जिणरा दूढ भांगण रौ हुकम देला उणरी आछी मरम्मत कर देला। वीं री चोखी भारणी उतारेला। भीमो घणो राजी व्हियौ, घेर आयौ। पछे रावले गियो। चौकीदार मा वड़वा न दे अर गाळियो रा रड़का उडावै। भीमे डंडा ने हुकम दियो। डंडो तो पड़ियो माथै जको अळदावो काढ दियो। भीमो गढ मा पूगो। ठाकर लाल-पीळो व्हियो अर बकण ढूको। भीमो

मुळकतड़ो बोल्यो - मूं मार कमडल लेवा आवीयो हूँ अर पौरादार ने वतलाय ने आयो हूं, जावो वीं रो सुख पूछ लो।

ठाकर उछळ्यौ अर तीन ताळी वजाड़ी, सिपाही बलाविया। भीमे 'ठोकण डंडा' ने हुकम करियो। सगळा री सांतरी पूजा कराय दीवी। सैंग भाग छूटा। ठाकर रा हौस हवास उड गिया। पण लोभ गळो कटावै, सो कमडल देवाने नट गियो। भीमे डंडाने हुकम दियो - 'जा इण ठाकर री मति ठिकाणे लाव। नष्ट देव री भ्रष्ट पूजा। जूता रा देव बातां सूं नीं मानै। सीधी आंगळी घी नी निकळे। वौ तो ठाकर गिणे न ठीकर। ठाकर रे मौरां मा उडण लागा धमीड़ा। ठौक ठौक ने लॉजी कर दी। वो अधमर्‌यौ व्हैग्यौ। छेवट भीमा सूं माफी मांगी अर कमडल दैयने पिंड छुडायो।

पंडा रोब सूं मूंछा ताव दैता घेर आया। अबै कांई अड़को धड़को कोनी रीयो। भीमा रौ सिक्को चाला ढूको। वाकई सही है के - ' कूतको वडी किताब लाठा ई लटका ले।'

डंडा : महान पुस्तक

एक भीमा नाम का गरासिया था। पर्वत में रहता था। बड़ा ही आलसी था। आलस्य के कारण मूंछे भी नही सवार सकता था। आजीविका कमा नही सकता था। परन्तु भगवान शिव का बड़ा उपासक था।

भीमा की पत्नि रोज बकती, ताने कसती परन्तु पूरा नकटा था। कोई फरक नही पड़ता। कोई न कोई बहाना ढूंढता और परिश्रम से मुँह मौडता। वह तंग आ गई। बेचारी एक बनिये के खेत पर मजदूरी करती और किसी प्रकार उदरपूर्ति करती। भीमा का भी पेट भरती।

एक दिन उसकी पत्नि बीमार हो गई। भीमा के बूरे हाल हुए। भूख से तड़फड़ने लगा। तीन दिन भूखा रहा। अंत में परेशान हो कर बोला - 'भागवंती ! तुम स्वस्थ नहीं हो रही और मेरे से भूखा नहीं रहा जाता। इसलिये अब मै शहर में मजदूरी करने जाता हूँ। यह सुन कर पत्नि की आंखों में आंसू आ गये। बीमार होते हुए भी प्रसन्न होकर बोली - 'जिंदगी में आज पहली बार तुमने काम धंधे की बात की है। आप शहर जाने की तैयारी करो, मैं आपके लिये रोटी बना दूं। वह चूल्हे की ओर गई और भीमा अपने कपड़े समेटने लगा। रोटी बन गई। भाता बांध दिया। भीमा ने थैला ले कर प्रस्थान किया। औरत की आँखों में आँसू निकल पड़े।

वह चलता गया। पेट में जोरदार भूख लगी। एक बावड़ी का मौका देख कर भाता खोलकर देखा तो दोनो रोटियाँ राख की बनी है। सिर धुनकर रोटियाँ फेंक दी। भीमा अब इधर-उधर झांकने लगा कि कुछ खाने को मिले।

परन्तु वहाँ जंगली झाडियों के सिवाय कुछ नही था। वापस घर जाने का विचार किया कि भूखे पेट मजदूरी कैसे होगी। भूखे भजन न होय गोपाला यह ले तेरी कंठी माला।

भक्त भीम की पुकार भोले शंकर ने सुनी। शिव-पार्वतीने दर्शन दिये। पार्वती बोली - भगवन। यह भूखा, प्यासा और दुःखी है। दया करो। इसके दुःख समाप्त करो। शंकर को भी दया आई और कहा - ले यह जादू का कमण्डल। इससे तू जो माँगेगा, मिलेगा। इतना कह कर अंतर्ध्यान हो गये। भीम खूब प्रसन्न हुआ। पूर्ण संतुष्ट होकर घर पहुँचा। पत्नी बोली - 'यह आ गये - 'घण कमाऊं।' वापस कैसे आ गये। घर तो यही था, लौट के बुद्धु घर को आये। भीम बोला - ' कमाने गया था कमाकर लाया हूँ।' एक दिन में क्या कमाकर लाये हो ?' भीम ने कमण्डल उसके हाथ में सौंप दिया। वो बोली - ' इससे क्या पेट भरेगा ? इस के साथ झोली, डंडा भी लेलो और जाओ जोगी बन कर।

भीम मौन रूप से पत्नी के स्वस्थ होने की कामना की तो वो तत्काल भली चंगी हो गई। उसको कुछ भी समझ में नहीं आया कि अचानक रोग कैसे गया? भीम ने दूसरी प्रार्थना पेट-पूजा के लिये की। पल भर में चांदी के थाल में पांच पकवान (मिष्टान) पुरोस कर आये। देखते ही देखते पत्नी की आँखे फटी की फटी रह गई। यह कैसा चमत्कार। भीम ने पूरी कहानी समझाई। दोनो ने सामिल बैठकर खाना खाया।

भीम के इच्छानुसार सब ठाठ-बाट हो गये। साधन सम्पन्न बन गया। कमण्डल के चमत्कार की बात पूरे गाँव मैं फैल गई। ठाकुर ने भी सुनी। ठाकुर भीम के घर पहुँचा और भीम से मारपीट करे कमण्डल छीन कर ले गया। भीम वापस उसी बावड़ी पर गया। शंकर को प्रार्थना की शंकर प्रकट हुए। भीम ने सारी आप बीती बताई। ठाकुर से बदला लेने और कमण्डल वापस दिलाने का निवेदन किया। भगवान ने एक जादू का 'पीटने वाला डंडा' देते हुए कहा। तुम जिसे पीटने को कहोगे, यह मट्टी पलीत कर देगा उसकी। भीम अत्यन्त प्रसन्न हुआ। घर पर पहुंचा फिर रावले में गया परन्तु पहरेदारो ने अन्दर प्रवेश नही करने दिया। धुंआधार गालियाँ बकने लगे। भीम ने डंडे को आदेश दिया। डंडा चला सो सबका कचूम्बर निकाल दिया। भीम हवेली में पहुँचा। ठाकुर गुस्से में लाल हो गया और उटपटांग बकने लगा। भीम मुस्कुराते हुए बोला - 'मैं अपना कमण्डल लेने आया हूँ और द्वारपाल से पूछ कर आया हूँ उनकी भी तबियत पूछ लो।

ठाकुर उछला और तीन तालियाँ बजाकर सिपाहियों को बुलाया। भीम ने 'पीटन डंडे'से पूजा करने को कहा। सबकी तबियत हरी कर दी। सभी भाग छूटे। ठाकुर के हौस उड गये। पर लोभ गला कटाता है सो कमण्डल देने से मना कर दिया। भीम ने फिर 'पिटन डंडे'को आदेश दिया - 'जा ठाकुर की बुद्धि ठिकाने ला दे। नष्ट देव की भ्रष्ट पूजा। जूतो के देव बातों से नहीं मानते। सीधी अंगुली से घी नहीं निकलता। वो तो ठाकुर देखा न ठीकर। ठाकुर के

पीठ पर धमाधम उड़ने लगी। मार मार कर कचूम्बर निकाल दिया। वो तो अधमरा हो गया। अंत में ठाकुर ने क्षमा याचना की और कमण्डल ससस्मान लौटा कर चैन की साँस ली। भीम मूछों पर ताव देता हुआ घर वापस लौटा। अब कोई खतरा नही था। भीम के नाम का सिक्का चलने लगा। वास्तव में सही है कि भय बिना प्रीत नही। मार के आगे भूत भी भागते है।



नौळीयो नै न्हार

अेक हो नौळीयौ, वींरे भैस ही भूरकी। सवार रा हेलो पाड़तो - 'इड़े भूरी इड़े, खा पूळौ नै भर डूणौ।' अेक दन समाजोग सूं बाघ वठी व्हैने निकळ्यौ। नवळियो गाळियां रा रड़का उडावतो बाध ने चेतरायो के जे मारी भैस ने परी मारी तो म्हूं थनै मारने थारो बेर ने घर में घाल दूंला। न्हार नै आयो गुस्सो नाडा में बेठी भैस ने मार न्हाखी अर खायग्यौ पण भैस रो माथो कादा मा घाल्यौ जाणै भैस कादा में कळीज नै जमी मा उतरगी। पूछडी ई की छेटी सूं कादा मांय रोप दीवी। नौळीयो रोज रे ज्यूं बुलावै - 'इडे भूरी इड़े, खा पूळौ नै भर डूणौ' पण आई नीं तो भालवा ग्यौ तो नाड़ा में कादा में कळीज्यौड़ी दीसी। पण वो पांणी में जाय हके नीं जरै मारग जाता मारगू नै कह्यौ - 'भाई भैस बारे कढावौ। आओ मोमा मोमियो मारी भैस काढो। मारगू लुगायां मिनख खासा है, मेळै जावता हा, नवा गाबा खापोखांप पैरीयौड़ा हा। लुगायां पूछ अपड़ी ने मिनख माथो झेलियो। कीधो जोर के माथो ने पूंछ हाथ मा आया। वे पड़िया कादा में ने गाबा खरडीज्या।

नवळियौ व्हियौ गुस्से कै व्हौ नीं व्हौ अे न्हार रा कांम है। हरथुणीं (तीर कामठा) बणायौ। न्हार री गुफा सांमी मोरचो लियो। वाघ रे गप्पा माऊं निकळता नौलियो फेंट दी। न्हार लारे न्हाटौ तो नौळीयौ रूंखड़ा री खोखाळ मा बड़ग्यौ। न्हार वीं में माथो दियो तो माथो फसग्यौ। नौळिया खोखाल रा दूजा रस्ता सूं निकल नै बारे आयो। नौळीयौ मौको देखने आ मोरचा बंदी पैली इज कर दी ही। रूंखरी दो च्यार मारग वाळी खओखाल (पोलो रूंखड़ो) आदि मांय जायनै पैली देख ली ही। नवळियौ बारे निकळनै पाछो न्हार रे लारली कांनी आयौ। अबै ले हरथुणो ने वाघ रे कपूरियां पर निसाणो जमायनै तीर छोडा दूको। कपूरिया काची काजू नै कावळ जागा व्है। लोहीझांण व्हैग्या। वाघ घायल व्है ग्यौ। आगे तो फंसग्यौ माथौ लारे कपूरीया पर तीर री चोटा। छेवट उणनै मरणौ पड्यौ।

अबै न्हारी री वारी। वा तो पैली इज घबरायगी। स्याळ्यौ बोल्यो चाल म्हारे साथै। अबै थारो धणी में हूं। नितर थनै ई मारू। वा तो बोली बोली नौळीया रे लारे लारे गी परी। न्हारी रे दो बचा हा वे ही साथै लाई। नौळीयो गप्पा रे मेड़ी माथै बैठ जावतो। न्हारी

सिकार लावती बचा नै खवाड़ती अर घरधणी (नौळीया) नै ई दैवती। नौळीया रे तो मुठी भर्‌यो मांस घणो। खादा पीदा राज कीदा।

नेवला और शेर

एक नेवला था। उसके एक भैस थी भूरकी। प्रातःकाल वो आवाज देता - 'आ भूरी आ ! घास का पूला खा और दूध से घड़ा (बेड़िया) भर दें।' एक दिन संयोग से शेर उधर होकर निकला। नेवला गालियां देता हुआ शेर को चेतावनी दी कि जो तूने कभी मेरी भैस को मार दी तो मै तुझे मारे बिना नहीं छोडूगा और तेरी पत्नि को मेरी पत्नि बना दूंगा। शेर क्रोधित हुआ और आगे रास्ते में तालाब में उसकी भैस बैठी देखी तो उसे मार कर खा गया। परन्तु भैस का सिर कीचड़ में इस तरह रखा जैसे भैस कीचड़में धस कर भूमि में उतर गई। पूंछ भी कुछ दूरी से कीचड़ में खडी कर दी। नेवला हमेशा की भांति प्रातः आवाज दी 'आ भूरी आ ! पूला खा और दूध से घडा भर।' पर भैस नहीं आई तो वो ढूंढने निकला तो तालाब में कीचड में धसी दिखाई दी। केवल सिर और पूंछ बाहर थे। नेवला पानी में जा नहीं सकता। तब राहगिरों से मदद मांगी कि मेरी भेंस बाहर निकलवा दो। स्त्री-पुरुष काफी थे। सजधज कर मेले जा रहे थे। औरतो ने पूंछ पकड़ी, पुरुषों ने सिर और लगायँा जोर तो सिर और पूंछ हाथमें आ गये, और वे सब गिरे कीचड़ में। सारे कपड़े खराब हो गये। नेवला क्रोधित हुआ और सोचा यह सब शेर की करामत है। धनुष-बाण बनाया और शेर की गुफा के सामने मोर्चा लेकर बैठ गया। गुफा से निकलते ही झपट दे कर पेड़ की 'खोखल' में घुस गया। शेर ने गुस्से में उसमें चोट की तो शेर का सिर फंस गया नेवला 'खोखल'से अन्य रास्ते से निकल कर बाहर आ गया। नेवला अवसर देखकर यह मोर्चा बंधी पूर्व में ही कर ली थी। थोथे (पोले) वृक्ष की चार पांच रास्ते वाली 'खोखल' अंदर जाकर देख चुका था। नेवला अन्य रास्ते से बाहर निकल कर वापस शेर के पीछे की ओर गया और धनुष-बाण से शेर के अण्डकोश पर निशाना जमा जमा कर तीर छोडने लगा। अण्डकोष खूनाखून हो गये। शेर बुरी तरह घायल हो गया। आगे सिर फंस गया और पीछे अण्डकोश पर तीरों की निरंतर चोटे। अंत में मरना ही पड़ा।

अब शेरनी की बारी आई। वह तो पहले ही घबरा चुकी थी। सियार बोला - 'चल मेरे साथ, अब मैं तेरा पति हूं। नही तो तुझे भी मार डालूंगा। वह तो चुपचाप उसके पीछे पीछे रवाना हो गई। उसके दो बच्चे भी थे उन्हें भी साथ लाई। अब नेवला गुफा की छत पर बैठ जाता। शेरनी शिकार लाती, शावकों को खिलाती और पति (नेवला) को भी देती। उस को मुट्ठी पर मांस चाहिए। खाया पीया मौज किया।



हुस्यारी कुणी रे बाप री कोनी

अेक हो काठी। उणनै घांणी खड़े घांची। दूजो हो अेक गधौ। उणसूं माटी री गुणी न्हाखै कुम्भार। अमावस री तातीला ने दोनू मिळ्या। गधों बोल्यो - 'मारे मौरां टाकी पड़गी। काढी बोळ्यौ - 'मारे खांदां मा टाकी पड़गी। गाबड़ दूखै। पांच-पांच घांणां कढ़ावै दन मा।' गधो बोल्यो - 'मारी तो कमर ई भागी परी। लाद लाद माटी नै मारो अळदावौ काढ दियौ। कांई करां ने कठै जावां। बळद (काठी)बोल्यौ - ' मुंडो लेने जावा परा। हालो आपा आडावळा मा। अर छेवट जाता रीया। बठै चारो सांवठौ, पाणी रा हडम्बा। खावै पींवै मौज करे।

अेक दन अेक न्हार देख्यौ। दोनू लुकग्या। वो जातो रीयो। पण व्हेम वळग्यौ, सो सल्ला करी क कदेई था माथै हमलो बोले तो म्हूं दड़ूकूला । गधो बोल्यो जे थारे साम्ही आवै तो म्हूं बोलूला - म्हूं मारू म्हूं मारू।' ठीक है। अेक दन जोग आयो इज। वाघ आय पूगो। काठी सांम्ही झंप्यौ। गधो कूक्यौ - 'म्हूं मारू, म्हूं मारू' अर न्हार रौ लारो कीधो। वाघ तैतीसा मनाया। पछै काठी ई लारे दौड्यौ।

धकै गियो वाघ तो अेक गमेती लीली लाकड़ी वाडतौ हो। न्हार घेबरायोरो बोल्यौ - 'भई मने बचाव, कोई बला लारे आवे है। गमेती वाघ नै ढीरां हेटे छपारियौ। लारे दोई वार चढ़िया आया इज अर पूछियौ क'न्हार देख्यौ क, वो बोल्यौ - 'अठै तो ना आयो।' यूं करने पिराण बचाविया। गधो नै बळद पाछा गिया परा।

न्हार ढीरा हेटू निकळ्यौ अर गरासिया ने कयौ गरासिया आ वात कनेई मत कीजै, मारो नाक कट जाई। गरायो वादो करयौ कै नीं कैवू। न्हार बोल्यौ - 'देख जे कयो तो म्हैं थनै खाय जाऊंला। गरासिया घेर गियो तो रोटा ई नीं खाय नै हंसे ई हंसे। सैंग पूछै कांई वात है क्यूं हंसो। पण वो वतावै नीं। घणी जेज नीं कयौ पण आखर सैंग वात मांडनै बताई दी। लारे पूठवाड़ वाघ सैंग वात सुण ली। वात सुणनै सैंग घर रा हंसिया नै ताळियां बजाई। न्हार रौ पांणी उतर ग्यौ क डूबोय दिया काळी धार। अनै न्हार नै काळ उपज्यौ। पाछो भाखर चढ़ग्यौ। परभाते गरासियो पाछो मगरा में गियो वठै पाछो न्हार मिळ्यौ। उण पूछ्यौ - 'मारी वात कड़नै ई वताड़ी तो नीं। गरासियो नटग्यौ पैली तो - पछै हाच बोल्यौ न्हार कह्यौ - 'थे मारो नाक वडायौ, थनै छोडू नीं। बेटो सगळा नै हंसाय हंसाय नै ताळियां बजाड़ी। गरायौ बोल्यौ 'म्हारे टांबर नैना है, साख काटणी है, खेत अवेरणा है। अै काम निवेड़ा दे, पछै खाय लीजै। घर आयनै सोच्यौ कांई इलाज करां। पछै अेक कुबद उपजी। वो गरासणी नै कयौ 'थूं कमर नै पगांमा घूंघरा बांधनै आइजे। म्हैं ने न्हार वातां करां जरै वजाइजै। दोनू बातां करता इज हा नै घूंघरा बाज्या इज न्हार पूछियौ - 'कांई है ?'

गरासियो कयौ - 'वो इज बळद आयो लागे। सो धांन रा खाखला में छपाड़ दियौ, पण पूछ बारे दिसती। गरासणी वल्रम सूं गोड माऊं पूछ बाड दी। बो दौड़्यौ पाछो मगरे। पण गराया ने तोई खतरो लागो। वो घरे आयने बारै हाथ ऊंचो माळौ मांड्यौ। वीं माथै गरासियो सौजवण साथै रेवे। न्हार जंगल रा सैंग जिनावरां नै भेळा करया। अर बोल्यौ अेक दूजा मातै चढनै ऊपरे माळा तक पूगणौ है। सगला सूं नीचे न्हार रीयो कै हेटे पड़ता ई हुं खाय जाऊ - गरासिया नै। अेक दूजा रे ऊपर चढ़ता ऊभा व्हेता थकां वीं माळा तंई पूगा। सगळा सूं ऊपर खरगोस हो। गरासियो जागतो रीयो, सावचेत हो। गरासियो बोल्यौ - 'लाइजे राड कवाड़ियो, सैंगा नीचे है बांडियो। न्हार हेटा सूं निकाळ नै न्हाटौ। बाकी सैं भदाभद-भदाभद पड़िया अर पाछो कदेई नीं आयो। पण शेरनी कैवती रैवती बांडिया पूछ कठै गमायौ।

होशियारी

एक बैल था। तेली घांणी से तेल निकालता था। दूसरा एक गधा था। उससे कुम्भार मिट्टी डालता था। अमावस्या की छुटी को दोनो मिले। गधे ने कहा - 'मेरी पीठ पर घाव पड़ गये है।' बैल बोला - 'मेरे कंधो में भी घाव पड़ गये है। गर्दन में दर्द है। दिनभर में पांच्च पांच घाणें तेली निकलवाता है।' गधा बोला - 'मेरी तो कमर टूट गई है। मिट्टी लाद लाद कर मेरी हालत खराब कर दी। क्या करे और कहाँ जाय।' बैल बोला - 'मुँह लेकर चले चलो कहीं। चलो अरावली पर्वत में चले और चले गये। वहाँ पर घास खूब था और पानी खूब था। खाते पीते और मस्त रहते।

एक दिन शेर को देखा। दोनो छिप गये। वो चला गया परन्तु शंका और भय हो गया। तब योजना बनाई कि यदि कभी तुझ पर आक्रमण करे तो मै जोर से दड़ूकूगा (रंभाऊंगा) गधा बोला यदि तुझ पर हमला करेगा तो में चिल्लाऊंगा - 'मै मारूंगा, मै मारूंगा इसे।' एक दिन संयोग से शेर आया। बैल पर झपटा तो गधा चिल्लाया - 'मै मारूंगा, मै मारूंगा इसको।' और शेर के पीछे दोड़ा। शेर ने देखा यह क्या बला है। और वह भाग छूटा। फिर तो बेल भी पीछे दौड़ा।

शेर आगे गया तो एक गरासिया हरि लकड़ी काट रहा था। शेर घबराया हुआ बोला - 'भाई मुझे बचा, मैं तेरी शरण में हूँ। गरासिये ने कांटों (पाइ) के नीचे छिपा दिया। उन्होने आकर पूछा कि तुमने इधर शेर को देखा है ? 'वो इधर तो नहीं आया।' यों कह कर शेर के प्राण बचाये। गधा और बैल वापस लौट गये।

शेर कांटो के नीचे से निकला और गरासिये को कहा कि यह बात किसी से कहना मत। यह जंगल के राजा की प्रतिष्ठा का प्रश्न है। मेरा नाक कट जायेगा। गरासिया ने किसीसे न कहने का वादा किया। शेर ने कहा - 'देख अगर किसी से कह दिया तो मैं तुझे

खा जऊँगा। गरासिया घर गया तो भोजन भी न कर सका और निरंतर हंसने लगा, पेट में बल पड़ गये। कारण पूछा तो बताया भी नहीं। काफी समय बीत गया। अंत मे सारी बात बता दी। शेर घर के पिछवाड़े सब सुन रहा था। बात सुन कर परिवार के सभी लोग हँसे, तालियाँ बजाई। शेर का पानी उतर गया, शर्मींदा हुआ और क्रोधित भी हुआ। वापस पहाडों-जंगलो में चला गया। प्रातः गरासिया पहाड़ में गया। उसने पूछा - 'मेरी बात किसीसे कही तो नहीं ? गरासिये ने मना किया फिर आखिर सच्च बोला। शेर ने कहा - तूने मेरा नाक कटवा दिया अब तुझे मै मारे बिना नहीं छोड़ूँगा। तूने मेरी हँसी उडाई, तालियां बजाई। गरासिया बोला -'मेरे बच्चे छोटे है, फसल काटनी है, यह सब निपट लूँ फिर खा लेना। घर आकर सोचा क्या किया जाय। फिर एक कुबुद्धि उपजी। उसने गरासनी (पत्नि) से कहा - 'तू पावों में और कमर में घुंघरू बांध कर आना। मै और शेर वार्तालाप करें तब बजाना, नाचना। जंगल में गये। शेर और गारसिया बातें कर ही रहे थे कि उसने छिप कर झाड़ियों में घुँघरू बजाये। शेर ने पूछा क्या है ? आवाज किस की है ? गरासिये ने कहा -'उसी बैल के गले के घुंघरू की आवाज है। वो आया लगता है। शेर अनाज के पुलाव (भूंसा) में छिप गया पर पूंछ बाहर रह गई। गरासनी ने भाले से जड़ सहित पूंछ काट दी, वो भाग छुटा। परन्तु गरासिये को खतरा बना रहा। घर जा कर बारह हाथ ऊंचा मचान बना कर रहने लगे। शेर ने सभी जानवरों को एकत्रित करके कहा कि एक दूसरे की पीठ पर चढ कर खडे हो कर मचान तक पहुँचना है। मैं भारी हूँ, सबसे नीचे रहूगा और गरासिये के नीचे गिरते ही खा जाऊँगा। इस प्रकार एक दूजे के ऊपर चढते हुए मचान तक पहुंच ही गये। सबसे उपर था खरगोश। गरासिया जग रहा था, सतर्क था, वह बोला - 'लाना मेरी कुल्हाडी। सबसे नीचे बूटिया है उसे आज मारना है। यह सुन कर शेर नीचे से निकल कर भाग छूटा। सभी नीचे गिर पड़े। फिर वापस कभी नहीं आया। पर शेरनी कहती रहती थी कि पूछ कैसे कटवाया?

~

स्याळ्यां री हुस्यारी

अेक वन मा साठ स्याळ्या रैवता। सगळा में अेको हो। सगळा सीमाड़ा भंमता फिरै। अेक राजाजी रौ हाथी ई जंगळ में छूटों भंमै। स्याळिया उणनै देख्यौ तो मुंडा मा पाणी आयो। विचार करयौ औ हाथी परे तो मीना भर रौ सन्नीणौ आपां रै व्है जाय। अेक योजना वणाई। हाथी सूं दोस्ती वणाई सियाळ भाई बोल्यौ - 'म्हारी नगरी मा राजा न है। आपने म्हां राजा बणावा।'हाथी बोल्यौ - 'ठीक है। मारी सेवा चाकरी कर सको तो राजा बण जाऊँ।' सियाल उड़ियौ जकौ खेता माऊँ चीबड़ा लाया, हाती रै मुंडा आगे मेलिया। हाथी ने मीठा नै सवाद लागा मजो आयो जबरो। दूजे दन मकिया लाया। मीठा मीठा

ठोक्या। तीजे दन साठा लाया। कोरो माल। साठा री हाथी सौकीन। खूब मजो आय गियो।

हाथी बोल्यो - वस्ती रा लोगा, मनै राजा थापन करो सो तो चौखो, पण वठै सैंग सगवड़ है कै ने।' सियाळ झूठ बोल्या - 'खूब साधन है। पांणी रा तळाव भरया। वड़ला री गैरी छीया। खावाने चीमड़ा, मकिया, साठा रा खेत, गैरी रूंखावली फेर काई चाइजे आपरे।' हाथी राजी बाजी उणारै साथै चाल्यौ। स्याळयां आगे नै हाथी पूठै पूठै। खूब ऊपर चढ़ायौ आगे ढाळ माथै काकर माथै कांकरां बिछाय दिया सो हाथीं रपटनै पड्यौ हेटो। वो गुड़ियो सो अेक किलो मीटर हेटे करार मा जाय फंस्यौ। स्याळया परिया माथै नै वाड वाड ने खावा ढूका। देखी क स्याळ भाई री चालाकी।

सियार की चालाकी

एक जंगल में साठ सियार रहते थे। सब मे बड़ी अेकता थी। ये सब पूरे जंगल मे चक्कर लगाते हुये घूमते रहते। उधर राजा का एक हाथी भी उस जंगल में स्वतंत्र घूमता-फिरता रहता। सियार ने उसे देखा तो मुँह मे पानी भर आया। सोचा यह हाथी मरे तो महिने भर का पोष्टिक भोजन का प्रबंध हो जाय। एक योजना बनाई। पहले तो हाथी से दोस्ती की। सियार बोले 'हमारी नगरी में राजा नहीं है। आपको हम राजा नियुक्त करना चाहते है।' हाथी बोला - 'ठीक है। मेरी सेवा सुश्रुशा कर सकते हो तो राजा बन जाऊँगा।' सियार दौड़े दौड़े गये सो खेतो से ककडियाँ आदि ले आये और हाथी के सामने रखे। हाथी को ककड़ियाँ बड़ी मीठी और स्वादिष्ट लगी। बिना परिश्रम के आनन्द आ गया। दूसरे दिन भुट्टे लेकर आये। वे भी अच्छे लगे। तीसरे दिन खूब गन्ने ले कर आये। ताजा तरावट वाला माल था। गन्नों का हाथी बड़ा शौकीन होता है। हाथी को आनन्द आ गया। वह सियारों पर बड़ा प्रसन्न हुआ।

हाथी बोला - ' बस्ती के लोगो ! मुझे राजा बना रहे हो सो तो ठीक है परन्तु मेरे लिये वहाँ ऐसे सब साधन है या नहीं ? सियार झूठ बोले - 'खूब साधन है राजन। पानी के तालाब भरे है। वट वृक्ष की सघन शीतल छाया है। खाने को ककडियाँ, भुट्टे, गन्ने आदि के विशाल खेत है फिर क्या चाहिए आपको ?' हाथी प्रसन्न होकर उनके साथ प्रस्थान कर गया। आगे आगे सियार, पीछे पीछे हाथी। उसे खूब ऊँचाइ पर ले गये। फिर पर्वत के चढाव पर कंकड़ बिछा रखे थे सो हाथी फिसल कर नीचे आ गिरा। एक किलोमीटर नीचे एक खड्डे में फंस गया। सियार तो सब इसी प्रतिक्षा में थे, नोंच नोंच कर खाने लगे। ऐसी चालीकी से सियार ने हाथी को मार दिया।



जीवतां न्हार रौ काळजौ

अेक स्यार-स्याळणी रौ जोड़ो वन में रैवतो। स्याळणी रो पग मारी हो अर पूरा दन जाय रीया हा। उण कियौ - ' मारे घर परो मांडो। जापो व्हैई तो बच्चां कठै राखूला। स्याळयौ बोल्यौ - काली वी है घर मांडण री जरूरत कोनी। वनराजा न्हार रौ घर आपणौ इज तो है। पूरा दन व्हिया नै स्याळणी न्हार री गप्पा मा ब्यायगी। स्यळयौ वींनै सिखाय दी कै म्हूं गप्पा रै ऊपरे बैठू हूं। न्हार ने आवतो देखूला जरै ऊपर सूं कांकरियो फेंकूला। जरै थूं बच्चोने छेड़ने च्याऊँ-म्याऊं कराइजे। जरे पछे म्हूं केहूला - 'अे कछभज री राणी नैना कंवरां नै क्यूं रोवाड़े है।' थूं पाछो कैइजे - 'कांई करूं सा, अै तो जीवता न्हार रा काळजा मांगे।' म्हूं पाछो कैऊला - 'बोचाली रे। न्हार ने न्हारणी दोनू आवै रीयै है।' आ इज वात व्हि। दोनू आया इज। न्हार आगे आगे हालतो हो। उण सुण लियो कै जीवतां न्हार रौ काळजो मांगे। वो तो वड़ला सांभी टळग्यौ। न्हारणी बोली - 'थे जंगळ रा राजा हो थारे घर में बडवा री कुण री हिम्मत। म्हूं जाऊं भाळे ने आऊँ। न्हार वड़ला हेटे बैठो है अर न्हारणी गप्पा कांनी गी। स्याळयौ कांकरो फेंकियौ। बच्चा चीं-चा अर च्याऊँ-म्याऊं करा लगा। ऊपर बैठो स्याळयौ बोल्यो - 'अरे कछभज री राणी नैना करवड़ा नै क्यूं रोवाड़े है।'वा बोली - 'अे तो जीवता न्हार रा काळजा मांगे, म्हूं कठा सूं लाऊं। वो बोल्यौ - 'न्हारणी आवै है मौको ठीक है, काळजो लाऊं हूं।' न्हारणी सुणता ई पाछी फिरी अर वड़ळा कांनी दौड़ी। वठै जाय झटपट सला करनै दोई दूजा वन मा जाता रीया।

दोनू जंगळ में झाड़का हेटे बैठा हा। वांदरो सैं खलको देख्यौ हो सो बोल्यौ - राजाजी अठै कीकर बिराज्या। न्हार सांची वात वताय दी कै मारा घर में जन्द वळियौ अर कब्जो कर दियो सो अठै बारे डेरा दीधा है। वांदरो भेद खोलतो थको बोल्यो - 'वठै तो स्याळणी ब्यायी है।' वाघ बोल्यो - 'ठीक तो आपां दोनू चाला।' न्हारणी बरजे के मती जावो, मानो कैणी।' पण नीं मान्यौ। न्हार आगे जावतां बोल्यौ - 'वांदरा यू तो फदाक मारने चढ जाई पण म्हूं कठै जाऊं ? वांदरो बोल्यो - 'तो दोनू रा पूछड़ा बांध लो। दोनू जोर कराला तो ऊपर चढ जावला।' दोनू आपरा पूछ आपसरी मा बांध लिया। नेड़ा देखने स्याळयो कांकरिया न्हारव्यौं अर बचियां च्याऊं-म्याऊं करण लागा। स्याळयो कह्यौ - 'अरे कछ भज री राणी कवरड़ा ने क्यूं रोवाडे।' जद वा बोली - 'कांई करूं अे जीवता न्हार रो काळजो मांगे है। कठा सूं देवू।' स्याळयो पडुत्तर दियो - 'न्हार ने वांदरो दोन्यूं पूछ बांध्या आवै है, ठहर, दोनू भेला इज लाऊं। सुणता ई वांदरो कूदने रूंखडा रे डाळा झूब्यौ। झटका सूं न्हार रो पूछ गोडे माऊं निकळग्यौ अर न्हार ई भाग छूटो। पाछो ग्यौ जरा न्हारणी पूछयौ - वन रा राजा पूछ कठै गमायो।'

जीवित शेर का कलेजा

एक सियार-सियारनी दम्पति जंगल में रहते थे। सियालनी गर्भवती थी और बच्चों को जन्म देनेवाली थी इसलिये उसने कहा - 'मेरे लिये प्रस्तुति गृह' का निर्माण करो। मैं बच्चे कहाँ दूंगी।' सियार बोला - 'पगली हुई है, घर बनाने की क्या आवश्यकता है ? शेर की गुफा अपनी ही तो है। अेक दिन शेर की माद में उसने बच्चों को जन्म दिया। सियार ने उसे सिखा दिया कि मैं गुफा की छत पर बैठता हूँ। शेर को आता देखूगा तब ऊपर से कंकड़ फेंकूगा। तब तू बच्चों को छेडना और च्याउं-म्याउं (रोना) कराना।' फिर मै कहूंगा - 'ओ कच्छभूज की रानी कुंवर कन्हैयों को क्यों रूलाती है।'तू वापस जवाब देना -'क्या करूं ये तो जीवित शेर का कलेजा मांग रहे है।' तब मैं कहूँगा - ' चुप रह शेर-शेरनी आ रहे है। अभी कलेजा लाता हूं।' और यही बात हुई। शेर आगे आ रहा था उसने यह सुन लिया कि मेरा कलेजा मांगा जा रहा है। वह गुफा का रास्ता छोड कर वट वृक्ष की ओर मुड़ गया। शेरनी गुर्राती बोली - 'तुम जंगल के राजा हो। तुम्हारी माद में घुसने की किस की हिम्मत। मै जाती हूँ, देख कर आती हूँ। शेर वट के तले बैठा है। शेरनी गुफा की और बढी। सियार ने कंकड़ फेंका। बच्चे चिल्लाने लगे, 'च्याऊं-म्याऊं' करने लगे। सियार बोला - 'अरे कच्छभूज की रानी कुवरों को क्यों रूलाती है ?' वो बोली - 'क्या करूं ये तो जीवित शेर का कलेजा मांग रहे है।' सियार बोला - ' चुप रह शेरनी इधर आ रही है, मौका ठीक है कलेजा ला रहा हूँ।' शेरनी वपस मुड़ कर वट की ओर दौड़ी और वहाँ से सलाह करके अन्य वन को गमन किया।

दोनो जंगल में वृक्ष तले बैठे थे। बंदर ने यह सब नाटक देखा था इसलिये पूछा - 'वनराज ! यहाँ उदास कैसे बैठे हो ? शेर ने सच्ची बात बता दी कि मेरे माद पर किसी जिन्द ने कब्जा कर दिया है इसलिये बाहर डेरा दिया है। बंदर ने रहस्य खोलते बताया - 'वहाँ तो सियारनी ने बच्चे दिये है।' शेर बोला - 'ठीक तो हम दोनो वहाँ वापस चले।' शेरनी ने मना किया कि तुम्हारा जाना उचित नहीं, मेरा कहना मानो।' पर नही माने और गये। आगे रास्ते चलते शेर ने कहा - 'बंदर ! तू तो छलांग लगाकर ऊपर चढ़ जायेगा पर मै कैसे जाऊंगा ? बंदर बोला - 'हम दोनो आपस में दोनो की पूछें बांध लेते है। दोनो ताकत लगायेगे तो ऊपर चढ सकेगे। दोने ने पूछें बांध कर गांठ लगा दी।

इन दोनो को निकट आते देख कर सियार ने ऊपर से कंकड़ फेंका तो बच्चे 'च्याउं-म्याऊं' करने लगे। सियार बोला - 'अरे कच्छभुज की रानी कुंवरों को क्यों रूला रही है?' तब उसने उत्तर दिया - ' क्या करू ये तो जीवित शेर का कलेजा मांगते है, कहाँ से दू।'

सियारने उत्तर दिया - 'चुप रह, शेर और बंदर दोनो पूंछ बांध कर आ रहे है। ठहर, दोनो को साथ ही लाता हूँ।' यह सुनते ही बंदर कूदा और झटके से शेर की पूछ जड़ से टूट गई। शेर भी भाग छूटा वापस लौटा - तब शेरनी ने पूछा - 'वनराज ! पूंछ कहाँ खोकर आये ?'



मगर अर नौळियौ

तीन दोस्त हेता - जंगळी कूकडो, नौळीयौ ने मगर। नौळीयौ अर कूकड़ौ तो बोर चोभिया। मगर तलाव री कोर चोभियो धराव रौ हाडकू। बोल्यो - 'हाडका रो रूंख बणेला, हाडका लागेला। वींने पांणी पावै अर दोस्तां बोर वाया उणरी जड़ा मा पेसाब करे। हाडकारे औले दौळे कुम्भारियौ घास अर आंधी झाड़ो ऊगो। मगर बोल्यो - 'मारे तो हाडका रे भूंगा फूटा, ऊगे है। पड़ियौ पड़ियौ सींगड़ो ई जडां मेले। थोड़ा दम सूं कुम्भारियो घास अर आंधी झाडो तो बळबळाय ग्यौ। सूख सुखाय गियो। नौळीया नै कूकड़ा रै बोरड़ी मोटी व्हि। मीठा बोर लागा। बोर खायनै कळियां नीचे न्हाखै। मगर कळिया चाख्या तो मीठा लागा जरै वो बोल्यो - 'दोस्तो ! थांरी भौजाई रे थोड़ा बोर देवो तो ले जाऊं। उण मंगाया है। उणा थोडाक दे दिया अर मगर ले ग्यो। मगरणी बोली - 'बोर अैडा मीठा है तो देवरजी रो काळजो कैडो मीठो व्हेला। देवरजी ने लावो, मूं वारो काळजो खाऊं। नीतर थारो घर भांगने दूजा मगर रे लारे जाऊं। मगर मै'णत करी, दरीया ती बारे आयो क थने भौजाई मळवाने बळावे। नौळीया ने पटायो। नौळीयौ बोलीयौ - 'भई, थू तो रेवै पांणी मा, मूं जंगल रो जीव। केर बेर रो संग कीकर निभै। तो पण पाटापोटो करने नैळीया ने मौरां माथै बैठायनै लेग्यो। गप्पा रे बारे बैठायो। मगर गप्पा मा गियो। मगरणी कयौ - 'छुरी भाळो, नौळीया रो काळजो काढो सो खाऊं। नौळीयो सुण लीयो। मगर काळजो काढारी वात करी जरे नौळीयो बोल्यो - पैली कैवणो हो। काळजो तो खाखरा माथे बारे मेलने आयो हूं। खांखरा पर केसरिया केवळो फूल्योड़ो बतायो। पांणी मे गळा रौ व्हेम व्हियो सो अठे मेलीयो। देख कोई पंखेरू खाई जाई बेगो चाल। मगरणी बोली दौड़ो फुरती करो। दरीया बारे निकळ्या नौळीयो बोल्यो - 'थू तो मगरणी इज री, काळजो कांई बारे मेळीजे । काळजा बना कांई जीवीजे ?

मगर हाथ मोळतो पाछो गियो। मगरणी कयौ - 'कीकर ई लावो नीतर घर भांगू। नौळीयो तळाव रे किनारे पांणी पीवा ने आवतो। ताको राकने अठे अपड़ियौ, नौळिया देख्यौ ठीक मौको पीदो है। वे तळाव मा धोळआ पोतीया वाळा ने धोला घोडा पर बैठा मारा मामा आवे है। (धवळा फूलां रो कचाळो बतायो, हवा सूं घास अठी उठी हालती।)

मगर डरप्यौ अर भाग गियो। पछे पतो काढ़ियो के ओ रातरा सूवे कठै है ? पतो लागो के मार्‌यौड़ा ऊंट रे भराखड़ा (अस्थिपिंजर) मा बळै ने सूवै। मगर पैली आयने मा बड़गयो। नवळियो आयो तो उणने व्हैम हुयो। मगर रा पग मंडिया हा। वो बोलियो - 'रोज तो ऊंईड़ा घर्‌र घर्‌र बोले ने आज क्यूं नी बोले। न बोले तो जाऊं।' छेवट भूं भूं भूं बोलतो थको खर खर नख वजाड़िया। मेगर रा पेग ई दीस्या। वारे मगरीया, मरयोड़ा ई कदेई बोले अर भाखर चढग्यौ। अेक दन मगर रेत में सूई ग्यौ पसरने अर मगरनी रोवै - देवरजी आवो थारा भाई मरे गिया खाडो खोदने गाडो। नौळियो बोल्यो - 'मरयौडा री चिटुडी आंगळी हाले। मगर आंगळी हलाई। नै भेद खुलग्यौ।

मगरमच्छ और नेवळा

तीन दोस्त थे - जंगली मुर्गा, नेवला और मगरमच्छ। नेवला और मुर्गे ने तो बेरड़ी (बोरटी) बोई। मगर ने तालाब किनारे पशु की हडडी बोई। बोला -'हड्डी का वृक्ष बनेगा खूब हड्डिया लगेगी। उसे पानी पिलाता और बोरड़ी की जड़ो में जा कर पिशाब करता। हड्डी के आसपास कुम्भारिया घास और औगा उग आया। मगर बोला - 'हड्डी के अंकुर फूटे है। पड़ा पड़ा तो सींग भी जड़े छोड देता है। थोड़े दिनो में घास और औमा तो जल गया, सूख गया। उधर बोरड़ी बड़ी हुई। मीठे बोर लगे। वे बोर खा कर गुटलियां नीचे फेंकते। मगर ने गुटलियाँ चखी तो मीठी लगी। तब वह बोला - ' मित्रो ! तेरी भाभी के कुछ बेर दे तो ले जाऊँ। उसने मंगये है। उन्होने कुछ बेर दे दिये। मगर ले गया। मगरणी बोली - 'बोर ऐसे मीठे है तो फिर देवरजी का कलेजा कैसा मीठा होगा। उनको किसी प्रकार यहाँ ले आओ। उनका कलेजा खाऊंगी। नहीं लाये तो दूसरे मगर के साथ चली जाऊंगी। तुम्हारे घर में नहीं रहूंगी। मगर ने पूरी कोशीश की। नेवले से कहा - 'भाई तेरी भाभी ने तुझे बुलाया है। नेवले को किसी प्रकार राजी किया। नेवला बोला - 'तू तो जल का जीव है मै जंगल का प्राणी। केर बेर का संग कैसे निभे ? फिर भी किसी प्रकार समझा बुझा कर अपनी पीठ पर बैठाया और ले ही गया। गुफा के बाहर टीले पर बैठाया और स्वयं अन्दर गया। मगरनी ने कहा - वो छुरी ढूढो, नेवले का कलेजा निकालो सो खाऊं। नेवला ने सुण लिया। बोला - 'कलेजा तो मैं पलाश के वृक्ष पर रख कर आया और पलाश के लाल फूल बताये। पानी में गल जाने का संदेह था इसलिये वहाँ रख कर आया। शीघ्र चलो वरना कोई पक्षी नहीं खा जाय। मगरनी भी बोली जाओ फुर्ती करो। तालाब के बाहर निकल कर नेवला बोला - ' तू तो भोला मगरीया ही रहा। कलेजा कभी बाहर रखा जाता है ? कलेजे के बिना कोई जीवित रह सकता है ?

वापस घर आया तो मगरनी ने वही बात दोहराई कि मुझे तो हर हालत में उसका

कलेजा चाहिए। नेवला तालाब के किनारे पानी पीने आता था। वहाँ मोर्चा ले कर उसे पकड़ा। नेवला बोला - ठीक संयोग बना है। वे सफेद घोड़े पे सफेद साफा बांधे मेरे मामा आ ही रहे है जो सफेद फूल थे। मगर डरा और भागा। फिर पता किया कि रात को नेवला मरे हुए ऊँट के अस्थिपिंजर में घुसकर सोता है। मगर पहले जा कर उसमें घुस गया। नेवला आया तो उसे संदेह हुआ। मगर के पांवो के भी चिन्ह अंकित थे। नेवला बोला - 'रोज तो ऊंट तू घर्र घर्र बोलता है, आज कैसे नही बोल रहा ? खैर नहीं बोलता है तो चला जाता हूँ।' अंत में भूं-भूं-भूं बोलता हुआ खर-खर-खर नाखून बजाये। मगर के पांव भी आंशिक रूपसे दिखाई दिये। नेवला ने चुटकी ली - 'वाह रे मगरिया ! मरे हुए भी कभी बोलते है क्या?' और पहाड़ पर चढ गया। अेक दिन मगर पसर कर गर्म गर्म बालू पर सो गया और मगरनी रोने लगी और देवरजी को पुकारने लगी। 'देवरजी आओ, तुम्हारा भाई मर गया। खड्डा खोद कर गाड़ दो। नेवला बोला - 'मरे हुए की ऊंगली हिलती रहती है।' मगरने ऊँगली हिलाई। नेवला दूर ही खड़ा था बोला - 'मरे हुए की ऊंगली हिलती है क्या ? भेद खुल गया।



चिटोकरी चिमी

माळवा री पाळ पर अेक बाइडी रैती। नांव हो चिमी। वा हरदम कीं ने कीं चरती रै ती। घणी चिटोकरी। उणरे सात टाबर नैना मोटा। सात्यूं रा नांव संख्या परवाणै, सैंगा मोटा रौ नांव 'एक', सै सूं नैना रौ नांव 'सात'। चिमी रे घरधणी रो नांव चीमो। वो घणो चोखो, भलो अर मैणती। पण वो जको कमाई करतो चिमी ने लाय सूपतो।

चिमी रोज रोज माल मसाला छाने चुरके बणा'र खावै। चीमा रो हाथ तंग में आय गियो। वो समझ गियो क भूख कीकर आई और भीड़ मा क्यूं आयो ? चिमी घणी चतर। वो घर मा ने व्हेतो जरा खीर, पुरी, सीरो, मालपुआ आद बणाय खावती। धाप ने चूंच व्है जाती। वा दन दन मच्या जावै। बुक्कड़ फाटे। चीमो चिन्ता फिकर सूं दन दन थाकतो जाय। सुखने खेलड़ो व्हेग्यौ। मेकी रो रोटो ने लीली मिरच के कांदो वीं रै पोती आवतो। छेवट आंती आय गियो अर फोड़ने चखाय इज दियो - 'चिमी थांरी जीभ चिटोकरी व्हेगी पण थूं अबै मान जा, नीतर घेर री हालत खराब व्हेला।' वा बोली - 'थे दो च्यार रिपिया तो रोज कमायने लावो। कमाई तो करो कोनी अर मोनू चट्टू बतावो। माथै मूंघीवाड़ो कितौ। घर रो टबारो कीकर चाले झर चिमी हुचक्या भरने रोवा लागी। अर कयौ - 'थे

ई मारू अभरोसो करो तो भरोसो कुण करेला। थां सूं अर टाबरां सूं मू दुभांत कीकर राख सकू। अबै मारा सूं बोलजो मत।'

चीमो तो तिरीया चरित जाणतो हो। डोकरी केई डोफा देख्या। जाणतो हो के आ ढबला करे, फितूर करे है। उण तेवड़ली इणने हाथो हाथ अपड़या ई छूटको। वींनि ई कुबुध उपजी अर थोड़ा दन आढा पढ़ण देयने अेक दन घोळ गूंथ्यौ ने बोल्यौ - 'चिमी मूं मजूरी खातर सै'र जाऊं, थोड़ा दना सूं आऊला। टाबरियां री ध्यान राखजे अर थूं आलतू-फालतू खरचो मत करजे।' चिमी मन मा राजी व्ही कै अबै मांल-मलीन्दा नैहछा सूं खावालां।

चीमियो किणरी सै'र जावै। डागळै मेड़ी माथै जायनै लुकग्यौ अर छाने मानै निगे राखतो रयौ। रात व्ही ने छोरा-छापरां नै तो सुवाय दिया अर खुद रसोई में जायने मालूपूआं कादा ढूकी। 'छम्मम-छम्मम' री आवाज रे समचे अेक टाबर जाग गियो। सुगंध आई। वो रसोई मा जाय धमक्यौ। मां बोली - 'थू कठै जाग गियो बेरी।' ले खायने पाछौ सूई जा। बापा आवे तो कीजै मतना कै मालपूआ खादा।'

वा अेक कवो कियो ने चीमो परगट व्हियो। वींने देखता ई चीमी रो मुंडो थाप खाय ग्यौ। सपड़ीजगी अर चोरी अपड़ीजगी। वा बोली टाबर मालूपूआं - मालूपीआं करता हां, हट ले राखी ही सो बणावणा पड़िया। आप इता बेगा कीकर आयग्या। वो बोल्यो - 'गियो कुण हो ? डागळे बैठो नाटक देखतो हो। चिमी तो चुप्प, बोली - 'चीमा मोनू माफ करू।'

चट्टू चिमी

मालवे की पाल पर एक औरत रहती थी। नाम था चिमी। वह हमेशा कुछ न कुछ खाती ही रहती थी। मुँह चलाता ही रहता। बड़ी चट्टु थी। उसे सात संताने थी। सातों के नाम संख्या के अनुसार दिये हुए थे। सबसे बड़े का नाम था 'एक' और सबसे छोटे का नाम था 'सात '। चिमी के पति का नाम चीमो। वो बहुत अच्छा, भला और परिश्रमी व्यक्ति। वो जो कुछ कमाता था वह चिमी को लाकर सौपता।

चिमी हमेशा चुपके छिपे माल मसाले बना कर खाती थी। चीमा की आर्थिक स्थिति बिगड़ती गई। वो समझ रहा था की गरीबी क्यों व कैसे आई ? चिमी बड़ी चतुर और चालाक थी। जब चीमा घर में नही होता तब खीर, पुडी, सीरा, मालपुआ बना कर डट कर खाती। दिन दिन मोटी होती जाती थी और चीमा सूखता जा रहा था, चिंता से दुबला होता जा रहा था। आखिर तंग आकर खरी खरी सुनाई - 'चिमी, तेरी जीभ चिटोकरी हो गई है। अब तू मान जा, नही तो घर की स्थिति खराब हो रही है।' वो बोली- 'तुम दो-

चार रूपये तो रोज कमाते हो। खाने वाले कितने ? मंहगाई कितनी ? घर का खर्च कैसे चलाना ? मेरा जी जानता है।' और चिमी हुचक हुचक कर रोने लगी, बोली - 'तुम भी मुझ पर अविश्वास करते हो ? तुम्हारे से और बच्चों से मै भेदभाव कैसे रख सकती हूँ। तो अब तुम मेरे से बोलना मत।'

चीमा स्त्री चरित जानता था। यह नाटक कर रही है। उसने निर्णय कर लिया कि इसे रंगे हाथो पकडना ही पड़ेगा। एक दिन बोला - 'चीमी मैं मजदूरी के लिये शहर जा रहा हूं। थोड़े दिन बाद लोटूंगा। बच्चों का ध्यान रखना और व्यर्थ खर्च मत करना। चिमी मन ही मन प्रसन्न हुई कि अब शांति से माल खाऊंगी। चीमा शहर नही गया और छत पर छिप गया। सब कुछ देख रहा था। रातको बच्चों को सुलाकर रसोई में जा कर मालपूअे बनाने लगी। 'छम्मम्-छम्मम्' की आवाज के साथ एक बच्चे की नींद खुल गई। सुगंध आई तो वो रसोई में पहुंच गया। मां बोली - ' तू कैसे जाग गया, दुश्मन। ले खा और जा वापस सो जा। पापा आवै तो कहना मत कि मालपूयें बनायें थे।

वह खाने बैठी ही थी कि चिमा सामने आकर खड़ा हो गया। वह बोली - 'बच्चे मालपूआं, मालपूआं कर रहे थे। हठ ले रखी थी सो बनाने पड़े। आप इतनी जल्दी कैसे आ गये। वो बोला - 'गया कौन था ? छत पर बैठा तेरा सारा नाटक देख रहा था।' चिमी अब चुप्प हो गई फिर बोली - ' चिमा मुझे माफ कर दो।'



भीले री भगति

'गुरु द्रुह' नांव रौ अेक भीलड़ो हो। पाप करमां मां काळिज्यौड़ो। कोई धरम-करम के सुभ काम वींरे हाथां सूं कोनी कीधो। सिवरत ने कबीला रे पेट भराई सारू सिकार निसरयौ। जंगळ में गियो। बिल्ला रै झाड़ पर सिकार री फिराक मा लुकने बैठो। खरी मीट सूं सिकार रो ताको राखै।

रातरा पैला पौर मा अेक हिरणी पांणी पीवा आई। तीर कबाण ताणती दांण पत्ता खडबडिज्यां जिणसु पत्ता खिरने नीचे पड़या। पत्ता माथै बिरखा री छांटां पड़ी। हेटे अेक सिवलिंग हो। सो बिरखा री बूंद समेत 'बिल्व पत्र' सतायोग सूं सिवलिंग पर चढग्या। सिवरात रे पैली पौर में जळ रै 'अभिषेक' रै साथै 'बिल्वपत्र' सत्ताजोग सूं सिवलिंग पर चढ्या। भोळे संभु इणने पैली पूजा मांन ली। भील दिन भर भूखो हो सो उणने सिवरात रो वरत मान लियो।

थोड़ीक जेज सूं दूजी हिरणी आई। पैला ज्यूंज बिले रा पानां फेर जळ साथै जाय पडया

सिवलिंग माथै। तीजे पौ'र फेर हिरण आयो अर इण इज भांत तीजी पूजा व्ही। भील रा सगळा पाप धुपग्या अर भोलेनाथ परगट व्हैने दरसण दिया। उणनै दिव्य दृष्टि मिलगी। मनोदरी फिरगी। भील री मुगति व्हैगी।

भीलो की भक्ति

गुरुद्रोह नामका एक भील था। अनेक पाप कर्मो में फंसा था। कोई धर्म कर्म अथवा शुभ काम उसके हाथ से नहीं हुआ। शिवरात्रि को परिवार के भरण पोषण हेतु शिकार निकला। जंगल में गया। बिल्व वृक्ष पर शिकार की ताक में छिप कर बैठा। टकटकी लगाये शिकार की ताक में था।

रात्रि की प्रथम प्रहर में एक हिरणी पानी पीने को आई। धनुष बाण संभालते समय, हिलने डुलने से वर्षा की बूंदो सहित वल्व पत्र संयोग से नीचे शिव लिंग पर जा गिरे। भगवान शिव ने शिवरात्रि के प्रथम प्रहर की पूजा मान ली। भील दिन भर से भूखा था इसलिये भगवान ने शिवरात्रि का उपवास मान लिया।

थोडी देर बाद दूसरी हिरणी आई। पहले की भांति इस बार भी बूंदे ओर बिल्व पत्रं शिवलिंग पर चढे। इसे भी द्वितीय प्रहर में होने वाली दूसरी पूजा मानी। तीसरे प्रहर फिर हिरण आया और उक्त प्रकार से तीसरी पूजा भी संयोग से सम्पन्न हो गई। महा शिवरात्रि को मंदिरों मे इसी प्रकार प्रत्येक प्रहर मे पूजा होती है। भील के सभी पाप धुल गये और भोले नाथ ने प्रकट हो कर दर्शन दिये। उसे दिव्य दृष्टि मिली। बुद्धि की शुद्धि हो गई। भील को मोक्ष मिल गया।



मरियौ हाथी मुहडै बोले

एक राजा री लाडकी हाथी मारग्यौ। गांम ती बारै बगाय दियौ। फिरतौ फिरतौ आवो रे परो वठै एक स्याळ भई। हाथी ने खावणा ने मन टबळक्यौ, मी'ना छहेकरी सळ हो। पण चाबड़ी इत्तरी जाडी कै तोड़ नीं हकै, खाय नीं हकै, सो लारा सूं बैक रै मारग बड़ग्यौ पेट मा। कूतरा आवणा इज हा, वे आय पूगा। कूतरा भसवा ढूका अर स्याळ मांय रोकीज्यौड़ौ। चाबड़ी सूखने करड़ी पड़गी, बैक संकड़ीजगी। स्याळियौ मांय सेठौ व्हैग्यौ। दो तीन देन निकळ्या पछै अेक देन राजा री कांमदार जंगळ (संडास) आयौ। वन मांऊ उठी कर निकळ्यौ। वो हाथी कने आयनै बोल्यौ - 'वाह रे हाथी भाई वाह! थू जीवतो जितरे म्हारा

टाबर ई सोरा हा अर राजाजी रा कंवरड़ा ई सोरा हा'। जित्तेक तो माऊं स्याळ भाई कूक्यौ - 'कुणं व्हैई भई?' 'म्हूं तो ठिकाणा रौ कांमदार हूं।' 'आप राजाजी ने कीजौ क मरियौ हाथी मुहडै बोल्यौ। अठै लाख दो लाख रौ काम कोनी। दो तीनेक तिला रे तेल रा डब्बा मंगायनै म्हारा सगळा डीळ रै खूब मसळौ तो म्हूं पाछो संदूरौ व्हनै ऊभो व्है हकू अर रावळै पाछो हाजर व्है जाऊं?' कांमदार म्हैल मांय जाय समचौ कर्‌यौ अर अरज करी - 'अन्नदाता! मरियौ हाथी मुहडै बोल्यौ है। कह्यौक - 'दो च्यार तिला रे तेल रा डब्बा डीळ रै मोळावणा है। हाथी ऊभौ व्है जाई, रावळै हाजर व्है जाई।' राजाजी बोल्या तीन कांई पांच ले जावो अर करो तरमतर।' दो दिन मोकळौ मसळ्यौ। स्याळ्यौ बोल्यौ - 'अहम्मै सैंग आगा व्है जावो, मरियौ हाथी खुली छापर मा दौड़ैला। सगळा छेटी व्हैग्या। स्याळ्यौ तो बार निकळ नै साढ़ीबारै। बोल्यौ - 'मोटा रा ढेका में कोई मति बड़जौ।'

मरा हुआ हाथी मुँह से बोला

एक राजा का प्यारा हाथी मर गया। शव गाँव के बाहर फेंक दिया। एक सियार घूमता-घूमता वहाँ आ पहुंचा। वह हाथी को खाना चाहता था। मुँह में पानी आ गया। छः माह का भोजनं था परन्तु चमड़ी मोटी थी, उसे चीर कर अंदर से मास खाना संभव नहीं था। अतः पीछे से गुदा द्वार से पेट में घुस गया। प्रातः कुत्ते वहाँ पहुँच गये, वे भोंकने लगे। सियार अंदर फंसा पड़ा था, चमड़ी सूख गई। गुदा सकुचा गई। सुकड़ गई। एक दिन राजा का मंत्री उधर पाखाना जाने को आया। हाथी के पास आ कर कहने लगा - 'वाह रे हाथी भाई वाह! तू जीवित था तब मेरे बच्चे और राजाजी के कुँवर दोनो सुखी थे। इतने में तो अंदर से सियार बोला - 'कोन हो तुम?' 'मै राजा का मंत्री हूँ।' 'आप राजा से कहो कि यहाँ लाखो की जरूरत नहीं है। केवल दो तीन तेल के डिब्बे भेज दे और मेरी खूब मालिश करे तो मै खड़ा हो सकता हूँ। स्वयं चल कर किले में पहुंच जाऊँगा।' मंत्री ने राजा को निवेदन किया कि - 'श्रीमान मरा हुआ हाथी मुँह से बोल कर तीन तेल के डिब्बों से मालिस करने का कहा है। हाथी चल कर स्वयं यहाँ आ जायेगा।' राजा ने कहा 'तीन क्यां पांच डिब्बे ले जाओ, करो मालिश।' दो दिन खूब मालिश करवाई गई। गुदा की चमड़ी नरम पड़ गई तब अंदर से सियार बोला - 'अब' सब दूर हट जाओ। मै मैदान में दौड़ लगाऊंगा।' सब दूर हट गये। सियार बाहर निकल कर भाग छूटा और बोला - 'बड़ो की गुदा में कोई मत घुसना।'

लूंकी री दोस्ती

अेक दन वनराज न्हार अेक गरासिया रै बाप नै मारनै गटकाय गियो। बेटा नै समीचार व्हिया तो वो घणौ दखी व्हियौ अर न्हार ने मारण री 'प्रण' कीधौ। जठा तांई नीं मारै वठा तांई मीठो खावण रौ खण लीधौ। वो रोज निवोर री खड़ तीर कामठो ताण्योड़ो बैठो रेवै अर न्हार नै उडीकतौ रयौ। वठै दूजा जिनावरियां ई पांणी पीवानै आवता पण वो कुणनै ई पाणी नीं पीवण दैवतो। न्हार नै ई आ भणक पड़गी, इण वास्तै वो मांद बारे इज नीं आवतो।

अेक दन समाजोग सूं आवो रे परी लूंकी। वा बोली - 'भई थू घणौ रीस मे लखावै। पण रीस है किण वातरी। वतावै तो ठाह पडै अर कीं इमदाद देय सकूं, तो देवूं।

न्हार बोल्यौ - 'लूंकी राणी ! न्हार मारा बाप नै मार्‌यौ, सो मूं वीनै मार्‌या छूटको लेवूं।'

'देख भई ! न्हार नै मारणौ खावा रौ कांम कोनी। वो आजकाल मांद मांय इज रैवै। मूं वीनै अठा तांई लावणनै खपूला। पण लाया पछै छोडजे मत ना'

'थूं मारो ओ कांम काढ दे तो जिंदगी भर थारो अहसाण नीं भूलूला।'

'खाली अहसाण-वैसाहण सूं काम कोनी चाले। मन्ने कांई फायदो। बताव थूं मन्ने कांई दैवेला।'

'मूं रोज थनै मीठा बोर खवाड़ूला।'

लूंकी राजी व्हैगी। न्हार री गुफा मांय गी। पूंछड़ी हिलावतां थकी बोली - वनराज ! आप इत्ता मोटा जंगळ रा राजा अेक मामूली मिनख सूं कांई डरो। आ तो आपने सोभा कोनी देवै। मर डूबा री वात है अर वो आदिवासी तो आंख्यां सूं आंधौ न्यारो है। मूं आपरा वखाण करया तो मुंडा मांऊ आवे ज्यूं अर खावै ज्यूं बोल्यौ, अर कैवै क न्हार तो कायर है मांरा सूं डरतो पोठा करै। वो सेर है पण मूं सवा सेर हूं।

लूंकी री बात सुणतां पाण न्हार ने रीस आवणी इज ही। निवोर री खड़ जाय दडूक्यौ। आदिवासी तो वाट जोवतो इज हो। आंधा रै आंख इज जोइजती। तीर खैच्यौ अर ठौक्यौ निसाणौ। वो जैरीळौ तीर न्हार रै काळजे लागो अर दूजौ मुंडा मांय। न्हार तो पलक झपंता व्हैग्यौ ठंडो। आदिवासी रौ प्रण पूरो थयौ।

वादा मुजब आदिवासी लूंकी नै रोज बोर खवडावतौ। आज ई भील अर गरासियां रै लूंकी सूं गाढ़ा हेत। अै लोग आज ई लूंकी नै कोनी मारे।

लोमडी की मित्रता

एक दिन जंगल का राजा शेर एक आदिवासी के पिता को मार डाला। उसके पुत्र को पता चला तो वह बहुत दुःखी हुआ और शेर को मारने की प्रतिज्ञा कर ली। जहाँ तक नही मारेगा वहाँ तक नमक न खानेका संकल्प लिया। वह हमेशा नदी तट पर धनुष बाण ले कर बैठा रहता था और शेर की प्रतीक्षा करता रहता था। वहाँ दूसरे जानवर भी पानी पीने आते पर वह किसीको पानी नहीं पीने देता। शेर को यह पता चल गया था इसलिये वह गुफा से बाहर ही नहीं निकल रहा था।

एक दिन संयोग से लोमड़ी आई और बोली - 'भई तुम क्रोधित लगते हो पर क्रोध किस बात का है ? बताओ तो पता चले और कुछ मदद कर सकू ।'

'लोमड़ी रानी ! शेर ने मेरे बाप को मारा है। मै उसे मार कर ही दम लूंगा। - वो बोला,

'देख भाई ! शेर को मरना हंसी खेल नही है। वह भी आजकल गुफा में ही रहता है। मै उसे यहाँ तक लाने का प्रयास करूंगी। पर लाने के बाद छोडना मत, वरना मेरे मुश्किल हो जायेगी।' 'तू मेरा यह काम कर दे नो अहसान नही भूलूगा।' 'खाली अहसान-वेहसान से कोई मतलब नही। तू मुझे क्या देगा ? 'मै तुझे रोज मीठे बोर खिलाऊंगा।' लोमडी प्रसन्न हो गई वह शेर की गुफा मे गई और पूछ हिलाती हुई बोली - ' वनराज ! आप इतने विशाल जंगल मे राजा है और एक साधारण व्यक्ति से क्या डरते हो? यह तो आपको शोभा नही देता। यह तो मर डूबने की बात है और वह आदिवासी तो आँखो से अंधा अलग है। मैने आप की तारीफ की तो वह मुँह में जो आवै गालियाँ बोल रहा था और कहता है - 'शेर तो कायर है, मेरे से डरता है।' मेरे से तो सुना नही गया कि आपके लिये इस प्रकार बकता है।

लोमड़ी की बात सुनते ही शेर को क्रोध आना स्वाभाविक था और तत्काल नदी के किनारे जा कर दहाड़ा! आदिवासी तो प्रतीक्षा कर ही रहा था। अंधे को तो आँख ही चाहिए। घर बैठं गंगा आई। खींचा तीर और लगा निशाना। वो विषैला बाण शेर के कलेजे में लगा और दूसरा मुँह मे लगा। शेर तो पल भर में ढ़ेर हो गया।

वादे के अनुसार वह लोमड़ी को हमेशा बोर खिलाता। आज भी भील-गरासिये लोमड़ी से विशेष प्रेम रखते है। आज भी वनवासी लोमड़ी को नही मारते है।



दूबा रै लात अर आंधा रै आंख

अेके गामे मा अेक आंधळो अर अेक दूबो रैता। दोनूं कीं न कमावता सो बेरो दोनू ने घेर बारे काढे दिना। दोनू साथै साथै जंगळ मा निकळग्या अर राकस रै देस मा पूंगा। वठै

न मिनख न मिनख रो जायो। सगळा नै राकस खायग्या। गांम सुन्नीयाड़ मा पड़्या। अेक सूना घेर मा बड़िया। बठै खूब सारो सामान पड़्यौ। वे खावै पीवै मौज करे। अेक दन रातेरा राकस आवीयो अर करी हुंकाड़। आंधो अर डूबो डरप्या पण चेतन व्हेग्या। वठे वळाके अेक मादळ पडी ही वा वजाड़ी। 'बंग घेदन-बंग-घेदन' मादळ वाजी ने राकस भाज्यौ। छेटो जायने विचार करयौ 'आ कांई बला है पतो तो करां अर पाछो मुकाम आयो। आयने बोल्यो - 'भूत है क पलित, जिंद है क पीर। थारो गाज सांभळियौ पण थारो पेग वताड़' घेर में अेक मोटो सार खूण्यौ छारणौ पड़्यौ हतो वीं पर सार पांस हळवाण्यां नरव अर आंगळ्यां रे रूप मा मेलवै ने वतावियो। पेगरो ओ रूप मा मेलवौ ने वतावियौ। पेगरौ ओ रूप देखने वो पाछो न्हाटो। पास सात कोस जायने विसार करने पाछो आयो अर हाथा जोडी करने बोल्यौ -

"थारो वाज संभळ्यौ, गाज संभळ्यौ, पेग देख्या नरव ई मोटा, जाडा, करड़ा है पण थारे माथा रो बाल कैड़ौ है वताड़। अठै अेक लांबू रोडू हौ, हाथेक लांबो हो, वो राकस री छाती मा फेंक्यो सो पेगां मा जाय बिटोलिज्यौ। राकस कूकियो - मारे रे मारे अर दस कोस ताई भाज्यौ। पछे विचार करने फेरू पाछो आयो अर बोल्यौ - हे अन्नदाता। अेक वात फेरू वताव कै थारी जूं कित्तीक मोटी है ? वठै जोग सूं अेक गधेड़ो आयोड़ो हो। उणने टांग अपड़ने फेंक्यो बारे। वो भौंक भौंक करतो पड़्यौ। अमकाले राकस चौबीस कोस भाज्यो पण फेर हिम्मत करने मुकाम पाछो आयो अर बोल्यौ - 'बावजी, आपरा पग ई कोणा मोणा, बाल ई जोर अर जूं गजब। अबै आप भूत-पलित, जिंद, देव-दानव जकोई हो जाइजो परा मारा घर सूं मूं सवा सौ राकस जीमाय दूंला। डूबे घर रै माल रा पोटका पूटाकड़ा बांध्या। की आंधा ने उचाया की खुद उपाड़्या सोना, चांदी, जेवर, हीरा, पन्ना आद ले लीया। राकस गिया पछे लेने न्हाटा। जंगळ में अेक मोटो वड़लो आयो जठै राकस साफ-सफाई करवाई हती, अठै राकस जीमावणा हा। जोग सूं वठै इज जाय पूंगा। माल गोड में लुकायनै चढिया वड़ला माथै। थोड़ीक ताळ सूं राकस जाजम राळी। राकसा रा राजा रे सोना रो सिंघासन धरीयौ। डूबो सैंग रचना देखै ऊपर सूं। जीमण री त्यारी व्ही। राकस राजा पूछियो - 'पैला तो वतावो कै आ परसादी किण वात री है ? अबै वो राकस वतावतो डरपै अर हरमिजै। देख्यो वताडू तो राकस समाज हंसी करेला। पण घणी दबोण पड़ी जरे हाच बोलणो पड़्यौ - 'मारे घर मा जिंद वळियो हतो सो मूंआ बोलमा बोली जरे वो निकळ्यौ। राजा बोल्यो - अबार अठै लावतो तो बूटी बूटी पोती न आती। आंधलो ऊपर बैठो डरप्यो सो पग छूटा जको हेटे आय पड़्यौ। डूबड़ी हुस्यारी करी ने जोर सूं बोल्यो - 'हां ओ इज मोटोडो (राजा) ने अपड़जे। हार ले ले, म्हूं आवू हूं। राकसराज तो हार

न्हाखने भाग छूटो। राजा न्हाटा पछे दूजो लारे कुण रेवै। सैंग भांग छूटा। दूबो उतरयौ हेटो। आंधला ने दिलासो दियो अर राकसराज रो हार ई गांठड़ी में बांध्यौ अर जाता रीया। गांम रे गोरवै य्या अर दूबा रै पेटे पाप आयो जको काळीन्दार नाग मारने घेड़ मा रांदयौ क आंधा ने खवाड़ ने मार न्हाखा अर सगळो माल हजम कर देवला। दूबो खाखरा रा पांना लेवा गियो क पानीया बणावा दूना पातल बणावा। लारे आंधां हांडी में झांक्यो, सूंघीयो क साग री सुगंध किसीक है। सांप रे जेरवा री वळार (भाप) सूं आंख्या खुलगी। हांडी में देख्यो क सांप है। पाछी आंख्या मीचने आंधो बणने बैठग्यौ। दूबो आयो। दूनो बणायने सांप परूस्यौ अर खुद चटनी रोटी खावा लागो। आंधो सेंग लीला देकतो हो। उठीयो अर दूबा रे ठोकी लात तो दूबा री दूब निकळगी। मिनख जेड़ा मिनख व्हेग्या दोनू। बांट बूट ने खाणा ने वैकुण्ठा जाणा। सो खादा पीदा ने आणंद कीदा।

कूबड़े को लात और अंधे को आंख

एक गांव में एक कूबड़ा और एक अंधा रहते थे। दोनो कुछ भी नही कमाते थे सो उनकी स्त्रियों ने दोनो को घर से निकाल दिया। दोनो जंगल में साथ साथ चले गये। राक्षस के देश में पहुंच गये। वहाँ कोई व्यक्ति नहीं था। सबको राक्षस खा चुका था। गाँव खाली और सुनसान पड़ा था। वे दोनो एक खाली घर में धुस गये जिस में राक्षस रहता था, जो अभी बाहर था। वहाँ खूब सामान पड़ा था। वो वहाँ खाते पीते और आनन्द करते। अेक दिन रात को राक्षस आया और हुंकार की। कूबड़ा और अंधा पहले तो डरे घबराये पर तुरन्त सचेत हो गये। वहाँ पास ही एक ढोलक पड़ी थी वह बजाने लगे। 'बंग पेदन बंग-घेदन' ढोलक बजी और राक्षस भागा। कुछ दूर जाकर सोचा मेरे घर में ये क्या बला है ? पता तो करू। और वापस लौटकर आया और बोला - तू भूत है या पलित, जिंद है कि पीर। तेरी गर्जन तर्जन सुनी पर बता तेरा पांव कैसा है ? वहां चार कोने की बड़ी छलनी पड़ी थी उस पर चार पांच हलवानियाँ नाखून और अंगुलियों के रूप में रख कर बाहर निकाल कर बताये। पांव का यह विशाल रूप देख कर वापस भागा। पांच सात कोस जा कर विचार किया और लौट कर आया और हाथ जोड़ कर बोला -

'तेरा गर्जन-तर्जन सुना, पांव और नाखून भी देखे। नाखून भी मोटे एवं कठोर है परन्तु तेरे सिर का बाल बता। वहां एक लम्बा मोटा रस्सा पड़ा था वो फेंका जो उसके पांवो में जा लिपटा। राक्षस चिल्लाया - 'मुझे मार रहे है, मार रहे है।' और दस कोस भागा।

फिर विचार करके वापस आया और बोला - हे अन्नदाता। एक बात और पूछता हूँ

कि तेरी जूं कितनी बड़ी है ? वहाँ संयोग से एक गधा आया हुआ था। उसे टांग पकड़कर बाहर फेंका। वो भौंकता हुआ बाहर पड़ा। इस बार राक्षस चौबीस कोस भागा परन्तु फिर हिम्मत करके लौटा और बोला - श्रीमानजी, आपके पांव के कई कोण के, बाल भी जोरदार है और जूं ई विचित्र। अब आप भूत, पलीत, जिंद, देव-दानव जो भी हो मेरे घर से कृपया चले जाओ। मैं सवा सौ राक्षसो को भोजन करवा दूंगा। कूबड़े ने सारे माल की गांठे बांधी। कुछ अंधे के सिर पर दी कुछ स्वयं ने उठाई। सोना, चांदी, जेवरस हीरा, पन्ना आदि ले लिये। राक्षस के जाने के बाद वे लेकर दौडे। रास्ते में जंगल में एक विशाल वट वृक्ष आया। वहाँ राक्षस ने सफाई करवाई थी जहां राक्षसो को भोजन करवाना था। संयोग से ये भी वही पहुँच गये। माल की गांठे नीचे छिपाकर ऊपर चढ गये। थोड़ी देर बाद में राक्षस ने जाजम बिछाई। राक्षसो के राजा के लिये सोने का सिंहासन रखा। कूबड़ा सब रचाना ऊपर से देख रहा था। भोजन की तैयारी हुई। राक्षस राज ने पूछा - 'सर्व प्रथम तो यह स्पष्ट करो कि यह प्रसादी किस बात की है ? राक्षस बताने से डरता और शर्मिंदा हो रहा था कि बताऊंगा तो मेरी हंसी होगी। पर अधिक दबाने पर सच्च बोला - 'मेरे घर में जिंद घुसा था यह मनौती बोली तब गया। राजा बोला - अभी यहीं लाता तो बोटी-बोटी सबके हिस्से में नहीं आती। अंधा यह सुन कर डरा और पात्र चूके सो धडाम से नीचे आ गिरा। कूबड़ा ने चालाकी की और बोला - 'हाँ यही मोटा ताजा (राजा) हैं उसीको पकड़। इसका हार ले लेना। मैं आ रहा हूँ। राक्षसराज तो हार फेंक कर भागा। राजा के भागने पर पीछे कौन रहेगा? सब भाग छूटे। कूबड़ा नीचे उतरा। अंधे को आश्वस्त किया। राक्षसराज का हार भी अपनी गठरी में बांधा और चलते बने। गाँव की सीमा पर पहुँचे ओर कूबड़े के मन में पाप आया। एक काला विषधर मार कर 'धेड़' में पकाया। सोचा अंधे को मार कर सब माल पचा लूंगा। कूबड़ा पलाश के पत्ते लेने गया कि कुछ से 'पानिये' बना लूंगा और शेष के दूना पतल।

पीछे अंधे ने हांडी में झाका कि सब्जि की खुशबु कैसी है पर सर्प विष की भाप के प्रभाव से उसकी दृष्टि लौट आई। हॉडी में देखा तो सांप पक रहा है। वह वापस आँखे यथावत बंद करके, अंधा बन कर बैठ गया। कूबड़ा आया दूना बना कर अंधे को सांप परोसा और स्वयं चटनी से रोटी खाने लगा। अंधा सब नाटक देख रहा था। वह उठा और कूबड़े को एक लात मारी जोर से तो कूबड़े की कूब निकल गई। दोनो मनुष्य जैसे मनुष्य हो गये। 'बांट कर खाना और बैकुण्ठ को जाना।' खाया पीया और आनन्द किया।



भगत नांदियौ

अेकर भगवान भोळानाथ रै सवारी चाइजती ही। जरै वे सुन्नीयड़ नै घोर वन मा पूगा। सगळा जंगळी जिनावरां नै समचौ दे'र भेळा किया। मनड़े री वात बताड़ी। सगळा जिनावर सवारी खातर त्यार व्हिया। वडभाग जिणनै सवारी रै रूप मा सीकारै। न्हार बोल्यौ - 'भगवान मूं वन रौ राजा अर अपर बळी हूं। मारा सूं सगळा डरै पण मूं किणसूं ई नीं डरूं। मारी सवारी आपनै सोवै। हाथी बोल्यौ - 'मारी सवारी सूं आपरौ रूतबौ वधैला। देखो मूं पूजतो डीगो डकरेल, जाडो, मोटो ताजो अर डीळ रौ सबळौ हूं। मारे माथै ऊंचे आसन विराजौ।' इण तरै वन रा सैंग जिनावर आप आपरी दळी, मोट मिजाज सूं बंतळ करी। रीछ, चीतरो, लूंकी सै आप आपरी वडाई करी अर सवारी सारू अरज करी।

भगवान फरमायो - 'ठीक है, मूं सगळा री परख करूंला, जकौ मारी कसौटी माथै खरो उतरेला उणनै सवारी बणाऊंला। जद सैंग अेकण साथै बोल्या - बतावो आपरी मांगणी कांई ? परीच्छा देवण नै त्यार हा।

संकर बोल्या - 'अबारू नीं, पछै बताऊंला। सैंग जंगळ मा उसरग्या। बळद वठै इज अेक रूंख हेटे ऊभौ रयौ। पारबतां पूछ्यौ - 'भगवान मन्नै तो बतावौ कै आप इणारी कांई परीच्छा लैवणी चावौ ?

सेवजी करयौ - 'बिरखा रित मा मन्नै सूखी लकड़ियां चाइजै।

जकौ जानवर आ सगवड़ कर सकेला अर मांग पूरी कर सकेला उणनै इज मारी सवारी मुकरर करूंगा । ओ राज वो बळद सुण लियौ। उण जायनै एक करसा नै अरज करनै सुखो खणक वळीतो (मुगदड़ी) लायनै औळा मांय खड़क दियो।

बिरखा रित आइ इज। तरमझीक पांणी पड़्यौ। बिरखा झड़ मांडी, च्यारूं खूंट जळाकार ई जळाकार व्है ग्यौ। वीं बगत बाबा ने सुखी लकड़ियां री जरूरत पड़ी। उणां आपरो डमरू बजायौ - डम डम डम। सगला पसु भेळा व्हिया। संकर बोल्या - 'भायला मन्नै सूखी लकड़ियां चाइजै। लायनै हाजर करो।' भगवान री वात सैंगानै खटकी। सगळा कूकीया - 'अैडी बिरखा री झड़ मांय सूखी लकड़ियाँ कठै पडी है ? वीं चीज री इज मांगणी करणी चाइजै जको मिळ सकै।'

संकर बोल्या - 'ठीक तो, मारा समझ मांय आयगी कै थारा मांऊ कोई मारी सवारी लायक कोनी। जित्तैक तो आवौ रे परो वैळीयौ, मौरां माथै सुखी लकड़ियां रो भारौ उखड़ियौ ड़ौ अर लाय मा'देवजी रै साम्ही ठाटो ठालव्यौ, दिगळौ कर न्हाख्यौ अर माथौ नीचो करनै अेकण कांनी ऊभग्यौ। सैंग जिनावर अचंभौ करयौ। भोले संकर - घणा लाड सूं घणा हेज सूं बळद रै मौरां पर हाथ फेरनै आपरी सवारी थरपी। तुष्टमांन व्हैने आपरी सेवा मांय थापन करयौ। भोळां रै भगवान है। लोग नंदी नै ई पूजै।

भक्त नंदी

एक बार भगवान शंकर को सवारी की आवश्यकता हुई। तब वे सुनसान घने जंगल में पहुँचे। सभी जंगली जानवरों को सूचित करके एकत्रित किया। मन की बात बताई कि मुझे सवारी चाहिए। सभी जानवर सवारी के लिये तैयार थे। सोचा, भाग्यशाली है वह, जिसे वे स्वीकार करें। शेर बोला - 'मैं वन का राजा हूँ। महाबलशाली हूँ। मेरे से सब डरते है पर मै किसी से नहीं डरता। मेरी सवारी आपको शोभा देगी।' हाथी बोला - 'मेरी सवारी से आपकी शान बढेगी। देखो मै पूरा लांबा, चौडा, मोटा ताजा और भरा पूरा सशक्त शरीर वाला हूँ। सबने अपनी अपनी राग और अपनी अपनी डफली बजाई। भालू, चीता, लोमड़ी सब अपने मुँह मियाँ मिठ्ठ बनते रहे।

भगवान ने कहा - 'ठीक है, मै सबकी परीक्षा लूंगा जो उसमें पास होगा उसे रखूंगा। तब सब एक साथ बोलो - बताइये हमारी क्या परीक्षा लेना चहते है ?

शंकर भोले बोले - 'अभी नहीं बादमें बताऊँगा। सभी वापस जंगल में चले गये।विसर्जित हो गये। बैल वही एक वृक्ष के नीचे खडा रहा। पार्वती ने पूछा - 'मुझे तो बताओ अब, कि क्या परीक्षा लेना चाहते है आप।' शंकर भगवान बोले - 'वर्षा ऋतु में मुझे सूखी लकड़िया चाहिए।' जो भी पशु मेरे लिये सूखी लकड़िया का प्रबंध कर सकेगा उसीको मेरी सवारी के लिये नियुक्त करूंगा। यह रहस्य बैल ने सुन लिया। उसने एक किसान से निवेदन करके सूखी लकड़ियाँ सुरक्षित रख ली।

वर्षा ऋतु आई। मूसलधार पानी पड़ा। बाबा को अब सूखी लकड़ियाँ की जरूरत पड़ी। उन्होने अपना डमरू बजाया डम डम डम। सभी जानवर एकत्रित हो गये। शंकर बोले - 'साथियों ! मुझे सूखी लकड़ियाँ चाहिए, लाकर हाजर करो।' भगवान की बात सबको बुरी लगी। सब एक साथ ही चिल्लाये - 'ऐसी भीषण वर्षा मे सूखी लकड़ियाँ कैसे उपलब्ध हो सकती है ? कृपया आपको वह वस्तु मांगनी चाहिए, तो सुलभ हो सके।

'ठीक है, मै समझ गया, तुम मे से कोई मेरी सवारी के योग्य नही हो। इतने मे बैल सूखी लकड़ियो का गट्ठर पीठ पर लादे आ पहुँचा। भगवान के सामने डालकर सिर नीचा करके एक तरफ खड़ा हो गया। सभी जानवरो ने आश्चर्य किया। शंकर भगवानने बड़े स्नेह से उसकी पीठ सहला कर आर्शीवाद दियाऔर प्रसन्न होकर उसे अपनी सवारी के लिये नियुक्त कर दिया। भोळा के भगवान है। लोग नंदी को भी पूजते है।

समंद डौवणौ

गरासियां मा अेक कथा ओरूं चालै। सगति, गरमी अर दूजी अलेखू चीजां रै लोभ-लालच खातर 'सेमला खोमेड़े' (समंद डौवण) री मतौ कियौ, जिणसू इमरत मिळ सकै। अेक खास तरै री बांसड़ी झेरणा रै वास्तै काम में लीनी अर नेतरा रै रूप मा 'शेषनाग' नें काम लिनी। समद ने इतरा जोर सूं मंथियौ के जळ रा छांटां आभा ताई उछळ्या अर वे इज जळ रा छांटां तारां बणग्या जकौ सरग मा तारां बणनै चमक चांनणौ करवा लागा।

जद समंद सूं इमरित बचबचायनै उफणनै ऊपर आयौ वीं मोकै दो राकस 'भस्मकोकन' अर 'चुंडमुंड' इण अमर कर देवणवाळा 'इमारित' मा भागीदारी राखानै आय टपक्या। आखर खोसाखोसी मा थोड़ीक सी बूंदां उणारै पलै पड़ी जकौ उणा तावड़-तोबड़ गिटकाय ली।

आ का'णी 'श्रीमद् भागवत' री 'समुद्र मंथन' री कथा सूं खासी भली मिळै।

समुद्र मंथन

गरासियों में एक और कथा भी प्रचलित है। शक्ति, ऊर्जा एवम् अन्य विविध वस्तुएं प्राप्त करने के लालच से 'सेमला खोमेड़' (समुद्र मंथन) का निर्णय किया ताकि समुद्र मंथन से अमृत प्राप्त किया जा सके। एक विशेष तरह के बांस को मंथनी बनाया और मंथने की रस्सी के रूप में शेषनाग का ऊपयोग किया। 'समुद्र मंथन' इतना जोरसे किया कि उसकी बूंदे आकाश में उछली और वे ही बूंदे तारें बन गई जो स्वर्ग को प्रकाशित करते है।

जन समुद्र से अमृत उफन कर ऊपर आया तो उस अवसर पर दो राक्षस 'भस्म कोकन' और 'चुंडमुंड' इस अमरत्व देने वाले पेय पदार्थ में अपना हिस्सा मांगने हेतु प्रकट हुये परन्तु वे छीनाझपटी में कुछ ही बूंदे प्राप्त कर सकै जिसे उन्होने तत्काल पी ली।

यह कथा 'श्रीमद्भागवत' की 'समुद्र मंथन' की कहानी से बहुत कुछ मेल खाती है।



राजा दसरथ

अेक होतो राजा। उनारू नोम होतु दसरथ। उनार तीन राणीयां होती। तीनो बाइड़ियो रै सोरो न होतो। राजा पेसे इमू-इमू घोमा ढको। पेसे हो जियू के अेक माराज होतो। पेसे उणार धूणी ग्यौ। माराज कयु के बेटा इणी वेलारू आवणु हूँ। होजु बावसी आवजू न करवू मार तीन रानीये है। तीन राणियोर कोई नैनु-मोटु न है। ते पेटा थोरी पेनण हुव ओरे। पेसेन माराज तीन लाडू बनावियौ ने कियौ के बेटा अेक खाजे थू न बे आलजे राणियों ने। पेसे राजा आपणे गांम गियो। पेसे आधो आधो लाडू खादो। आधो मेलियो। पेसे अेक राणी आई। उणे दीदो। अेक राणी फेर आई ने आधो उणी खादो। पेसे उनकीयोर चोरो जनमनौ। अेकीत रे अेक अेक होयो। आधो आधो बे खाया न उणीर बे सोरा उणरे।

पेला जनमिया उणारू नोम इन्दर। उना केरण जनमिया उणरू नोम कालीयो पेसे बे जनमिया उणोरू नोम राम-लिछमण। अे बेई वेळा रा होता। पेसे राजा धीर-धीर डोकरो होयो।

राजा दशरथ

एक था राजा। नाम था दशरथ। उसके तीन थी रानीयाँ। तीनो औरतो के कोई सन्तान नही थी। राजा इधर-उधर पता करने लगा। बाद में राजा को एक साधु का पता चला। तो राजा उसके घर (कुटिया) में गये। फिर साधुने कहा मै अभी वापस आता हूँ। सभी देवी-देवताओं का स्मरण किया। राजा ने कहा कि मुझे तीन रानियें है। तीनो के कोई छोटा-बड़ा पुत्र नही है। थोडा समय व्यतित हुआ फिर साधु ने तीन लड्डु बनाये और देते हुए कहा - 'हे पुत्र ! एक तो तू खा लेना और दो रानियों को खिला देना। राजा ने भी लड्डू खाया और आधा आधा रानियों को खिलाया। थोडी देर बाद तीसरी रानी ने आधे आधे भाग दोनो खा लिये। कुछ दिनो बाद उनके पुत्र हुये। जिसने आधा आधा लड्डु खाया था उनको तो एक एक लड़का उत्पन्न हुआ। जिसने आधे आधे दो भाग खाये थे उनके दो जुड़वा बच्चे हुए। पहले जन्मा उसका नाम 'इन्द्र', बाद मे जन्मा उसका नाम 'कालिया' और उसके बाद जिसने आधा आधा लड्डू खाया था, उनके पुत्रो का नाम राम-लिछमण रखा। पीछे वाले पहले वाले दोनो जुड़वा थे। फिर धीरे धीरे राजा वृद्ध हो गया।

सीता ने वनवास

सीता मांजी नै जद लंका सू पाछा अयोध्या ले आया, जरै सीताजी रै सांवकी सासू कैकी रोज बींनणी नै बींधती अर पूछबौ रेवती कै बीनणी लंका रौ राजा रावण कैडौ है ? लंका कैड़ी है ? पण सीता कांई पडुत्तर कोनी देती। मून झालनै काम करती रैवती। अेक दन खारी वात कैकी सासू कहीक - आप रावण रै साथै तो गी, इतरा बरस वठै री नै थू कैवै म्है तो रावण ना जाणु इज कोनी, लंका देखी इज नीं। मनोदरी रै वाग माय चन्दण रै रूंख हेटे रैवती, रावण साम्ही जोवती ई कोनी, आ कांई कदैई व्है ? सीता जै'र री घूटीयौ भरीयौ पण नीं बोली, नीं औड़ो दीधो। पछे फेर रोज तांतो तणती जरे अेक दन बोली - हड़मान आयो हो म्हारी खबर काढ़ानै। उण लंका बाळी पण समदर रै कैवा मुजब लंका साम्ही जोयौ अगनि री झाळ माय रात रा लंका पीली पट्ट दीसी सो सगळी लंका सोना री व्हैगी। बस आंख मा पड़ियौ तुस अर औ ई व्हियौ मिस, कैकी राणी नै तौ वात लाधी। आपरा च्यारू बेटा नै भरमाया-सिखाया क

सीता तो कैवे रावण जोरदार राजा हो अर सोना री लंका रौ तो कैवणौ ई कांई। जजोध्या तो पांणी भरे वींरे मुंडा आगै। म्हनै तो ओळू आवै। बस जजोध्या मांय वात फैल गी, आफवावां नै गपेड़ा फेर चाल्या। राम रै मन मां झालःझाळ उठगी। तुरत फुरत लिछमणनै बुलायनै सीता ने वन में छोडण री हुकम दे दियौ। बद आछो बदनाम बुरो। सो कलंक धोवण सारूं औ कबाड़ौ कर न्हख्यौ। सीताजी मा भूंडी करी। च्यारूमेर भूंडिया व्हि।

सीताजी वन में फिरता-फिरता अेक रिखी रै आश्रम आसरौ लीयौ अर वठै इज डेरा दिया। आपरी सेवा मा दो च्यारेक भीलणियां ने राख ली। वठै इज लव कुस रौ जळम व्हियौ। रिखीसर समाधि में मगन बैठा हा। बीयांनै अरज करी क गीगलौ घोड़्या मा सूतो है, ध्यान राखजो, कोई जिनावर नीं ले जावै। सीता निवोर मा न्हावण री त्यारी करती ही क जितैक तो अेक बांदरी आपरै बचियानै छाती रै चेपनै अेक रूंखड़ा सूं दूजे रूखड़ा पर फदाकती फिरती देखी। सीता सौच्यौ'र बोली - अरे बांदरी ! बच्चौ भंमळ खायनै मर जाई, इणनै घेर मेलनै आव बाई। बांदरी कह्यौ - ' ओ तो म्हारे काळजे री कोर है, घड़ी पलक ई आगो नीं करू। मां रो फरज है इणरी रिक्छा करनै मोटो कारणौ पछै तो आपै थापै खातो-पीतो रैला, जित्ते इणरौ पूरो ख्याल राखणौ म्हारौ फरज है - सीता सोच्यौ - 'गजब रा घर करिया, टाबर नै अेकलो रिखी रै भरोसे छोड दियौ, सो पाछी जायनै छानै मानै लव नै ले आई। उठीनै रिखी री पल खुली तो पालणौ खाली देख्यौ।' सति म्हनै सराप दे दैवैला तो म्हारी सैंग तपसा रौ धूड़धाणी व्है जावैला। सो तप रै बळ सूं डाब रै फाटा रौ टुकडौ करनै मंतर सूं पूतळा ने टाबर बणाय नै घोड़ी मा पौढाय दियौ। सीता पाछी बावड़ी जरै अंचूभै रैयगी। रिखी कह्यौ औ लव है तो दूजोड़ी कुस है, औ इ थारै इज।

सीता को वनवास

सीताजी को जब लंका से अयोध्या ले आये तब सीताजी को सौतेली सासु कैकई हमेशा बहू (सीता) को पूछती रहती कि - बहु लंका का राजा रावण कैसा है ? लंका कैसी है ? परन्तु सीता कोई उत्तर नही देती, मौन रूप से कार्य करती रहती। एक दिन कैकई ने कड़वी बात कही कि - तू रावण के साथ तो गई, इतने बरस वहां रही और तू कहती है, मै तो रावण को जानती ही नहीं, लंका देखी ही नहीं। मनोदरी के बाग में चंदन वृक्ष के नीचे रहती थी। रावण की ओर देखती ही नहीं, क्या यह संभव है ? सीता विष का घूंट पीकर रह गई पर वापस नहीं बोली। वह हमेशा यही गीत गाती रहती, तब एक दिन वह बोली - हनुमान मेरा पता लगाने आया था। उसने लंका जलाई परन्तु समुद्र के कहने अनुसार लंका के सामने देखा, अग्नि की लपटो में रात को लंका पीली केशर दिखाई दी सो लंका सोने की हो गई। आँख में पड़ा तुच्छ और यही हुआ मिस। कैकई ने चारो बेटो को सिखाया - भिड़ाया कि सीता तो कहती है - रावण महापराक्रमी राजा था और सोने की लंका का तो

कहना ही क्या ? उसके सामने अयोध्या तो कुछ नहीं है। मुझे तो याद आती है। बस अयोध्या में और नमक मिर्च मिला कर अहवायें चल पड़ी। बद अच्छा बदनाम बुरा। राम के मन में आग आग लग गई। तत्काल लक्ष्मण को बुला कर सीता को वन में छोड आने का आदेश दे दिया, कलंक धोने के लिये। सीताजी में बुरी हुई। चारों ओर निंदा हुई।

सीताजी वन में फिरते-फिरते एक ऋषि के आश्रम में शरण ली। सेवा में दो-चार भीलनियाँ रख ली। वही लव का जन्म हुआ। एक दिन सीता नदी के कुण्ड में स्नान करने के लिये गई। ऋषि समाधि में ध्यान मग्न बैठे थे। उनको निवेदन किया की मैं नदी पर स्नान करने जा रही हूँ, बच्चा पालने में सो रहा है, ध्यान रखना, कहीं जंगली जानवर न ले जाय? सीता नदी पर स्नान की तैयारी कर रही थी कि इतने में एक बंदरी अपने बच्चे को छाती से चिपका कर एक डाल से दूसरी डाल पर कूदती - फांदती थी। सीता बोली - 'अरे बंदरी', बच्चे को चक्कर आ जायेगा, मर जायेगा, इसे घर पर रख कर आ।' बंदरी बोली - 'यह मुझे प्राणों से भी प्यारा है, पल भर भी इसे दूर नहीं कर सकती। माता का कर्तव्य है कि इसका पालन-पोषण करना, रक्षा करना। बड़ा होने पर तो यह स्वावलंबी हो जायेगा, फिर देखरेख की आव्यश्कता नहीं। सीता ने सोचा - 'मैने गजब भूल की है, बच्चे को अकेले ऋषि के भरोसे छोड़ आई। वह वापस आश्रम मे गई और चुपचाप 'लव' को अपने साथ ले आई। उधर ऋषि की आँख खुली तो पालना खाली देख कर सोचा सती श्राप दे देगी, मेरी सारी तपस्या व्यर्थ हो जायेगी। उन्होने कुश के टुकडे से 'कुश' को जन्म दिया। सीता लौटी तो आश्चर्य चकित रह गई । ऋषि ने कहा अब यह भी तेरे ही - वो लव तो यह कुश।

भेरू-लिछमण वार्ता कथा

गरासिया समाज मा भेरूजी और लिछमणजी रे बाबत गदय ने पदय कोनू मा वारता-कथा चालै। गदय में कथा हेटे मंडीजे है, के कियां वे कांगरू देस गिया अर गंगली घांचण (जादूगरणी) ने काबू करी।

अेकर भेरूजी ग्या लिछमणजी कनै अर क्यौ आपां चाला कांगरू देस, कांमण सीखण ने। लिछमण साव नटग्या। कयौ - रे भेरू कांगरू देस री अवळी रीत सो आपणे नीं जाणौ। पण हठीलो भेरू तो माने इज ना। हठ लीवी जोर। पण लिछमण नटता ई गिया समझायौ पराई भौमट नै परायो जादूगर मुलक, आपणै ना जाणौ, मांन कैणौ। भेरू जद हठ नी छोडी तो लिछमण साथै गिया। भेरू कमर रै घूंघरां ओर पगे घूंघरा बांधनै घमकाया, खादे झोळी घाल नै व्हीर हुयौ। जाता रीया ठेट कांगरूं देस में।

लिछमणजी कह्यौ - 'जावो भेरू सांमला घेर सूं वादी लावो सो आपां सलपो पीवां।' भेरू गियो इज। वो गांगली घांचण रो घेर हो। गंगली घांणी पर बैठी तेल काढती ही, बोली - भेरू वादी लेवा ढूको तो गंगली अवलो हाथ उण माथै फेरता थका कयौ - 'सुर घुस'। बस भेरू ने काठी वणाय दीयो। गंगली रे नवो काठी पांने पड्यौ। पांच पांच धाणिया भेरू सूं उतारे। मौरां मा पराणी वाजती रेवै। भेरू मा व्हि भूंडी। दन रा काठी सूं घांणी खडै, रातरा मरद वणाय ने खांक मा भेळी लेने सूवै। बारा बरस घांणी मा खण्यौ। तेरवे वरस लिछमणजी कांमण सीखने पाछा बावड्या। पोळ रै बारणे ऊभा रेय ने गंगली सूं वादी मांग्यौ। गंगली देख्यौ - ओ अेक काठी फेर जोर आयो।

पण वे घेर मा ने बड़या। बारै ऊभा हाथ लांबड़ियो करे न वादी ले लीनो। पेचण गंगली पे अवळी कळा (मिंतर) सूं गधी बणाय दी अर दूजी कळा (जादू) सूं भैरू ने काढी सूं मिनख बणाय न्हारव्यौ। भैरूं बांध घुंघरां कूदवा ढूको। भैरू कने लोकणरौ 'गुरूज' (घोटो) हो, वी सूं गधी (गंगली) ने खूब मारी। पेचण लिछमण बीजो चलायो जादू मिंतर अर गधी सूं वणाय दी 'हवळी' (चील)। वा अकासे चढ़ भंमती उडै। भैरू ओर लिछमण व्हिर हुया। पेचण सवा पाइली राई मंत्रैन पूठै फेंकता ठेका दिया। राइ रौ अेकूको दांणो चुगिया-वीणीया वना लारे नी आय हकै। गंगली इतरी राई वीण सके ना ने लार आय हके ना। लिछमण सोच्यौ हवली चुभण री फुरती-राख हकै सो सीमाड़ा बार निकळतां तीजो मिंतर फेंक्यौ सो हवळी हेटे पड़गी, पाछी गांगली व्हैगी। इतरो खेल लिछमण बतायौ गांगली नै ओर बचायो भेरू नै। लिछमण कयौ भैरू नै ' फेर जा जे कागरू देस।' अबै तो मरया ई नी जाऊं।

भैरव-लक्ष्मण वार्ता-कथा

गरासिया समाज में भैरव और लक्ष्मण के संदर्भ में गद्य और पद्य दोनो में वार्ता-कथा प्रचलित है। गद्य की कथा निम्नांकित है, जिसमें बताया गया है कि वे दोनो क्यों व कैसे कागरूं (बंगाल) देश गये और गांगली तेलन (जागूगरनी) को कैसे वश में किया -

एक बार भैरव लक्ष्मण के पास जाकर कहा - 'हम चले कागरूं (बंगाल) देस जादू सीखने। लक्ष्मण ने मना कर दिया और कहा - 'भैरव उस देस की उल्टी रीत है, सो अपने को नही जाना। पर हठीले भैरव नै पूरी हठ की। परन्तु लक्ष्मण मना करते गये परन्तु वह नही माना। कहा - 'अपरिचित भूमि और जादूगर देश, जाना ठीक नही, कहना मान। आखिर लक्ष्मण को साथ जाना पडा। भैरव कमर और पांवों मे घुँघरूं बांधे, कंधे पर झोली लटकाई और प्रस्थान किया। आखिर पहुंच ही गये कांगरू देश। लक्ष्मण ने कहा - 'भैरव! जाओ सामने वाले घर से, अंगारा लेकर आओ, चिलमं पी ले ।' भैरव गया। वो गंगली

तेलन (जादूगरनी) का घर था। वह घांणी पर बैठी तेल निकाल रही थी। बोली - 'मेरे हाथ में बैल हांकने का डंडा है, दूसरे से तेल निकाल रही हूँ, इसलिये स्वयं आ कर चूल्हे से अंगारा ले लो।' भैरव अंगारा ले रहा था कि गंगली ने आपना उल्टा हाथ उस पर फेरते हुए कहा - 'सुर घुस' बस इतना कहते ही भैरव बैल बन गया। गंगली को नया जवान बैल मिल गया। भैरव को बैल बना दिया। दिन में पांच पांच धाणियाँ उतारती। उससे कमर में डंडा बजता ही रहता। भैरव में बुरी हुई। रात को पुरुष बना कर बगल में साथ लेकर सोती, दिन में घांणी में जोतती। बारह बरस घांणी में जोतती रही। तेहरवें वर्ष लक्ष्मण जादू मंत्र सीखकर लौटे। प्रोल में दरवाजे पर खड़े रह कर अंगारा मांगा। गंगली ने देखा एक जवान बैल फिर ठीक आया। भैरव ने पहिचान लिया।

परन्तु घर में उन्होने प्रवेश नहीं किया। बाहर खड़े खड़े ही हाथ लंबा करके अंगारा प्राप्त कर लिया। फिर गांगली पर उल्टी कला (मंत्र) चला कर गधी बना दी और दूसरी कला (जादू) से भैरू को बैल से मनुष्य बना दिया। भैरव कमर और पांवो के घुंघरू बांध कर कूदने लगा। भैरव के पास लोहे की गदा थी, उससे गधी (गांगली) को खूब मारा। फिर लक्ष्मण ने दूसरा जादू मंत्र चला कर गधी से चील बना दी। वह आकाश में ऊंची उडती चक्कर लगाती रही। भैरव और लक्ष्मण अब प्रस्थान कर गये। रवाने होते समय सवा किलो राई अभिमंत्रित कर पीछे बिखेर दी। और चले गये। राई का एक एक दाना चुग कर ही वह पीछे आ सकती थी। गंगली यह कर॰ सकती और इसलिये पीछा करना संभव नहीं। फिर लक्ष्मण ने सोचा चील फुर्ती से दाने चुग सकती है इसलिये सीमा पार जाते जाते तीसरा मंत्र (जादू) फेंका जिससे चील नीचे गिर कर पुनः गंगली बन गई। इतना चमत्कार लक्ष्मण ने गंगली और भेरू को बताया। लक्ष्मण ने कहा भैरव को - 'और जाना कांगरू देश।' 'अब तो हरगिज कभी नही जाऊंगा।'

लाख री घर

सहा मा पाडव जदे कैरवां सूं जूआं मा हारग्या तदे वींयाने बा'रे बरस री अग्यातवास दीरीज्यौ, सो वे जांगळ देस मा निकलग्या। मारग मा हूरज ढळता पांडवा एक सूनो म्हैल बण्यौड़ो देख्यो, पांडव वठै ढ्ब्या, रातवासो लीयौ। कैरवा रा सैसू वठै पूगोड़ा हा, सो माझल रात लाख का घर रे डागळे अगनि चेतन करी औ पूरा घर रौ कबाड़ो लाख सूं बणायोड़ो हो सो पीघळवा लागो। कुंती मां जागती ही, वींने अगन री झाळ निगै आई वा हाकबाकी व्ही अर हड़बड़ायनै उठी अर भीमा नै जगायौ, बोली 'उठ रै उठ भीमला, पांडवो री वंस नास व्है है, बचाय सकै तो बचाव। भीमा नै ई इण तास री सपनो आवतो इज हो। सपना मा 'पदमसिला' री आइटांण देख्यौ हो, वीं सिला रै हेटे पियाळा पूगण री मारग हो।

भीमौ उठ्यौ ने पद्म सिलाड़ी रै दे ठोकर अर करी आगी, मारग निजरै आयौ। अेक

अेक नै उतारीया मांइनै अर पीयाळा होयनै धम्मक राजा रै देस मा निकळ्या। वठै इज बा'रा बरस र वास करयौ।

कैरवा समझ्यौ पांचू पांडव तो बल भसन व्है ग्या, अबै राजपाट नै कीं जोखौ कोनी। हबकै अहम्मै कोई हाथ नीं घालै।

लाक्षागृह

जब पांडव जूए में कौरवो से हार गये तब उनको बारह वर्ष का अज्ञातवास दिया गया। अतः वे जांगल देश (राजस्थान) में निकल गये। शाम होते समय उन्होने एक सुनसान स्थान में खाली पड़ा महल देखा। वे वही रात्रि विश्राम करने ठहर गये। कौरवो के गुप्तचर वहाँ पहुँच चुके थे। गुप्तचरो ने अर्धरात्रि को घर के छत पर अग्नि प्रज्वलित की; उस पूरे महल का ढाँचा लाक्षा से निर्भित था, अतः वह पिघलने लगा। माता कुंती जग रही थी। उसे अग्नि की लपटें दिखाई पड़ी। वह घबरा कर उठी और भीम को जगाया और बोली - 'उठ रे उठ, भीमा, पांडवो का वंश नष्ट होने जा रहा है, बचा सकता है तो बचा। भीम को भी इसी आशय का स्वप्न आ रहा था। स्वप्न में 'पद्मशिला' (स्थान चिह्न) देखा था। उसके नीचे पाताल तक जाने का रास्ता था।

भीम उठा और 'पद्मशिला' को ठोकर मारी और दूर हटाई तो रास्ता दिखाई दिया। एक एक पांडव को उसमें उतारा और वे सब 'धम्मक राजा' के देश में जा निकले और वही बारह बरस रहे। कौरवो ने समझा कि वे जल कर मर गये होंगे, अब राजसिंहासन को कोई खतरा नहीं; कोई आँख उठा कर भी नहीं देख सकेगा।



चौबीस रसियां

थल राजा रौ मोबी बेटो जळ राजा। जळ राजा रौ काछब राजा। उणरौ कुसब बेटो। कुसब रौ मंडळ राजा व्हियौ, जिणरौ कुंवर हरिओम राजा, वींरी राणी हुनकळी। मंडळ राजा रौ भायां सूं टंटो[1] व्हियौ। मंडल राजा रौ कंवर पण काका बाबा रै साम्ही (पख में) हो सो हरिओम ने देस निकाळो दे दियौ। हरिओम री राणी हुनकळी मंडळ नगरी मा इज रीं। अेकला हरिओम ने देस निकाळौ हो। वो घूमंतड़ौ आय पूगो उज्जैन नगरी। अेक घेर गियो अर तहकीकात करी कै कुण रौ घेर है। वतायौ क परजापत रौ है। पांणी मांग्यौ तो वा कुम्बारी लोटियौ भरनै लाई। पांणी पावता पांणी मा आंख्यां सूं आसू टपकिया। हरिओम कंवर कह्यौ - 'दुखिया रौ पांणी मूं न पीयू। पछै पूछ्यौ - 'थारै कांई दुखड़ौ लागो है। वा कह्यौ - 'मारै सात बेटा हा। अठै अेक राक्षस है जकौ न्हार रै रूप मा रैवै। वठै रोज गांम मांऊ वारा सूं अेक मिनख उणनै भख देवणनै मेलै। छः बेटा तो वो खायग्यौ, आज छेलायेला सातवां री वारी

आई है, वीं रो भख ले लेई। सात वेटा री धिणीयाणी आज नपूती व्है जाई।

हरिओम वींने हिमलास अर थथोबो दियो कै - 'आज मूं जाऊंला पौ'रा पर भख देवणनै, थूं न्हैछी राख। जा लोटियो मांजनै दूजौ अबोट जळ लाव। थू सवा मण आटा रौ पूतळी माय भांग घूंद नै बणाव। वठा रा पांणी रा कुण्ड दारू सूं भर दीजै। पौरा माथै कुंवर गिया इज। आधी अगाडू नै आधी पिछाडू (मांझल रात) रातरा राकस आयौ ने पूतळी पूरो गटकाय गियौ, पछै कुण्ड मांऊ भरपेट दारू पीधौ अर चूंच व्हैग्यौ। थोडीक ताळ पछै वो वेहोस व्हैग्यौ। हरिओम तरवार सूं च्यार बटका कर दिया। वाघ रा कांन, पूंछ अर मूंछ कापे नै ले लीधा। अै मारण रा सबूत हा। खांडो खून सूं खरड़ीज्यौड़ौ हो सो वो धोवा नै पागती अेक बावड़ी माथै गियौ। वठै फूलवंती कंवरी अधरात्या बावड़ी मा सिनान-सम्पाड़ा करती ही। बिरामणी रौ वठै राज हो। आ बिरायण की कन्या ही वा मिनख रौ मुंडो ई नीं देखती ही। वा बावड़ी माऊं बोली - 'थे कुण हो ?' मूं हरिओम कुंवर, मंडल नगरी रौ राजकवर हूँ, देस निकळो दीयौड़ौ है, पौरा माथै गियो हो, राकस नै मारनै आयौ हूँ।' 'आ बावड़ी बिरामणां री है, अठै धोवोला तो पाप रा भागीदार व्होला। गांम बारणै बा'रै भूतां री बावड़ी है वठै जावो, वे रोज नवी बावड़ी खोदे अर आबोट पांणी सूं मां बाप• नै न्हवाड़ै। कंवर पूछियौ - 'थू कुण है ?' 'बिरामण राजा गोकुळजी री कन्या हूँ। म्हनै परणणौ चावै तो राजपाट लीजै मत, म्हनै मांगजै। आंख्यां मिलण सूं गर्भवासो रैयग्यो।

हरिओम भूता री बावड़ी पूगो। भूत बैठा है। कवरड़ै सैंगा मोटोड़ा भाई री चोटी अपड़ी। वो वचन दीधो क जकौ कैवोला वो काम पार घालूला, जरै छोड्यौ। खांडो धोयौ।पाछो गियो वी कुम्बारी रै घेर, कुम्बारी नै कह्यौ - 'रात रौ जागरण है, सोवू हूं, जगाइजै मत ना। सवा पौर दन चढ्या आपोआप जाग जाऊँला। दूजै दन परभाते लोग चारो लैवानै रोही मा गिया तो औ खलकौ देख्यै क राकस (वाघ) रा तीन बटका कारयौड़ा पड़या है। राजा कनै ईनाम-इकरार लैवण नै कई जणा गिया - वो कैवै मूं मारियो, वो कैवै मूं मारियौ। झगड़ौ सळटावण खातर तहकीकात करी क पैली तो वतवौ क रात रा पौरो किणरौ हो ? पतो लागौ क कुम्बारी रै छोरा रो हो। हलकारो वीं रै घेर जायनै पूछीयौ क राते पौरा पर कुण गियो हो ? थारो बेटो कठै ? कुम्बारी कह्यौ - 'मारे पांवणा आया वे गिया हा पण वे जगाबा रौ ना कैयनै सूता है। हलकारो वठै इज जम्यौ रीयौ। सवा पौर दन चढ्या उठ्या जरै कह्यौ - 'आपने रावळै बुलावै, तेड़वानै आया हूँ। वो बोल्यौ क थे जावौ, मूं नहाय-धोयनै आपी आप आय जाऊं। सिनान संपाड़ा करनै, खांडौ अर थैलो (मूंछा पूंछनै कांन) लैनै गियौ। राज दरबार मा राजा रै जोड़ै जाय जम्यौ। आप औलखाण दीवी। राजा पूछियौ न्हार (राकस) आप मारयौ कांई ? वो कह्यौ - न्हार-फाहर म्है नीं देख्यौ, अेक वन बिलावड़ी हो वींनै जरूर मारीयौ। थैला मांऊ मूंछ,पूंछ

नै कांन निजर करया। राजा घणेरौ राजी व्हियौ। राजा तुस्टमांन व्हैने बोल्यो - हस्ती, घोडा, राजपाट जकौ चावौ सो मांगो। उण फूल कंवरी नै मांगी। ब्याव उज्जैन नगरी मा व्हैग्यौ। पछै नवै मीनै कंवर जलम्या पण सरीर मानवी रौ अर माथौ न्हार रौ कांन, मूंछ, पूंछ अर माथा रौ दृष्टांत पड़यौ हौ, राकस रौ रगत मुंडा माथै झलकै हो। वींरौ नांव 'वाघजी' राख्यौ। निजरां मिलण सूं गरभ रैग्यौ हो। उण कंवर नै नावण ने दे दियो। वा वींरे घेर लेने गी अर मोटो करयौ। वो गाम रा टोगड़ियां चरावण ढूकौ। अेक मेघवालां रौ गुरू दोस्त बणग्यौ, वो ई साथै जावतो। दोन्यूं आखा दिन दड़िया रम्मै अर टोगड़ियै नै रेती मा बैठाय दे। संझ्यारा घेर आवै जरै मुंडा मा फूंक मारनै पेट फुलाय देवै सो धाप्यौड़ा लागै। लोग देख्यौ क अै थाका-थाका जावै, मर जावैला, सो बाघ जी ने काचा सूत री गटिया वटवा सारू दीधी। डोरो काते ने रस्सी बणाई अर पारस पीपळ पर डोलर (हींडौ) घाल्यौ। टोगड़िया चारै न मजा मांडै, दोई जणा डोलर हींडौ हींडै।

उज्जैन नगरी री छोर्‌या बळीतो लैवानै वन मा जाती। वेई हींडो खावण रौ मतो करयौ पर वाघजी नटग्या, कै थे जाडी माती हो सो काचा सूत रौ डालर हीणौ भार नीं खमै, टूट जाई सो कालै सात धांन लाइजौ, होम करनै पछे थे हींडो खाईजौ। दूजै दन सात धांन लेने गी। पीपळ हेटे चंवरी मांडी, होम कर्‌यो, गुरुड़ौ भिंतर जप्या अर कैवतो ग्यौ कीको वाघजी परणै कीको वाघजी परणै। च्यार वीसी ने च्यार छोरया परणी। पछै सैंगा ने बाथ गे घाली। गरूड़ौ बोल्यौ अेक म्हनै-अेक गुरुणी वींरै पोती आई। सैंगा ने पछै हींडा खवाडिया। डोलर हीण्डो दिल्ली नै गुजरात तांई जावै। छोरीया राजी व्हैगी ने बोली - वाह रे कीका वाघजी ! कांई कैणौ थारे डोलर रौ, सगळौ मुलक दिखाय दीयौ। छोरियां नै ठाह इज कोनी क, वाघों वींयांनै परणग्यौ है। वे जद २०-२५ री व्हैगी पण लगन नीं सूजै, संबंध नी आवै। मां-बाप घबरीज्या अर राजा ने फरियाद करी। जांच करीजी, दाई-दूती (नावण) ने लारे लगाई भेद काढण सारु। दूती ने रूई रा ढगळा नीचे राखी अर सगळी छोर्‌या ने रूई कातानै तेड़ाई कै रूई पूणीया कातो। वे आपसरी मा बंतळ करै क - 'वाघौ सात धांन मंगाया हा, होम करयौ हो, फेरा खाया हा, हींडा खाया हा। वो गुरुड़ौ मिंतर रै वचमै बोलतो हो कै कीको वाघजी परणै, कीको वाघजी परणै। दूती रूई रा ढग हेटे सुणती इज ही - उण राजा नै जाय सैंग वात वताय दीधी, भेद मिलग्यौ। सगळी छोरियां नै कीका वाघजी रै घेर पूगाय दीवी, अेक गुरुड़ा नै दीधी। राजा वाघजी ने उजड़ खेडे-खाखर मेल दियौ, जठै कीको वागजी औ गांम बसायौ। बा'रा बरस व्हैग्या पण अेक रै ई पेट नीं मडियौ, नैनो मोटो कोनी व्हियौ। कीको वाघजी मुंडो लैयने वन-परबत मा जातो रीयो। भाखर मा भंमतो फिरै। अेक वाळ दन री वधणी मा, धुंधळका मा चमक-चांदणी दिख्यौ, कोई साधु री धूणी ही। झाळ रै आइटाण रै संमचै वठै पूगो। वा सम्भूनाथ री धूणी

ही, नमो नारायण करनै दण्डोत करी, धोक दीवी अर अरदास करी - 'मूं दो वीसी नै च्यार राण्या परण्यौ पण अेक ई फळवती कोनी व्हि। संभूनाथ उणनै अेक नौनोक सोटो (डंडो) दियौ अर कह्यौ - 'सांम्ही वा बेरी दीसे, वठै अेक आंबा रौ रूंख है। अेक इज डंडो (सोटो) फेंकजै, अेकण वार मा जित्ता आंबा पड़े, वे ले लीजै। अेक आंबो वेरी माय पदराय दीजै। वो वठै गियौ। सोटो फेंकियौ, सात आंबा नै कैरी पड़ी। अेक वेरी मा न्हाख्यौ। सोच्यौ मूं कांई खाऊँला सो अेक डंडो फेर फेकियौ, डंडो डाळा रै इज चिपग्यौ ने क्यारिया ई उछलनै पाछी रूंखड़ा रै लागली।

जरै पाछो संभूनाथ महाराज कनै गियौ अर आपरी भूल सिकारी। संभूनाथजी बोल्या - लोभ गळौ कटावै। गियौ तो सात कैरीया नीचे पड़ी लाधी, लैयने बाबा री धूणी आयौ। सम्भू मा'राज भबूत कैरियां रै चोपड़ नै मिंतरै नै दीवी अर कह्यो - किणनै ई मत दीजै। सात राण्यां नै अेकूकी दीजै। अेक जळ में न्हाखजै। कंवरड़ा मोटा व्हा जरै अेक नै मारी धूणी माथै मेलजै। वींनै मूं चेलो मुण्डूला, सेवा में धूणी माथै राखूला। कीको वाघजी पाछौ व्हिर व्हियौ। मारग में भूंआ रै अठै ठैरीयौ। गांगी भूंआ रौ गांव में रातवासौ लियौ। कैरीया उण मांगी पण नीं दीधी। तो पण भुंआ छानै काढ़नै काट दी। आगे जावतो संभाळी जरै ठाह पड़ी। जोया जरै रोया। पाछो जायनै भुंआ नै पूछियौ। गुटळियां नै फोतरका पड़या हा, वे लैने पाछो खांखर खेडे आयो। राण्यां नै दी। गुटली खाई वींरै कंवरी जळगी, रूपा ने दीपा नांव धरीज्या। कंवर रौ नांव भोजो रसियो, नेहो रसियो, तेजो तरवारियो रसियो, ऊदो रसियो अर ऊतवाळियौ रसियो आद राख्या। सगळा रंग-रूप अर डीळै-उणियारै अेक जैड़ा, जाणै अेक नै छपाड़ो नै दूजा नै काढौ।

चौबीस रसिया

थल राजा का ज्येष्ठ पुत्र है जल राजा। जल नरेश का सुपुत्र हुआ कछुआ और कैकड़ा। कैकड़ा का मंडल पुत्र (मनुष्य) हुआ। उसका कुंवर हरिओम हुआ जिसकी रानी सोनकली (स्वर्ण कली) थी। मंडल राजा के भाई-बंधु का झगड़ा हुआ तो हरिओम चाचा आदि के पक्ष में रहा इसलिये मंडल राजा ने हरिओम को देश निकाला दे दिया। परन्तु उसकी राणी स्वर्ण कली मंडल नगरी में ही रही। केवल हरिओम को देश निकाला था। वह घूमता-फिरता आ पहुँचा उज्जैन नगर। एक घर में पहुँचा और पूछा कि किसका घर है। बताया कि कुम्भकार (कुम्भार) का घर है। पानी मांगी तो वह कुम्भारी लोटा भर आई। पानी पिलाते समय उसकी आँखो से आंसू की बूंदे टपक पड़ी। हरिओम कुँवर बोल - मै दुःखिया के घर का पानी नहीं पीता। फिर पूछा तुझे क्या दुःख है ?' उसके उत्तर दिया - 'मेरे सात पुत्र थे। यहाँ एक राक्षस शेर के रूप में रहता है। गाँव से एक व्यक्ति रोज उसके

भोजन के लिये भेजा जाता है। मेरे छ बेटे तो वो खा गया, आज अंतिम सातवें की बारी है। सात बेटा की अधिकारिणी आज निःसंतान हो जायेगी।

हरीओम ने धीरज बंधाया, और विश्वास दिलाया कि आज पहरेदारी के लिये मैं जाऊँगा, मै उसे मेरे शरीर का भोजन दूंगा, तुम निश्चित रहो। जाओ लोटा मांज कर दूसरा पवित्र जल लाओ। तू सवा मण आटे का पूतला बना, उसमें भांग मिला देना। वहाँ के जल-कुण्डो को शराब से भर देना। पहरे पर कुँवर गया। अर्धरात्रि को राक्षस (शेर) आया और आटे का पूरा पुतला खा गया, फिर कुण्डो में भरा शराब पी लिया और तृप्त हो गया। थोडे समय बाद वह मुर्छित हो गया। हरिओम कुँवर ने अपने तलवार से उसके चार टुकड़े कर दिये। शेर (राक्षस) की मूँछ, पूंछ और कान काट कर प्रमाण स्वरूप अपने पास रख लिये। तलवार रक्त से सनी थी। इससिये उसे धोने के लिये पास ही वावड़ी पर गया। वहाँ फूलवंती कुमारी अर्धरात्रि को वावड़ी में स्नान कर रही थी। वहाँ ब्राह्मणो का राज्य था। यह ब्राह्मण की कन्या थी। वह आदमी का मुँह नहीं देखती थी। वह वावड़ी के अंदर से बोली - 'तुम कौन हो ?' 'मै हरिओम कुँवर हूँ, मंडल नगरी का राजकुमार देश निकाला दिया हुआ है। पहरे पर गया था, राक्षस (शेर) को मार आया हूँ, खांडा धोना है।' उसने कहा - यह बावड़ी ब्रह्मणों की है, यहाँ धोओगे तो पाप लगेगा। गाँव के बाहर भूतो की वावड़ी है, वहाँ जाओ वे हमेशा नई वावड़ी खोद कर पवित्र ताजे जल से अपने माता-पिता को स्नान करवाते है। कुमार ने पूछा - 'तुम कौन हो ?' मै ब्राह्मण राजा गोकुलजी की राजकुमारी (कन्या) हूँ। मेरे साथ शादी करना चाहो तो राज्य आदि लेना मत, मुझे ही मांग लेना। दोनो की आँखे मिलने से उसे गर्भ रह गया था।

हरिओम भूतो की वावड़ी पहुँचा। भूत बैठे थे। कुमार ने सबसे बड़े भाई की चोटी पकड़ ली। उसने वादा किया कि आप जो काम कहोगे, निश्चित सफलता पूर्वक करूँगा, तब उसे छोड़ा। रक्त भरी तलवार धोई। वापस उस कुम्भकार के घर गया, कुम्भारी को कहा - मुझे रात का जागरण है, सोता हूँ, मुझे जगाना मत। सवा घंटा दिन चढने पर मै अपने आप जाग जाऊँगा। प्रातः लोग घास आदि लेने जंगल में गये तो यह रासा देखा कि शेर (राक्षस) के चार टुकड़े कटे हुए पड़े है। राजा के पास पुरस्कार प्राप्त करने के हेतु अनेक व्यक्ति पहुँचे। कोई कहता मैने मारा, कोई कहता मैने। विवाद मिटाने के लिये जांच की गई। पहले तो पता करो कि रात को पहरा किसका था। पता चला कि कुम्भकारी के लड़के का था। उसके घर जा कर पूछा गया कि रात को पहरे पर कौन गया था ? तेरा बेटा कहाँ है ? कुम्भारी ने कहा - 'मेरे मेहमान आये थे वे गये थे परन्तु वे सो रहे है और उन्होने जगाने का मना किया है।

संदेश वाहक वही बैठ गया। सवा घंटा दिन चढा और वह उठा। उन्होने कहा - 'आपको गढ़ में बुलाया है, हम आपको लेने के लिये आये है।' वो बोला - 'मै नहा धोकर अपने आप आ जाऊँगा। स्नानादि करके, तलवार और थेला (मूंछ, पूंछ और कान) ले कर गया। राज दरबार में राजा के बराबर आसन पर बैठ गया। अपना परिचय दिया। राजा ने पूछा - शेर आपने मारा था क्या ? वो बोला - 'शेर वेर तो मैने नहीं देखा, एक बनविलाव था, उसे जरूर मारा और थैला मै से निकाल कर उसकी मूंछ, पूंछ और कान भेट कर दिये। राजन अत्यन्त प्रसन्न हुआ। राजा प्रसन्न होकर बोला - हाथी, घोड़े राजपाट जो चाहो मांगो। उसने फूल कुमारी को मांगा। उज्जैन नगर मे ही शादी हो गई। नोवमें महिने कुमार का जन्म हुआ परन्तु बालक का शरीर तो मनुष्य का और सिर शेर का था, यह शेर का दृष्टांत पडने का प्रभाव था। उसका नाम 'वाघजी' या 'शेरसिंह' रखा। आंखे मिलते ही गर्भ ठहर गया था। इस राजकुमार को दाई को दे दिया। वह अपने घर ले गई और पालन-पोषण कर बड़ा किया। बड़ा हो पर उसे गांव के बछड़े चराने का काम सोंपा। एक मेघवालों का गुरु दोस्त बन गया, वो भी उसके साथ जाता। दोनो दिन भर गेंद खेलते और बछड़ों को नदी के रेत में बैठा देते। शामको घर लौटते समय बछडों के मुँह में फूंक मार कर पेट फुला देता सो पेट भर खाया लगता। लोगो ने सोचा ये दूबले-पतले होते जा रहे है सो मर जायेंगे, सो बाघजी कच्चे सूत की गट्टियाँ कातने के लिये दी। 'ढेरो' से कात कर रस्सी बनाई और पास पीपल पर डोलर झूला डाला। बछड़े स्वतंत्र चरते और आनन्द करते। इधर ये दोनो दोस्त झुला झूलते और मजा करते।

एक दिन उज्जैन की लड़कियाँ ईंधन (लकड़ियां) लेने के लिये वन में जा रही थी। उन्होंने भी झूला झूलने की इच्छा व्यक्त की परन्तु वाघजी ने मना कर दिया, कहा भारी भरकम शरीर वाली हो, कच्चे सुत से बना इस झूले की इतनी क्षमता नहीं है, टूट सकता है। कल तुम सात अनाज ले कर आना फिर यज्ञ करेंगे, बाद में खूब झूले खाना। दूसरे दिन सात अनाज लेकर आई। पीपल के नीचे चंवरी बनाई, यज्ञ किया, विधिवत मंत्र बोले गये, गुरुवा ने मंत्र जपे और वह कहता गया - 'कीका वाघजी लगन करै, वाघजी लगन करै। कुल चौबीस लडकियों से शादी की। फिर सबको बाहों में समेटा। गुरुवा बोला - 'एक मेरे लिये।' इस प्रकार एक गुरुणी उसके भाग में आई। फिर सबको झूला झूलाया। झूला इस वेग से चला कि दिल्ली और गुजरात तक जा रहा था। लड़कियाँ खुश हो गई और बोली - 'वाह रे कीका वाघजी। क्या कहना तरे डोलर का, इस तो समस्त देश दिखा दिया। लड़कियों को पता ही नहीं कि वाघा ने उनसे शादी कर ली है। वे लड़किया जब २०-२५ वर्ष की

हो गई परन्तु संबंध नही हो रहे। माता-पिता परेशान हुए और राजा को फरियाद की। राजा ने जाँच करवाई। दाई-दूती को पीछे लगाया, रहस्य पता करना था। दूती को रूई के ढेर के नीचे छिपा कर रखी और चौबीसो लड़कियों को रूई कातने बिठाई। वे वापस में बातो ही बातो में कहने लगी - 'वाघाने सात धांन मंगाये थे, यज्ञ भी करवाया था, फेरे भी खाये थे, फिर झुली थी। वो गुरुवा मंत्रोच्चारण के बीच में कहता रहात था - 'वाघजी परणे, वाघजी परणे' दूती रूई के ढेर के नीचे से सुन रही थी, उठ कर दौड़ी और राजा को यह रहस्य बता दिया। सभी लड़कियों को कीका वाघजी के घर पहुँचा दी। एक गुरुवा को दी। राजाने वाघजी को उजेड़ खेड़े खाखर भेज दिया, जहाँ कीका वाघने गांव बसाया। बारह बरस तक किसी रानी को कोई संतान नहीं हुई। कीका वाघजी परेशान हो कर वन-पर्वतों मे चला गया। वन-पर्वतों में भटकता।

एक दिन शामको अंधेरे में दूर प्रकाश नजर आया, शायद कोई साधु का आश्रम था। लपट के प्रकाश के सहारे उस दिसा में बढा और वहाँ पहुँचा। वह शम्भुनाथ की धूणी थी। नमोनारायण करके चरण स्पर्श किये और निवेदन किया - ' मैने चौबीस रानियों से शादी कि परन्तु एक भी संतान नहीं हुई। रात्रि विश्राम किया। शंभु महाराजने उसे एक छोटा सा डंडा दिया और बोले - 'सामने कुँआ है, वहाँ एक आम का वृक्ष है। उस पर एक ही बार यह डंडा फेंकना, जितने आम-क्यारी नीचे गिरे वे ले आना। एक आम उस कुँए में डाल देना। वो वहाँ गया, डंडा फेंका, सात आम गिरे। एक कुँए में डाला। सोचा मै क्या खाऊँगा इसलिये एक बार डंडा और फेंका। डंडा डाल से चिपक गया और आम उछल कर वापस वृक्ष के यथावत लग गये।

तब यह वापस शंभू महाराज के पास गया और अपनी भूल स्वीकार की। महाराज ने कहा - 'लालच बुरी बलाय' खैर जा वापस। तो सात क्यारियाँ (आम) नीचे पड़ी मिली। वो लेकर धूणी आया। महाराज क्यारियों के भभूत लगा कर अभिमंत्रित कर दी और कहा और किसीको मत देना। सात राणियां को एक एक देना। रास्ते में गांगी भूआ के यहाँ रात को ठहरा। भूआं को आम नहीं दिया पर चुपके से निकाल कर खा लिये। गुटली और छिलका भी वो ले आया। खांखर पहुँचा। गुटली खाई उसको पुत्रियाँ हुई - रूपा और दीपा। कुँवरो के नाम भोजा रसिया, नेहो रसिया, तेजो रसिये, उदो रसियो और उतावळियौ रसियो। सभी रंग रूप एवं शरीर के गठन में एक से, जैसे एक को छिपा कर दूसरे को निकालो।



काळ री कथा

अेक दांण जोड़े रा जोड़े बा'रे बरस बा'रे काळ पड़्या। झाड़ बाठकां सूखग्या। जिनावरां री दूध सूख ग्यौ। जंगळ रा जिनावरां ने खायग्या। रूखां रा पानड़ा नै छोडा खायग्या। आखर आ नौबत वाजी के खुदरा टाबरां तकात ने मांयां खायगी। तो पण जीवणौ दोरो व्हैग्यौ। मिनख आपरा हाथां रै डाचां धाळने बटका भरैनै बाड खावण लागा। घणी भूंडी व्हि। घणा फोड़ा पड़या। जद गरासिया देवी ने सिमरी।

देवी परगट व्हि अर बोली 'इतरौ लांबो अर भयंकर काळ क्यूं पड्यौ? आवौ म्हारै साथै बताऊं।' देवी अेक बाणिया रै घरै जायनै वींरै घट्टी रो पेड़ो उपड़ियौ तो वींरै हेटा सूं मोकळा ई बादळां निकळ्या। आभौ काळा मेघा सूं भरग्यौ अर हरहरायनै बिरखा व्हि तरनझीक। बाणीयौ माफी मांगी अर कदैई बिरखा नीं बांधण री सौगंध लीी।

जरै देवी भख मांगीयौ क म्हनै पाडो चढाव। बणियो आपरै धरम अर अहिंसा री बात कीवी तो देवी बोली - 'घासफूस रौ पाडौ बणा' र चढ़ाय दे, म्है वींनै ई 'बलि' मान लेऊं। बाणिये चढाय दियौ पण वींरी गावड़ काटता ई लोही रा वाळा व्हूआ, नदी-नाळा तळाव लोही सूं भरीजग्या। देवी बोली औ थारौ पाप फूटो। आइन्दा कदै बिरखा मत बांधजै। आज ई चौमासौ लागता बाणीया अमुक तिथिने आपरै घर रै बारणै गुळ री थाळी भरनै ऊभा रेवै 'गरासिया ने गुळ देवै नै गरासिया कैवेक - 'मेह मती बांधजौ।' वे पाछो कैवै - कोनी बांधा' औ रीवाज आज ई सिरोही रा कोई गावां में चालै।

खास : इण कथा रौ जिक्र मूथा नैणसी री ख्यात में दो तीन दांण आयो है। वीं वगत तो अनोप मंडल ई कोनी हौ। अनोप मंडळ वाळा इण मामला मांय गिरासियां री मदत करै। केई जैन मिंदर ई तोड़या। केई जैन मुनियां रै साथै मारकूट ई करी। गरासिया रौ विस्वास है क बिरखा नै अै जैन मुनि बांधे जिणसूं काळ पड़ै। जैनो री घणी खरी आबादी गोडवाड़ में है अर गरासिया ई आडावळा रा गोड (गोडवाड़) मांय बसै। अहम्मै केई मिंदरां मांय पौरादार गरासियो ने इज राख दिया। आ अेक अेतिहासिक कथा है।

अकाल की कहानी

एक बार निरंतर बारह साल तक अकाल की स्थिति रही। पेड़-पौधे सूख गये। पशुओं का दूध सूख गया। लोग जंगल के जानवरों को खा गये। वृक्षों के पत्ते और छाल तक खा गये। यहाँ तक नौबत आई कि स्वयं के बच्चों को भी माताएँ खा गई। फिर भी जीना कठिन हो गया। मनुष्य अपने हाथों को दांतो से काटने लगा। बहुत बुरी हालत हुई। अत्यधिक कष्ट भोगा। तब गरासियोने अपनी देवी को स्मरण किया।

देवी प्रकट हुई और बोली - 'इतना लंबा और भयंकर काल क्यों पड़ा? आओ मेरे साथ, बताती हूँ।' देवी एक बनिये के घर गई और उसकी आटा पीसने की चक्की का ऊपर का पहिया उठाया तो उसके नीचे से अनेक बादल निकले। नभमंडल काले कजरारे मेघों से भर गया और उमड़-घुमड़ कर भारी वर्षा हुई। बनिये ने माफी मांगी और कभी भी वर्षा नहीं बांधने का वादा किया।

जब देवी ने बलि मांगी कि मेरे भैसा चढ़ाना होगा। बनिये ने अपने अहिंसा धर्म की दुहाई दी तो देवी ने कहा - 'घास-फूस का भैसा ही बना कर चढा दें, म्हैं उसे बलि मान लूंगी।' बनिये ने वह चढ़ा दिया। परन्तु उसकी गर्दन काटते ही खून की नदी बहने लगी। नदी-नाले व तालाब रक्त से भर गये। देवी बोली यह तेरा पाप का घड़ा फूटा है। भविष्य में कभी भी बरसात मत बांधना। आज भी बरसात के पूर्व एक विशेष तिथि को अपने घर के सामने गुड़ से भरी थाली लेकर बनिये खड़े रहते है और गरासियो को गुड़ देते है और गरासिये कहते है - 'वर्षा मत बांधना' वे वापस कहते है - 'नहीं बांधेगे।' यह प्रथा सिरोही के कई गाँवो में आज भी चल रही है।

विशेष : इस कथा-प्रसंग का वर्णन मूथा नैणसी री ख्यात में दो तीन स्थलों पर आया है। उस समय तो अनोप मंडल भी नहीं था। अनोप मंडल वाले इस मामले में गरासियां की मदद करते है। कई जैन मंदिरों को तुड़वाया, कई जैन मुनियों के साथ मारपीट की। आज भी गारसियों का विश्वास है कि वर्षा को यह जैन मुनि बांधते है इसलिये अकाल पड़ता है। जैनो की अधिक संख्या गोडवाड़ में है और गरासियों भी इस क्षेत्र में रहते है। अब कई मंदिरों में पहरेदार गरासियों को ही रख दिया है। यह एक ऐतिहासिक कथा है।

काळ रौ दैवाळ इन्दर

गरासियां मोकळा ई काळ देख्या। घणा ई दुख काढ्या। कुदरत री लीलो रूप देख्यौ तो उजड्यौ रूप ई देख्यौ। धराव ढाडां नै मरता अर रूखडां-बेलड़यां सूखता ई देख्या। रात नै हीलू पंछी री कुर्रलाट मा काळ नै रातो-पीळौ पड़तौ देख्यौ। काळ माथै काळ अर ऊपरा-ऊपरी दुकाळ ई देख्या अर इणसूं रोग दुःख, दाळिदर, सोक अर जळम मरण भोग्या। गरासिया रै लोक गीतां अर कथावां मा बा'रै काळौ रा दाखलां लाधै -

१. खोड़यौ	**२. औरीलीयो**	**३. लाठीयो**	**४. मांकियौ**
५. लीलीयौ	**६. वेडियौ**	**७. जवालियौ**	**८. होगनियौ**
९. मूठियौ	**१०. उन्दरियौ**	**११. फूरीयौ**	

इन्दर रै रूठण सूं बिरखा कोनी व्है, आ इणांरी लोक धारणा है पण क्यूं रूठीयौ ? वींनै

कुण रूसायौ ? गरासियां मा इण बाबत लोकगीत अर लोक कथवां है। बरसां ताई लगोलग काळ पड़ा री मूल बजे कांई हुई ? इन्दर क्यूं कोप्यौ ? कारण कांई हो ? कैवे के मोरीया ने इन्दर रम्मत-रम्मत मा आपसरी मा खड़बड़िज्या। औ रोळी रूगट खावण सूं व्हियौ। इण रम्मत (खेल) अर रगड़ा-झगड़ा री रोचक कथा गरासिया कैवे -

इन्दर-मोर्‍या रै रम्मत री कथा :

अेकर इन्दर राजा अर मोर राजा 'डोटा' खेल खेलण री मनसूबौ कर्‍यौ। दोन्यूं टीमां माथै बां'रां बा'रां खेलड़ियां हा। वादळां इन्दर रै भीडू हा अर मोरा रै भीडू गरासिया रीया। डोटा सारूं दड़ी सोना री ही जकौ इन्दर लाया अर डोटा ठोकण नै गेडियां मोरयौ लायौ जकौ चांदी रौ हौ। रम्मत कुम्भारिया गांम कनै अंबामात (आबू) रै देवरा सूं ढाई कोस अर जामुड़ी ताई री ताळ ही जको काठेसर मा'देव सूं पांचेक कोस पड़ै। वठै रमिया

दोन्यूं दलां माय खेल (मैच) जोर जम्यौ। आधा खेल (हाफ टाइम) तक मोर्‍या री टीम माथै बा'रा गोल चढ़िया अर सैंग खिलाड़ी थाक ग्या जरै गरासिया आपरी कुळदेवी अर भाखर बाबसी नै सितारिया अर बोलमा बोली। देवी परगटी अर हिम्मत बंधाई अर पूरी लगन अर भरोसो राखनै खेलण री सला दीवी। औ वचन ई दीयौ के म्है थांरै लारै ऊभी हूं, साथै खेलूला पण हिम्मत हारिया काम नीं सरै।

गारसिया अहम्मै हुआ सूरमा, खेल्या तन-मन सूं अर आखर हुई जीत। फतह रा डंका बजाया। इन्दर रूठग्यौ। रीसा बळतौ वादळां नै फटकारिया, तोई वादळां सोच्यौ म्हारी हार मा ई जीत इज समझो, म्है नीं जीत्या तो कांई मोरीयौ ई म्हारौ भांजौ इज है, वींया री जीत ई म्हारी जीत समझौ, लडै तो अेक पडै इज।' इन्दर मेघां री चाल समझग्या। इन्दर मेघां सूं पण रूसीजग्यौ।

मोरीयो री हौसलौ वध्यौं, इन्दर 'चुनौती' देयनै ललकारयौ के अैड़ौ गारबो है तो भीडूवा नै छोड अर आव आपां दोन्यूं इज लड़ा, अबारू फैसलो व्है जाई कै 'नाई नाई बाल कित्ता कै अबार मुंडा आगै आई जाई।' मोरीये इन्दर री चुनौती मंजूर कर ली। गरासिया दोन्यूं रै मैच री 'रैफरी' 'काळभैरव' नै मुकर्रर करण री मंसा जताई। इन्दर इणरौ एतराज करतो थको बोल्यौ - 'औ दोगलो है, पगसापगसी करै अर गरासियां रौ हेतुड़ौ है सो 'वरूण' नै पंच (रैफरी) थापौ। मोरलो आ जाणतो थकौ के 'वरूण' इन्दर रौ पिट्टू है तो पण बात मान ली।

दोन्यु चवड़े चौगान ताळ ठोक नै उतग्या। खूब रम्मत रम्या। इन्दर मोरड़ा पर कोप्योड़ौ तो थो इज सो खेल रा नेम धरम ताक में ऊंचा मेल दिया अर गेडिया सूं मोरा रा पग

लोहीझांण कर न्हाख्या तो पण मोरलो झूजतो रयौ अर छेवट हारग्यौ। दो बीसी नै च्यार गोळ सूं इन्दर जीत्यौ।

मोरलो घबरायौ। गरासिया वींनै विस्वास्यौ। गरासियां भाखर बावसी, खेतर बावसी अर देवी देवतानां नै सवरिया। वो अहम्मै खेलवा री हालत में कोनी दीसतो, हताश-निरास व्हैग्यौ हो। पण घोड़ा बावसी आद कीं देवत मोरया रै जीतण री 'घोषणा' कर दीवी। 'वरूण' नै ई औळबौ दैता थकां नेम अर न्याव सूं खेलावण सारूं चेतरायौ नै भळोवण वी। इन्दर नै ई औळबौ देवता थका मरजादा सूं खेलण वास्तै तकरार सूं इकरार करायौ।

खेल पाछौ मंड्यो। खलकौ देखण जोग। कै तो मोरो घबरायोड़ो हो नै कै देवी चमत्कार सूं डील री नस-नस मांय बीजळ ज्यूं सगति संचरी। पवन वेग सूं रमतोड़ो मोरिया नै देखनै सगळा अचूंमै रैयग्या। मोर आपरै माथै चढ्या दो वीसी नै च्यार गोळ उतारनै, फेर पाछा अेक दरजन गोळ चढाय दिया अर फतह रा डंका बजाया। इन्दर मोरीया पर रातो-तातो हुयौ पण की बस नी लागी अर मोरीया रौ वंग आयौ कै 'ऊतर भीखा म्हारी वारी' इन्दर ईड बांध ली अर बदळौ लैवण री तेवड़ ली।

वदळौ लैवण रो अेक इज मारग हौ - 'काळ'। काळ पटक्यौ तो अैड़ौ पटक्यौ कै बा'रा बरस छांट ई नीं पड़ीं। भूंडी व्हि। च्यारूं खूट त्राही-त्राही मचगी। झाड़-बांठकां, पसु-पंखेरू, जीव-जंत रौ खात्मौ व्हैग्यौ। नदी-नाळा, कुंवां-बावडां, नाड़ा-खाडा, ताळ-तळाव सै सूखा-खणक।

मोरलो गब्बरू गढ रै पागती भाखर रे गोड री ताल्र में डेरा किधा, आखरी सासां गिणतो हो। बीस विस्वा मांऊ पन्दरे विस्वा डूबा अर पांच तिरता हा। देवी-देवतावां मांय हलबळौ माच्यौ भारी। वे दोड्या-दोड्या इन्दर कनै पूगा अर मोरीया पर महर करण रीं अरदास करी। खेल खेल में इती नाराजगी आपनै नीं सोभै। त्रदळौ ई अैड़ौ कैड़ौ ? स्रिस्टि कांई बिगाड़ियौ। जीव जनावर अर झाड़ बाढकां रौ कांई कसूर, वे बेगुना मरै है। कांई औ न्याव है पण इन्दर टस सूं मस नीं हुयौ।

मोर आपरी कुळ देवी नै ध्यावै हो। देवी वींनै अमर फळ दीयौ अर कह्यौ - जाऔ खाय लीजै अर रोज दिन उग्या पैली कांकरा चुग लीजै, भूख मिट जासी। खुली पवन भखजै, तिरस मिनट जासी। काळ रौ माथौ भांग देऊंला। छेवट इन्द्र फेर अेकर हारयौ अर बिरखा करणी पड़ी। मोरीयौ आज तांई जीवै। इन्दर मोर रौ खोज गमावणी चावतो। आ कथा गरासिया रा गीतां में ई गवीजै।

अकालदाता इन्द्र

गरासियों ने अनेक अकाल देखे है, भुगते है, बहुत दुःख निकाले है। प्रकृति का रचनात्मक स्वरूप के साथ 'ध्वंसक' रूप भी देखा है। रात्रि में 'हीलू' पक्षी की कुलराहट में अकाल को लाल पीला पड़ता देखा है। अकाल पर अकाल और निरंतर दुकाल भी देखे है। इससे उत्पन्न रोग, दुःख दारिद्रय, शौक और जन्म-मरण भोगे है। गरासियों के लोक गीत और लोक कथाओं में बारह प्रकार के अकालो के प्रसंग एवं वर्णन मिलते है -

१. खोड्यौ	२. ओरीलीयौ	३. लाठीयौ	४. मांकियौ
५ लीलीयौ	६. वेडियौ	७. जवलियौ	८. होगनियौ
९. मुड्ढीयौ	१०. उन्दरियौ	११. फूरीयौ	

इन्द्र के कुपित होने से वर्षा नहीं होती। यह इनका लोक विश्वास है। परन्तु इन्द्र क्यों प्रकुपित हुआ ? इसे किसने नाराज किया ? गरासियों में इस संदर्भ में लोकगीत और लोक कथाएँ हैं कि वरसो तक निरंतर अकाल पड़ने का मूल कारण क्या था ? इन्द्र क्यों क्रोधित हुए ? ये कहते है कि इन्द्र खेल-खेल में मयूर राजा से रूठ गये और झगड़ा हो गया जिसका कारण झूठ बोलना था। इस मयूर और राजा इन्द्र के झगड़े की रोचक लोककथा गरासिये कहते है, जो निम्नांकित है -

इन्द्र-मोर की क्रीडा-कथा :

एक बार इन्द्र और मोर ने मिल कर 'डोटा खेल' खेलने का विचार किया। दोनों 'टीमों' में बारह-बारह खिलाड़ी थे। बादल इन्द्र के पक्ष में और गरासिये मोर के पक्ष में खेले। 'डोटा' के लिये सोने की गेंद इन्द्र लाये तो 'खूंडियां' (हॉकीनुमा डंडे) चांदी के मोर न लाया९। खेल 'कुम्भारीया' गाँव से 'जामुड़ी' गाँव के बीच चौपट मैदान में हुआ। 'कुम्भारिया' अम्बा माता (आबू) के मंदिर से छः की.मी. और जामुड़ी काठेश्वर महादेव से १५ किलोमीटर दूर है।

दोनो दलों में खेल अच्छा जमा। 'हाफ टाइम' तक मोर की टीम पर बारह गोल चढ़ गये और सब खिलाड़ी थक गये तब गरासियों ने अपनी 'कुळदेवी' और भाखर 'बावसी' (पर्वत देव) का स्मरण किया और मनौती बोली। देवीने इनको हिम्मत दी और पूरी लग्न तथा दृढ आत्मविश्वास से खेलने को कहा। यह वचन भी दिया कि मैं तुम्हारे पीछे हूँ और साथ खेलूगी। तुम हिम्मत मत हारना।

अब गरासियों को बल मिला। दूने उत्साह से खेले और अंत में जीत गये। विजय का शंखनाद एवं जयघोष किया। इन्द्र अति क्रोधित हुआ, बादलो को फटकार लगाई। तो भी

बादलों (मेघो) ने सोचा - ''हमारी हार में भी जीत है। हम नही जीते तो क्या हुआ, मोर भी हमारे भांजे ही तो है। उनकी जीत भी हमारी ही जीत है। दो लड़ेगे तो एक तो गिरेगा ही।'' इन्द्र मेघों की चाल समझ गया और मेघो से भी नाराज हो गया।

मोर की हिम्मत बढी। तब इन्द्र को चुनौती देकर ललकारा कि ऐसा घमंड है तो साथियों को छोड कर आजा। अपन दोनो अकेले ही खेले, अभी निर्णय हो जायेगा कि 'नाई नाई बाल कितने कि अभी सामने आते है।' गरासियो ने 'काल भौरव' को निर्णायक (रैफरी) के रूप में नियुक्त करनेकी इच्छा व्यक्त की। इन्दर ने इसका एतराज पेश करते हुए कहा कि यह पक्षपात करता है और यह गरासियों का मित्र भी है इसलिए 'वरूण देव' को निर्णायक नियुक्त किया जाय। मोर जानता था कि 'वरूण' इन्द्र का मित्र है, फिर भी बात मान ली।

दोनो मैदान में उतरे। खूब खेल खेला। इन्द्र मोर पर क्रोधित तो था ही इसलिये खेल के नियमो का उलंघन किया। गेडिया (हॉकी) से मोर का पांव खूनाखून कर दिया तो भी मोर संघर्ष करता रहा और अंत में हार गया। इन्द्र चौबीस गोल से जीता।

अब मोर घबराया। गरासियों ने उसे धीरज बंधाया और अपने पर्वत देवता, क्षेत्रपाल तथा अन्य देवी-देवताओं को स्मरण किया परन्तु वह अब खेलने की स्थितिमें नहीं था, हताश-निराश हो गया। उस समय 'घोडा बावसी' आदि कुछ देवताओं ने मोर के जीतने की घोषणा कर दी। 'वरूण' को भी उपालम्भ देते हुए नियम और न्याय से खेल करवाने को कहा तथा इन्द्र को भी चेतवनी देते हुए मर्यादा से खेलने हेतु पाबंध किया।खेल पुनः प्रारंभ हुआ। खेल देखने योग्य था। योंतो मोर घबराया हुआ था पर अचानक बिजली की भांति शरीर में शक्ति संचारित हुई। हवा से बाते करता पवन वेग से खेलते हुए मोर को देख कर सब दांते तले अंगुली दबाने लगे। अंत में इन्द्र बुरी तरह से हारा। मोर अपने ऊपर चढे चौबीस गोल उतार कर बारह गोल इन्द्र पर चढा दिये। मोर ने जीत का डंका बजा दिया। इन्द्र मोर पर अत्याधिक क्रोधित हुआ और इसका बदला लेने की ठान ली।

बदला लेने का एक ही रास्ता था - 'अकाल'। अकाल किया तो ऐसा किया कि बारह वर्ष तक वर्षा की बूंद ही नहीं पड़ी। चारो ओर त्राही-त्राही मच गई। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु सबका नाश हो गया। नदी-नाले, कुँए-बावडी, खड्डे-तालाब सब बिल्कुल सूख गये।

मोर ने गबरू गढ़ के समीप पर्वत की तलहटी के मैदान में शरण ली। वह अंतिम सांसे गिन रहा था, मरणासन्न था। ७५ प्रतिशत मर चुका था। यह देख करे देवी-देवताओ में खलबली मच गई। वे सब भागते दौडते इन्द्र के दरबार में पहुँचे और मोर पर दया करने हेतु

निवेदन किया कि खेल के कारण इतनी नाराजगी आपको शोभा नहीं देती। बदला भी ऐसा कैसा ? समस्त सृष्टि ने क्या बिगाड़ा ? जीव-जन्तु और पेड़-पौधों की क्या गल्ती ? बेगुनाह मर रहे है सब। क्या यह न्याय है ? परन्तु इन्द्र के कान पर जूं तक नहीं रेंगी।

मोर ने अपनी कुलदेवी का स्मरण कर प्रार्थना की। देवी ने उसे 'अमर फल' दिया और कहा - 'जा यह खा लेना और हमेशा सूर्योदय से पूर्व कंकड चुगते रहना, भूख मिट जायेगी और खुली हवा का भक्षण करना, सो प्यास मिट जायेगी, तृप्ति हो जायेगी। अकाल का सिर चकनाचूर कर दूंगी। आखिर इन्द्र को एक बार फिर हार खानी पडी और वर्षा करनी ही पड़ी। मोर आज तक जीवित है। इन्द्र मोर के वंश का नाश करना चाहता था। यह कथा गरासिये गीतों मे भी गाते है।



प्रलय के बाद की कथा

प्रलय के पश्चात अंबामाता अन्य देवियों के साथ सुमेरू पर्वत पर 'ढेड झोपनी' (सूर्यास्त बिन्दु) पर बैठी सभी देवियों के साथ विचार-विमर्श कर रही है, कि जगत तो सब डूब गया पर अब धरती पर कितने देवी-देवता तथा मानव-दानव रहे है। अंबा ने ध्यान लगाया तो दूर समुद्र के किनारे किनारे विलायत में सफेद घोड़ा दौड़ाता हुआ अंग्रेज दिखाई दिया। सोचा यह कैसे नहीं डूबा? कैसे बच गया? इसके पास भी कोई शक्ति होनी चाहिए, यह भी कलाकार लगता है। दूसरा एक हठीया दानव दिखाई दिया - वह लाख का देवल बना कर अंदर सुरक्षित रहा, जिसमें पानी नहीं जा सकता था। पानी उतरने के बाद उस तीखे मंदिर के ऊपर मुर्गा बन कर बोला। अंबा माता ने सुमेर पर्वत पर सुना। सभी देवियों को कहा कि तुम सब चुप चाप बैठो, मै जाती हूँ, इसे चालाकी से ले कर आती हूँ। सुमेरू पर्वत को बत्तीसा चढ़ाना बोला हुआ है सो मनौती मनानी है वह भी पूरी हो जायेगी और राक्षस का भी नाश हो जायेगा। 'एक पंथ दो काज'। तुम घबराना मत, चिन्ता मत करना।

वृद्धा अंबा मां जवान सुंदर युवती बन गई। वो जहाँ मुर्गा बन कर बोल रहा था, धीरे धीरे छिपते-छिपते उसके निकट पहुँची। देखते ही हठीया बोला - 'अरे अंबा! तुम ठीक आ गई। मै तुमसे शादी करना चाहता हूँ।' अंबा बोली - 'मै भी इसीलिये आई हूँ। सब देवी-देवता डूब गये। अब तो केवल तुम और मै दो ही बचे है। परन्तु जब तक शादी नहीं हो मेरे शरीर को नहीं छूओगे। शारीरिक संबंध नहीं करेगे। सूर्यास्त हो गया। एक ही खाट था उस पर दोनो सोये पर दोनो के बीच में अंबा नें खांडा रखा। इधर-उधर किसी का हाथ-पांव किसी का भी पड़े तो कट जाय। रात बीती। सुबह अंबा ने कहा सात धान (चने नहीं) ले कर सुमेर पर्वत पर चलो। वहां पर यज्ञ करेगे, शादी करेगे। इसे गीत में भी गाया है -

हठिया, सूरजी आग री घाटी में ऊभा रीजौ
कन्या, पूठल-पूठल आवै सूरजी ऊभा रीजौ
दानवो आगळ-आगळ हालै रे। सूरजी...
दाणवौ परणौ-परणौ जकै रे। सूरजी...

पर्वत सीखर से देवियो ने हठिये को लाते देखा तो वे प्रसन्न हुई। अंबा ने हाथ से ईशारा करते चुप रहने को कहा। सुमेरू पर्वत की छाया में यज्ञ वेदी बनाई गई। भांवरी में गोल

चक्कर आगे पीछे न लगा कर एक दिशा में लगाये। एक दिशा में अंबा घूमती रही, दूसरी दिशा में हठिया घूमता रहा। अंबा मां को शादी तो करनी नही थी, भुलावा दे कर उसे मारना था, यज्ञ की अग्नि शिखा पर स्वयं जीभ निकाल कर पीछे हटी ती रही और हठिये की गर्दन लंबी करवा दी और अपने पवन खांडा से गर्दन काट दी। अंबा माता बोली 'ले सुमेरू पर्वत बलिदान, मेरा वादा पूरा हुआ। हठिया मरते मरते बोला - 'मेरी दुनिया में क्या निशानी रहेगी। तब अंबाजी ने कहा - 'मारवाड़ में जवा (एक जीव) और मेवाड़ में खटमल (मोकड़) रहेगे जो इसकी रक्त बूंद से बने थे। सभी देवियों ने हठिये का बोटी-बोटी (डळैडळै) मांस और अंजलि भरभर (पळै पळै) खून पीया। सुमेरू का वादा पूरा हुआ पर 'अळूप वृक्ष' का शेष रहा।

सभी देवियाँ अपने यथा स्थान चली गई। कई बरस बीत गये। खाये पीये और मौज करे। 'अळूप' वृक्ष पाताल में बैठा सोचा कि अंबा माता तो भुल गयी है। अळूप स्वप्न में गया - अंबा माता के खाट के नीचे छोटा बच्चा बन कर रोने लगा। बोला - आप भूल गई, मेरा कल्याण करो, वादा पूरा करो। अंबा मांने पूछा - 'तुम्हारा मूल कहाँ है? अळूप बोला - पाताल में शेषनाग (वासग) की कुण्डलिनी में जकड़ा हुआ हूँ। मेरा शुद्ध एवं मूल नाम 'वरलौ सीधवौ' है। अंबा ने कहा - 'तुम चिन्ता मत करना मै तुम्हे धरती पर लाऊंगी। प्रात. सभी देवियों से कहा - तुम सब सावधान रहना। मै सात समुद्र पार कुछ दिनों के लिये मेहमान बन कर जा रही हूँ। वह अपनी बहिन 'पोयण' के घर गई। पोयण को लगातार बारह अकाल पड़ने से अंबा ने सात समुद्रो से पाव पानी भरने के लिये 'अडाणै' रखी थी अतः वह क्रोधित थी। अंत में वह शांत हुई तब अंबाजी ने कहा - 'तेरे बाग से हरे बांस लेने आई हूँ। बांसो के सहारे मुझे पाताल लोक में उतरना है। पहले तो उसने मना किया कि मेरी कंवारी बाड़ी है, इसलिये नहीं दूंगी। आखिर अंबा के आग्रह पर दिये। वह गट्ठर बांध कर ले गई। बाये पांव से ठोकर मारी तो आकाश मार्ग से देवळ माळीये में चौतरे पर गठ्हर उतरा। अंबा ने वांस धरती में (पानी में) उतारे, जहाँ शेषनाग था। फिर देवियों को 'पान पलोटिया' पर्वत पर 'पोमचो दानव' (नेवला) को पकड़ कर लाने को भेजा। उस पर्वत पर सब मोर्चा लगा कर बैठी, जगह जगह जाल लगाये और अंत में उस 'नेवले' को ले कर आई। अंबा ने उसे बांस के मुँह पर बैठ कर पूरी पहरेदारी करने को कहा। फिर अंबा पाताल में उतरी इससे पूर्व नेवले ने पूछा कि मैं क्या खाऊंगा-पीउंगा? अंबाजी बोली - 'बांस नली में पाताल से दूध की धार आयेगी उसे पीना और यहाँ सांप आदि अधिक है, ले आते रहेगे उसे खाते रहना। विष चढ़े तो लोट कर सूर्य के सामने देखना सो विष उतर जायेगा. दूध के स्थान पर बांस से खून आये तो चिल्लाना शुरू करना, कोई पुकार सुनेगा। अंबा बाल रूप हो कर बांस-बांस पाताल में उतरी। वहाँ पर शेष नाग की पत्नी 'पदमा' नागिन पंखा झल रही थी और शेष सो रहा था, 'अळूप' से लिपटा

था। पदमा नागिन ने कहा - 'भोली भाली बच्ची रास्ता भूल गई क्या? इधर कैसे आ गई? शेष नाग जाग गया तो विषैली फूंक से भस्म कर देगा। भले चाहे तो चुपचाप चली जा।' अंबा बोली - 'जगा तेरे नाग को मै इसके दर्शन करने आई हूँ।' फिर अंबा माता ने शेष नाग को ठोकर मार कर जगाया। शेष ने फूंक मारी, अंबा जल उठी। बांस बांस खून ऊपर पहुँचा। नेवला (दानव) चित्कार उठा, चिल्लाता रहा। संयोग से शिव-पार्वती उधर से निकलते सुना। पार्वती के आग्रह पर बांस बांस पाताल पहुँचे। अंबा को जलते देखा कि सोने की लपटे उठ रही है, चांदी-सा धुंआ निकल रहा है। अमिया (पार्वती) ने अमी का छींटा दिया। शिवजी के पास केले की छडी-सी (संजीवनी) थी, उसे ऊपर घुमाया और वह पुनर्जिवित हो उठी। और वापस तीनो ऊपर आ गये। देवलमालिये के चबूतरे गये। अंबा ने कहा शिव-पार्वती से कि कृपा कर आपके पास जो भी चमत्कारिक वस्तुएं है, वे मुझे देने की कृपा करें। तब एक तो झालरियौ टोप, विषनाशक मुंदड़ी और एक हासिया दिया। और कहा डरना मत और चले गये। नेवला घबरा कर भाग गया था, उसे आश्वस्त करके वापस पूर्ववत जिम्मेदारी सौपी और अंबा वापस पाताल लोक पहुँची। शेष नाग की विषैली फुंक का असर अंगूठी आगे करते ही प्रभावहीन हो गई। झालरिया टोप भी पहिनने को था। आखिर वह डसने लगा तब हाँसियों से सभी फन काट दिये। तब पदमा नागिन रोई कि मेरे सुहाग के लिये अब तो छोड दे देवी, मैं शेष जीवन कैसे बिताऊँगी। तब उसे छोड दिया। पदमा ने कहा मैने अब आपको पहिचाना। फिर 'वरलीयो सीधवो' या 'वर-सीधवो'(अलूप वृक्ष) ले कर पाताल से बाहर निकली। आ कर देवियों से कहा इसने हमारी रक्षा की है। इसे मजबूती से पत्थर पर लगाओ। दंतकथा प्रचलित है कि मोलेला गाँव (नाथद्वारा के पास) पत्थर पर आज भी यह वट वृक्ष है जो अधिक बड़ा नहीं है, कारण इसे काट दिया था, जिसकी भी एक कथा है। इसका मूल पाताल में है, इसीलिये इसकी शाखामें-जटायें पृथ्वी में जाती है, पाताल की ओर।

'वरसीधवा' (वट वृक्ष) ने जब पत्थर पर जडें नहीं जमाई, और बार-बार गिर जाता था तब अंबा माता ने एक मनौती बोली कि हे वरसीधवा! आप पत्थर पर जड़े जमा दो मै आपको २७ बालको की बलि चढाऊंगी। तब वट वृक्ष पत्थर पर खड़ा हो गया, पैर जमा दिये। देवियाँ खायें पीयें और मौज करें। बलि चढ़ाना भूल गई। तब १२ वर्षो बाद स्वप्न में अंबाजीको याद दिलाया कि भूल कैसे गई। तब अंबाजी ने खोज करके 'वडबोर' के बीज लाई और जंगल में बो दिये। पानी पिला कर बड़े किये। फल फूल आये तब अंबाजी 'धार पाटन' गये। वहाँ गाछा से कुछ ऐसे 'भरणीयो' (ओडा) गूथाएं, जिसमें बहुत से बालक आ सकते थे। 'भरणीये' के ठोकर मारी तो वह आकाश मार्ग से 'देवी माळिये' उतरा जो देवियों का निवास स्थान था। सभी देवियों को ले कर बोर लेने गई । इस कथा पर एक गीत प्रचलित है।

प्रलय की काव्य बद्ध कथा

भरणीयौ[१] गूथावियौ[२] अंबा देवी रे ओ
गांछीडा[३] घरै अंबा गी रे ओ
भरणीयौ गूंथावियौ रे अंबा देवी रे
डावा[४] पगे री ठोकर मारे रे लो
अम्बा डावा पगे री ठोकर मारी रे लो
भरणीयौ रे तारा मेघला[५] रे लो
विचार करै रे नवलख[६] देवियो रे लो
बोर[७] वीणवो[८] रे चाली रे अंबा मात रे लो
रन मा साथै चाली नवलख देवियो रे लो
इत बोर वीणवा चाली नवलख देवियो रे लो
भरणीयां भरीया नवलख देवियां रे लो
भरणीयौ भरीयो वड-बोरा[९] रौ रे लो
धीरे रैयने बोले अंबा देवी रे लो
भरणीयां लेगो रे नवलख देवियां रे लो
जाणुं आयु रे 'धारपाटणौ'[१०] रे लो
मांजी लैने जाता रया रे धार पाटणौ रे लो
भरणीयौ उतारे रे अंबा देवी रे लो
भरणीयौ माऊं रे बोर काढै रे लो
उत बोर वांटै[११] बाळको रे लो
उत बोर दिये रे बाळको रे लो
धौरीया[१२] आवै रे नैना बाळ रे लो
टोळौ[१३] बाळकां रौ लारे उछरीयौ[१४] रे लो
भरणीया मा पेठा[१५] नैना बाळकां रे लो
खावानै मीठा बोर भरणीया पेठा रे लो
से सताइस बाळकां भरणीया मा रे लो

भरणीयौ बंद करे दियौ देवी रे लो
अंबा मां पगे री ठोकर दीवी रे लो
भरणीयौ चढ़ियौ तारां मंडलो रे लो
भरणीयौ सुमेर[१६] उतरे रे लो
उत तपसा करै जोगी 'भूणीयौ'[१७] रे लो
तपसा लीधी जोगी 'भूणीयौ' रे लो
सुमेर उतरे है जोगी भूणीया रे लो
भरणीयौ आयो समेर परबतां रे लो
भरणीयौ उतरे माथै भूणीयौ रे लो
भरणीया मा रोवै नैना बाळकां रे लो
रोवै-रदळै रे नैना बाळका रे लो
धीरो रैने बोले जोगी 'भूणीयो' रे लो
हां धीरे रे बोले जोगी भूणीयौ रे लो
अंबा थारौ जाजे खोज रे लो
ओ पालाबो[१८अ] पळै परियौ रे लो
भगती छोडी रे जोगी भूणीयौ रे लो
टाबरां रौ पेलबो पानै परियौ रे लो
विचार मांडै रे जोगी भूणीयौ रे लो
पेरा चढ़ावो चेला रावळा रे लो
इणारे चड्डी[१८ब] सिवराड़ौ रावळा रे लो
घोटा घड़ावौ चेला रावळा रे लो
इत झब्बा सिवराड़ौ रावळा रे लो
भगमा रे झब्बा सिवराड़ौ रावळा रे लो
झोळी सिबराड़ौ चेला रावळा रे लो
धीरे बोलो रे जोगी भूणीयो रे लो
आपणै दरसण जावू रे चेला रावळा रे लो
दरसण जावू रे आबू-घूंघळा[१९] रे लो
आगल[२०] व्हियौ जोगी भूणीयौ रे लो
पूठल[२१] चालै रे चेला रावळा रे लो
वे तो जाता रीया रे आबू-घूघळै रे लो

धूणीयौ-धूणीयौ फिरे जोगी भूणीयो रे लो
है साथै फिरे रे चेला रावळा रे लो
मांजी धीरा रैयने जोगी बोले रे लो
आधो आबू देवियों कौ बाजै रे लो
आधो तो तपसी-जोगीयो रो लो
दरसण जाऊं रे नक्की ऊपरे रे लो
इत नक्की[२२] तळाव देविया खणायौ रे लो
नखा सूं खणीयौ रे नक्की तळाव रे लो
अपणे दरसण किदो नक्की तळाव रे लो
चेलो किदा है दरसण नक्की तळाव रा रे लो
अपणै धीरौ बोले रे जोगी भूणीयो रे लो
देवियो खणावियो घूमर पावटो[२३] रे लो
आपणै दरसण करो रे घूमर पावटो रे लो
उत पेरो घुमावियौ घूमर पावटो रे लो
घुमंतो चढ़िया रे तारा मांडलो रे लो
उत जल तो उतरे रे पीयाळ[२४] सातमो रे लो
अे तो पांणी पीये रे चेला रावळा रे लो
धीरा बोले रे चेला रावळा रे लो
दरसण जाणौ रे 'वरहीदवे'[२५] रे लो
दरसण करवौ रे 'वरहीदवो' रे लो
हाले आगे जोगी भूणीयो रे लो
पूठल आवै रे सेला रावळा रे लो
इत लगतो लीधो रे 'वरहदवौ' रे लो
हूरज गियो सूरण माळीयो रे लो
फिरै-फिरैने चेला भाळे रे लो
उत चेला धूणी घाले रे वरहीदले रे लो
साते धूणी रे चेला घेला रे लो
उत अळगो जावै रे जोगी भूणीयो रे
अळगो जावै न धूणी घाले रे लो
वरला हेटे रे चेला रावळा रे लो
आई ने संभाळै अंबा देवी रे लो

इत बोलमा अंबा देवी रे लो
चेला आया रे वरहीदवा रे लो
बोलमा[२६] छूटे रे अंबा देवी रे लो
क चेला आया रे अंबा वरहीदवा रे लो
त परा चढ़िया चेला रावळा रे लो
सवेर व्हियौ रे जोगी भूणिया रे लो
उत हेलो[२७] मारे रे जोगी भूणीयो रे लो
अे इत कोई ना बोले रे चला रावला रे लो
उत खोखा[२८] परिया रे 'वरहीदवा' रे लो
उत चेला चढ़िया सताइस बाळका रे लो
रोवै रदन करै म्हारौ जोगी भूणीयौ रे लो
भारा[२९] बांधे गुटा[३०] रा मारा म्हारे बांधे
ओ पोटका[३१] बांधे है झोळी झंडा
सरवर चाले जोगी भूणीयो
ओ लगतो लीधो धार पाटण[३२]
लगतो लीधो रे धारे पाटण
जातो रीयौ रे जोगी रावळा रे
रूंधो घालै पोट का न्हाखै चौक में
ओ भारा न्हाखै माणक चौक में
पूछणौ पूछे है रावला बेली
ए क्यूं रोवै रे जोगी भूणीया
पेरा छळिया म्हारा चेला रावला
ओ धीरो बोले है रे जोग रो
धीरो बोले रे जोगी भूणीयो
रात जो अठै करै हे रे वरहींदवौ
पेरो वडाऊ रे वरलो हिन्दवो
पेरो कटाऊ रे वरहींदवो
ओ हुतार[३३] बुलावै राजा जिकर (विक्रम)
ओ पेरो बुलायौ सुथार हालमौ (नाम)
अरे पेरो वडावणो[३४] है रे वरहिंदवो
अरे पेरो कटावणौ है रे वरहींदवो

अरे झीणो टसको वाडे रे वरलो
अरे झीणे टसके काटियो वरलो
अै इस छबडा[35] उडिया है रे
अै धबडा पड़िया बैवती गंगा
छबडा बैवत पूगा रे गंगा घाट रे
जठै सिनान करे है रे देविया
सिनान करे रे सातो समदा
ओ छोडिया आयो रे वीरे हाथै
छोडीयो आयो रे देवी रा हाथै
ओ फेरे-फेरेन भाळै वी छोडा ने
हां फेरे-फेरेन भाळै वी छोडा ने
देविया मोळै मनडे री वाता अंबे
ओ पेरो म्हारो वाडियो वर हिन्दवो
वा धमिये धोरीये[36] आवै अंबे मांजी
वो तेल न्हावै है रे वरहीदवा रे
उत बाळै है जरहीदवा ने
ओ अग्नि संपाड़ी करवै है रे
पेरे बावियो है रे वर हिन्दवा
वा आवैन ऊची है रे हिन्दवा
देवी आय पूगी है रे वरहीन्दवा
अग्नि मांय उतरे है अंबा मांजी
पेरे राढ़ै है रे मूळा-मूळवा[37]
मूळ बारै काढ़ीयौ वरलो
पेरे म्हारो काढ़ीयौ वरलो
पाछी बारे आई अंबा
सौले मनां री वातां रे
घूमर घालो न रे देवियां म्हारे
घूमर म्हारे घालो वरहींदवा रे
औ खेवो गूगळियौ धूप

हरियो भरियो केरो वरहीन्दवा
ओपेरो ठेहरायु[३८] है रे वरहीन्दवा
पेरो ठेहरायु है काकर[३९] माथै रे

१. बांस की छबड़ी, २. गूथना-बनाना, ३. गांछा, जो बनाते है, ४. बायां, ५. मेघ, ५. नौ लाख, ७. बेर ८.चुगना, ९. बड़े बेर, १०. स्थान विशेष का नाम, ११. बांटना, १२. दौड़ते हुए, १३. दल, १४. प्रस्थान, १५. घुस गये, १६. सुमेर पर्वत, १७. एक महात्मा का नाम, १८अ. पालन-पोषण, १८ब.नेकर,१९. आबू पर्वत, २०. आगे, २१. पीछे, २२. नक्की झील, २३. विशेष कुँआ, २४. पाताल, २५. विशिष्ट स्थान, २६. मनौती, २७. पुकारा, २८. मृत शरीर, २९. गट्ठर, ३०. घोंटा (गदा), ३१. गाँठे, ३२. विशिष्ट स्थान का नाम, ३३. सुथार, ३४. काटना, ३५. छाल के टुकड़ें, ३६. दौड़ कर, ३७. जड़ मूल, ३८. ठहराया, ३९. पत्थर की सिला

प्रलय के बाद : अर्थ

जब 'वरसीधवौ' (वट वृक्ष) पत्थर पर जड़े नहीं जमा रहा था, बार बार गिर जाता था। उस समय अंबा मनौती बोली कि मैं बालकों की बलि चढाउंगी। आप पत्थर पर खड़े हो जाओ, तब रोपा गया। लंबा समय बीत गया । देवियां खावै पीवै और आनन्द करें। मनौती भूल गई। तब वरसीधवौ (अळूप वृक्ष) स्वप्न में आकर याद दिलाता है। फिर अंबा मां 'वड बोर' (बड़े बेर) के बीज कहीं से खोज लाई और जंगल में बो दिये। पानी पिला कर बड़े किये। फल पक गये तब अंबाजी 'धारपाटन' गये। वहाँ गाछे से 'भरणीयौ' (ओडा) गूंथवाथा, जिसमें बहुत से बच्चे आ जाय उतना बड़ा एवं रहस्यमय। 'भरणिये' के देवी ने ठोकर मारी वह 'देवमालिये' आकाश मार्ग से जा उतरा।फिर सभी देवियों को ले कर बेर लेने गई उसका काव्यमय वर्णन निम्न प्रकार है -

अंबा देवी ने 'धारपाटन' जा कर गांछा से एक, विशेष 'भरणीया' बनवाया और बांये पांव की ठोकर मारी तो वो 'भरणिया' (ओडा) आकाश मार्ग से उड़ता हुआ 'देवल मालिये' उतरा। वहाँ से नौ लाख देलियों को ले कर अंबाजी बेर लेने गये और 'भरणिये' बेरो से भर दिये और 'धारपाटन' ले कर गये। वहाँ खूब बालक बेर लेने आये। अंबा मांजी भरणीया के अंदर से बेर निकाल कर देने लगी। छोटे छोटे बालक बेर लेने दौड़े आ रहे थे। पीछे पीछे काफी दूर तक आ गये, तब अंबा ने कहा भरणियैं में घुस जाओ अंदर खूब बेर है, खाते रहना। सत्ताइस बालक जब उसमें आये तो

भरणिये का ढ़क्कन बंद कर दिया। अंबा ने बांये पांव की ठोकर मारी, भरणियौ तारा मंडल में चढ़ा और सुमेरू पर्वत उतरा, जहाँ 'भूणीयौ' योगी तपस्या कर रहा था उसके घूणी-आश्रम पर उतरा। भरणिया में छोटे छोटे बच्चे रो रहे थे। योगी भूणिया ने यह देख कर कहा - अंबा तेरे वंश का नाश हो इनके लालन पालन की जिम्मेदारी मेरे कंधो पर क्यों डाल दी। भक्ति छोड़ कर इन बच्चों के पालन-पोषण में लग गया। योगी विचार करने लगा कि अब कुछ बड़े हो गये है इनको पढने को भेजना पड़ेगा, सो उन सबके नेकर सिलवाये, टोपियां सिलाई, झब्बा सिलवाये, घोटे घडवाये। भगवे चोले और झोली बनवाई।

अब आबू पर्वत पर दर्शन को चले। आगे आगे तो गुरू भूणियो और पीछे उसके रावळै शिष्यों की जमात चली जा रही है। अंत में मंजिल आबू पर्वत पर पहुँच गये। ऋषि आश्रम योगी भूणिया फिर रहा है और बच्चें साथ घूम रहे है, इसके चेले। अंबा मांजी प्रकट हो कर बोली आधा आबू योगियों का है और आधा देवियों का है। दर्शन करने है तो नक्की ताळाब पर जाओ, जो देवियों ने अपने नाखूनो से खोदा है। देवियों ने 'घूमर पावटा' भी खुदवाया-बंधवाया है; वहाँ पर भी दर्शन के लिये चलो। पावटा (एक विशेष कुँआ) ऊपर नीचे घूमता आकाश में तारा मंडल पर चढ़ गया और सातवें पाताल से पानी निकला और सभी शिष्य शीतल जल पी कर तृप्त हो गये। तब गुरू भूणिये ने शिष्यों से 'वरहीधवौ' दर्शन करने चलने को कहा। आगे आगे भूणिया और पीछे पीछे चेले चले जा रहे है और गंतव्य स्थान 'वरहींधवा' पहुँच गये। इधर सूर्यास्त हो गया। चेले भी इधर उधर फिर कर धूणी डालने का स्थान ढूंढने लगे। भूणियो वट वृक्ष से दूर धूणी डाल रहा है परन्तु चेले 'वरहीधवा' (वटवृक्ष) के नीचे 'धूणिया' डाल रहे है। इतने में अंबा मांजी प्रकट हो कर बोले हे वरहीधवे! चेलो को तेरे चरणों में चढा चुकी हूँ, बलि ले कर मेरी मनौती पूरी मान ले। सभी शिष्य बलि चढ़ गये। प्रातः होते ही योगी भूणियो शिष्यों को पुकारा - बुलाया परन्तु एक भी नहीं बोला, न आया। देखा तो वहाँ केवल मृत शरीर रूपी खोखे पड़े थे। सभी बालक बलि चढ गये थे। गुरू भूणिया इधर उधर फिरता, ढूढता, रोता था। भूणिये ने सभी गदाओं (धोरो) के गट्ठर और झब्बो की गांठ बांधी और 'धारपाटण' की ओर चल पड़ा।

'घरपाटाण' के राजा के महल के चौक में वो गांठे और गट्ठर उतार कर रखे। राजा ने पूछा - 'तुम क्यों रो रहे हो जोगी?' वह बोला - मेरे साथ धोखा हुआ, मै छला गया। राजा! राज तो 'वरहिदवौ' करता है, आप नही करते। उसने सारी कथा कही

तब राजा ने कहा जड़ा मूल से कटवा नष्ट कर देता हूँ 'वरहिंदवा'(वट वृक्ष) को। और राजा विक्रम ने हालमो नामक सुथार को बुलाया और 'वरहीन्दवा' को काटने का आदेश दिया। सुथार हालमा ने कुल्हाड़ी की चोटे करते हुये वट वृक्ष को काट दिया। कुछ टुकड़े चोट से उड़ कर पास ही बहती गंगा (नदी) में गिर गये। उसी नदी में दूर देवियाँ स्नान कर रही थी, उनके हाथ में 'वरहिन्दवा' की लकड़ी का छोटा-सा टुकड़ा हाथ लगा, जो बह कर आया था। बार बार गौर से बारी बारी सब देवियों ने दखा और अंत में अंबा ने निर्णय दिया कि यह 'वरहिन्दवा' का ही टुकड़ा है, उसे किसीने काट दिया लगता है और अंबा तथा देवियाँ दौड़ती वहाँ पहुँची तो वहाँ देखा कि वट वृक्ष काट दिया है और उसकी कटी हुई लकड़ियाँ को उसकी जड़ पर रख कर तेल डाल कर जलाया जा रहा है। अंबा अग्नि में प्रवेश कर अग्नि शांत की और जड़ को बचा लियाऔर अंबा बाहर निकली और बोली मेरे और 'वरहिन्दवा' के चारो ओर सभी देवियाँ 'घूमर' लो और गूगळ का धूप करो। वापस पत्थर पर जड़ को जमाकर ठहराया और वह पुनः हरा भरा हो गया।



औखाणां अर कोआनी

~~~
~~~

औखाणां

किण ई समाज री संस्क्रिति नै राती माती करण सारूं अलेखू ततब मांय भासा घण महताऊ ततब। इणमें घणी तंत है। औखाणां रा दाखलां भासा नै गति देवे, अरथवान बणावे, भासा नै वजनी बणावे, मोल बधावे, मसालो लगा'र जायकौ बधावे, औखाणां रै वगार सूं रूचि जगावे अर सबदा री गहराई वधावे। 'कहावत' सबद मांय 'कहना' क्रिया भेळप मांय आई। बात कैवणिया री अरथ कांई है, ई पर कैवणिया री कला री असर जतावे। औखाणां 'आमिधार्थ' कोनी देवे, वे 'लक्षणार्थ' के 'व्यंगार्थ' देवे। ज्यूं कै नांई नांई बाल किता कै मुंडा आगै आई, कैवे वीं बगत नीं तो नांई सूं कीं लैणी देणी अर नीं केसा सूं। ई री अरथ अरथीजे के थोड़ौक नेटाव खटाव राखो बेगो इज ठाह पड़ जाई कै गोगो है कै गा। 'लोकोक्ति' री अरथ ई - लोक + उक्ति, मंजे का'वत कुण बणाई? कोई कोनी जाणे, क्यूंकै लोक बणाई। समाज रा ऊंडै अनभव री निचोड़ अर सार इण औखाणां मांय मिळै। थोड़ा मांय घणी, 'गागर में सागर' के 'बिंदु में सिंधु' भर्‍यो लाधे। औखाणां री खरी सांच सगळौ समाज आदरै अर सिकारै। गरासिया समाज मांय ई आ इज वात।

गरासी भासा रै औखाणां री कीं खासीयतां नीचे मुजब -

१. अै मिनखा जूण रै खारा-मीठा सांच नै रू-ब-रू करै।
२. इणांरा 'जीवन मूल्य' औखाणां मांय पोखीजे।
३. औखाणां 'गरासिया समाज' रै 'अध्ययन' री आधार बण हके।
४. औखाणां हंसी-मिसकरी साथै खरी नै खारी वात ई मीठः सुवाद रै साथै गले उतारै। दुसाला मांय लपेटने औलबा देवै। कुनेण री गोळी गुड़ में लपेट नै देवै सो वा गळे ई सोरी ऊतरै अर पच ई जावै। इणसूं वात जमै अर फब्बै अर वात करवा नै सुणवा री रस आवै। गरासिया नै आ वात घणी 'रास' आवै।
५. औखाणां बड़ळा रै झीणां बीज मांय धाकड़ बड़ळौ लुक्योंडों रैवै ज्यूं रेवै। खाद-पांणी मिळता ई भूंगा मेलतो थको पाळरै। यूं इज औखाणां री असर व्है।
६. औखाणां औसर माथै बंतळ करणनै वातावरण त्यार करै अर वात मांय रस उपजावै। मन मुताबिक वातनै जमावे, वात नै भाटो बैठावे ज्यूं बैठे। अर मजो दैवै।
७. गरासियां रै औखाणां मांय इयांरी रीत-नीत, रैणी-करणी, आचार-विचार, विधि-

विधान अर लोक विस्वास सेंग भेळा गूंथीज्योड़ा लागै। इयांरै औखाणां मांय इणांरी सादगी, सीधापणौ, सरलता, स्वाभिमान, आस्तिकता, काम में निष्ठा, मै'णत-मजूरी अर नेकी में भरोसो आद परतख झलकै। गरासिया बोली मांय मौखिक (कंठस्थ) साहित रा कीं कामू औखाणां रा नमूना नीचे परूस्या है -

अ. धरम-करम रै पेटे :

१. कांम मोटो नांव मोटो नीं।
२. धंधो करै वौ धाई नै खाय।

आ. नीति-रीति पेटे :

१. केळ कांट नीं हूं परीत।
२. कै तो धन धणी खाय कै धन वणीनै खाय।
३. के तो चीनो हूनू करै कै करै होनो।
४. कै तो खाय मोट पणाये, कै खाय वैर पणाये
कै खाय मांन पणाये, तीन्यूं छोडे वो देवपणा मांयै।
५. कॉच कटोरा, नैण, धन अर मोती फूटे
ज्यांरै सांधा नीं लागै जे अेकर टूटे।
६. गंडकड़ हूं गोठीपणौ, चेनाल नाहूं संग।
७. खाली तजारा माथै चौकी।
८. कोडे व्है वे कामे आवै, होना री लंका छेटी है।
९. खाय तो डाकण, नीं खाय तो डाकण।
१०. खोटा ई बुरी बगत मा काम आवै।
११. चाणी नै पीयै, ते कहे न चींटि।
१२. च्याबी नै खाय ते धोधले नीं चींटि।
१३. नाग नै आग लूमतां वळा नीं करै।
१४. नाना चोरा माटी मराबी नै भेर।
१५. पगां आडी ने जायने जोय नीं हेंडे ते ठोकर खाय।
१६. पांणी पैली पाळ बांधणी।
१७. न्हार रा मुंडा में हाथ नीं दड़वो।
१८. घणो गाजै ते थोड़ो वरे।
१९. चोरे बेठू चोरू नै गले बेठू कुतरू नीं वताळानणौ।

२०. कपाळी-कपाळी मत न्यारी।

क्षण भंगुर जीवन :

२१. गारे ना गड्या काल गळवाना है।
२२. धन, जोबन, माया, तीन दाड़ा नीं पांवणी।
२३. गिया जे पाछा नीं आवणा।
२४. घड़ी पलक नीं ते खबर नीं, नै करे काल री वात।

थोथा दिखावा :

२५. मायलौ तो रंग्यौ नी नै लबरौ रंगने फरता हेंडे।
२६. हाथी ना दांत मालवा ना न्यारा नै खावा ना न्यारा।

तिरिया चरित :

२७. आमदी ना हो कायदा, लगाई रो तो अेक कायदो।
२८. डाकण तो हाऊ पण छिनाळ खोटी।
२९. नवरी नातरा री नगै राखै।
३०. माछळी अर लुगाई नी ऊंधी मत, ऊंधे पांणी चढै।
३१. लगाई नै फालक मत।

परमेसर पर भरोसो भारी :

३२. करवू तो राम नूं नै केवु आपणु।
३३. तोये रांम खवड़वे जेम खावजे।
३४. मनख नो तो अेक हाथ, राम रा हजार हाथ।
३५. सत में सायबौ।
३६. मोटा छोटा नो राम अेक।
३७. दन्या कोपे ते कई नीं थाय।
३८. रांम रांम हूं करो तां हारा राम।
३९. जगती मोटी के भगति।
४०. जोत जागी नै भरांत भागी।

विविध :

४१. गांम मांय घेर नी, उजाड़ मांय खेत नीं।

४२. गरज मटी नै गूजरी नटी।
४३. दारू दोगलो, पीवै औचलो,
धूड़ खावै, धूम मचावै, ओचे घेर करे वास।
४४. जे दुखे जाणीयै, खबर बीजौ हूं जाणै।
४५. तरत दान महापुन्न।
४६. नटे जाणनो नाक कटे।
४७. दीदा डांम लागै, अकल नीं लागे।
४८. दन्या ना झूठा जगड़ा मांये न लागवू।
४९. भील भैस ना वांका हैंगड़ा।
५०. खारड़ा मा कांटो ने भील मा आंटौ हदारे।
५१. पाळी पंपळी मानवा राखवू मुस्कल।

केळ रा कांटा, अढाई हाथ लांबा
जण माथे तीन बसै गांम
दो तो ऊजड़े नै अेक बसे ई नीं
उणमें बसे तीन कुम्भारड़ा
दो तो माटा घडेई नीं, अेक कैवे ठोट हूँ
उण बनाई तीन तामणी
दो पाकी ई नीं, नै अेक काची री
उणमें रांदीया तीन चावळ
दो तो पाका ई नीं, अेक टूट रेग्यौ।
जीमण नै तेड़ाया तीन बिरामण
दो कैवे मारे अेकासणी नै अेक जीमै ई नीं
उणनै दीवी तीन टोगड़ियां, अेक तो बांगड़ दो ब्यावै ई नीं
उणानै बेचने लीधा तीन रिपिया
दो तो खोटा नै अेक चालै ई नीं
उणनै परखवा आया तीन सोनार
दो तो वे सुणै नीं, अेक नै दीखै ई नीं
वणारे जमाया तीन जरबा
दो तो चूका नै अेक लागो ई नीं

कहावतें

किसी भी समाज की संस्कृति को स्वस्थ एवं पुष्ट करने के लिये अनेक तत्वें में भाषा एक महत्वपूर्ण तत्त्व है। कहावतें और मुहावरें भाषा को गति देते है, अर्थवान बनाते है, महत्त्व बढ़ाते है, मूल्य बढ़ाते है। मसाला लगा कर जायका बढ़ाते है, रूचि जागृत करते है, भाषा की गहनता में वृद्धि करते है तथा उसके चार चांद लगाते है। 'कहावत' शब्द में 'कहना' क्रिया सम्मलित है अर्थात बात कहने वाले का उदेश्य क्या है ? इस पर कहने वाले की कला का भी प्रभाव रहता है। कहावतों अमिधार्थ नहीं देती, वे लक्षणार्थ अथवा व्यंगार्थ देती है जैसे कि - 'नाई नाई बाल किता कै मुंडा आगे आई' कहते है उस समय नाई से कोई लेना देना नही होता और नही बालों से। इसका भावार्थ (गूढ़ार्थ) है कि थोड़ा धैर्य रखें, शीघ्र पता चल जायेगा कि क्या है ? क्या नहीं है ? 'लोकोक्ति' का अर्थ है लोक + उक्ति, जिसे लोक (समाज) ने बनाई। समाज के लंबे और गहरे अनुभवों का सारांश इन कहावतों में मिलता है। और थोड़े में अधिक, 'गागर में सागर' अथवा बिन्दु में सिंधु भरा मिलता है। कहावतों का कटु सत्य सारा समाज स्वीकार करता है। गरासिया समाज में भी यही बात उजागर होती है।

गरासी भाषा में कहावतों की विशेषताएं निम्नांकित :

१. यह मानव जीवन के सत्य से साक्षात्कार करवाती है।

२. इनके जीवन मूल्य कहावतों मे पोषित होने है।

३. यह इनके जीवन-अध्ययन का आधार बन सकती है।

४. कहावतें हंसी-मजाक के साथ कड़वी बातें मीठे के साथ गले उतर जाती है और पच भी जाती है। व्यंग और विनोद दोनो साथ निभाते है। जैसे कुनैन की गोली गुड़ के साथ दी हो। दुशाले में लपेट कर उपालंभ दिया जाता है। इससे बात भी जमती है और रूचिकर लगती है। गरासियों को यह कला खूब रास आती है।

५. कहावते वैसे ही है जैसे वट वृक्ष के सूक्ष्म बीज में विराट वटवृक्ष छिपा रहता है, खाद-पानी मिलते ही पनप कर असली रूप में आता है। इसी प्रकार इनकी कहावतों का प्रभाव होता है।

६. इनकी कहावतें अवसर पर बात करने का वातावरण तैयार करती है और आनन्द देती है। बात और पत्थर ज्यौ बैठाते है, बैठता है।

७. गरासियों की 'गरासी' भाषा में इनके रीति-रीवाज, नीति-रीति, रहन-सहन, आचार-विचार, विधि-विधान और लोक विश्वास सभी सम्मलित रूप से गुंफित है। इनकी कहावतों मे इनकी सादगी, सीधापन, सरलता, स्वाभिमान, आस्तिकता तथा श्रम के

प्रति निष्ठा व ईमानदारी तथा लोक विश्वास प्रत्यक्ष झलकता है। 'गरासी' बोली में मौखिक (कंठस्थ) साहित्य (वाङ्मय) के कुछ काम की कहावतों के अर्थ (हिन्दी अनुवाद) नीचे प्रस्तुत है -

अ. धर्म-कर्म संबंधी :

१. काम बड़ा है, नाम बड़ा नहीं। मनुष्य कर्म से महान बनता है।

२. जो काम करेगा वही भर पेट खाता है। मानव को कर्मशील बनना चाहिए।

नीति-रीती संबंधी :

१. केले के पेड़ और कांटे में कैसी मित्रता। सज्जन तथा दुर्जन का प्रेम संभव नहीं। मिलाइये - 'कहु रहीम कैसे निभे, केर बेर को संग, वे झूमत रस आपने, उनके फाटत अंग।

२. धन का उपयोग या तो स्वामी करता है वरना धन उसे खा जाता है।

३. चूना या तो सूना कर देता है या सोना कर देता है। भवन निर्माण में सारी पूंजी खर्च हो जाती है, फिर वह सम्पन्न बन सकता है।

४. मनुष्य अभिमान अथवा शत्रुता या थोथे सम्मान की भूख से पतनगामी होता है। यदि तीनों से मुक्त हो जाय तो देवतुल्य बन सकता है।

५. कॉच, कटोरा, आँख, मोती और धन टूटने पर फिर नहीं जुड़ते। इनकी सुरक्षार्थ सजग रहना आवश्यक है।

६. कुत्ते की मित्रता और छिनाल स्त्री का क्या साथ ?

७. छिलको पर निगरानी, मूल मूल्यवान वस्तु की उपेक्षा।

८. जो अपने पास होता है वही काम आता है, सोने की लंका दूर है, काम नही आती।

९. बुरा व्यक्ति बुराई छोड़ दे तो भी लोग बुरा ही समझते है।

१०. बुरा व्यक्ति भी विपति में कभी काम आ सकता है। खोटा सिक्का और कपूत बेटा मुशीबत में साथ देता है।

११. छान कर पीने से कुछ नहीं चिपटता।

१२. चबा कर खाने से गले मे नहीं अटकता। कोई काम सोच समझ कर करें...

१३. आग और नाग लिपटते देर नहीं करते, इनसे सदैव बच कर रहे।

१४.बच्चे लड़ झगड़ कर एक हो जाते है, बड़ों में बैर हो जाता है।
१५.जो पैरो की ओर देखकर नहीं चलता है, वह ठोकर खाता है।
१६.पानी आने से पूर्व तट बाँधना चाहिए। विपति के लिये तैयार रहे।
१७.शेर के मुँह में हाथ नहीं डाले। जानबुझ के विपति मोल न लें।
१८.गरजते है वो बरसते नहीं। जो कुत्ते भोंकते है वे काटते नहीं।
१९.चोर चोरी की ताक में बैठे चोर कोहो और रास्ते के बीच बैठे कुत्ते को नहीं छेडना चाहिए।
२०.मुण्डे-मुण्डे मति भिन्नै। जितने व्यक्ति उतने मत।

क्षण भंगुर जीवन :

२१.मिट्टी के बर्तन फूटने के ही है अर्थात् शरीर नाशवान है।
२२.धन, यौवन और माया तीन दिन के मेहमान है, इस पर घमंड न करे।
२३.जो मर गये वे वापस नहीं लौटते। मृत्यु स्वभाविक है।
२४.जीवन क्षण भंगुर है। एक क्षण का पता नहीं और लंबी बनाते योजना।

बाह्य आडम्बर :

२५.हृदय तो रंगा नहीं वस्त्र रंगने से क्या लाभ।
२६.हाथी के दांत खाने के और तथा दिखाने के और। थोथा दिखावा।

त्रिया चरित्र :

२७.मनुष्य के सैकड़ो कायदे परन्तु औरत का एक ही कायदा है -'चरित्र'।
२८.डाकण तो फिर भी अच्छी पर कुलटा स्त्री तो बहुत बुरी।
२९.व्यर्थ बेकार बैठी स्त्री पुनर्विवाह का ध्यान रखती है।
३०.मछली और नारी की उल्टी बुद्धि, उल्टे पानी चढ़ती है।
३१.स्त्री की बुद्धि पच्छम बुद्धि होती है अर्थात काम बिगड़ने के बाद उपजती है - जैसे 'आगल बुद्धि बाणीयौ अर पाछल बुद्धि जाट।'

ईश्वर पर आस्था :

३२.अपना तो मात्र कहना है, करना तो राम के हाथ, जैसे-'होई वही जो राम रचि राखा।'

३३.तुझे राम खिलाये वैसे खाना अर्थात् ' जेहि विधि राखै राम, तेहि विध रह्यौ।
३४.ईश्वर के मारने के हाजारो हाथ तो तारने के भी हजारो हाथ है। मनुष्य तो मात्र दो हत्था है।
३५.सत्य ही ईश्वर है। सत्यमेव जयते।
३६.ईश्वर एक है, उसके लिये सब बराबर है। वह समदर्शी है।
३७.दुनिया नाराज हो तो परवाह नहीं, ईश्वर नहीं रूठना चाहिए। जाकौ राखै सांइयां...
३८.राम राम क्या करते हो, सब में राम है, अपने आपको पहिचानो।
३९.संसार बड़ा या उसका स्वामी। भक्ति बड़ी की दुनिया। संसार का सार भक्ति में है।
४०.ज्योति जगते ही अंधकार (भ्रांति) दूर हो जाता है। ईश्वरीय ज्ञान के आलोक से सच्चा ज्ञानोदय होता है।

विविध :

४१.जिस व्यक्ति का न गाँव में घर है, न वन में खेत, उसका कैसे विश्वास करे।
४२.स्वार्थ निकलने पर आँख दिखाने वाले लोगो से दूर रहे।
४३.शराब 'दोगली' चीज है, इसे नीच लोग पीते है, पीकर धूल चाटते है, मिट्टी मे पड़े रहते है, उधम मचाते है और निर्धन बन जाते है।
४४.दुःखी ही दुःख जानता है, अन्य नहीं। जाके पैर न फटे बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई।
४५.तत्काल दान महापुण्य कारक है। तुरत दान महाकल्याण। शुभस्य शीघ्रम्।
४६.देने से मना करे उसकी प्रतीष्ठा नही। रहिमन वे नर मर चुके जो मांगन को जाय।
४७.डाम दिये जा सकते है पर अकल नहीं। अकल हृदय से उपजती है।
४८.संसार के व्यर्थ प्रपंच में न उळझे।
४९.भील और भैस दोनो के सींग बांके होते है अर्थात दोनो से बचकर रहे।
५०.जूते में कांटा और भील से शत्रुता तो रहती ही है। दोनो जंगली है।
५१.पालपोस कर प्यार देकर भी भीलो को वश में करना कठिन है, क्योंकि ये स्वछंद प्रकृति के होते है। धुमक्कड़ है।

केली के कांटे, ढ़ाई हाथ लंबे
जिस पर तीन बसा गये गांव
दो उजड़ गये, एक सा ही नहीं
उसमें रहते दो कुम्भकार
दो तो मटके बनाते ही नहीं, एक कहे मैं 'ठौट' हूँ
उसने बनाई तीन हंडियां
दो पकी नहीं, तो एक कच्ची रही
उसमें पकाये तीन चावल
दो तो पके ही नहीं, एक कड़ा रह गया।
खाने को निमंत्रण दिया तीन ब्राह्मणों को
दो कहे उपवास है, एक खाता ही नहीं
उन को दी तीन बछिया, अेक बांझ, दो ब्याती ही नहीं
उसे बेच कर लीये तीन रूपये
दो तो खोटे और एक चलता ही नहीं
उनकी परीक्षार्थ आये तीन सुनार
दो सुनते नही, तो अेक अंधा था
उनके लगाये तीन जूते
दो चूक गये, अेक लगा ही नहीं।



कोआनी

१. हेकी मेगरी आडी बे बैने पन हेमकी अकी देकनी पन वातां करी - (आंख्यां)
२. धारो धारो सिपाहीईड़ा करई - (घास रा डाकला रा पूळा)
३. ढारो-ढारो देवी हरका - (लंगूर)
४. टोलो धोरो वार डाक - (राख)
५. जाय तो मगरू ने भाळे घरां में - (कवाड़ियौ)
६. मगरा मा पूळआ लूरे - (मौरीयौ)
७. अेक खेतरा भाई बे होनजा - (चांद अर सूरज)
८. अेक हेरीया मा बै भालरी - (अेक मिनख अर दो जोड़ायतां)
९. अेक नीड़नीयु घूघरी वरतु मगरा मा जाय - (बकरी)
१०. पंखो हू उरे चोचु हूं बेहे - (भारली तीर)
११. अेक सोरा रे गाड़ खेपर धार - समझाहवी केना सोना रौ हणगार - (बिच्छु)
१२. अेक सोरी गोडेहु गजब किधि - (बिच्छुड़ी)
१३. धौळौ खेतर कालु बीजू, हर खेरवा वाळो गावे गीत - (कागद ने कलम)
१४. ऊंचो माळो नो धरती इण्डा - (बिरखा)
१५. मां ने बेटा रो अेक नोम, टुलो उमरो बीजू नोम - (डोलमु माहुड़ा रौ फळ)
१६. हाना की चाल हीता को बेनो - (मीडको)
१७. अेक सोरा बोदा हू हावड़ा - (हळ)
१८. अदवा दे पांन चांदवा नोडे - (तलवार)
१९. वनकी डंडी रौ हाडी रो गिराक - (दूद)
२०. थाली जितरो पान ने पीळी चोंच - (खाखरा रा पान अर फूल)
२१. घर घर वनजारी - (कोठी)
२२. अेक सोरो आको दन रोवैस नै घेर आयने सोनो रेवै - (बंसरी)
२३. बाकरो बाकरो खड़े दीदू ने वेसरू वेसरू दुहियो - (मद)

२४. जातो जा पन देतो जा - (सोवड़ी कै छाबड़ी)

२५. भाटा रा परिया वेला पाणी री बांधी पोटकी - (नाळेर)

२६. चार आंगळ बाबू जीन हाथ भारी जुटा - (बुहारी)

२७. पीलीयो कटी पूंछ रे पांणी पीवै - (माटी रो दीवो)

२८. अेक सोकरा ने जोकरू आंतड़ा - (पालणो)

२९. सिनीक सीसकी मा सिन्धु बाई पोढ़िया - (कोथळी में एक रिपियो)

३०. साद-संत केता, ऊपरे तीखो मांय पोला - (झूपड़ी)

३१. घर-घर डागळी धूजै, मातै पंचा रौ मेळ - (लंगूरां रौ कूदणौ)

३२. लबक नै झब्बक लीयो पोमणो तेजो माल (दुकानदार सूं माल)

३३. ऊंडी पोळई में वाणियो वोपार करे उणरो नोम कांई - (कूती मद)

३४. अेक टाबर, पोटकी नीचे मेलनं ऊपर चढ़े (खाण्डेला री वेल)

३५. अेक सोरो सीव में पेट मोटो करे, घेर आय टका भर जगा रोके - (तीर-कबाण)

१. जव कैवे कै मारे माथै भाला, मारी परख जद व्हे कै थाका आवै टाला -

२. चिणा कैवे कै मारे माथं नाको, मारी परख जद व्हे कै धीरो आवै थाकौ

३. गेऊं केवै मारे माथै चीरो, मारी परख जद पड़ै कै बाई रै आवै वीरो

४. मक्की केवै मारे माथै चोटी, मारी परख जद पड़ै कै घर में आवै झोटी

५. मौठ केवै मारे माथै वेल, परो ऊंदावौ मारे पर भावै जितरो तेल

६. खावौ मौठ नै तोड़ो कोट

पहेलियां

१. पहाडी के उस पार पड़ी (बीच में पहाड़ी है) तब भी दोनो देखती और बातें करती है। - (आँखें)

२. जगह जगह सिपाही खडे है - (घास के डंठल अथला पूळै)

३. पर्वत जैसे पर्वत - (हनुमान बंदर)

४. सफेद घोड़ा दीवार फांदता है - (राख)

५. जंगल की ओर जाते हुए घर की ओर देखना - (कुल्हाडी) - क्योंकि कंधे पर उल्टी धरी रहती है।
६. पर्वत में घास के बंडल खुले - (मोर)
७. एक खेत में दो चीजें - (सूरज और चांद)
८. एक ही रास्ते में दो तीर - (एक पति की दो पत्नियां)
९. एक बच्चा जैसे वन में बीज बिखेरता है - (बकरी)
१०. पंखों से उडे, चोंच से बैठे - (भारली तीर)
११. एक लड़के के पीछे पूछ पर सोने का श्रृंगार - (बिच्छु)
१२. एक लड़की ने अपनी पीठ से गजब काम किया - (मादा बिच्छु)
१३. सफेद खेत, काले बीज, गाना गाते खेत जोते - (कागज और अक्षर)
१४. आकाश पर घोसला किन्तु अण्डे पृथ्वी पर - (वर्षा)
१५. माँ और बेटे के एक ही नाम, अलग होने पर अलग नाम - (डोमलु महुआ फल)
१६. हिरन के जैसी चलना और शेर के जैसे बैठना - (मेढ़क)
१७. एक लड़का एक पैर से चलता है - (हल)
१८. वह छूने की अनुमति देती है चलाने की नहीं - (तलवार)
१९. पूछ का इलाज तथा बर्तनों का आग्रह - (दूध)
२०. प्लेट के आकार की पत्ते और पीली चोंच - (पलास के पत्ते व फूल)
२१. घर घर में अनाज का स्टोक - (कोठी)
२२. एक बच्चा दिन भर रोता है, घर आ कर चुप हो जाता है - (बांसुरी)
२३. माल (तरल) निकाल कर व्यर्थ वस्तु फेंकी जाती है - (शहद)
२४. जाओ पर कुछ देते जाओ - (टोकरी)
२५. ढके हुए पत्थर में जल भरा है - (नारीयल)
२६. चार इंच का बाबा डेढ फूट लंबे बाल - (झाडू)
२७. पीले रंग का बैल, पूंछ से पानी पीता है - (मिट्टी का दीपक)
२८. एक लड़के के रस्सी की आंतें - (पालना)
२९. चिथड़ो की गददी में साधु बाई सो रही - (कपड़े की थैली में रूपये)
३०. सज्जन कहते है कि ऊपर चोटी और अंदर से खोखला - (झोपड़ी)
३१. घर-घर छत हिलती है, ऊपर पंचो की पंचायत - (बंदरो की उछलकूद)

३२. रगड़ा न झगड़ा तत्काल ले लो - (दुकानदार से माल)

३३. गहन गुफा में बनिया व्यापार करता है - उसका नाम क्या ? (कूती का शहद)

३४. एक बच्चा गठरी नीचे रख कर ऊपर चढ़ता है - (खण्डेला की बेल)

३५. एक लड़का जंगल में पेट खूब फुलाता है पर घर आकर थोड़ा सा स्थान रोकता है - (धनुष)

१. जौ कहते है, मेरे ऊपर शूल (भालो) है, मेरी परीक्षा तब होती है जब थके बैल घर आते है (जौ खिलाने से ताकत आती है।)

२. चने कहते है, मेरे उपर नाक है, मेरी परीक्षा तब होती है 'धीरा' थका मांदा आता है।

३. गेहूँ कहते है, मेरे उपर चीरे का चिन्ह है, मेरी परीक्षा तब होती है जब बहिन के घर भाई मेहमान आता है अर्थात हलवा बनता है।

४. मक्का बोली, मेरे सिर पर चोटी है, मेरी परीक्षा तब होती है जब घर में भेंस दूध देती हो अर्थात छाछ राबड़ी या दूध-दलिया खायें।

५. मौठ बोला, मेरे ऊपर बेल चढती है, मेरी परीक्षा तब होती है, जब मुझे भरपूर तेल में भूना जाता है अर्थात यह पुष्टिकर होते है।

७. खुब मौठ खाओ और खूब गढ-किले तोडो अर्थात मौठ अत्यन्त शक्तिवर्धन भोजन है।



नाचवु

नाचवु

'नाचवु' गरासियां री खास मरजी री सौक। औ इणांरी 'रचनात्मक' सगति नै परगट करण री जरियौ अर सामाजिक अर सांस्कृतिक कार्यक्रम पण है। रोज री जिंदगी मांय औ ताजगी देवै। थाकेलौ उतारे। नाचवु इयांरी हंसी खुसी सूं जीवण री तरीकौ, अंतस् री खुसी बारै झलकै। नाचती वेळा इणारै सरीर रै अंगां सूं अलेखू हाव-भाव अर विचार परगटै। इणमें लय अर गति में चावै पगां री व्हौ चावै हाथां री पूरा 'एकाग्रता' री जरूरत व्है। इणनै चोखा ढंग सूं अर फूटरापा रै साथै देखण जोग बणावा वास्तै घेरो घालनै नाचै अर वचमे ढोल मादळ अर साज बाज बाजै।

गरासिया रै 'नाचवु'मांय खास 'घटक' वींयारी 'लय' है। नाच री 'आवृत्ति' ठौड अर मियाद रै साथै ढोल अर साज-बाज बजावण री ताळमेळ बणायनै राखै। 'ताल' अर 'लय' री आ परंपरा जुगां सूं चालती आय री है, वींनै कायम राखी है। ढोली नै नाचणिया री गति अर भाव आद सूं तालमेळ राखणौ लाजमी व्है। गर'जे ढोली चूक जावै के हार जावै तो वीं री हंसी उडावै अर समाज में कमजोर आदमी रौ कलंक लागै।

मीठी ध्वनि रै साथै ढोल बाजणौ सरू व्है। हवळै हवळै वीं री आवाज तीखी, ऊंची अर झीणी व्हैती जाय। होळी रे तेवार माथै लय देखणजोग । मीठा गीतां साथै 'लय बद्ध' व्है, जकौ इणारै अेक रूपता नै दरसावै। इणारै सरीर री 'आकर्षक' क्रियावां, निरभै गति, जंगळी उछल कूद, आगे लारे मुड़वा री तरीकौ, अठी ऊठी झुकणौ आद देखण जोग।

गरासियां री गठीली मांसपेसियां सूं सगति परतख दीसै। अै मस्ती सूं झूमता नाचै, लागै जाणै नाचणिया दारू रा नसा मांय धुत नाचे है पण आ बात कोनी। नाच सैपूचा सरीर माथै असर करै। मस्ती सूं चक अर उत्तेजित 'नृतक' रै उणियारा पर झलकती खुसी अर चमकती आंख्यां रा हाव भाव सूं लागै कै औ पीदोड़ो है। इयांरो नाच प्रेम अर 'प्रतिष्ठा' रौ मौको साजै। इण सामाजिक पिछाण रै दबाव अर परभाव सूं लगोलग दन भर नाचण रै बावजूद इयांनै थाकेलो नीं चढै। नाच इतरो 'प्रभावशाली' व्है के देखणवाळा नै नाचण रौ मन करै, उमावौ चढै। लुगाया अर बूढा वडेरा नाचण रा उमावा नै नीं रोक हकै। अमूमन अेक मिनख - पैली नाचणौ मांडै, लुगायां इणनै चालू राखण वास्तै धीमै धीमै भेळी भिळती जाय।

गरजे अेक मोठ्यार छोरी अर छोरो अेक दूजा सूं असींदा व्है अर आपसरी मांय 'आकर्षित' व्है जावै तौ परवार, वंस, आद रै बाबत नाचता-नाचता गीतां मांय सवाल-जवाब करनै औलखाण काढै। जवाब करै। औलखाण करै। कदैई कोई पूछे कै ब्याव पैली इणरे टाबर कीकर हुयौ ? तो पडुत्तर मिळै कै उण पैली इज झण्डा रौ डंडो खेतर मांय रूपाय दियौ हो।

उछब रै नाच में माथौ, हाथ, कळाई, आंगळ्या री गति अर पगां री गति अेकण साथै ताल मेळ राखै। पुरुष नर्तक गति री तेजी सूं ताकत दरसावै। गरासियां मांय नाच अेक महताऊ सामाजिक कला है। मोठ्यारां ने अेकट होयनै मिलण रौ मौकौ दैवे। नाच इणां मांय ताकतवर, चुस्त, फुर्तिलो अर बुद्धिमान जवान छोरां छोरियां ने छांटण रौ मौको देवै। नांमी नाचणिया री नांव व्है। अैड़ा छोरा-छोर्‌यां री घणी मांग रेवै।

'प्रणय नृत्यो' मांय नाच रै सीवाय आंगळ्यां रा ईसारा, मुळकता चहरा, आंख्यां रा ठमौरा अर मैं'दी रांची हथाळ्यां रा झाला, प्रेम रा सूचक मानै। अै नाच नर-नारी दोन्यूं रै सरीर रौ गढण अर फुटरापौ दरसावै।

गरासियां रा खास च्यार वीसी (अस्सी) भांत रा पारंपरिक नाच है, जिणमं हेटे मंड्यां नाच ठावा, टाळवा अर घण महताऊँ :

वालर नाच :

औ गरासियां रौ जूनो नै जाणीतौ नाच। खेती री साख सूं जुडियौ थको औ नाच। इणमें सैं सूं बत्ता मिनख अर लुगायां भेळा नाच हकै। इणमें आंमी-सांमी मुंडा नीं राखनै अपूठा ऊभनै हाथ मिलावता घेरो घालनै गोळ ऊभा रेवै। वे नैनको घेरो मिनखां रौ मुख्या नेता रै औळीदौळी बणावै। नेता नवी फूटरी पोषाक पैरनै, कांनो अर केसां मांय फूल घालने सजियौड़ौ व्है। दूजो घेरो छोरीयां रौ अर तीजौ फेरू पाछो छोरां रौ व्है। सगळा आपरौ जीमणौ पग आगै वधावै अर डावो पग ताळ रै साथै आगे लारे चलावतो नाचतो जाय। धीमै धीमै गति वधावै इर गीत अर नाच साथै साथै चालता रैवे। सगळा मुख्या री नकल करै। अमुमन इण नाच साथै साज-बाज कोनी बजावै। औ नाच खास उछब मातै ई नाचै। इण नाच रै साथै जुद्ध कै कोई अेतियासिक घटना पर रच्या गीत गवीजे। इणमें 'कत्थक कळी' सास्तरीय निरत ज्यूं घटनावां रौ ईसारा सूं चितरांम बणावै बतावै। कदेई-कदैई तो किण ई जूनी घटना री इतरी सांगोपांग 'प्रस्तुति' करै के दांतां आंगळी लागै। बाकळी फाटी-री-फाटी रैय जावै।

वालर नाच गरासिया जात री अेकटपणी दरसावै। बारली घेरो मिनखा री अर माइलो लुगायां री व्है। दोन्यूं री नेता मिनख इज व्है। औ गरासिया समाज नै 'पितृत्मक प्रधान समाज' कांनी ईसारी करै, लुगायां 'पुरुष वर्ग' रा नेतृत्व नै सिकारै।

मादळ नाच :

औ नाच अेक खास तरै रा ढोल 'मादल' पर नाचै। इण मादळ री घेरो अेकण कांनी सूं नैनो अर दूजी कांनी सूं चौड़ी व्हे। इणरी धुन माथै औ नाच नाचै। 'मादळ' रै साकड़ा भाग सूं सुरीली आवाज निकळै। इण साज़ री आकार डमरू जिस्यौ व्है। ढोली आपरी 'दक्षता' बतावण वास्तै की खास टैम रै आंतरा सूं न्यारी - न्यारी 'ध्वनि' निकाळै। 'मादळ' बजावणवाळो घेरा रै वचमै ऊभे, औ गोळो 'नर्तक' बणावै। औ नाच जीमणा पग नै जीमणी कांनी वधावता स्री गणेश करै अर जीमणी कांनी ई पग वधावै। मादळ नाच तोरण, भरखु अर कदे कदाच रातीजगा अर मोरीया रै गीत साथै नाचै।

खुड़ नाच :

इण नाच मांय उछल कूद घणी व्है। गरासिया घेरो घालनै नाच गीत रै साथै उछलता-कूदता रैवै। इण नाच मांय फगत छोरीया इज नाचै। नाचती दांण अेक दूजी री बाहुड़ी अपड़े अर जीमणी पग जीमणी कांनी वदावता नाच सरू करै। जद डावौ जीमणा री सीधा कोण में आवै जरै दोन्यूं पगां री आंगळ्यां माथै नाचै अर आधा सूं अेक फुट तांई ऊंची उछलती नाचै। ढोल बाजै जितै गीत नीं गावै, ढोल ढबै जरै गीत उथेरे कै गीत उथेरता पांण ढोल ढबै। अमूमन दीयाळी रा घणखरा गीत इण नाच में गवीजै।

लुर नाच :

औ नाच खास करने होळी माथै लुगाया नाचै। लुगायां दो टोळां मांय बंटीजै अर अेक दूजी रै आंमी-सांमी ऊभे। अेक पार्टी वर पख री तो दूजी वधु पख री गिणीजै। दोन्यूं झूलडां रै बिचे अेक 'कार' (रेखा) खांचे, अर अेक दूजी रै कड़ियां मांय हाथ घालनै अपडियौडी राखै अर वीं कार रै पार अेकै साथै कूदनै जावै अर पाछी मूळ ढौड़ आवै। इण दौरान औ 'ग्रुप' माण्डवी (वधुपक्ष) पख रा दळ सूं सवाल पूछै (गीतां मांय) अर माण्डवी पख पडुत्तर (गीतां मांय) दैवै। पडुत्तर दैवती वाळ कूदनै आगै कार तांई जावै, एक दूजी री कमर हाथ में घाल्या थका सगळी अेकड़ साथै लयबद्ध कूदै अर गीतड़ा मांय पडुत्तर दैवे अर पाछी लारे कूदती थकी मूळ ढौड़ आवै। ज्यादातर औ नाच ब्याव सादी रै मौके नाचै।

रंगळ-खंगळ नाच :

औ अेक 'समूहनाच' व्है जको मिनख अर लुगायां 'अभिनय' रै रूप में पेस करै। दरेक टोळी अेक न्यारी इकाई बण जावै अर न्यारा न्यारा तरै रा नाच गाणां परूसे। औ घणौ रोचक अर रोमांचक व्है। इणमें भांत भांत रा नाच अेकड़ साथै भेळा व्है जावै। सगळा साज-बाज मंजै ढोल, मादळ, थाळी, बंसरी, अलगोजां, इकडुरिया, रावण हत्था आद सैं अेकण साथै बजावै। आ अेक गीत नाटिका जिसी लागै।

औ नाच 'प्रतियोगी परीक्षा' रै ज्यूं व्है जठै दरेक 'आढ़क' कै गांम आपरौ नांमी सूं नांमी नाटक करै। अठै सै सूं सिरे 'अभिनय' रौ चुणाव व्है। अगूमन दरेक आढ़ (गांम) अेक खास नाच अर अभिनय सारू औळखीजै। गरजै कोई दूजो आढ़क उण खास प्रकार रा नाच में सिरे आवणौ चावै तो इण मौके होडाहोड़ व्है अर सैं सूं सिरे व्है वो चुणीजै।

गोर री नाच :

गोर रा नाच में फगत जवान छोरियां इज भाग लेवै। किण ई आदमी नै इयांरै साथै नाचण री छूट कोनी। इण नाच मांय 'ईसरजी' सूं मन वांछित पति मांगे। दो छोर्यां 'ईसर अर जवारियां रा सूंडां' माथा पर उखणियौड़ी राखै अर घेरा रै वचमै ऊभै। पण औ ध्यान राखीजै कै अै दोन्यूं छोरियां न्यारा-न्यारा 'आढ़क' (गांम) री व्हैणी जरूरी। इण नाच में अेक दूजी रै बाकोली घालनै कुण्डाळयौ बणावै। कदै खांदे हाथ मेले कदे कड़िया मांय अर उछलती कूदती नाचती जाय। दूजोड़ा हाथ सूं हाव-भाव मुजब हाथ ऊंचो नीचौ करता थका ईसारा करती रेवै। गीत गावती जावै। घेरो ई वदळती जावै। गीतां मांय काम कला रौ बखाण करती जावै। सगळा गीत सैक्स पर आधारित व्है।

जुलारू नाचु :

औ नाच छोरयां जोड़ा सूं नाचै। नाचती वाळ आपरौ हाथ पड़ौसी छोरी रै खांदे मेलै। जे डावौ हाथ खांदे मेले तो जीमणी टांग ऊपर उठावै अर जीमाणौ हाथ खांधे धरै तो डावौ पग ऊंचौ उठावै। टांग वडा खटका सूं उठावै। जुलारू नाच दीवाळी रै मौके उछब पर ई नाचै। कदै कदाच गणगौर के रातीजगा रा उछब रै मौके ई नाचै।

गवरी पूजा कै कान्ह नाचु :

औ नाच अेक नैनो 'वाद्ययंत्र' 'गोरियुन' री धुन माथे अभिनीत करीजै। इण

नाचमें अेक छोरो नै अेक छोरी जोड़ा सूं नाचै (अभिनय)। छोरो 'गोरीयुन' आपरै मुण्डा सूं बजावै और छोरी आपरी डाबी भुजा छोरा री जीमणी भुजा पर धरे अर धीमी मधरी गति सूं 'लयबद्ध' ढंग सूं नाचै। अै दोन्यूं राधा-किसन रौ 'पार्ट' अदा करै। 'गोरीयुन' बंसरी अर मोरचंग री याद दिलावै।

घूमर नाच :

औ दीयाळी री नाच है। लुगाई अर आदमी दोन्यूं इणमें भेळा नाचै। जद नाच पूरी ऊंचाई (चरम स्थिति) पर पूगै जरै नृतक ताळियां बजावणी सरू कर दैवै। ढोल घुरावै अर 'छप्पनियौ काळ' रौ गीत उथेरे। इण गीत सूं साहस अर हिम्मत हौसला सूं सगळी अबखाईयां नै विपदावां रौ सामनौ करण री 'प्रेरणा' मिळै। इण नाचनै पंजाब रा भांगड़ा नाच' रै जौड़े मेल हको। औ नाच ब्याव-सादी, राती जगा अर गोत्रज आद रै टांणै नाचै।

बेरला नाचु :

इण नाच मांय अेके डीकरी अेक बेड़ो माथा पर ऊंचाय नै नाचै। माटी रा घडा रै तीणां ई करै। घड़ा मांय दीवौ बाळै, तीणां मांय कर उजास बारणै निसरै। औ घणौ दोरौ नाच है। पगां री गति धीमी-मधरी रैवै पण लय बद्ध व्है। 'बेरला' रो पूरौ 'संतुलन' बणायौड़ौ रावै। इण नाच में कलाकार री नाच, चाल, संतुलन, लय, ताल में पारंगत व्हैणौ दरसावै। औ नाच घणौ फूटरौ अर रोमांचक व्है।

मोरीयौ नाचु :

मोर आपरी मनोभावना रंगीला नाच सूं मोरणी नै रीझावै अर मोवै। छेवट मोरनी रीझै अर मोरीया रै साथै नाचणौ सरू करै। ठीक इण इज ढंग ढाळै गरासियौ अेकलौ नाचणौ सरू करै अर पछै गरासणी ई वींरै साथै नाचै। औ अेक ब्याव मांय नाचणवाळौ नाच है। बना-बनी नै पालकी ज्यूं मांछा पर बैठायनै दो च्यारेक लुगाया माथा पर ऊचावै। औ 'मोरीयो नाच' बना-बनी रै गाढा हेत रौ 'प्रतीक' है अर साथै ई गरासिया जात-समाज री अेकता अर संगठण दरसावै। इण नाच रै साथै 'लोकप्रिय' ख्यातनाम गीत 'लीलो मोरीयौ' उघेरे।

ढोल नाचु :

औ ढोली री नाच है अर इणमें फगत मिनख इज नाचै। इणमें नाचणिया खुद ढोल ई बजावै अर खुद नाचतौ ई जावै। इण नाच मांय दस पन्दरेक 'नर्तक' भाग

लैवे। औ नाच घणी कला-कौसल री नाच है कारण के नाच री लय रै साथै ढोल री ताल री तालमेळ बणायौड़ी राखणी पडे। कदेई इणरै साथै आग माथै नाचणी-कूदणी के धरती पड्यौ सिक्कौ के कापड़ौ मुण्डा सूं उठाया करै, इणसूं देखणिया नै घणी मजौ आवै।

रायन (देवी) नाचु :

औ घण महताऊ अर जोखम री नाच है। जोखमाल खरौ। इण मांय मिनख देवी रै रूप मांय परगटै। दोन्यूं हाथां तरवारां झेल्यौड़ी अर तीजी तरवार दातां बिचै दबायौड़ी राखै अर चमत्कार सूं टूटीयौ काढे। ढोल री बिरोबर बाजती रैवणी इण नाच मांय घणी महताऊ व्है।

तिनखा के अनगुरा नाचु :

औ अेक अगन-नाच है। आदिवासियां रै नाचां मांय सै सूं बत्तौ रोचक आकर्षक अर जोखमाल नाच है। औ खास करनै झमू गांम मांय होळी रै दूजोड़ै दिन नाचै। इण मांय मोठ्यार छोरां इज भाग लैवे, लुगायां भाग कोनी लेवै। नाच होळी रा अधबळ्या - दाजोळ्यौड़ा खीरां पर नाचै। पछै खीरां कादळीज जावै जद बंद करै। अचूंभौ औ कै बळबळता बासनी (अंगारा) पर नाचै पण पगां रै कै पगतळ्यां रै बळण-जळण आद री कीं सैलाण नीं व्है अर नीं कोई फालकां उपड़ै।

भोपा नाचु :

औ नाच फगत भोपां इज नाचै। राती जगा, कै नौरतां में नाचै। औ अेक भगति नाच है। भोपां कमर घूघरां बांधनै नाचै। इण नाचमें पन्दरा वीसेक भोपां भेळा व्है जावै। पाटवी भोपो जिणनै हुकम दैवे वो देवी रै सांमी नाचै अर कदैई अेकट व्हैनै भेळा ई नाचै। इणनै भोपा नाच कैवै। सैंग आदिवासी नाच आपणी 'प्रकृति' मांय 'बेजोड़' व्है अर दूजा समाज रा तौर-तरीकां सूं न्यारा व्है।

गैर नाचु :

होळी सूं लाग'र सीळसातम तांई इण निरत री जोर धमचक उडै। गरासिया ढोल रै ढमकै रे साथै गोळ घेरा मांय डिडोरियां सूं झूमता नाचै। दरेक 'नर्तक' रै दोन्यूं हाथां मांय डिडोरियां रैवे, गैरीया च्यारूमेर घूमतड़ा, बैठतां, उठतां, कूदता, उछलता अेक दूजा रा डंडियां टकरावता थका नाचै। इणरी मंडाण जगा-जगा गांम-गांम में व्है।

हेर नाचु :

औ निरत दियाळी माथै व्है। इणमें मिनख इज नाचै। इणेमें लुगायां भाग कोनी लेवै।

निरत गीतः

इणमें गीत अर निरत साथै साथै चालै। बिरखा मांय भीजती छोरी नाचती थकी मोट्यार नै कैवे -

काळी-काळी वादळी मां मेलती डगेली
सीडी-सीडी पांणी पड़ै, भोगली-सी झूपड़ी
गळे न गळे सुण पाय मां बिछिया
बिछिया नै छमकै जासुवो जुवानाथ

*

असल धड़ावजो रे मामा मारे मोरली बाहली
ताजी रगाड़जो रे मामा मारी वादळी
असल ताजी रगाडी रे नाना भाणेज थारी बाहली
रेडा उछारिया आमलिया माल रे
वे बाण उदारिया रेड़ा अमलिया माल रे
आमलिया माले जानो भाणेज बाहली बजाड़ै रे
बाह दो लाकता वे बाणये हाथ लियो नानो भाणजो
दौड़ती धावती गई है मारी चौंदी आमलिया माल रे...

गरासिया अेक नितर अर गीत में रंगयौड़ी रंगीली मस्तीवाळी जात। नाच, गीत, सुर, सुरा अर सुंदरी इणारै रग-रग मांय जम्यौड़ी-रम्यौड़ी-पच्यौड़ी। हाळी-दिवाळी, ब्याव-सागाई, पाठ-पूजा, जंतर-मंतर, सुहावणी मौसम, प्रेमलीला, हरिया खेत, जंगळ-भाखर दरेक मौके मन मस्ती सूं झूमै, अंग अंग थिरकै, बोटी-बोटी उछळै। सुरा मांय बंसरी अर इलगोजो तो जीव री जड़ी ज्यूं हर हमेस साथै, अर इणारा स्वर गूंजता ई रैवे। गरासिया रौ कैवणौ है कै नसा बिना नाचवा रौ मजौ ई कांई ? अर बिना बायली (गोटी) नाच ई कैड़ो? अै लोग 'प्रेमिकावाँ' अर 'जोडायतां' रे साथे साथै नाचण रौ मजो लैवे। अै सेवजी (शिव) नै नाच रा देवता मानै। अै लोग थकैनै घेह नीं व्है जाय जठा तांई नाचै-कूदै। 'श्लील' अर 'अश्लील' सबद इयारै सबदकोस मांय है इज कोनी। होळी रै मौके जवान छोरयां ने मोट्यार बाथां मांय कसने गुलाल गालां पर रगड़ै। आंख्यां मांय आंख्यां घालनै धीरज छोड़ दे अर तडपण लागै औ इणारौ 'प्रणय प्रदर्शन' है। गरासिया रोटी बिना रैय सकै पण निरत बिना नीं रैय सकै।

इयांरा नाच सीधा-सादा, सरल सहज अर अेक गति ताल मांये व्है। इणारै निरत में घणी तकड़-मकड़, तांमझांम कै उछल-कूद कोनी। नाचरा मंडाण पण भांत-भांत रा व्है - घोड़ा रा खुर रा आकार मांय नाचै, अेक औळ मांय नाचै, आंमी-सांमी दो ओळ्यां मांय नाचै, अपूठी बांकोली घालनै नाचै, अर गोळ कुण्डाळ्यौ बणा'र ई नाचै, कैई निरतां मांय लुगायां अर मिनखां री न्यारी न्यारी लैण आंमी-सांमी ऊभनै नाचै, अेक मिनख अर अेक लुगाई रै 'क्रम' सूं लैण में कै घेरा में ई नाचै अर एक दूजारै खांधै हाथ धरनै कै कमर में हाथ घालनै ई नाचै। होळी पर अैड़ा फागीजे कै पूछो ई मत। धुंआधार फाटा बोलै कै सुण ई नीं सकौ।

गवरी नाचु :

इण नाच रै पेचे भखमासुर रू कथा गूंथ्यौड़ी। इणमें दो रायां (लुगायां) व्है जकौ परबतां अर विष्णु भगवान रौ मोवनी रूप व्है। रायबूढियौ क बूढीयौ भखमासुर रौ रूप व्है। राजा अशोक की सभा मा भील औ नाचु करयौ हो। आज ई भील लोग भादवा मी'ना मा अेक मींनौ सैंग काम काज छोडनै 'गवरी नाचु' करै। खेती, मजूरी री ई परवा नी करै। धराव, ढाडा, मवेसी सैंग सूना छोड दे। भादवा री पूनम ने विसर्जित करै। रायबूढीये रै भाटौ बांधनै तळाव मा पदरावै। 'गवरी' भीलां रौ नाच है, गरासिया ई कठैई कठैई करै, इण वास्तै ऊपर नाचों माय इणरौ जिक्र कोनी कीधौ।

नृत्य

नृत्य गरासियो की विशेष पसंद है। यह इनकी 'रचनात्मक' शक्ति को प्रकट करने का माध्यम है और एक सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी है। रोजमर्रा के जीवन को यह तरो ताजा करता है। थकान को मिटाता है। नाचना इनके हंसी खुशी तथा मस्ती से जीने का ढंग है, इससे आंतरिक खुशी बाहर छलकती है। नृत्य के समय शरीर के विभिन्न अंगो से अनेको हावभाव और विचार संपादित होते है। इसमें लय और गति में पूरी एकाग्रता होती है चाहें वो पांवो की गति हो चाहे हाथों की। इससे अच्छे ढंग से, सुंदर एवं आकर्षक बनाने के लिये गोल घेरा बना कर नाचते है और बीच में ढोल और साज बजते है।

गरासिया नृत्य में मुख्य घटक इनकी लय है। नृत्य की आवृत्ति, स्थान एवं समयावधि के साथ ढोल और साज बाज बजाने का तालमेल बना कर रखते है। 'ताल' और 'लय'की ये परंपरा युगों से चलती आई है उसे स्थायी बना रखा है। ढ़ोली को नर्तक की गति और भाव आदि से तालमेल रखना जरूरी होता है। अगर ढ़ोली के बजाने में चूक पड़ती है अथवा वो हार जाय तो उसकी खिल्ली उडाते है और समाज में निर्बल व्यक्ति घोषित किया जाता है इस प्रकार वह कलंकित होता है।

मधुर ध्वनि के साथ ढोल बजना प्रारंभ होता है। शनै शनै उसकी ध्वनि तेज, ऊंची और सूक्ष्म होती जाती है। होली के त्यौहार पर लय दृष्टव्य होती है। मधुर गीतों के साथ लयबद्ध होती है जो इनकी एक रूपता को प्रर्दर्शित करती है। इनके शरीर की आकर्षक क्रियायें, निर्भय गति, जंगली उछल कूद, आगे पीछे मुड़ने का ढंग, इधर-उधर झुकना आदि देखने योग्य है। गरासियों की सशक्त मांसपेशिया से शक्ति प्रदर्शित होती है। वे मस्ती से झूमती नाचती है। ऐसा लगता है जैसे नृतक शराब के नसे में नाच रहे है परन्तु वास्तव में यह बात नहीं होती। नृत्य समस्त शरीर को प्रभावित करता है। उत्तेजित एवं मस्ती भरे नृतको के चहरों पर झलकती खुशी और चमकती आँखों का भावों से लगाता है कि शराब पी हुई है। इनका नृत्य प्रेम और प्रतिष्ठा का अवसर देता है। इस प्रकार सामाजिक दबाव और प्रभाव से निरंतर दिन भर नाचने के पश्चात भी ये लोग थकते नहीं। नृत्य इतना प्रभावशाली होता है कि दर्शकों की इच्छा नाचने की होती है। औरते और वृद्धजन नृत्य के उत्साह व उमंग को नहीं रोक पाते। अक्सर एक मनुष्य सर्वप्रथम नाचना प्रारंभ करता है फिर धीरे धीरे अन्य स्त्रियां भी जुडती जाती है।

अगर एक युवक और युवती एक दूसरे से अपरिचित हो और परस्पर आकर्षित हो जाय तो परिवार-वंश आदि के संदर्भ में नृत्य करते हुए, गीतों में प्रश्नोत्तर कर परिचय पूछ लेते है। कभी कोई ऐसा भी अगर पूछ बैठे कि इसके शादी से पूर्व बच्चा कैसे हुआ ? तो

उत्तर मिलता है कि इसने पहले ही अपने खेत में झंडे का डंडा गडवा दिया था। वे इसे बुरा भी नहीं मानते।

उत्सव में नृत्य के साथ सिर, हाथ, कलाई और अंगुलियों की गति और पावों की गति के साथ साथ तालमेल पर बल दिया जाता है। 'पुरुष नर्तक' गति की तीव्रता से शक्ति प्रदर्शन (परीक्षण) करते है। गरासियों में नृत्य एक अतीव महत्वपूर्ण कला है। युवाओं को एक जगह एकत्रित होकर मिलने का अवसर देता है। नृत्य इन मे से शक्तिशाली, चुस्त, स्फूर्तिदायक, और बुद्धिमान युवक-युवतियों को चुनने का भी अवसर देता है। सर्वश्रेष्ठ नर्तक लोकप्रिय बनता है। ऐसे युवक-युवतियों की अधिक माँग रहती है।

'प्रणय नृत्यों' में नृत्य के अतिरिक्त अंगुलियों के संकेत, मुस्कराते चहरे, आंखों का मटकाना और मेंहदी रची हथेलियों के ईशारे प्रेम सूचक होते है। यह नृत्य नर-नारी दोनो के सौन्दर्य और गठन का प्रदर्शन करते है।

गरासियोके अस्सी तरह के पारंपरिक नाच है, जिसमे निम्नांकित मुख्य एवं महत्वपूर्ण है -

वालर नाच :

यह गरासियों का प्राचीन प्रसिद्ध नृत्य है। कृषि एवं फसल से संबंधित है। इसमें सबसे अधिक पुरुष एवं स्त्रियां नाच सकते है। इसमें आमने सामने मुँह न रखकर, पीछे मुडकर, हाथ मिलाकर, गोल घेरे में खड़े रहते है। एक छोटे घेरे में मुख्य नेता खड़ा रहता है। मुख्या नई सुंदर पोषाक पहिनकर सजधजकर खडा होता है। दूसरा घेरा लड़कियों का और फिर लड़को का होता है। सभी नर्तक अपना दायां पांव आगे बढ़ा कर रखते हैं और बायां पांव ताल के साथ आगे पीछे हिलाते हुए नाचते रहते है। शनै शनै गति तीव्र होती और तदनुसार गीत और नृत्य साथ साथ चलते रहते है। सभी नेता का अनुसरण करते है। अधिकांश इस नृत्य के साथ वाद्य यंत्र नहीं बजाये जाते। यह नृत्य विशेष उत्सव पर ही नाचा जाता है। इस नाच के साथ युद्ध के अथवा किसी एतिहासिक घटना पर सृजित गीत गाये जाते है। इसमें 'कत्थक कली' शास्त्रीय नृत्य जैसी घटनाओं का संकेतिक चित्र-सा भी खीचा जाता है। कभी कभी तो किसी प्राचीन घटना का इतनी सजीव प्रस्तुति की जाती है कि आश्चर्यचकित हो जाते है।

वालर नृत्य गरासिया समाज का संगठन दर्शाता है। बाह्य गोला पुरुषों का ओर अंदर का गोला (घेरा) स्त्रीयों का होता है। दोनो का नेतृत्व पुरुष ही करता है। यह इस समाज को पितृतात्मक प्रधान होना बताता है। नारी पुरुष का नेतृत्व स्वीकार करती है

मादळ नृत्य :

यह नाच एक विशेष ढोलक 'मादळ' पर नाचा जाता है। यह विशेष ढ़ोलक 'मादल' का भाग एक ओर से कम और दूसरी ओर से अधिक चौड़ा होता है। इसकी धुन पर यह नाच नाचा जाता है। ढोल के संकीर्ण भाग से सुरीली और चौड़े भाग से साधारण ढोल-सी आवाज निकलती है। ढोल का आकार डमरूनुमा होता है। ढोली अपनी दक्षता बताने हेतु कुछ खास समयावधि के अंतर से पृथक-पृथक प्रकार की ध्वनि निकालता है। 'मादळ' बजाने वाला गोल घेरे के बीच में खड़ा रहता है और गोला नर्तक बनाते है। यह नृत्य दाई ओर बढ़ाते हुए शुरू करतेहै। इस प्रकार दाई ओर चलते-बढ़ते रहते है। 'मादळ नृत्य' तोरण, भरखु अर कदै कदाच 'रातजगा' और 'मोरीया' गीत के साथ नाचते है।

खुड़ नृत्य :

इस नृत्य में अत्यधिक उछलूकूद होती है। गरासिये गोल घेरा बनाकर नृत्य-गीत के साथ साथ खूब उछलते-कूदते है। इस नृत्य में केवल लड़कियाँ ही नाचती है। नाचते समय एक दूसरे की भुजा पकड़ती है और दांया पांव दांई ओर बढाते हुए - नृत्य प्रारंभ करती है, जब बायां पांव दांये के सीधे कोण में आता है तब दोनो पांवो की उंगलियों पर नाचती है और ढोल की ताल पर आधे से एक फूट तक ऊंची उछलती रहती है और फिर नृत्य करती रहती है। जब तक ढोल बजता है, गीत नही गाती अथवा गीत प्रारंभ करते ही ढोल बंद कर देते है। अधिकांश दिवाली के गीत इस नृत्य के साथ गाये जाते है।

लुर नाच :

यह नृत्य विशेषतः होली पर स्त्रियों द्वारा नाचा जाता है। महिलाएँ दो दलो में बंट जाती है और आमने-सामने खड़ी हो जाती है। एक दल वर पक्ष का और दूसरा दल वधु पक्ष का माना जाता है। दोनो दलो के बीच में एक रेखा खीचते है। सभी औरतें एक दूसरी की कमर में हाथ डाल कर पकड कर रखती है और उस कार के पार एक साथ कूद कर जाती है और कूद कर पुनः अपने पूर्वस्थान पर आ जाती है। इसी बीच एक दल वधु पक्ष (माण्डवी) से गीत मय प्रश्न पूछती है। वधु पक्ष (माण्डवी) वापस गीत में ही उत्तर देती है। उत्तर देते समय भी कूद कर रेखा तक जाती है। इस प्रकार कमर एक दूसरी के पकड़ कर मानव श्रृंखला बद्ध एक साथ आगे पीछे लयबद्ध कूदती रहती है और गीतमय प्रश्नोत्तर निरंतर चलते रहते है। वापस अपने पूर्व स्थान पर आती-जाती रहती है। अधिकांश ये गीति नाटिका की भांति ब्याह शादी के अवसर पर गाये जाते है।

रंगल-खंगळ नाच :

यह एक 'खिचड़ी' (मिश्रीत) समूह नृत्य होता है जो स्त्री-पुरुष के रूप में प्रस्तुत करते है। प्रत्येक दल एक पृथक इकाई बन जाता है और स्वतंत्र रूप से पृथक-पृथक तरह के नृत्य एवं गीत प्रस्तुत करते है। यह अति रोचक और रोमांचक होता है। इसमें तरह-तरह के नृत्य एक साथ सम्मलित हो जाते है। इसमें समस्त वाद्य-यंत्र अर्थात् ढोल, मादळ, थाली, बांसुरी, अलगोजा, झालर, इकडुरिया अर रावण हत्था आदि सभी एक साथ बजाये जाते है। यह एक गीत - नाटिका जैसी होती है। इसमें भाँति भाँति के नृत्य एक साथ नाचे जाते है।

यह नृत्य 'प्रतियोगी परीक्षा' की भांति होता है जिसमें प्रत्येक 'आढ़क' (गांव) भाग लेता है और एक से एक बढ़ कर गीति नाटिकाएँ प्रस्तुत की जाती है। सर्वश्रेष्ठ अभिनय (गीति नाटिका) का चयन किया जाता है। साधारण तथा प्रत्येक 'आढ़क' (गांव) एक विशेष नृत्य-अभिनय (गीति नाटिका) के लिये पहिचाना जाता है। अगर कोई दूसरा 'आढ़क' उस प्रकार के नृत्य में अपनी श्रेष्ठता दिखाना चाहे तो इस अवसर पर आयोजित प्रतियोगिता में भाग ले और सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हो जाय तो चुन लिया जाता है।

गोर का नृत्य :

गोर के नृत्य में केवल मात्र गरासिया युवतियां ही भाग लेती है। अन्य किसी भी व्यक्ति को इनके साथ नाचने की अनुमति नहीं होती। इस नृत्य में 'ईसरजी' से मनोवांछित पति की कामना करती है। 'ईसर' और 'जवारियों का कुण्डा' सिर पर उठाये दो युवतियाँ बीचो बीच घेरे में खड़ी रहती है। यह विशेष ध्यान रखा जाता है कि दोनो लड़कियों का अलग अलग गाँव की होना अनिवार्य होता है। इस नाच में युवतियाँ एक दूसरी के गले में हाथ डाल कर गोला बनाती है। वे कभी खंधे पर हाथ रखती है, कभी कमर में हाथ डालती है और उछलती-कूदती नाचती जाती है। दूसरे हाथ को नीचे करके भाव के अनुसार संकेत करती रहती है और गीत गाती जाती है। घेरा भी बदलती रहती है। गीतों में 'काम कला' का वर्णन करती है। सभी गीत 'सैक्स' के संदर्भ में होते है।

जुलारू नृत्य :

यह नाच युवतियाँ जोड़े से नाचती है। नाचते समय हाथ दूसरे के कंधे पर रखती है। अगर दायां हाथ कंधे पर रखती है तो बायां पांव ऊपर उठाती है और बाया हाथ कंधे पर रखती है तो दांया पांव उपर उठाती है। जालरू नृत्य दीपावली के उत्सव पर नाचा जाता है। कभी कभी 'गणगौर' अथवा 'रातजगा' के उत्सव (अवसर) पर भी नाचा जाता है।

गवरी पूजा या कान्ह नृत्य :

यह नृत्य एक सूक्ष्म वाद्य यंत्र 'गोरीयुन' की धुन पर अभिनीत किया जाता है। इस नाच में एक लड़का और एक लड़की युगल रूप से नाचते हुए अभिनय करते है। युवक 'गोरीयुन' अपने मुँह में 'मोरचंग' की भांति बजाता है और युवती अपनी बांई भुजा युवक की दांई भुजा पर रखते हुए मंद-मंथर गति से लयबद्ध नृत्य करती है। ये दोनो राधा-कृष्ण का किरदार निभाती है। 'गोरीयुन' बांसुरी और 'मोरचंग' की याद दिलाता है।

घूमर नृत्य :

यह दीपावली का नृत्य है। स्त्री-पुरुष दोनो सम्मलित रूप से नृत्य करते है। जब नृत्य चरम स्थिति में पहुँचता है तब नर्तक तालियाँ बजाना प्रारंभ कर देते है। फिर ढोल बजाते हुए 'छप्पनियो काल' (वि.सं. १८५६ वाला अकाल) का गीत गाते है। इस संगीत से साहस और हिम्मत से सभी समस्याओं और आपत्तियों का मुकाबला करने की प्रेरणा मिलती है। इस नृत्य को पंजाब के भांगड़ा नृत्य की समानता मे रखा जा सकता है। यह नृत्य सादी, रातजगा और गौत्रज आदि के अवसर पर नाचा जाता है।

बेरला नृत्य :

इस नृत्य में एक युवती एक घड़े पर गागर रख कर नाचती है। मिट्‌टी के घड़े के छेद करके अंदर दीपक भी जलाते है जिससे छिद्रो मे से प्रकाश विकीर्ण होता रहता है। यह बड़ा कठिन नृत्य है। पांव मंद गति से थिरकते है पर लयबद्ध उठते है। 'बेड़ला' (बेड़ा) का संतुलन बनाये रखना होता है। यह नृत्य कलाकार को चाल, संतुलन, लय, ताल आदि की पूर्ण प्रवीणता दर्शाता है। यह नृत्य अति सुंदर, रोमांचक व आकर्षित होता है।

मोर नृत्य :

मोर अपने मनमोहक एवं रंगीले नृत्य से मोरनी को मोहित एवं आकर्षित करता है। अंत में मोरनी मोहित होकर मोर के साथ नाचने लगती है। इसी प्रकार पहले गरासिया अकेला नाचना प्रारंभ करता है और बादमें गरासणी (लुगाई) भी इसके साथ नाचने लगती है। यह शादी में नाचा जाने वाला एक नृत्य है। वर-वधु को पालकी या खाट पर बैठा कर दो चार औरते खाट को सिर पर उठाती है और नाचती रहती है। यह 'मयुर नृत्य' वर वधु के गहरे प्रेम का प्रतीक माना जाता है। साथ ही गरासिया जाति-समाज की एकता और संगठन दर्शाता है। इसके साथ लोकप्रिय प्रसिद्द गीत 'लीलो मोरीयो' गाती है।

ढोल नाच :

यह ढोल बजाने वालो का नृत्य है और इसमें केवल पुरुष वर्ग ही भाग लेता है। इसमें स्वयं नर्तक ढोल भी बजाते जाते है और साथमें नाचते भी जाते है। इस नृत्य में दस-पन्द्रह नर्तक भाग लेते है। यह नृत्य अत्यन्त कला-कौशल का नृत्य है, क्योंकि नाच की लय के साथ ढोल की ताल का तालमेल बनाये रखना पड़ता है। कभी कभी इसके साथ अग्नि पर नृत्य करते है तथा पृथ्वी पर पड़ा सिक्का या कपड़ा भी मुँह से उठाते है। इससे दर्शक रोमाचित होते है।

रायन (देवी) नृत्य :

यह अति महत्वपूर्ण तथा खतरनाक नृत्य है। इसमें मनुष्य देवी के रूप में प्रकट होता है। दोनो हाथो में तलवारें लेते है और तीसरी तलवार दांतो मे दबाकर रखते है और अति चमत्कारपूर्ण अभिनय करते है। ढोल बराबर बजता रहना अनिवार्य है।

तिनखा या अग्नि नृत्य :

यह एक अग्नि-नृत्य है। आदिवासीयों के नृत्यों में यह सर्वाधिक रोचक और आकर्षक और खतरनाक है। यह नृत्य विशेष रूप से झमुड़ी गाँव में होली के दूसरे दिन होता है। इसमें केवल गरासिय युवक ही भाग लेते है। स्त्रियां भाग नहीं लेती। उनके बस का नहीं है। यह नृत्य होली के अधजले-अधबुझे अंगारो पर नाचते है। जब अंगारे बुझ जाते है तब नृत्य समाप्त होता है। आश्चर्य तो यह है कि दहकते अंगारो पर नाचने पर भी पांव तले फफोले नहीं पड़ते।

भोपा नृत्य :

यह नृत्य केवल भोपे ही नाचते है। रातजगा या नवरात्रि में नाचते है। यह एक भक्ति नृत्य माना जाता है। भोपें कटि प्रदेश में घूंघरू बांध कर नाचते है। इस नृत्य में पन्द्रह बीस भोपे एकत्रित हो कर नाचते है और यदि वरीष्ट भोपा किस भी भोपे को आदेश दे तो उसे देवी के सामने नाचना पड़ता है। इसे भोपा नृत्य कहते है। सभी आदिवासी नृत्य अपनी 'प्रकृति' मे बेजोड़ और अन्य समाज के सभी तौर तरीको से भिन्न है।

गेर नृत्य :

होली से लगा कर शीतला सप्तमी तक इस नृत्य की जोरदार धूम रहती है। गरासिये ढोल की ताल पर गोल घेरे में झूमते हुए डंडियो से नाचते है। प्रत्येक नर्तक को दोनो हाथो

में लंबे पतले रंगीन डंडे रहते है। नर्तक चारो ओर घूमता हुआ कभी बैठता कभी उठता कभी उछलता हुआ एक दूसरे के डंडे टकराते हुए नाचते रहते है। इसका आयोजन स्थान-स्थान पर गाँव गाँव में होता है।

हेर नृत्यः

यह नृत्य दिवाली पर नाचा जाता है। इसमें मनुष्य ही नाचते है। स्त्रियां भाग नहीं लेती।

नृत्यगीत :

इसमें नृत्य और गीत साथ साथ चलते है। वर्षा में भीगती लड़की नाचती हुई युवक से कहती है -

काले कजरारे बादल बढ़ चढ़ कर आये है। मूसलधार वर्षा हो रही है। मेरी टूटी फूटी झोपड़ी में पानी गिर रहा है। पानी से कुछ भी नही गलने वाला परन्तु मेरी पायल और बिछिया छन छन बोल रहे है, ये सारी बात बता रहे है।

*

हे मामाजी। मेरे स्वर्णकार से असली 'मोरली' घड़वाना उस पर ताजी 'बादली' लगवाना। अरे मेरी भान्जी। मैने असली ही घड़वाई है तुम निश्चित रहो।

अपना खेड़ (भेड़ बकरियां) आमलिया की ओर भेजी है। मुझे उधर जाना है । भागता दौडता जा रहा है और भांजे को भी साथ ले लिया है।

गरासिया जाति नृत्य और गीतों में रंगी हुई रंगीली मस्त जाति है। नृत्य, संगीत, सुर, सुरा और सुंदरी इनके नस नस में घुली मिली है। होली-दिवाली, ब्याह-सागाई, पाठ-पूजा, मंत्र-तंत्र, सुहानी मौसम, प्रेमलीला, हरे भरे खेत, जंगळ-पर्वत आदि प्रत्येक अवसर पर इनका मन मस्ती से झूम उठता है, ये नाचने लगते है, अंग अंग थिरक उठता है। बोटी-बोटी उछलनै लगती है। सुर में बांसुरी अर अलगोजां की ध्वनि गूंजित होती रहती है। इनका कहना है कि नशे के बिना नाचने का मजा नहीं आता और बिना प्रेमिका के नाच कैसा ? यह लोग प्रेमिकाओं एवं पत्नियों के साथ साथ नाचने का आनन्द लेते है। शिव को ये नृत्य का देवता मानते है। जब तक थक कर चूर नहीं हो जाते तब तक विराम नहीं लेते। 'श्लील' और 'अश्लील' शब्द इनके शब्द कोश में हे ही नहीं। होली के अवसर पर युवक युवतियों को बांहों में कस कर गालो पर गुलाल मलते है, आंखो में आंखें डाल कर धैर्य खो देते है। यह इनका 'प्रणय प्रदर्शन' है। गरासिये लोग रोटी के बिना रह सकते है पर नृत्य के बिना नहीं रह सकते।

इनका नृत्य सीधा-सादा, सरल सहज और एक गति-ताल में होता है। इनके नृत्य में अधिक तड़क-भड़क और दिखावा नहीं होता। नृत्य का आयोजन भी तरह-तरह के आकार-प्रकार में किया जाता है - घोडे के खुर के आकार में नाचते है, एक पंक्ति बद्ध नाचते है, आमने सामने दो पंक्तियों में नाचते है, गोल घेरे मे नाचते है, कई नृत्यों में स्त्री पुरुष पृथक पृथक आमने सामने खड़े रह कर नाचते है, एक पुरुष और एक स्त्री के क्रम से पंक्ति बद्ध हो कर अथवा गोल घेरा बना कर नाचते है, एक दूसरे के कंधे पर हाथ रख कर या कटिप्रदेश में हाथ डालकर नाचते है। होली पर बहुत अभद्र एवं अश्लील बोलते है। नग्न श्रृंगार रस में गाते है।

गवरी नृत्य :

इस लोक नृत्य के पीछे भस्मासुर और शिवजी की कहानी गुंथी हुई है। इसमें दो स्त्रियां होती है जो पार्वती और विष्णु भगवान का मोहनी रूप (नारी रूप) होता है। 'रायबूढ़िया' या 'बूढ़ीया' भस्मासुर का रूप होता है। राजा अशोक की सभा में भीलोंने यह नृत्य प्रस्तुत किया था। आज भी भील लोग 'भादवा' के माह में महिने भर सब काम छोड़ कर 'गवरी नृत्य' करते है। कृषि, मजदूरी की भी चिन्ता नहीं करते। खेत, फसल और पुरुषों को भी स्वतंत्र छोड़ देते है। 'भादवा' की पूर्णीमा को विसर्जित करते है। 'रायबूढ़ीया' (भस्मासुर) के पत्थर बांध कर तालाब में फेंक कर डूबोते है। गवरी नृत्य भील ही करते है, गरासिये कहीं कहीं करते है अतः उपर नृत्यों में इसका विशेष विवरण नहीं दिया है। इसलिये इसे पृथक से यहां अंत में दिया है।



माडलां, माडणां
हीमेन अर हपनां

~ ~ ~

लोक कला : मॉडणां

दरेक मांनखा मांय अेक कलाकार लुक्यौड़ौ रैवै। नैना टाबरां रै पेंसिल, चॉक कै रंग आद कीं हाथै लागै तो आंगणै, भीतां पर कै पाटी माथै आडा-डोडा लीकटा खांचै। इण 'कलात्मक अभिरूची' रै वजै सूं मांडणां, चितरांम आद बण्या। आ विद्‌या मानखौ जूना जुगा सूं सीखतो रयौ। 'प्रागैतिहासिक काल' री गुफावां सूं लेय'र मोहनजोदड़ौ-हड़प्पा री संस्क्रिति रा बरतन-बासण अर मुद्रावां आद माथै लाधै। आर्यां रै वैदिक जग्यादि करमां रै साथै ई 'भूमि अलांकरण' कुदरत री सगतियां नै तुष्ट करणनै करता। जग्य री वेदी में अै लोग अेक तरै री रेखावां, त्रिकोण, गोलाकर, चतुरभुज, षढभुज रा आकार में अनाजों, आटा, हळदी, कंकू अर फूल-पानडां सूं सजावता-सिणगारता। 'आकृतियां' में खास है माछली, सूरज, चांद, रीछ, लिछमी रा पगळ्या, पत्तियां अर बेलड़्यां। मांडणां रौ जळम अेक 'बिंदु' सूं व्हियौ। औ 'बिन्दु' आतमा परमात्मा रौ मिलण बिन्दु है अर 'आध्यात्मिक चेतना' रौ प्रतिक है। इणमें च्यार बिंदु ई व्है जकौ च्यार वेद, च्यार दिसावां, च्यार आश्रम अर च्यार व्रर्ण रा 'प्रतीक' है।

औ 'भित्ति चित्र' ई मांडणां रौ इज अेक रूप है। 'ज्यामितिक' आकारां नै मांडणां में घणौ काम लेवै। बिंदु अर रेखा तो आधार है - त्रिभुज, बहुमुख नै गोळाकार रौ उपयोग पण व्है। टीबकावाळा मांडणां में तांत्रिक भावना री झलक मिळै। ३३ बिंदूवां सूं १०८ बिंदुवां तक डिजाइनां मिळै।

दखिण में पूजा पाठ रै पैली रोज रंगोळी मांडै। रोज रा काम सूं बचण सारू रंगोळी पेन्ट सूं बणावै। वा केई दिन ना फीकी पड़ै ना मिटै। रंगोळी डिजाइना रा इतरा आविष्कार व्हैग्या है क पूछो इज मत। दक्षिण में भांत-भांत रा स्टीकर, पेंट करयौड़ा बोर्ड, पोस्टर अर केई पोथ्यां मिळै जिणमें सौकड़ू डिजाईनां है। वठै लुगाया रंगोली री इस्कूलां चलावै। होडाहोड में आटा री ठौड़ मकराणा भाटा रौ पावडर अर कई रंगां रौ गुलाल ई काम में लेवै।

तैवार, वरत, अनुष्ठान, पूजा, ऊजमणौ, उछब, ब्याव, ढूंड, जळवा पूजण आद रै मौके माडणां मांडण री रीत। होली, दिवाली, दसरावौ, भाई दूज, सकरात, तीज, गणगौर आदि रै उछब पर रंगोळी मांडै। इणरी जरूररत पूजा-पाठ अर जंतर-मंतर में ई पड़ै। दिवाळी नै लिछमीजी रा पगळ्यां मांडै। गणेसजी ई लोक देवता है। इण मौके पूजा घर,

तुळसी थाणै, बरामदा, तिबारै, थलगट, चौक, पगौत्यां, सिरै दरवाजै, चौकियां चबूतरियां आद पर मांडणां मंडिजै। इण मांडणां में दीवां जुपता मेलीजै, जरै इज तो गवीज्यौ है - 'झिलमिल सितारो का आंगन होगा।'

राजस्थान में मांडणां रै वास्तै खड़्डी, गेरू, हिरमच काम में लेवै। खाको धौळौ अर मांय भरवानै लाल पीळौ रंग काम में लें। कठैई गेऊं व चावळा रौ आटौ, चूनो, मकराणा भाटा रौ पावडर, कंकू, हलदी, सूं ई बणावै। राजस्थान में हीड़, हटड़ी, दीवट आद दिवाली नै मांडै।

वार-ते'वार कै ब्याव-सादी कै आंणै-टांणे उछब माथै लुगायां आपरै घरां नै लीपे-चूपे, धौळे-मंगळै अर मांडणां मांडै। आ अजब-गजब री लोक कला है। मांडणां रा चितरांम मांय पसु - पंखेरू, रूंख, बेलड़ी, मोर, लंगूर, सूमटौ, फूल, हाथी, घोड़ा अर गाय बीजा रा चितरांम मांडै। घणा फूटरा फब्बै। कवळ, चौपड़, हाथ, फूलछड़ी, घेवर, सतिया,कलस,कंगूरां, कैरी, पगल्या, जलेबी, रथ, सकरपारा, बीजणौ, लाडू, बेलबूटा अर पत्तियां आद मांडै है।

मांडणां रौ दरसण :

इण लोक कला रौ आपरौ अनोखौ 'दर्शन' है। इणरी अेक 'सांकेतित' भाषा है, इणरौ इतियास पण है। मांडणां नै सही ढंग सूं समझण सारू कीं आइटांण समझणा लाजमी, जको नीचे मुजब -

मॉडणां रा अइटांण	वैदिक अरथ	हिन्दी अरथ	अंग्रेजी अरथ	खास ततब
O	अनुष्टुप	बिन्दु	Point	पृथ्वी
,	वृहति	अंकुर	Eapnding	जल
—	पंक्ति	रेखा	Line	वायु
△	त्रिष्टुप	त्रिकोण	Tringle	अग्नि
O	व्याहृति	गोलाकार	Circle	आकाश

गुणो का प्रतिक : १. ▭ सत २. □ रज ३. O तम ४. ⌂ पंचभूत

मुस्लीम कला : १. , वाव २. ▯आलिफ ३. है।

युरोपीय कला : □ ▯ ⊟ ⬭ ▯ ○

कला बनावटी रौ 'पर्याय' कोनी, वा कुदरत सूं मेळ खावै। सगळा मॉडणा रौ मूळ आधार उपरै मंडिया आइटांण है।

महातम :

मूरत कला, काष्ट कला, रेखा गणित अर चितरांम आद आंकण रौ आधार अेक इज है। मै'दी, गोदणां, वरण, जेवर, कसींदौ, किरोसिया अर कढाई आद री कोरणी रौ ई मूळ अठा सूं इज उठीयौ। घर रा चौक, आंगणां, प्रोळ, बारणां, कवळां, भीतां, चौकी, चूतरियां आद सगळा वार-तै'वार पर मांडणां सूं पूरण लाधै। आपणै मुलक मांयै भौम-अलंकरण रीत-नीत आदू जुगां सूं रई, इण वास्तै छोरयां टाबरपणां मांय ई सीख लैवे। लोक धारणा है कै - 'बेटी भले कुंवारी रैय जावै पण आगणौ कुंवारो नी रैवणो चाइजै।' मॉडणां मै मुलक मांय मांडे। गुजरात नै महाराष्ट्र में इणनै 'सातिया', कै 'रंगोळी', बंगाल नै आसाम में 'अल्पना', मालवा नै राजस्थान में 'मोडणां', दक्षिण अर लंका में कोलम, मिथिला में 'एरियन', उत्तर प्रदेश में 'चौक पूरना', बुंदेलखंड में 'साझा', बिहार में 'अढ़पन' कैवै।

मॉडणा रा तरीका :

राजस्थान मांय मॉडणां सारू दोय भांत री माटी (रंग) काम में लैवै - धवळी अर राती। धौळी खड्डी रै धोळ सूं मूळ मॉडणां रौ खाकौ कोरै अर राता रंग (माटी) सूं भरै। मॉडणां रौ मंडाण आगळ्यां मांयै गाबा री चींदी दबायनै कै रूई सूं भीजोयनै मंडीजै। कूंची केसां री कै खजूर री डांडी कै नीबड़ां री डाळी रौ मुंडौ झिगद चिगदनै ई बणावै। कूंची घोळ में भीजोवै, 'अनामिका' आंगळी री मदत सूं मॉडणां उकेरीजै। कागद पर कलम रै ज्यूं आंगणै आंगळी चालै। चीकणां अर चमकीला बणावण खातर गूगळ रौ धोळ ई न्हांखै।

टैम टैम माथै मांडणा :

दियाळी रै टांकणै मांडणां मांय सौळा दिवला, जळेबी, गळीचौ, वांदरमाळ, मुरकी, फीणी, हीण्डौ, सांठां, पावड़ी, पांन, गाय रौ खुर आद खास करनै मांडै। इण मौके साल्यौ, वेलड़ियां, फल-फूल, लाडू अर पंखा ई मांडै। अेक फूली, च्यार फूली, अर सौळे फूली सूं ई चौक पूरै।

होळी माथै चंग, पुसब, खांडौ, थाळी, बाजौट, चट्टाई, बीजणौ अर गाडोल्यौ आद खास मंडीजै। ब्याव सादी कै मौके, ढोलकी, रथ, बाजौट, कळस आद कोरीजै। मांडण वाली लुगायां नै नाळैर दीरीजै। अै मांडणां अेकण कांनी मौसम री संकेत दैवे तो दूजी कांनी रीत भांत नै उजाळै। इणां पर जातिगत अर 'क्षेत्रगत' असर पण रैवे।

सतिया री महातम :

सतियौ, साख्यौ, अर स्वास्तिक सै अेक रा इज नांव। औ सै सूं जूनौ अर जग चावौ अइटांण। रिग्वेद मांयै इणनै सूरज रौ 'प्रतीक' मान्यौ। औ सुख-समृद्धि, रिध-सिघ, आणंद-मंगळ अर सुभ-कल्याण रौ 'प्रतीक' गिणीजे। इणरी च्यार भुजावां चारो दिसावां, च्यार जुग, च्यार वर्ण अर अर च्यार आश्रम रा रूप मानीजै। हिन्दू धरम रै सिवाय जैन, बौध अर सिक्ख धरम आद सगळा इणनै मंगलिक आइटांण मानैं। युरोप रै इतियास मांय पण इणरौ लेखो लाधै। 'साइप्रेस' री खुदाई मांय ई 'स्वस्तिक'निकळ्या। इणसूं सिद्ध व्है कै सिंसार में औ जूनी सभ्यता अर संस्क्रिति रौ 'प्रतीक' है। नवो परींडो, नवौ चूल्हौ, नवी बही-चौपड़ा पर पेलपोत कंकू सूं साख्यौ मंडीजै।

बैन-बेट्यां घर री लिछमी व्है, इण वास्तै परणीज नै वे सासरे जावै जद सिरे दरूजै री थळगट माथै साख्यौ मांडावै जिणसूं सासरै ग्या पछै ई घर मांय लिछमी रैवै। पजूषण मांय जैन साधव्यां-श्रविकावां मिंदिर अर घरां मांय सतियौ मांडै।

परबतवासी जंतर-मंतर-तंतर मांय इणनै घणौ वापरै। पूजा पाठ मांय इणनै काम लैवै। गीतां मांय ई गवीजें -

लिप्यौ चुप्यौ आंगणौ
च्यारूं खूट चौगान
मांड मरवण मांडणां
निरखै चतुर सुजाण

बुणगट :

मांडणां फगत लीगटियां रै खेल कोनी। लीगटियां, चीरण, भरण, कसाव, भराव अर खिंचाव अेक बुणगट है, ज्यूं मांछआं रै बाण री बुणगट व्है। स्पेन रै अल्टामाइरा अर फ्रांस रै वस्का में मांडणआं रा जकौ गुफा चितरांम मिळिया वे 'पाषण जुग' रै पै'ली (५० हजार बरस पैली) रा है। इणसु भारतीय लोक कला री 'प्राचीनता' आंकीजै।

गरासिया साख्या रै साथै पंख-पंखेरू, सुवटियौ, मोरीयौ, कागलौ, बेलड़यां, रूंखडां रा पांनड़ां, लंगूर आद ई मांडै। घर में ढोर-डांगर मर जावै तो उणनै लेग्या पछै लारे घर रैं वारली कांनी साख्यौ मांडै। अेक लोक गीत मांय तिणकलां री छाबड़ी गूंथ'र वींमै पीळी माटी अर पोठां लायनै आंगणौ सिणगारण रौ ब्यौरौ है -

छोटी-छोटी तुरकल्यां सूं, छबोल्यौ गूंथायौ जी
सासु-बहु मिळ गोबर ल्यायौ, आछौ म्हारौ पीळीयौ।

हरिये-हरिये गोबर आंगणौ लीप्यौ
गजमोत्यां चौक पुरायौसा

लोक कला : अल्पना चित्र

प्रत्येक पुरूष में एक कलाकार छिपा होता है। शिशु को पेंसिल, चॉक या रंग आदि मिल जाय तो आंगन में, दिवारों पर या पट्टी पर आडी-टेढ़ी रेखाएँ खीचेगा। मानव की इसी कलात्मक अभिरूचि से प्रेरित हो कर मनुष्य ने रंगोली चित्रण आद सीखे। यह कला मनुष्य प्राचीन युग से सीखता आया है। कला प्रागैतिहासिक काल की गुफाओं से ले कर मोहनजोदड़ो - हड़प्पा की संस्कृति के बर्तन एवं मुद्रा आदि पर मिलती है। आर्यो के वैदिक कर्म के साथ ही प्राकृतिक शक्तियों को संतुष्ट करने के लिये भूमि अलंकरण भी करते थे। यज्ञ की वेदी को यह लोग विभिन्न भांति की रेखाओं, त्रिकोणों और आयतो मे अनाजों, आटे, कुमकुम व फूलपत्तियों से सजाया करते थे। आकृतियों में मुख्य है - मछली, सूरज, चांद, रीछ, लक्ष्मी का चरण, पत्तियां और बेल बूटे। रंगोली का जन्म अेक बिन्दु से हुआ। यह बिंदु आत्मा और परमात्मा का मिलन स्थाल है और आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक है। इसमें चार बिन्दु होते है - वे चार वेद, चार दिशायें चार आश्रम और चार वर्णो का प्रतीक है।

भित्ति चित्र भी अल्पना चित्रण का एक रूप है। ज्यामितिक आकृतियों का रंगोली में खूब प्रयोग हुआ है। बिंदु और रेखा तो आधार है - त्रिभुज, बहुभुज और वृत्ताकार का उपयोग भी हुआ। बिन्दुवाले मांडणां मे तांत्रिक भावना का पुट मिलता है। ३३ बिंदुओं से १०८ बिंदुओं तक डिजीइनें मिलाती है।

दक्षिण में पूजा के पूर्व रोज रंगोली करते है। रोज के काम से बचने के लिये रंगोली पेन्ट से भी बनाते है जो कई दिन तक न मिटती है न फीकी पड़ती है। रंगोली के इतने नये नये आविष्कार हुए है कि गणना ही नहीं। दक्षिण में तो तरह तरह के स्टीकर, पेंट किये बोर्ड, पोस्टर और पुस्तकें उपलब्ध है। जिसमें सैकड़ो डिजाइनें है। वहाँ महिलाएँ रंगोली की स्कूले चलाती है। प्रतियोगिता में आटे का स्थान पर संगमरमर का पाउडर और अनेक रंगो की गुलाल ई काम में लेते है।

त्यौहार, व्रत, अनुष्ठान, पूजा, उत्सव, शादी, पुत्र जन्मोत्सव आदि के अवसर पर मांडणां मांडने की रीति रीवाज है। होली, दिवाली, दशहरा, रक्षाबंधन, भाईदूज, मकरसंक्रांति, तीज, गणगौर आदि के उत्सव पर रंगोली सजाते है। इसकी आवश्यकता पूजा तथा जंत्र-मंत्र में भी होती है। दिवाली को लक्ष्मी के चरण मांडते है। गणेशजी भी लोकदेवता है। इस अवसर पर पूजागृह, तुलसी स्थल, बरामदा, देहली, चौक, मुख्य द्वार, चौकियाँ आदि पर रंगोली बनाते है, इनमें जलते दीपक रखते है तभी तो कहा है -

'झिलमिल सितारों का आंगन होगा।'

राजस्थान में मांडणे के लिये खड्डी मिट्टी, गेरू, हिरमच, आदि प्रयोग करते है। इनकी 'वाउंडरी' सफेद और अंदर लाल-पीले रंग से भरते है। इसके लिये गेहूं व चावल का आटा, चूना, संगमरमर का पाउडर, कुमकुम, हल्दी काम में लेते है। राजस्थान में दिवाली पर हीड़, हिरमच और दीपक आदि से बनाते है।

पर्व-त्यौहार, ब्याह-शादी अथवा उत्सव-अवसर पर स्त्रियाँ अपने घरो को गोबर से लीपकर दीवारो पर सफेदी करती है। दीवारों और आंगन में अल्पना चित्र बनाती है। यह अल्पना चित्र अपने गृह-आंगन तथा दीवारों पर बनाये जाते है। यह विचित्र लोक कला है। अल्पना चित्रों में पशु, पक्षी, वृक्ष, वल्लरी, मयूर, वानर, तोता, पुष्प, हस्ति, अश्व, गो आदि क चित्र भी चित्रित किये जाते है। यह अत्यन्त सुंदर एवं आकर्षण होते है। कमल, चौपड़, हाथ, फूलझड़ी, घेवर, सातिया, कलश, कंगूरा, कैरी, पगळ्या (विष्णु या लिछमी), जळेबी, रथ, सक्करपारा, बीजणौ, लाडू, बेलबूटा, तीन-च्यार पत्ति आदि मांडती है।

अल्पना दर्शन :

इस लोक कला का अपना अनूढा दर्शन है। इसकी एक सांकेतिक भाषा है। इसे समझने के लिये कुछ चिन्ह (संकेत) समझने होगे जो निम्नांकित है।

अल्पना के संकेत	वैदिक अर्थ	हिन्दी अर्थ	अंग्रेजी अर्थ	विशेष तत्व
o	अनुष्टुप	बिन्दु	Point	पृथ्वी
,	वृहति	अंकुर	Eapnding	जल
—	पंक्ति	रेखा	Line	वायु
^	त्रिष्टुप	त्रिकोण	Tringle	अग्नि
O	व्याहृति	गोलाकार	Circle	आकाश

गुणो का प्रतिक : १.▭ सत २.□ रज ३.○ तम ४.⌂ पंचभुत

मुस्लीम कला : १., वाव २.▯ आलिफ ३. है।

युरोपीय कला में □ ▯ ⊟ ○ ▯ ○

कला कृत्रिमता का पर्याय नहीं है, वह प्रकृति से मेल खाती है। समस्त 'मॉडणो' का मूलाधार उक्तांकित संकेत है।

महत्त्व :

मूर्तिकला, काष्टकला, रेखा गणित और चित्र आदि अंकित करने का आधार एक ही है। मेंहदी, गोदना, वरन, गहना, कसीन्दा, किरोशिया और कढ़ाई आदि के उकेरने का

मूल यही है। घर का चौक, आंगन, प्रोल, दरवाजे, दिवारे तथा चौकियां आदि सभी त्यौहारों आदि पर मांडणो से परिपूर्ण मिलती है। अपने देशमें भूमि-अलंकरण की रीति-नीति आदि युगो से रही है, और इसलिये लड़कियाँ बचपन में ही सीख लेती है। लोक धारणा है कि - 'बेटी भले कुंआरी रह जाय परन्तु आंगन कुंआरा नहीं रहना चाहिए।' मांडणे सब देशों में बनाते है। गुजरात और महाराष्ट्र में इसे 'सातिया' या 'रंगोली', बंगाल और आसाम में 'अल्पना', मालवा तथा राजस्थान में मांडणां, दक्षिण भारत और लंका में कोलम, मिथिला में 'एरियन', उत्तर प्रदेश में चौक पूरना, बुंदेलखण्ड में 'साझा' तथा बिहारमें इसे 'अढ़पन' कहते है।

अल्पना के तरीके :

राजस्थान में 'मांडणां'चित्रण हेतु दो तरह की मिट्टी काम में ली जाती है - सफेद और लाल। सफेद 'खड्डी' या चूना के घोल से मूल 'रंगोली' का खाका बनाते है और लाल रंग से भरा जाता है। मांडणों की रूपरेखा (आउट लाइन) कपडे की पट्टी अथवा रूई घोल में भिगो कर बनाते है। अंगुलियों में 'लीरी' दबाकर बनाती है। इसके लिये कूंची बालो से, खजूर की डंडी या नीम की डाली का मुंह कुचल कर बनाते है। कूंची घोल में भीगो कर 'अनामिका' अंगुली की सहायता से चित्र अंकित करते है। कागज पर कलम की भांति अंगुली आंगन पर चलती है। इन्हें चिकने और चमकीले बनाने के लिये इसमें गूगल का घोल डालते है।

समय समय पर अल्पना :

दिपावली के अवसर पर सौलह दीपक, जेलेबी, गलीचा, वानरमाला, मुरकी, फीणी, झूला, गन्ना (ईख) पावडी, पान, गाय का खुर आदि विशेष कर चित्रित करते है। इस अवसर पर स्वस्तिक, वल्लरी, फल-फूल, शक्करपारा, लड्डू, पंखे आदि भी चित्रित करते है। एक फूल, चार फूल, आठ फूल और सौलह फूल से भी चौक पूरती है।

होली पर डफ, पुष्प, तलवार, थाली, पाट, चट्टाई, पंखा अर त्रिचक्रक आदि विशेष रूप से उकेरे जाते है। शादी-ब्याह के अवसर पर ढ़ोलकी, रथ, पाट, कलश आदि बनाती है।

अल्पना चित्रित करने वाली स्त्रियों को नारीयल दिये जाते है। यह रंगोली एक ओर तो मौसम का संकेत देते है तो दूसरी ओर रीत भांत को उजागर करती है। इन पर क्षैवगत एवं जातिगत प्रभाव भी रहता है।

स्वस्तिक का महत्त्व :

सातियौ, साख्यौ और स्वस्तिक सभी एक के ही नाम है। यह सबसे प्राचीन और विश्वविख्यत प्रतीक है। ऋग्वेद में इसे सूर्य का प्रतीक माना है। यह सुख-समृद्धि, आनन्द-मंगल और शुभ कल्याण का संकेत है। इसकी चार भुजाएँ चारो दिशाओं, चार युग, चार वर्ण और चार आश्रम के रूप माने जाते है। हिन्दू धर्म के अतिरिक्त जैन, बौद्ध और सिख धर्म आदि सभी इसे मंगलमय प्रतीक मानते है। यूरोप के इतिहास में इसका प्रमाण मिलता है। 'साइप्रेस की खुदाई' में भी 'स्वस्तिक' निकले है। इससे सिद्ध होता है कि यह प्राचीन सभ्यता-संस्कृति का प्रतिक है। नया 'परीण्डा', नया चूल्हा नये बही-चौपड़ों पर सर्व प्रथम 'कंकू' से स्वस्तिक चित्रित करते है।

बहिन बेटियाँ गृह लक्ष्मी का स्वरूप होता है इसलिये शादी के पश्चात ससुराल जाते समय मुख्य प्रवेश द्वार की देहली पर स्वस्तिक चिन्ह अंकित करती है, कन्या घर की लक्ष्मी है अत: उनके ससुराल जाने के पश्चात भी घर में लक्ष्मी का निवास रहे। पर्युषण में जैन श्रविकाएँ मंदिर की दहलीज पर स्वस्तिक अंकित करती है।

पर्वतवासी जंत्र-मंत्र-तंत्र में इसका बहुत प्रयोग करते है। पाठ-पूजा में भी इसे काम में लेते है। लोकगीतों में भी गाते है-

लीप्यौ-चुप्यौ आंगणौ
च्यारूं खूट चौगान
मांड भरवण मांडणा
निरखै चतुर सुजाण

बनावट :

अल्पना चित्र मात्र लकीरों का खेल नहीं है। लकीरों को चीरना, भरना, कसावट और खिचाई एक बुनगट है जैसे कि खाट का 'बाण' बुनते है। अल्टामाइरा और फ्रांस के लस्का में जो अल्पना चित्र मिले है, वे 'पाषाण युग' के है (५० हजार वर्ष पूर्व के) इससे इस भारतीय लोक कला की प्राचीनता आंकी जा सकती है।

गरासिया स्वस्तिक के साथ पक्षी, तोता, मोर, कौआ, वृक्ष, वल्लरी, वृक्ष के पत्ते तथा बंदर आदि के चित्र भी बनाते है। घर में पशु मर जाता है तो शव ले जाने के पश्चात पीछे घर के बाहर स्वस्तिक अंकित करते है। एक लोक गीत में तिनको की टोकरी बना कर उसमें पीली मिट्टी और गोबर ला कर आंगन का श्रृंगार करने का वर्णन है -

'नन्हे नन्हे तिनके चुन-चुन कर टोकरी बनाई
सासु बहु मिल कर पीली मिट्टी लाई।'
"हरे हरे गोबर से आंगन लीपूगी और गजमोतियों से चौक पूर्ण करूंगी।"



लोक कला : माँडला

'माँडला' आदिवासीयाँ री औ कदैई नीं उतरण वाळौ पक्कौ गे'णौ, जकौ इण लुगायां नै सदा सवागण राखै। गे'णां-गाठां तो मिरतु व्हिया पछै उतार लेवै पण डील माथै खोदयौड़ा (कोरीयौड़ा) गै'णां तो आरोगी मांय भेळा बळै, उणांनै कोई वडा नीं कर हकै। इणनै अै लोग फुटरापा री सौलाणी अर सुखदायी मानै। गरासियां इज नीं दुनिया रा सगळा आदिवासी इणरौ घणौ महातम सिकारीयौ। गरासियां मांय आपरी नांव, गोटा-गोटी रौ नांव, देवी-देवतावां रा रेखा चितरांम खोदवा रौ रीवाज चालै। जापान में नांव, जादू रा उणियारा अर सैलाण गुदवावै। आथूणां मुलकां मांय ईसा नै सूळी माथै चढवण रौ दरसाव आंकै। रेड इंडियन डर लागै जिसा उणियारा गुदावै। बठै गुदवायौड़ा लोगां ने मारणा वरजित है, पाप है अर बिना गोदाया मरे तो नरक मांय जावै, अैड़ौ लोक विस्वास मानै। अंडमान रा मूळ वासीन्दा गुदवावण रौ उछब करै भारी अर नाचै, गावै। असम मांय नागा जति में गुदवाया बिना ब्याव इज कोनी व्है, सगपण इज नीं व्है। मिनिओजे, सिभोग, कारको. टांगो, पॉसी, पांगी अर माओरी आद जात्यां में तो छोरा-छोरी नै जोगमारदी गोदावै। गोदाया बिना कोई उणां रै घरै पांणी तक नीं पीवै। हिन्दियां मांय ई आ 'प्रथा' चालै। आज कडोपी व्है तो 'ब्युटी पार्लर' जायने फुटरापा रा जतन करै पण 'अरूणाचल' रा आदिवासी छोरयां रूपाळी व्है तो उणांनै कडोपी बणावै। उणांरौ अंधविस्वास है कै रूप री डळी डावड़ियां जळमणी महापाप है। इण वास्तै दस बा'रा बरस री ऊमर में इज सगळा डील अर मुंडा नै लीला रंग सूं गुदवाय दैवै। इण मौके न्यात-गंगा नै भेळी करनै उछब मनावै भारी। गावै, नाचै अर गोट करै नामी। छोरी नै फूलमाळा अर नवा गाबा पैरायनै मंच माथै ऊभी करै। पछै तांबा रा दो सिक्का अगन मांयै लाल करने दोन्यूं गालडा अर नाक पर ऊंना ऊंना चेपे। छोरी कूकती-रोवती रैवै अर सगळा दूजा गावता, नाचता, बजावता रैवे। अरब, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया अर अफ्रीका रा आदिवासियां में आ लोककला घणी लोकप्रिय है।

बस्तर रा आदिवासीयां री तांबा वरणी देह अर भरयौड़ी, उपड़योडी काठी छाती पर गोदणा घणा फूटेरा फब्बै। अठा री लुगायां चोळी-कांचळी कोनी पेरे, गोदणा सूं गोदनै चोळी-काचळी बणावै। फगत कमर मांय धोती पळेट्यौडी राखै, बाकी सगळौ डील उघाड़ौ राखै। मूंहडौ, हाथ-पग, कमर, पिंडल्यां, छाती अर सगळौ सरीर गोदणा मूं ढक्यौ राखै।

महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश अर उत्तर प्रदेश मांयै लोग गोदणा रा घणा -सौकीन।

इतियास :

अेक लोक कथा में दाखली लाधै कै विस्णु भगवान बारै जावता तो लिछमीजी घबराय जावती। आ वात जद भगवान नै बताई तो ले आपरौ 'आयुध' लिछमीजी रै हाथ माथै दबायनै सैलाणी मांड दीवी। औ सैलाण गोदणा रै ज्यूं मांड्यौ। बस अठासूं इज गोदणा रौ जळम मानीजै।

'मध्यकाल' मांय गोदणो सिणगार रै संस्कार री निसाणी मानीजती। 'रीतकाल' मांय इणरौ नांमी लेखो लाधै। कविसर पदमाकर राधा रै भुजावां पर 'ब्रजचन्द्र' गालां पर 'कुंज बिहारी' अर गळा मांय 'गिरधारी' नांव गोदवा नै ओझी नै बुलावा रौ जिक्र मिळै -

बाहन में ब्रजचंद्ररू
गोल-कपोल लिख कुंज बिहारी
गले में तू लिख गिरधारी
व्यौ पदमाकर या ही हिये
या विध से नख सिख लो
लिख नाम अन्तन्त भंवे भव प्यारी
सावरे के रंग गोद दे गात
अरी गुदानन की गोदानहारी

इणी भांत रा भाव गरासिया रा प्रेमगीतां में ई गूंथीज्या हा। 'मॉडला' नै प्रेम री सैलाणी मानै। पैली रात उत्तर प्रदेश रा आदिवासी वर, नवी बींनणी नै पूछै -

गोरी कहिया गोदड़लहु गोदना
बंहियां होदड़ली, छतिया गोदड़ली

अेक आदिवासी बायली आपरै गोटा नै कैवै के गोदणा गोदण वाळौ आयौ हो, थांरो नांव बांयौ माथै खुदवाय दीयौ है, अहम्मै यूं म्हारा सूं कोनी छूट सकै -

इसी ओझिन गोदली बाँहां
इज्जत गेली, मरजाद गेली, छांडी दे कहाँ ?

'उत्तर प्रदेश' री अेक दाखली -

अगर तुम चूडियाँ खरीदोगी
थोडे दिनो में टूट जायेगी
पर जो शरीर गुदवाओगी
तो ये जिंदगी भर साथ देगी

गोदना मांय घड़ी भर री पीड़ा पण हर हमेस गोटो-गोटी-प्रेम रा 'आकर्षण' मांय बंध्यां रैवै। अेक ओझो आदिवासी बायली नै कैवे -

'अे गोरी ! थारे गालो माथै कामदेव का पांचू बाण मांडू। छाती माथै भंवरो मांडू। पति जोयनै राजी व्हैला अर थनै घणौ सुख देसी पण वीं रंगड़े री रातड़ली मनै ई चितारजै।'

गोदवां री विधि :

गोदड़ री विधि अलेखू, जकौ आदू जुगां सूं चालती आई अर नवी-नवी भेळी भिळती गी -

१. धरपैला जूना जमाना मांय चामड़ी में तीणां करने, रंग ठेट मांय पूगायनै मांडणां ज्यूं मांडनै खणता जिणनै मॉडला (गोदणा) कैवता।
२. तीखा धज कांटां सूं, अणीदार हाडकी सूं, तार सूं, सूई कै अणीदार कै धारदार चक्कू सूं खोदने मांडता (खोदता), ज्यूं मैंदी झीणी सूं झीणी मांडै ज्यूंई मॉडला बारीक सूं बारीक मांडता।
३. टीचां देयनै राख, कोलचा रौ पावडर सरसू तेल में घोळनै कै काजळ सूं भरता।
४. गुळी अर हीगळू नै लुगाई रा थान मांय मथनै सूई सूं कै मसीन सूं टींच नै मॉडला गोदता।
५. जूना रीवाज मुजब चितरांम री बणगट धातु कै भाटारा बटका माथै उकेरता अर वींनै हथौड़ा सूं चामड़ी माथै ठोक नै मांडता। इणसूं घणी पीड़ व्हैती।
६. 'मॉडला' मांडण मांय पीडा नीं व्है इण वास्तै पैली हाप री खाल (काचळी)री भस्मी (राख) में तेल रळा'र गाढो लेप चांबड़ी पर करता। पछै गुळी कै हिंगळू सूं गोदता। लाल मॉडला सारू हिंगळू अर लीला सारू गुळी काम लैवता।
७. 'मॉडला' गुदवावण रै पैली आकड़ौ, धतूरौ, रजगौ कै वालौर रै पानां रौ रस ई लगावता पछै गुदावता।
८. गोदणा (मॉडला) गूदण रौ कांम ओझा जाति रा लोग करै। पिंडवाड़ा (आबू) रै आगती-पागती गाँवां मांय आज काल गरासिया खुद गोदण रौ काम करवा लागा।
९. लिलाड़ अर हिचकी रै टीकी ब्याव व्हिया पछै गुदवाया करै।

मॉडाला रा केई नांव :

गरासिया मुंडा माथै, लिलाड़ माथै, नाक, गाल, हिचकी, अर होठ माथै गोदवणनै 'मॉडललीया' अर बाकी सरीर माथै गोदावण नै अै लोग 'मॉडला' कैवे। इणसु अै लोग पोता नै रूपाळा मानै। 'मॉडला'ने गोदणौ, गुदवावणौ, खणणौ, खणावणौ, गोडणौ ई कैवै।

मॉडला रा चितरांम :

मैथिली मांय विद्यापति कविसर गोटा (प्रेमी) नै मोवण वास्तै गोदणा री मैं'मा गाई है। 'मॉडला' नै गरासिया मंगलिक मानै। जिण लुगाई बैर रै जितरा बता 'मॉडला' व्है उत्ती ही भागवंती मानीजै। गोदणा मांय रामजी रा चरण, मिंदर, सूरज, त्रिसूल, किरत्या, चौफूला, ॐ, लंगूर, हड़मान, सिंघ, मोर, हाथी, घोड़ो, ऊंट, रूंख, बेल, पत्तो, गोटा अर बायली रौ नांव आद गुदावै। लारला दिनां जग चावा 'चित्रकार' मकबूल फिदा हुसैन नागी लुगायां रै डील माथै चीतरो, हाथी, घोड़ो आद मांड्या। लोक कला रा चितेरा आलमेलकर, विजय ठाकरे आद रै चितरांम मांय गोदणा री 'आकृतियां' घणी चावी। गरासिया खास करनै मोरीयौ, सूमटौ, बिच्छुड़ौ, महादेव, हड़मान, साखियौ, गोटो गोटी रां नांव, टिकियां अर भोपां रा कै जंतर-मंतर रा सैलाण गोदावै।

महातम :

गरासियां री लोक विस्वास है कै भगवान रा चितरांम गोदावण सूं भूत-प्रेत अर दुस्टात्मा नेड़ी नीं आवै। खणावण (गोदावण) सूं जिन्दगाणी मांय सुख-स्यांति, हंसी खुसी, आणंद अर प्रेम रौ वासो व्है। गरासियां लोग हाथां पगां पर गुदणा गुदवायनै आपनै ताकतवर महसूस करै। लुगायां पिंडियां पर गूदणौ गुदवायने भरोसो राखै कै पगां मांय सगति संचरै। हड़मांनजी रौ चितरांम बलसाळी बणावै। बिच्छु डीळमांय जैरवा नीं चढवा देवै। राम नै 'आदर्श गृहस्थी रौ प्रतीक' मानै। नागराज निरभै करै। जिनावर, पंखेरू अर रूंखडां रा गूंदणा 'वासुदेव कुटुम्बकम्' री भावना जगावै। इणांनै कोई चोर चुराय नीं हकै, नीं औ दागीणौ टूटै भागे कै गम हकै अर नीं डीळ सूं आगौ व्है, कोई नी उतार सकै। मरिया पछै ई साथै बळै अर परलोक तांई साथै जावै। अैड़ी इणांरी धारणा।

लोककला : गोदना

'गोदना' आदिवासियों का कभी न उतरने वाला स्थायी गहना है। स्त्रियों को सदैव सुहागिन बनाये रखता है। गहने तो मृत्यु उपरांत उतार लेते है परन्तु यह शरीर पर चित्रित गहना शमशान में साथ जलता है, उसे कोई उतार ही नहीं सकता। इसे यह लोग सौन्दर्य की निशानी और सुखदायी मानते है। गरासिये ही नहीं संसार के समस्त आदिवासियों ने इसका महत्व स्वीकारा है। गरासियों में अपना नाम, प्रेमी-प्रेमिका का नाम, देवी-देवताओं के रेखाचित्र उकेरने की प्रथा प्रचलित है। जापान में नाम, जादू के चहरे और निशान गुदवाते है। पश्चिमी देशों में ईसा को सूली पर चढ़ाने का दृश्य अंकित करते है। रेड

इंडियन डरावने चहरे गुदवाते है। वहाँ गुदवाये हुये लोगो को मारना वर्जित है, पाप है और बिना गुदवाये मरते है तो नरक में जाते है, ऐसा लोक विस्वास प्रचलित है। अंडमान के मूल निवासी गुदवाने का उत्सव आयोजित करते है - गाते है नाचते है। असम में नागा जाति मे बिना गुदवाये शादी ही नहीं होती, संबंध ही नहीं होता। मिनिओजे, सिमोग, कारदो, टांगौ, पॉसी, पांगी और माओरी आदि जातियां में तो युवक युवतियों को जबरन गुदवाते है। गोदने के बिना कोई इनके घर पानी तक नहीं पीते। हिप्पियों में भी यह प्रशा प्रचलित है। आज कोई सुंदर नही होती है तो 'ब्युटीपार्लर' जाकर सुंदर बनने का प्रयास करती है। परन्तु अरुणाचलकी आदिवासी लड़कियाँ यदि सुंदर होती है तो उसकी सुंदरता नष्ट करते है। उनका अंधविश्वास है कि सुंदरियाँ का जन्म महापाप है। इसलिये दस बारह वर्ष की अवस्था में ही समस्त शरीर और मुख पर हरे रंग से गुदवा देते है। इस अवसर पर जाति सम्मेलन करके उत्सव मनाते है। उत्सव में सभी गाते, नाचते और मिष्टान बनाते है। लड़की को फूलमाला और नवीन वस्त्र धराण करवा कर मच पर खडी करते है, फिर दो ताम्र सिक्के अग्नि में गर्म करके दोनो कपोलो और नाक पर लगा कर जलाते है। लड़की रोती-चिल्लाती रहती है और सभी लोग गाते, नाचते, बजाते रहते है। अरब, न्यूजीलैण्ड. ओस्ट्रेलिया और आफ्रिका के आदिवासीयों मे यह लोक कला अधिक लोकप्रिय एवं प्रचलित है।

बस्तर के आदिवासियों की ताम्रवर्णी देह और गदराई उठी छतियां पर गोदने बहुत बढ़िया जचते है। यहाँ की औरतें चोली-कंचुकी या ब्लाउज नहीं पहनती. गोदने से गुदवा कर चोली कंचुकी बनवाती है ! केवल मात्र कटिप्रदेशमें धोती लपेटती है, समस्त शरीर खुला रखती है। मुँह, हाथ, पैर, कमर, पिंडिये, छाती आदि समस्त शरीर 'गोदने' से ढका हुआ रखती है। उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और उत्तर महाराष्ट्र में आदिवासी गोदने के बडे शौकीन होते है।

इतिहास :

एक लोक कथा में प्रसंग मिलता है कि बिष्णु भगवान बाहर जाते थे तो लक्ष्मी घबराती थी। यह बात जब भगवान को मालुम हुई तो उन्होने अपना 'आयुध' लक्ष्मी के हाथ पर रख कर दबा कर एक निशान बना दिया। यह निशान गोदने की भांति बन गया। यहीं से गोदना का जन्म माना जाता है। मध्यकाल में गोदना श्रृंगार के संस्कार की निसानी मानी जाती थी। रीतिकालमें इसका अच्छा विवरण मिलता है। कविश्वर पदमाकरने राधा की बाहों में 'ब्रजचंद्र' कपोलो पर 'कुंज बिहारी' और गले मे गिरधारी नाम गोदने के लिये ओझी को बुलने की चर्चा मिलती है -

बाहन में ब्रजचंद्र
गोल-कपोल लिख कुंज बिहारी
गले में लिख गिरधारी
त्यौं पदमाकर वा हो हिये
या बिध से नख सिख लो
लिख नाम अनन्त भवै भव प्यारी
सावरे के रंग गोद दे गात
अरी गुदनान की गोदनहारी

इसी तरह के भाव गरासियों के प्रेमगीतो में भी गूंथे हुए है। गोदना को यह प्रेम की निशानी मानते है। प्रथम रात्रि में एक उत्तर प्रदेश का आदिवासी पति पूछता है -

गोरी कहिया गोदडलहु गोदना
बंहिया गोदड़ली छतिया गोदड़ली

इसी प्रकार एक अन्य आदिवासी प्रेमिका अपने प्रेमी से कहते है कि गोदने वाला आया था। तुम्हारा नाम बाहों पर खुदवा दिया है, अब तुम मुझसे छूट कर दूर नहीं जा सकते।

इसी ओझिन ओझिन गोदली बांहाँ
इज्जत गेली, मारजाद गेली, छांडी के कहाँ ?

उत्तर प्रदेश का भी इसी प्रकार का उदाहरण प्रस्तुत है -

अगर तुम चूडियाँ खरीदोगी
थोड़े दिनों में टूट जायेगी
पर जो शरीर पर गुदवाओगी
तो ये जिंदगी भर साथ देगी।

गोदना में पल भर की पीड़ा पर सदैव प्रेमी-प्रेयसी उस आकर्षण में बंधे रहेगे। एक ओझा आदिवासी प्रेमीका से कहता है -

'ओ गोरी ! तेरे कपोलो पर कामदेव के पांचों बाण अंकित करूं, छाती पर भ्रमर अंकित करू। पति देखकर प्रसन्न होगा और अत्यन्त सुख देगा पर उस रंग भरी रात को मुझे भी याद करना।

गोदने की विधि :

गोदने की अनेक विधियाँ आदि युग से चलती आई और नई-नई फिर जुड़ती गई -

१. सर्व प्रथम प्राचीन युगमें त्वचा मे छेद करके रंग को अंदर तक पहुँचा कर अल्पना चित्रों की भांति उकेरते थे, इसे गोदना कहते।

२. नुकीले तीखे कांटे से, नुकीली हड्डी से, तार से, सूंई से अथवा धारदार चाकू से खोद कर उकेरते थे जैसे मेंहदी सूक्ष्म से सूक्ष्म बनाते है वैसे ही मॉडले भी बारीक से बारीक बनाते थे।

३. 'टौंचा' दे कर राख, कोयले का पाउडर सरसो के तेल में घोलकर अथवा काजल से भरते थे।

४. नील अथवा हिंगुल को स्त्री के दूध में मथ कर सूई से अथवा मशीन से 'टौंच' कर मॉडला बनाते थे।

५. प्राचीन प्रथानुसार चित्र की बनावट धातु अथवा पाषाण खंड पर उकेर कर इसे हथौड़े से त्वचा पर चोटिल कर उकेरते थे, इससे बहुत दर्द होता था।

६. 'मॉडला'बनाते समय दर्द न हो इसके लिये पहले सर्प की खाल (कंचुकी) की भस्म में तेल मिला कर गाढ़ा लेप त्वचा पर करके फिर नील या हिगुल से गोदते थे। लाल 'मॉडलो' के लिये हिंगुल और नीले के लिये नील काममें लेते है।

७. 'मॉडला' गुदवाने से पूर्व आक, धतूर, रिजगा अथवा वालोर के पत्तो का रस भी लगाते थे फिर गुदवाते थे।

८. गोदना गुदने का काम ओझा जाति के लोग करते है। पिंडवाड़ा (आबू) के आस पास गाँवो में आज कल गरासिये खुद गोदने का काम करने लगे है।

९. स्त्रियां ललाट और हिचकी पर बिंदियां शादी होने के पश्चात गुदवाती है।

'मॉडला' के अनेक नाम :

गरासिया चहरे पर, भाल, नाक, गाल, हिचकी और होष्ट पर गुदवाने को 'मॉडललियाँ' अर शेष अन्य भाग पर गोदने को यह लोग 'मॉडला' कहते है। इससे यह लोग अपने आप को सुंदर मानते है। 'मॉडला' को गोदना, गुदवाना, खोदना, खुदवाना, गूदना भी कहते है।

गोदना (मॉडला) के चित्र :

मैथिली में विद्यापति कविवर ने प्रेमी को मोहित करने के लिये गोदने की महिमा का बखान किया है। गोदने को गरासिया मंगलिक मानते है। जिस औरत के जितने अधिक 'गोदना' होते है इतनी ही वह भाग्यशाली मानी जाती है। गोदने में राम के चरण, मंदिर, सूर्य, त्रिशूल, किरत्यां, चार फूल, ॐ, बंदर, हनुमान, शेर, मोर, हाथी, घोड़ा, ऊंट, वृक्ष वल्लरी, पत्ता, प्रेमी और प्रेमीका का नाम आदि गुदवाती है। पिछले दिनो विश्वविख्यात चित्रकार मकबूल फिदा हुसैन नग्न स्त्रियों के शरीर पर चित्ता, हाथी, घोड़ा, आदि बनाये। लोक कला के चितरे अलमेलकर, विजय ठाकरे आदि के चित्रों में गोदने की आकृतियाँ अधिक चर्चित है। गरासिये विशेष करके मोर, तोता, बिच्छु, शिव, हनुमान, स्वस्तिक, प्रेमी-प्रेमीका का नाम और 'भोपां' का अथवा जंत्र-मंत्र की निशानी गुदवाते है।

महातम :

गरासियों का लोक विश्वास है कि भगवान के चित्र गुदावने से भूत-प्रेत और दुष्टात्मा नजदीक नहीं फटकती। गुदवाने से जीवन में सुख-शांति, हंसी-खुशी तथा आनन्द और प्रेम का वातावरण बनता है। गरासिये लोग हाथ पावों पर गोदने गुदवाकर ताकतवर अनुभव करते है। औरतें पिंडलियों पर गुदवा कर विश्वास करते है कि पावों में शक्ति प्राप्त होती है। हनुनान का चित्र शक्तिशाळी बनाता है। बिच्छु शरीर में विष नहीं चढने देता। रामको आदर्श गृहस्थी का प्रतीक मानते है। सर्प का चित्र निर्भय बनाता है। जानवर, पक्षी और वृक्षो के चित्र गोदने से 'वसुधैव कुटुम्बकम'की भावना जगाती है। इनको चोर चुरा नहीं सकता, न यह गहना टूटता है, न खो सकता है और न शरीर से क्षणभर भी दूर होता और न कोई उसे उतार सकता। मृत्यु उपरांत भी साथ चलता है और परलोक तक साथ जाता है, ऐसा इनका विश्वास है।









हीमेन

दुनिया री घणीखरी जात्यां हीमेन में घणौ भरोसो राखै। आदिवासी गरासियां रै तो रोज री जिन्दगाणी रौ अंग है। 'हीमेन' नै अै लोग भावी सुभ-असुभ रौ संकेत माने पण औ पूरो खरो उतरणौ जरूरी कोनी, अंदाज व्है। इणसु अै सावधान व्है जावै अर 'अनिष्ट' नै मेटण खातर जतन करै। जात्रावां मांय जाती वाळ ई 'हीमेन' रौ पूरो ध्यान राखै।

'हीमेन' रौ इतियास घणौ लांबो। कुदरत रा अंग है - पंख-पंखेरू, कीड़ा-मकोड़ा, जीव-जिनावर इणारै अर मानवी रै अंगां रै फरूकण सूं 'हीमेन' देखण री रीत घणी जूनी। इणरौ स्रीगणेस पंखेरूवां सूं इज व्हियौ। 'सुगन' सबद ई पंखेरूवां सूं गन्नौ राखै, इणरौ अरथ पण पंखेरू सूं है। इणारै करतब, हावभाव, चेष्टा, खेल अर केई गतिविधियां सूं भावी भूंडा-भला वखत रौ अंदाज लगाइजै। 'कारण-करण' नै ई सुगन (हीमेन) नांव सूं पिछाणै। सुगन रौ इतियास ई इतरौ ई जूनो जितरौ मानवी रौ डर-भौ, संका, बैम (अग्यान) जिसी मूळ प्रवृत्तियां रौ है।

वनवासी अर परबतवासी व्हैवण सूं इयांरो सगळो जीवण कुदरत री गोदयां में पळै। कुदरत रै वास्तै बिरखा मूळ है, इण सूं ई वा फळै फूळै। इण वास्तै गरासिया बिरखा वास्तै अलेखू हीमन (सुगन) लैवै। कदेई वे पवन रौ रूख देखनै तो केदेई पंखेरूवां रै पांण हीमन देखै। गरासिया सुगन सास्तर (विग्यान) रा पक्का पारखू नै खांमची।

हीमेन माथै गरासियां रौ घणौ लोक विस्वास। हीमेन आछा अर भूंडा दोन्यूं तरै रा मानीजै। जातरा में व्हिर व्हैतीं वाळ सुभ-असुभ हीमेन रौ ध्यान राखै। हीमेन इणांरी सामाजिक रीत-नीत अर 'सांस्कृतिक धरोहर' है। कीं घणा महताऊ 'हीमेन' नीचे मुजब -

१. जात्रा में व्हिर व्हैवता रांडोल्ली, बांझणी, हीजड़ौ, वांजियौ साम्ही धकै कै हाप मारग काटै तो असुभ हीमेन मानै अर गर'जे दोजीयांती बैर कै कंवारी कन्या कै टाबर गोदया लिया लुगाई साम्ही धकै तो सुभ हीमेन गिणै।
२. 'साल्का' (गधा) डावी भुजा कांनी भूकै तो चोखौ अर जीमणी कानी खोटो।
३. जातरा मांय व्हीर व्हैता दांण पांणी रौ भरीयौ घड़ौ साम्ही धकै तो सिरै समझै अर खाली घड़ौ व्है तो हीमेन खोटा मानै।
४. 'डुस्की' पंछी डावां हाथ कांनी बोले कै उड़नै डावौ जावै तो चौखौ मानै जीमणी कांनी बोलै कै उडे तो खोटौ मानै।

५. भैरव (खोखो) चिड़कली री जात्रा में व्हीर व्हेता दांण जीमणी बाजू बोलणौ सुभ अर डांवी कांनी असुम गिणै।
६. 'सिवरी'पंछी जीमणी कांनी दीसै तो आछौ अर डांवी कांनी खराब मानै।
७. चोर गांम में बड़ै अर बळद दड़ूकै तो चोर खोटा हीमन माननै चोरी नीं करै अर गाय रंभावै तो हीमन सिरै मानै अर चोरी करै।
८. 'खाती' पंछी जात्रा में जावतां जीमणौ निजरै आवै तो सुभ अर डावौ दीसै तो असुभ समझै।
९. जे कोई काग (डाहो) किण ई मकान माथै लगोलग कॉव-कॉव करै तो औ काळ पड़ण री अर साख सूखण री समचौ समझै।
१०. रात रा 'बेवलियन' पंछी जीमणौ जातो थको बोलै तो चोखो अर साम्ही बोले तो शकुन खोटा गिणै।
११. मिनख री जीमणा हाथ री नाड़ पुणचा कनै बेतुकी चालै तो रगड़ौ-झगड़ौ व्हेवण री अंदेसो रैवै।
१२. मद लैवणनै नीकलै अर जे मूतर री हाजत व्है तो मद नी मिळै।
१३. गर'जे कोई लॉस दीसै तो हीमन फोरा मानै।
१४. माता री पैलपोत री रोटी भाग जावै तो हीमन पलाऊ गिणै।
१५. सिकार नै कै जातरा में जावतां दांण बकरी कै कुतरौ कांनड़ा फड़फडावै तो अपसुगन मानै।
१६. चोरी व्हिया घराधणी उणरी जांच में व्हीर व्है अर तीर हाथ सूं छूटनै जमी माथै पड़ै तो चोर कोनी अपड़ीजै।
१७. मिनख री जीमणी और लुगाई री डावी आंख फड़कणी आछी अर इण सूं ऊंधी भूंडी मानै।
१८. दूध ढळियोड़ौ असुभ मानै पण उफड़ियोड़ौ सुभ मानै।
१९. कोई न्याव निवेड़ा वास्तै जावै तो दूध पीने जावै अर मानै कै दूध-पांणी रा निवेड़ा करने आवेला।
२०. जातरा में जावती वाळ तातो दूध नीं पीवै, घणखरा दही खायनै जावै।
२१. हथाळी मांय खाज चालै तो कठासूं ई पीसा हाथ में आवै अैड़ौ मानै।
२२. जे पगतळी में खाज चालै तो कठैई गांवतरौ आयौ जाणै।
२३. हिचकी चालै तो अै मानै कै कोई चितारे है। कुण कुण व्है सके है याद करणीया, वीयांरा नांव लैवे तो हिचकी रूक जावै बतावै।

२४. मेळां मांय जावतां फेंटो (साफो) किण ई रूंखड़ा में अटक जावै, लटक जावै तो कोई दोस्त सूं कै असींदा मिनख सूं लड़ाई व्हैवण री व्हैम रैवे।

२५. कागला-कागली नै 'मैथुन रत' देखणा बुरो माने, आवण वाळा कोई खतरी मानै कै मौत री अंदेसो मानै। इणरै बचाव खातर अलेखू टाटक-टोटक करै।

२६. खाली पड़या ढोल सूं धोई-धोई-धोई रो आवाज अपणै आप नीकळै या मादल से 'कुट फुट' की ध्वनि निकले तो इणनै अपसुगन मानै। कोई मोटी बैमारी फैला री अंदेसो रैवै।

२७. सगाई रै मौके पावणां रै मुरगी परूसणौ असुभ मानै। इण इज भांत मालपूआं ई नीं परूसीजै।

२८. 'हालू' पंछी जे रातरा कुलरावै तो वींनै काळ रा हीमन मानै।

२९. रात रा सियाळ्यौ गांम रै गोरवै कूकै कै गांम में बड़ै कै मसाण साम्ही जावै अर इण इज भांत कुत्ता पण भुसै तो 'महमारी' फैलवा री डर व्है।

३०. 'काळचिड़ी' झूपड़ी अर डागळां बिचै ऊगणाऊ दिस मांय माळो घालै तो बिरखा री आस बंधै।

३१. आखातीज नै गरासियां 'अैअरौ' (शिकार)जावै। जे अैअरौ मिळ जावै तो उणरै वास्तै वो बरस चोखौ बीतै।

३२. डूसकी नांव री चिड़कली रा अै लोग हीमन लेवै। आ चांद री चांदणी में गावै तो वीं बरस बिरखा गै'री व्है, जमानौ चोखो व्है।

३३. 'सोन चिडी' जे निवोर रै ढ़ावै कै तळाव री पाळ माथै धूड में सनिवार नै लूटे तो सात दिनां मांय बिरखा व्है। बुधवार नै लुटै तो तीन दिनां मांय इज बिरखा व्हैवण रा हीमन मानै।

३४. गर'जे वैसाख जेठ मी'ना मांय गै'री राग सूं मोरीयौ बोले तो बिरखा रै आवण री उम्मीद बंधै। ई बखत पवन रै खास रूख सूं मोरीया रै डील मांय कंपकपी छूटै अर वीं असर सूं उणरी बोली मांय हरख अर उमाव फूटै। मोरीया नै गरासियां 'मेघा री भांणेज' मानै अर घणा हेज सूं उणरा लाड कोड करै। गरासिया सूरीया वायरा सूं ई भाप लेवै कै बिरखा आवण वाळी है।

३५. टीटोड़ी कातीगणियौ तारो उग्या पै'ली ऊगणाऊ सूं धराऊ दिसा में उडती थकी बोलती जावै कै पांणी में न्हावै तो पांणी बरसै।

३६. टीटोड़ी रा इंण्डां रा तीखा मुण्डां आभा साम्ही व्है तो भयंकर काळ पड़ै, आडा व्है तो जमानो करवरी व्है, ईण्डां रा मुण्डा जमी मांय व्है तो चोखी बिरखा रा सुगन मानै।

३७. इणी भांत काछबिया रै ईण्डा रा हीमन ई देखे।

३८. वैसाख मांयै गुतेरण्यां माळौ गूंथै के जेठ मी'ना मांय तीतर बोलतो थको जावै तो चोखी बिरखा रा हीमन समझै।

३९. सूमटियौ रात रा बोले तो जमानौ सौ'लै आना मानै।

४०. पोठा मांय काळा के राता मुण्डा रा मोटा-मोटा कीड़ा पैदा व्है, कीड़ियां आपरा ईण्डा जमी सूं बारै काढ़नै भेळा करै, ले मुंडा में नै दौड़ै अठी उठी, तो दो च्यारेक दिनां मांय बिरखा व्है।

४१. मकड़ी कोठा-कोठियां (माटीरी) मांय घणा जाळा घाला ढूकै अर जि बरस मांखी-माछर, किसारी, उदाई कम व्है तो आछी बिरखा व्है।

४२. घेटा-टेटा वारी-वारी छींका करै तो गाय भैस रै मुंडा सूं झाग आवै कै लूंकी रूंखां री जड़ा मांय खब्बी खोदे तो बरसाळी नामी जमै।

४३. पंख-पंखेरूवां रै कामां धामा देखनै कुदरत री विपदा रौ अंदाज लगावै।

४४. गरासिया मांनै कै चांद बिरखा दैवणियो है। चांद मांय काळा छाबकां अथाह जळ रा आइटांण है। चांद रै ओळै-दौळै पवन कुण्डियां है, जकौ पवन रै कमी-बेसी दबाव री जाणकारी दैवे। जे हवा ऊगणाऊं सूं आथूणी चालै तो बरसात आवण री गुंजाइस मानै।

४५. बादली रै भांत-भांत रै रंगा सूं गरासिया सुगन लेवै। आभौ साफ दीसै तो ऊगणाउं दिस में मालमगरा कांनी बिरखा-व्हैवण री संदेसौ देवै। आबू रै परबत पर अधरदेवी पर तीतर पांखी बादळी छाई व्है अर ललाई लीया दीसै तो चौबीस घंटां मांय बिरखा अवस आवै। जे धणी ऊमस व्है, तावड़ा सूं आभौ आसमानी व्है अर पीळा बादळ व्है तो दो वीसी नै च्यार कलाक मांय बरसाळौ मंडै। दिन में पसीनौ बोळौ व्है, आळस अर मीट रेवै तो तीन-च्यारेक दिनां मांय बिरखा आवा री उम्मीद बंधै। चांद रौ 'पवन कुण्ड' घणौ आगो दीसै, हवा जोर चालै तो आंधी-बावळ री अंदेसौ मानै।

शकुन

विश्व की अनेको जातियां शकुन में विश्वास रखती है। गरासियों के भी रोजमर्रा के जीवन का यह एक अंग है। शकुन को यह लोग भविष्य का शुभ-अशुभ का 'संकेत' मानते है। परन्तु इनका पूर्णतः सत्य होना अनिवार्य नही होता, केवल एक संभावना होती है। इससे वे लोग सावधान हो जाते है और 'अनिष्ट' को नष्ट करने का प्रयत्न करते है। जात्राओं में प्रस्थान करते समय हीमेन का बहुत ख्याल करते है।

'हीमेन' का इतिहास बहुत लम्बा है। पक्षी, कीडें-मकोडे, जीव-जन्तु सब प्रकृति के अंग है। इनके और मनुष्य के अंगो के फकडने से शकुन देखने का तरीका अति प्राचीन है। इसका श्री गणेश पक्षियों से ही हुआ, शकुन का अर्थ भी पक्षियों से ही है। पक्षियों के करतब, हावभाव, चेष्टा, क्रीडा अर अनेक गतिविधियां से भविष्य के भले-बुरे समय का अंदाज लगाते है। 'कारण-करण' ई शकुन के मूळ में होते है। शकुन का इतिहास भी उतना ही प्राचीन है जितना भय एवं आशंका आदि मानव की मूल प्रवृत्ति का है।

वनवासी और पर्वतवासी होने से इनका समस्त जीवन प्रकृति की गोद में पलता है। प्रकृति के लिये वर्षा होना अनिवार्य है, वर्षा से ही प्रकृति मूल रूप से फलती-फूलती है इसलिये वर्षा के लिये अनेक शकुन ये लोग लेते है।

कभी ये पवन का रूख देख कर तो कभी पक्षियों की गतिविधि देख कर शकुन लेते है। गरासिया शकुन शास्त्र (विज्ञान) के सच्चे परीक्षक एवं विशेषज्ञ होते है।

शकुन पर बहुत विश्वास रखते है। शकुन अच्छे और बुरे दोनो तरह के माने जाते है। यात्रा में प्रस्थान करते समय शुभ-अशुभ शकुन का पूरा ध्यान रखते है। शकुन इनकी सामाजिक रीति-नीति और सांस्कृतिक धरोहर है। कुछ विशेष महत्त्वपूर्ण शकुन नीचे अनुसार है।

१. विधवा, बांझ स्त्री-पुरुष, नपुंसक सामने आवै या सांप रास्ता काटे तो अशुभ शकुन मानते है और अगर गर्भवती स्त्री या बच्चा गोद में लिये औरत या कुंवारी कन्या सामने आये तो शुभ शकुन मानते है।

२. गधा बांई ओर भूके तो अच्छा और दांई ओर भूके तो खराब मानते है।

३. यात्रा में प्रस्थान करते समय जल भरा घड़ा सामने आये तो श्रेष्ठ समझते है और खाली घड़ा हो तो अनिष्ट कर समझते है।

४. 'डुस्की' पक्षी बांई ओर बोले या उडकर जाय तो अच्छा और दांई ओर बोले या उड़े तो खराब मानते है।

५. 'भैरव' चिड़िया का यात्रा में प्रस्थान करते समय दांई ओर बोलना शुभ और बांई ओर बोलना अशुभ गिनते है।

६. 'सिवरी' पक्षी दांई ओर दिखाई दे तो अच्छा और बांई ओर खराब मानते है।

७. चोर गांव में प्रवेश करे और बैल रंभाता है तो चोर खराब शकुन मान कर चोरी नहीं करते और गाय रंभाती है तो शकुन श्रेष्ठ मान कर चोरी करते है।

८. खाती पक्षी यात्रा मे प्रस्थान करते समय दायी ओर दिखाई दे तो शुभ और बाई ओर दिखाई दे तो अशुभ समझते है।

९. अगर कोई कौआ मकान पर लगातार कॉव-कॉव करे तो यह अकाल होने और फसल सूखने का अंदेशा समझते है।

१०. रात को 'बेवलियन' पक्षी सम्मुख बोले तो अशुभ मानते है परन्तु यदि दायां बोले तो अच्छे शकुन मानते है।
११. दांये हाथ की नाड़ी पहुँचे (मणिबंध) के पास असामान्य गति से चले तो झगड़े की आशंका रहती है।
१२. मधु लेने के लिये प्रस्थान करते समय लघु शंका की हरारत हो तो शहद नही मिलेगा, ऐसी मान्यता इनमें है।
१३. आगर कोई शव दिखाई दे तो अशुभ मानते है।
१४. यात्रा प्रस्थान के समय 'भाते' की प्रथम रोटी टूट जाय तो शकुन अशुभ मानते है।
१५. शिकार अथवा यात्रा में प्रस्थान करते समय बकरी अथवा कुत्ते का कान फड़फड़ाना अशुभ मानते है।
१६. चोरी होने पर मालिक उसकी जांच-पड़ताल के लिये प्रस्थान करता है और उस समय हाथ से तीर छूट कर पृथ्वी पर गिर जाय तो अशुभ मानते है।
१७. पुरुष की दांई और स्त्री की बांई आंख फड़कती है तौ अच्छी मानते है और उल्टी फड़के तो बुरी मानते है।
१८. दूध नीचे फैल जाय तो बुरा पर दूध उफन जाना अच्छा मानते है।
१९. किसी फैसले पर जाते समय दूध पी कर जाय तो 'नीर-क्षीर' न्याय होगा।
२०. यात्रा में प्रस्थान करते समय गर्म दूध नही पीते, बहुत से दही खाकर जाते है।
२१. हथेली मे खुजली चले तो कहीं से पैसे हाथ में आयेगे, ऐसी मान्यता है।
२२. अगर पांव के तलवे में खुजाल चले तो यात्रा में जाने का संकेत मानते है।
२३. हिचकी चलने का अर्थ किसी के द्वारा याद करना मानते है। याद करने वाले कौन कौन संभवतया हो सकते है उनके नाम लेते है तो हिचकी रूक जाती है।
२४. मेले में जाते समय अगर साफा किसी वृक्ष में अटक जाय, लटक जाय तो किसी अपरिचित व्यक्ति से झगड़ा होने की आशंका रहती है।
२५. कौअे को मैथुन रत देखना बुरा मानते है। कोई खतरा आने की संभावना रहती है या मृत्यु का खतरा रहता है। इसके लिये अनेको टोटके (जंत्र-मंत्र) करते है।
२६. खाली पड़े ढ़ोल में से धोई-धोई-धोई की ध्वनि स्वतः आये अथवा 'मादळ' से कुट-कुट-कुट की ध्वनि निकले तो इसे बुरा शकुन मानते है और कोई महमारी फैलने की संभावना बनती है।
२७. सगाई के अवसर पर मेहमानो को मुर्गी का मांस परोसना वर्जित है। इसी प्रकार 'मालपुए' भी परोसना अशुभ मानते है।
२८. 'हालू' पक्षी रात का चिल्लाना अकाल का सूचक मानते है।

२९. रात को गीदड़ गाँव की सीमा पर बोले या गाँव मे प्रवेश करे अथवा शमशान की ओर जाय और कुत्ते भोंकते है तो महामारी फैलने का भय रहता है।

३०. 'काली चिड़िया' झोपड़े और छत के बीच पूर्व में घौसला डालती है तो वर्षा की आशा रहती है।

३१. अक्षय तृतया को गरासिये शिकार को जाते है। शिकार जिसे मिल जाय उसके लिये वर्ष अच्छा व्यतीत होता है।

३२. 'डूसकी' नांव की चिड़िया के यह लोग शकुन लेते है। यह चांद की चांदनी में गाती है तो उस वर्ष वर्षा अच्छी और फसल अच्छी होती है।

३३. 'सोन चिड़िया' यदि नदी के किनारे अथवा तालाब की पाल पर धूल में शनिवार को लोटती है तो सात दिनो में वर्षा होने की सभावना बनती है। और बुधवार को लोटे तो तीन दिन में वर्षा होने की संभावना रहती है।

३४. वैसाख-जेठ महिने में गहरी राग से मोर बोलता है तो वर्षा के आने के आसार लगते है। इस समय पवन के विशेष रूख और स्पर्श मे मोर के शरीर मे कंपकंपी-सी होती है, इस कारण से उसकी बोली में हर्ष और उमंग का प्रभाव होना है। गरासिया मोर को 'मेघो का भान्जा' मानते है और उसको बड़ा प्यार-दुलार देते है। गरासिया वर्षा से पूर्व आने वाली हवा से भी वर्षा का संदेश समझ लेते है।

३५. 'टीटोडी' नामक पक्षी कातिगणियौ तारा उगने से पूर्व अर्थात् नौ बजे से पहले गाती हुई उडती आती है अथवा जल में स्नान करती है तो जल बरसता है।

३६. 'टीटोडी' के अण्डों का नकीले मुँह आकाश की ओर हो तो भयानक अकाल पड़ता है, तिरछे हो तो जमाना मध्यम श्रेणी का संभव और अण्डो के मुंह भूमि के अंदर हो तो जमाना भरपूर होने की संभावना रहती है।

३७. इसी तरह कछुए के अंडों से शकुन देखे जाते है।

३८. वैसाख महिने में बया घौसला गूंथै अथवा जेठ माह में तीतर दौड़ता हुआ बोलता है तो अच्छी वर्षा के शकुन मानते है।

३९. तोता रात को बोले तो फसल शानदार होने का संकेत मानते है।

४०. गोबर में श्याम या लाल मुँह के मोटे मोटे कीड़े पैदा हो, अथवा चींटियाँ अपने अण्डे भूमि से बाहर निकाल कर एकत्रित करती है और मुँह में ले कर इधर-उधर दौड़ती है तो दो-चार दिनों में वर्षा की संभावना बनती है।

४२. मकडी मिट्टी की कोठी में जाले डालती है अथवा जिस वर्ष मधुमक्खी, मच्छर, किसारी, दीमक कम हो तो अच्छी वर्षा होती है।

४२. भेड़-बकरी बारी-बारी छींके करने लगे अथवा गाय-भैंस के मुँह से झाग आवै अथवा लौमड़ी वृक्ष की जडों में अश्रय बनावै तो वर्षा अच्छी होने की संभवना रहती है।

४३. पक्षियों के क्रिया-कलाप देख कर प्राकृतिक विपदा का इन्हें आभास होता है।

४४. गरासिये मानते है कि चन्द्रमा वर्षा देने वाला है । चन्द्रमा में काले धब्बे अथाह जलराशि को दर्शाते है। चांद के आसपास वायुमंडल है जो वायु के न्युनाधिक दाब को सूचित करता है। यदि वायु पूर्व से पश्चिम दिशा को चले तो वर्षा होने की संभावना मानी जाती है।

४५. बादलो की भांति-भांति के रंगो से गरासिये शकुन देखते है। आकाश स्वच्छ दिखाई पड़े तो पूर्व में 'मालमगरे' की ओर वर्षा होने का संदेश देते है। आबू पर्वत की अधर देवी पर 'तितरपंखी' बादली दिखाई दे और लालिमा लिये दिखाई दे तो चौबीस घंटो में बरसात अवश्य होती है। अगर अधिक ऊमस हो, धूप से नभ नीला हो और बादल पीले हो तो चौबीस घंटो में बरसात आती है। दिन में पसीना अत्यधिक आना, आलस्य और निन्द्रा आये तो तीन-चार दिन में वर्षा आती है। चांद का 'पवनकुण्ड' बहुत दूर दिखाई पड़े और पवन जोर से चले तो आंधी बादल का आशंका बनी रहती है।



हपनौ

गरासिया री 'स्वप्न शास्त्र' अर 'दर्शन' अजब-गजब। इणांरी मानीता 'मनोविज्ञान' रै मुताविक इज है कै जको दिनरा देखा, अनभव करां, कै इच्छा करा वे इज 'हपना' में देखीजै। याददास्त दोहराइजै अर 'अर्ध चेतनावस्था' मांय परगट व्है। जकौ इंछा इण लोक मांय पूरी नीं व्है, वा हपना मांय पूरीजै। 'हपनो' आवणवाळी घटनावां रौ ई कदेई समचौ देवै। परभात व्हैता आयोड़ौ 'हपनो' बेगौ सांच व्है। गरासियां पीढ़ियां सूं परख नै 'हपना' रै फळ री फळावट नीचे मुजब करै:

हपनो	हपना रौ अरथ
१. जे मारवी मंदर सूं मद काढे।	तो ठंड (जुकाम) लागेला।
२. म्हेल, किलो कै जोरदार इमारत देखे।	तो अस्पताल जावणौ पड़ैला।
३. रेल, मोटर, जीप आद सगति सूं। चालणिया 'वाहन' देखे।	तो 'महमारी' कै छूआ छूत री बैमारी फैल्ले।
४. हपना मांय गीत गावे।	उणनै कूकणौ कै रोवणौ पड़े।
५. हपना मांय मीत व्हैती देखे।	औ लांबी ऊमर रौ सूचक है अर रोग सूं तुरत छुटकारा रौ संकेत है।
६. हपना माय ब्याव देखे।	गाम में किण ई री मरतू रौ अंदेसो।
७. हालतो अरठ कै मशीन देखे।	गांम मांय बिरखा व्हैवण रा आसार।
८. आभा में हवळी उड़ती दीसै।	जिनावरां री महमारी फैलण री संका।
९. तीर चालतौ कै चलावतो दीसै।	कोई चीतरौ घेटा-टेटा नै मारेला।
१०. रोगी रौ इलाज व्हैवतो देखे।	तो रोगी निरोग व्है।
११. झाड़का रौ गूंद देखै।	डीळ माथै चोट लाग सकै।
१२. हपना मांय बायली नै भाळै।	तो वा उणनै नीं मिल सकै।
१३. पुलिस सूं अपड़ीजणौ देखै कैं हांप कै बाज नै देखै।	बरसात व्हैवण री पूरी उम्मीद बंधै।
१४. टावर कै मिनख नै न्हावतौ देखै।	तो वो खाडा में कै निवोर में पड़ सकै।
१५. बायली सूं बंतल करै।	तो मैथुन रौ जोग मानै।

१६. कोई नाळी, नदी, तळाव, हौदी के टैंक, टांकी देखै।	तो गांम मांये जळ री आवक व्है के किण ई रै ई जापौ व्है।
१७. जे 'मगरा बावसी रौ अगन सिनान दीखै।	साख माथै डावी पड़ैला।
१८. हीरां, जवारात के जेवर देखै।	सरकारी तकलीफ आवे, हथकड़ी पड़ सकै अर सजा पण व्है सकै।
१९. चालती बेरो रूक जावै के बांधा आवै के अरठ टूटै।	तो बरसाळो ढ्बण रौ समझै।
२०. जे मक्की री ढिगळी (ढिग) लागोड़ी देखै।	शीतळा माता रे कोप सूं माता निकळै।
२१. बायली नै हपना में देखे।	तो उणरी बायेली मिल सकै।
२२. तलवार चमकती दीखै।	तो सरीर माथै घाव लाग सकै।
२३. पांणी मांय आग लागै।	काळ पड़वा रा लच्छण है।
२४. कूपळां निकळती दीखै।	तो साख चोखी व्हैला।
२५. पग भिस्टा में के मैला मांय पड़ै।	एकाध दिनमें पग भागै।
२६. कोई गिनायत मिळै।	तो पावणां आवण री आसा।
२७. घणो सारो धन माल अर रिपियां देखे।	तो जोरदार घाटो व्हैवण रौ खतरो।
२८. जोगमाया रा दरसण व्है।	तो कोई रोग सरीर में पैदा व्है।
२९. हपना में चाय पीवै।	वा दोस्ती जकौ टूटण वाली ही, पाछी जुड़ण री आस बधै।

जरायु हपनों :

गरासियां मांय औ विस्वास है के जरायु हपनो चोखी आतमां री वजै सूं आवै अर वे हपना सांचा पण व्है। केई वाळ बावसी हपने आवै अर आगती-पागती गांमां मांय आवण वाळी वैमारी री समचौ देवै। जकौ हपना मांय बताया मुजब पूजा भेट करै वो बच जाय अर दूजा महमारी री झपट में आय जावै।

जादुई (जाप) हपनो :

जाप हपनो काळा जादू सूं संबंध राखै। अैड़ा हपना घणा खतरनाक व्है अर नुकसान पूगावै। औ वेमारी, महामारी अर मौत तक लावण वाळौ मानीजै।

आडो आखौ हपनो :

इणानै पौराणिक हपनां कैय सकां। इण सपनां मांय जूनी पौराणिक बातां रा संकेत मिळै जकौ पौराणिक का'णियां रै ज्यूं व्है।

नागोह हपनो :

अैड़ा हपना गोटा-गोटी नै आवै। मोठ्यार छोरा-छोरी ढोर-डांगर चरावतां, जंगळ में लकड़ियां, गूंद, काथौ बळीतौ आद लैवण नै जावै, वठै आपसरी में 'प्रेमालाप' में 'अश्लील' बातां करै वे दिमाग में रेवै अर रातरा हपना मांय आवै। जकौ दिन रा नीं कर हकिया वे सपना में पूरा करै। इण हपनां मांय 'मनोवैज्ञानिक' अर 'प्राणी विज्ञान' री घण महताऊ भौमका रेवै।

गोथरी हपनो :

जद कोई जवान छोरां-छोरी 'विपरीत योनि' रौ हपनो जोवै तो मनोमन समझ जाय कै 'प्यार रौ जादू' चाल ग्यो। प्रेम सूं बंतल, यौन वैवार आद के स्वप्न इच्छा परवाणै आवै अर 'मैथुन' आद रा हपना जादू रै कारण आवै, अैड़ौ मानै। अै हपना घणाखरा उणांनै आवै जकौ जादू किया करै कै जादू रौ परभाव जण माथै पड़ै।

स्वप्न

स्वप्न	स्वप्न का अर्थ
१. अगर छत्ते से मधु निकालै।	तो सर्दी-जुकाम होगा।
२. महल, किला या भव्य महल देखे।	तब चिकित्सालय जाना पड़ेगा।
३. रेल, मोटर, जीप शक्ति संचालित वाहन देखे।	महामारी या छूआ छूत के रोग फैले।
४. स्वप्न में संगीत गावै।	उसे चिल्लाना या रोना पड़ेगा।
५. स्वप्न में मौत होती दिखाई दे।	दीर्घायु एवं निरोग होने का संकेत।
६. स्वप्नमें शादी होती देखे।	गाँव में किसी की मृत्यु की संभावना।
७. चलता कुँआ अथवा मशीन देखे।	गाँव में वर्षा होने की संभावना।
८ आकाश में चील उड़ती दिखाई दे।	जनावरो की महमारी फैलने की संभावना।
९. बाण साधता अथवा तीर चलता दिखाई दे।	कोई शेर-चीता, भेड़-बकरी को मारेगा ऐसा मानते है।

१०. रूग्ण व्यक्ति की चिकित्सा होती हुई देखे।	रोगी के निरोग होने की संभावना बनती है।
११. पेड़ का गोंद दिखाई दे	तो शरीर पर चोट आने की संभावना।
१२. स्वप्न में प्रेमीका को ढूंढे	तो वह उसे नही मिलेगी, मानते है।
१३. पुलिस पकड़े या सांप या बाज दिखाई दे।	तो वर्षा होने की पूर्ण संभावना
१४. बच्चे को या मनुष्य को स्नान करते देखे।	तो वह खड्डे अथवा नदी में गिर सकता है।
१५. प्रमिका से वार्तालाप करै	तो मैथुन का योग बनता है।
१६. कोई नदी, नाला, तालाब, टैंक, हौज आदि देखे।	तो गाँव में पानी आयेगा अथवा किसी स्त्री को बच्चा पैदा होगा।
१७. यदि पर्वत पर आग लगती दिखाई दे।	तो फसल पर पाला पड़ेगा, कड़ाके की सर्दी पड़ेगी।
१८. हीरे जवाहरात देखे।	सरकारी तकलीफ आवै, हथकड़ी पड़ सकै, सजा भी हो सकती है।
१९. चलता हुआ कुँआ रूक जाय अथवा बाधा आवै या अरठ टूटे।	तो वर्षा बंद होने का संदेश मानते है।
२०. मक्की का ढ़ेर लगा हुआ देखे।	शीतला माता के प्रकोप से शीतला (मंसूरिका) निकले।
२१. प्रेमीका स्वप्न में दीखाई दे ना।	तो उसकी प्रेमीका मिल जायेगी।
२२. तलवार चमकती हुई दिखाई दे।	तो शरीर पर घाव लग सकता है।
२३. पानी में आग लगती हुई दिखाई दे।	यह अकाल पड़ने का संकेत है।
२४. कलियां चटकती दिखाई दे।	फसल अच्छी होने का संकेत।
२५. पांव गंदगी में पड़ता है।	तो एक दो दिन में पांव टूटेगा।
२६. कोई संबंधी मिले।	तो महमान आने की संभावना।
२७. बहुत सी धन राशि देखे।	बहुत हानि होने ता संकेत मानते है।
२८. जगन्दम्बे के दर्शन हो।	तो कोई रोग शरीर में पैदा होगा।
२९. स्वप्न में चाय पान करे।	वह मित्रता जो टूटने वाली थी, वापस जुड़ेगी।

विशेष स्वप्न :

गरासियो का विस्वास है कि ऐसे विशेष (जरायु) स्वप्न श्रेष्ठ पुण्यात्माओं के कारण आते है और यह स्वप्न अक्सर सच्चे होते है। कई बार 'बावसी' (देवता) स्वप्न में आते है और आस पास के गांवो में आने वाली बीमारी की सूचना देती है। जो लोग स्वप्नानुसार भेट पूजा देवताअें को चढ़ाते है वे बच जाते है और शेष महमारी की चपेट में आ जाते है।

जादुई स्वप्न :

यह स्वप्न 'काला जादू' से संबंध रखता है। ऐसे स्वप्न अधिक खतरनाक होते है और हानि पहुँचाते है। यह बीमारी, महामारी अर मृत्यु तक लाने वाले माने जाते है।

संकेत मूलक स्वप्न :

इसे पौराणिक स्वप्न कहते हा। इन स्वप्नो में प्राचीन पौराणिक रीति-नीति के संकेत मिलते है जो पौराणिक कथओं जैसे होते है।

रात्रि कालीन काम स्वप्न :

ऐसे स्वप्न प्रेमी-प्रेमाकाओं को आते है। युवक-युवतियां ढ़ोर चराने, लकड़ी, गौंद, कथा, जलाने की लकड़ी आदि लेने जंगल में जाते है। वहां परस्पर प्रेमालाप में अश्लील बातें भी करते है जो अचेतन मानस में रहती है। जो दिन में नही कर सके उसे स्वप्न में पूरा करते है। इन स्वप्नों में 'मनोविज्ञान' और 'प्राणी विज्ञान' की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

प्यार के स्वप्न :

जब कोई युवक-युवती 'विपरीत योनि' का स्वप्न देखते है तो मनोमन समझ जाते है कि 'प्यार का जादू' चल गया है। प्रेम से वार्तालाप, यौन व्यवहार आदि का स्वप्न जैसी मनमें इच्छा होती है तदनुसार आता है। और 'मैथुन' आदि का स्वप्न जादू के कारण आते है, ऐसा मानते है। यह स्वप्न अधिकांश उनको आते है जो जादू करते है अथवा जादू के प्रभाव में आ जाते है।



वाजू

~ ~ ~

वाजू

गरासियां रा आपरा खुद रा न्यारा-नकाला 'वाजू' (साजवाण)है। अै 'वाजू' माटी रा, काठ रा, धातु रा अर चांमड़ा रा व्है। इणमें खास खास नीचे मुजब -

१. मादळ : औ वाजु ढोल रै ज्यूं वजावै। इणमें ई दो 'साइड' व्है अेक ' साइड' दूजी सूं नैनी व्है। 'ध्वनि' साफ अर तेज निकळण सारूं जवा रा चून सूं लीपे (चोपड़ै)।

२. कुण्डी : औ माटी रौ बणायोड़ो 'यंत्र' व्है अर बाकरा री खाल सूं मढाण करै। बजावती वाळ इणनै डोरी रौ गळवाणो घाल नै गळा मांय लटकावणो पड़ै अर दोन्यूं हाथां डंडिया झाल'र बजावै।

३. सांग : सांग लकड़ी री गोळ गोळ पाटकडी रा घेरा माथै बाकरा री खाल मंडायनै बणावै। बजावती दांण इणरै बंध्योड़ी गळमाळ सूं गळा में लटकावै। सांग रौ घेरको (गोळौ)दस सूं चौबीस इंच तांई चौड़ो व्है। अेक हाथ सूं धेरा रै सियारौ राखा सारूं घेरो अपड़ै अर दूजा हाथ सूं डाको देवै। पाटकड़ी रै साथै अेक हाथ में अेक चीप ई राखै जिणरी चोट ई करतो रेवै।

५. डमरू : डमरू आवळ कै माऊंडा री कवळी लकड़ी सूं बणै औ घणखरौ भजनां रै जोड़ै बजावै।

६. थाळी : पीतळ री दोनो नैनी वाटक्यां व्है, जिणरा कानां चवड़ी प्लेटा जिसा व्है। इणानै बिरोबर टैम सूं आपसरी मांय टकरायनै बजावै। गीत रा बोल, लय नै स्वर लै'री साथै अेक रूपता सूं ताळ मिलावै।

७. माजुरा (मंजीरा) : अै हर हमेस जोड़ा सूं बजावै।

८. झालरा : आ अेक नैनीक गोल पीतळ री प्लेट व्है जकौ लकड़ी रै डंडीयां सूं बजावै।

९. बकतुरीया . औ वाजु 'शहनाई' सूं मेळ खावै। औ पीतळ रौ व्है। इणसूं अेक खास तरै री ' संगीत' री 'ध्वनि' निसरै जकौ आदिवास्यां रै संगीत सूं मेळ खावै।

१०. वाहली : इणनै आपां बंसरी कैवां। बासड़ा री थोथी लकड़ी सूं बणियोड़ी व्है। मुण्डा सूं फूंक देय'र बजावै। भूंगळी रै तीणां व्है। अलगोजो वाजु ई इस्यौ इज व्है।

११. धोरीयु : गरासियां रा सगळां साज-बाजां मांय औ सै सूं नैनो व्है। अेक

पातळी अर सपाट बांसड़ा री खापट घिसनै साफ करनै तीन भागां मांय बांट नै सामटीजै। अेक छेड़ा पर डोरी सूं गूंगरा बांधनै लटकावै। घिसीयौड़ी छाल जिणनै जीभ कैवै। इणनै बजावती वाळ होठां रै नीचे दबायनै राखै। बजावती बखत इणरी डोरी ऊपर-नीचै खीचै अर इणरी जीभ इण मुजब काम करै। मुण्डा सूं हवा साथै ध्वनि निसरै।

इणसूं आवाज निकळै 'बोग बोग बोग' जकौ अेक खास आदिवासी जात (गरासिया) री आवाज रौ 'संगीतमय प्रतिनिधित्व' करै। इणसूं घणी 'रोमांचक संगीतमय' ध्वनि नीसरै।

गीतां रै साथै आबू रा वनवासी गरासिया साज बाज कम्म इज वापरै। जंगळ में मंगळ मनावता भाखरवासी वाहली अर अलगोजां री लय, स्वर, ताल माथै कै धोराइयां री धुन माथै रागणी छेड़े। वातावरण मांय चीरती तीखी, झीणी, पतळी 'स्वर लहरी' सूं पूरो जंगल गूंजै।

१२. ढोल : गरासिया रै सैं साज बाज मांय ढोल सिरे लम्बर। अै लोग ढोल केई भांत सूं बजावै। गरासियां री अलेखू खासीयतां मांय अेक मोटी खासीयत ढोल बजावण री हैं। अेक इज ढोल अर अेक इज ढोली पण बजावण रा न्यारा-न्यारा तरीका जिणरा न्यारा-न्यारा अरथ।

ढोल केई तरै रा व्है ज्यूंकै गोळ, अण्डाकार, संकु-आकार आद। दोन्यूं 'साइड' बाकरा री खाल मंड्योड़ी व्है। इण रौ ढाचौ लोकण रौ कै लकड़ी रौ बणियौड़ौ व्है।

गरासियां वास्तै ढोल धण महताऊ, इणरा अलेखू उपयोग। ढोल फगत ब्याव सादी, धारमिक सैंस्कार, उछब रै मंडाण रै मौके इज नीं बाजै, इणरा निरा उपयोग - वनमांय आग, बाघ-चीतरा रौ खतरौ, चोरी-डकेती, जळम, मौत-मरगत आद केई घटनावां रौ समचौ ढोल नै तरै-तरै सूं बजायनै दीरीजै। ढोल रै ढमका रौ कमाल जादू। ढोल गरासिया रौ साइरन, टेलिफोन कै रेडियो ज्यूं 'दूर संचार' रौ साधन। तुरत-फुरत समिचार दैवण सारू ऊँची टेकड़ी माथै चढनै ढोल घुरावै जकौ आगा-आगा तांई सुणीजै।

ढोल री ताल, लय, ढमकौ, गति अर कौसल समिचार मुजब चालै जकौ पे'ला सूं तय है अर सै समाज वीं संकेतां रौ अरथ समझै। ढोल बजावणियां री सगति मुजम ढोल सूं उठणवाळी तरंगां चालै। गरासियां इण कला रा पूरा पारखी अर खांमची। ढोल ई भांत-भांत रा व्है अर आप आपरा ढोल न्यारा-न्यारा सैंग राखै।

खुसी रा सदेश मांय नेहछा सूं ढोल बजाइजै। नाचती दांण ढोल बजावण रौ तरीकौ न्यारौ। जे कोई ढोली नाचणिया री लय-ताल रै मुजब ढोल नी बजाय हकै तो वीं री हँसी उडावै। उछब रै आंणै टांणै मोठ्यार छोरां-छोरी में नाचण री होडाहोड रौ मौकौ ढोलवाळौ दैवे। वीं बखत 'कला, तकनिक की दक्षता' रौ 'प्रत्यक्ष प्रमाण' साम्ही आवै। कदै-कदाच ढोल प्यार मांय जीत दिलावा मांय मददगार व्है।

नौरतां मांय पाट भोपां अर दूजा भोपां आपरी कड़िया में खालडा री कमर पट्टो बांधे जिं पर पीतळ रा घूंघरा (घंटियां) लागौड़ा व्है। हाथां पगां मांय ई घूंघरां बांधे। नाचै जरै घूंघरियां घमकावै। देवी नै राजी करण सारू भोपां नाचै। भांत-भांत री ढोल री आवाजां सूं तरै-तरै रा अरथ उपजे, की दांखलां नीचे मुजब -

१. वार ढोल : 'वार' रौ अरथ व्है हमलौ। वार रौ ढोल सुणतां पांण गरासिया सैंग काम काज छोडनै सस्तर-पाती लेने, संभनै ढोल री आवाज रै समचै ढोल सांमी दौड़े। बठै अेकण ठौड़ भेळा व्हैनै सला करै अर मोरचां बांधनै हमलौ बोलै। ढोल री ध्वनि मांय गुप्त (कोड) संदेस अर घटना री जाणकारी व्है जकौ वे आदिवासी (गरासिया) इज समझ सकै। चोरी व्ही व्है तो चोर रौ लारौ करै। बारळौ खतरौ व्है तो अपणे आपनै त्यार कर लैवै। कीं संदेस नीचे मुजब -

अ) आदिवासी पटेल री मिरतु व्है तो तीन वार ढोल बजावै, जिणरौ अरथ व्है गांम रा खास मौजीज आदमी (त.ख.झ.) री मौत। सगळा नै ताबड़-तोबड बठै पूगणी है।

ब) चोरी रै मौके लगोलग ढोल पर डाको पडै - 'डिंग-डिंग-डिंग-डिंग'। सगळा सभैनै सावचेत व्है अर अेक जगा भेळा व्है।

२. गारीया रौ ढोल : बिना ढब्या धनाधन डाकौ ढोक्यौ जाय, इणनै गारीया रौ ढोल कैवे जकौ 'दुर्घटना' रै बखत बजाइजै अर कै सावचेत करणनै अर मदद करणनै बजावै।

३. जळम ढोल : टाबर रे जळम री खुसी रौ संदेस दैवण नै बजावै।

४. हांप चैट्या रौ ढोल : हांप झूम्या पछै जैंवा उतारण री वेळा बजावै। इणरै पांण भोपां झूंजै, भाव पडै अर जैरवा चूसे।

५. बादोळा रौ ढोल : औ ढोल ब्याव में बांदळौ जीमवानै जावती टैम ऊबै मारग बजावै। ई ढोल री आवाज ब्याव री खुसी, ध्यावस, समर्पण अर मंगळ भावना दरसावै। इणरी 'ध्वनियाँ' यूं व्है -

डिंगा-डिंग ढका ढक

डिंगा-डिंग ढका ढक

डिंगा-डिंग ढका ढक

६. नाचणियौ ढोल : नाचणियौ ढोल री आवाज दूजा नाच सूं बतौ रोमांचित करै। इणरी खासीयत रै कारण इज नाचणियौ कैवीजै। इणरी आवाज नीचे मुजब व्है -

ढम ढम - ढमा ढम समसा ढाकर

ढम ढम - ढमा ढम समसा ढाकर

ढम ढम - ढमा ढम समसा ढाकर

७. ब्याव रौ ढोल : ब्याव रौ ढोल न्यारा-न्यारा तरीका सूं बजावै। तरै तरै रा औसर माथै भांत-भांत सूं बजावै। अेक दृष्टांत अठै -

ढमक माधुभाई

ढमक माधुभाई

ढमक माधुभाई

८. गौर ढोल : गौर रै नाच री वेळा औ 'गौर ढोल' बजाया करै। इण री लय अर आवाज नीचे मुजब :

धरना कुम्भार

धरना कुम्भार

धरना कुम्भार

९. नौरता ढोल : औ ढोल नौरतां मांय बाजै। औ कोई भोपो बजावणौ मांडै अर पाट भोपो बंद करै। औ ढोल रातिजगा रै बखत ई बजावै। इणरी आवाज जोरदार व्है :

ढिंग-ढिंग-ढिंग

ढिंग-ढिंग-ढिंग

ढिंग-ढिंग-ढिंग

१०. होळी ढोल : औ होळी रै मौके बजावै। इणरी ध्वनि नीचे मुजब निकळै -

जीमधा मेजीम गोधो सेन्दर

जीमधा मेजीम गोधो सेन्दर

जीमधा मेजीम गोधो सेन्दर

११. देवाळ ढोल : औ वीर मालेरी ढोल रै नांव सूं ई जाणीजै। औ देवतावां रौ खास सनसनीखेज संदेसो देवै, अैड़ो अनभव व्है। औ पूरी तरीया भगति रौ वातावरण बणावै।

धरमर धरमर

धरमर धरमर

धरमर धरमर

१२. भोपा ढोल : औ ढोल देवळ पर भोपां भाव पाडै जद बजावै कै डाकण-भूतण काढती वगत बजावै।

१३. ढाक : 'वीर वादक' लोग गावा बजावा मांय रिप पड़िया। साज बाज बजावण रा पक्का खांमची कलाकार व्है। मादळ थाळी कै ढाक थाळी अवस करनै वापरै। ढाक डमरू रै आकार री मोटो रूप व्है। इरै दोन्यूं मुंडा पर खाल मंडयौड़ी व्है, मंडल लकड़ी

रौ व्है जिं पर डोरयां गूंथ्यौडी रैवै। इण डोर्‌यां री तांण ढीली, काठी कै तांणतट करबा वास्तै लोकण री कै पीतळ री कड़िया व्है। इणानै कसण सूं अर ढीली करण सूं आवाज कम कै तेज करीजे। इणसूं 'स्वर-ध्वनि' नै घट-वद (मंद-तेज) कर हकै। जद धारमिक गीत- गाथावां गवीजै जरै ढाक पग पर मेल्नै बजावै। ई टैम डोरी रौ छेड़ौ जीमणा पग रा अंगोठा रै बंधीजै। ढाक रौ फाबो इणसूं ऊपर नीचे करणौ पड़ै। केई जणा ढाकरै घूंघरां बांधै जिणसु बजावा री टैम घूंघरां ई आपरी 'ध्वनि' साथै साथै करै। ढाक रै अेकड़ मूंडै आंगळ्यां अर दूजै मुंडै बांसड़ा री खप्पचियां (चीपां) री चोट सूं बजावै। थाळी लकड़ी रा डंडियां सूं बजावै। इणनै जमी माथै मेलने ई बजावै इणसूं झणझणाट कम व्है।

साज रा रख रखाव : बस्ती रौ अेक ढोल व्है जकौ पटेल रै घरै इज राखै। तंदुरौ ई 'सामूहिक साज' व्है। ढोल हीरागरां सूं बणावाड़ै। इणारै ढोल रौ आकार आपां सूं नैनौ व्है।

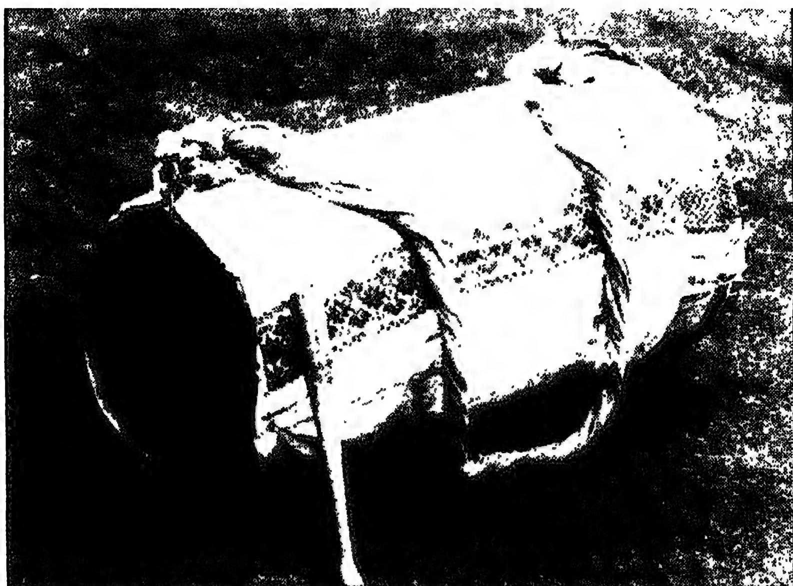
साज सागवान, लूणीया, पाबूरा आदरी लकड़ी सूं बणावै। सागवान रौ तंदूरौ सै सूं सिरै गिणै। ढोल रै साथै कांसी री थाळी बजावै। बंसरी अर अल्गोजा बजावण रा ई गरासिया सौकीन।

अै लोग बिना साज-बाज ई गावै। साज में खास ढोल, नगाडा, मादळ, अल्गोजा, जंजेरा (लै जम्प जिसा) अर पिंजणिया आद है। ढोल, नगाडां भांबी बणावै। मृदंग भील बणावै। अलगोजां गरासियां खुद बणावै। पिंजणिया बण्या बणाया बजारां सूं मोलावै। गै'णौ सोनार घड़ै। मृदंग अर ढोल माथै फगत नाच व्है।

गरासिया लोग खुद केई साज खुद बणावै। घणा जणा पुर्जा आद मोलावै नै, वीयांनै जोड़वा रौ काम करै अर साज बणावै, ज्यूं कै ढोल रौ खोखो, खाल, डोरियां आद। साज-बाज बणावा वाळा कीं गरासियों रा नांव ठांव ठिकाणां नीचे मुजब -

1. [illegible] s/o लछाराम गरासिया, सांभरवाड़ा (नानी-काकराड़ी)
२. श्री मगाराम s/o नोंपाराम गरासिया, सांभरवाड़ा
३. श्री प्रेमाराम s/o राजाराम गरासिया सांभरवाडा (काली पारी)
४. श्री इन्दिराराम s/o सांगाराम गरासिया कोयलवाव (काली पारी)
५. श्री कालाराम s/o चौपाराम गरासिया कोयलवाव (काली पारी)
६. श्री कनाराम s/o रताराम गरासिया कोयलवाव (काली पारी)
७. श्री भेराराम s/o सोनाराम गरासिया कोलवाड़ा
८. श्री मोतीराम s/o वगताराम गरासिया कोलवाड़ा
९. श्री भेराराम s/o सोनाराम गरासिया कोलवाड़ा
१०. श्री चिमनाराम s/o लछाराम गरासिया कोलवाड़ा
११. श्री रामाराम भील वार्ड पंच कूरण

गरासियों के कुछ वाद्य यंत्र



मादल



माटा

गरासियों के कुछ वाद्य यंत्र



करताल



नगाड़ा

वाद्य यंत्र

गरासियों के अपने स्वयं के पृथक तरह के वाद्य-यंत्र होते है। यह वाद्य-यंत्र मिट्टी के, काष्ठ के, धातु के तथा चमड़े के बने होते है। इसमें मुख्य मुख्य निम्नांकित है -

१. मादळ : यह वाद्य भी ढोलक की भांति ही बजाया जाता है। इसमें दो 'साइड' होती है पर एक 'साइड' दूसरी से छोटी होती है। ध्वनि साफ और तेज निकालने के लिये जौ का आटा लगाते है।

२. कुण्डी : यह मिट्टी का बना हुआ वाद्य होता है और बकरे की खाल से मढ़ा जाता है। बजाते समय इससे बंधी हुई रस्सी की माला गले में डाल कर लटकाते है फिर उसे दोनो हाथो से डंडों से बजाते है।

३. डफ (चंग) : चंग, चांग या डफ को गरासिया 'सांग' कहते है। यह लकड़ी की गोलाकार चौड़ी (छःइंच चौडी) पतली पट्टी के गोल घेरें से बनती है जिस पर बकरे की खाल मढ़ा कर बनाते है। बजाते समय इससे बंधी हुई रस्सी की माला गले में डाल कर लटकाते है फिर बजाते है। डफ का व्यास दस से चौबीस इंच तक चौडा होता है। एक हाथ से घेरा पकडने के साथ खप्पची (चीप) से चोट करते रहते है और दूसरे हाथ से डंडा लगाते है।

४. डमरू : यह 'ऑवली' अथवा महुआ की नरम लकड़ी से बनता है जो हरिभजनों के साथ अक्सर बजाते है।

५. थाली : पीतल की दो कटोरीनुमा चौड़ी किनार की प्लेटे होती है। इनको निश्चित समयावधि से बार बार आपस में टकरा कर बजाते है। गीत के बोल, लय, स्वर लहरी के साथ एक रूपता से तालमेल मिलाते है।

६. मंजीरा (माजुरा) : यह हमेशा जोड़े से ही बजाये जाते है।

७. झालर : यह एक छोटी पर मोटी (जाडी) प्लेट होती है (स्कूल की घंटीनुमा), जिसे लकड़ी के डंडे से बजाते है।

८. बकतुरीया : यह वाद्य शहनाई जैसा होता है और पीतल का होता है। इससे एक विशेष आदिवासी संगीत की ध्वनि मेल खाती है।

९. बांसुरी (वाहली) : इसे हम बंसरी कहते है। यह बांस की पोली लकड़ी से बनी हुई होती है। जिसके छिद्र होते है। इसे मुँह से फूंक मार कर बजाते है। वाद्य अलगोजा भी इसी भांति का यंत्र होता है। पर दोनों में अंतर है।

१०. धोरीयुं : आदिवासीयों के समस्त वाद्य यंत्रों में यह सबसे छोटा होता है। एक पतली सपाट बांस की खप्पच्ची के टुकडों को घिस कर साफ एवं चिकना करके उसे तीन

भागों में बांट कर समेट लेते है, एक किनारे पर घुघरूं बांध कर लटकाते है, धागे को ऊपर नीचे खीचते है, उसके अनुसार इसकी जीभ काम करती है। और वायु सध्वनि मुँह से बाहर निकलती है।

इससे आवाज निकलती है - 'बोग-बोग-बोग' जो एक खास आदिवासी जात (गरासिया) की आवाज का संगीतमय प्रतिनिधित्व करती है। इससे रोमांचक संगीतमय ध्वनि निकलती है।

आबू के वनवासी 'गरासिया' गीतां के साथ वाद्य यंत्र कम ही उपयोग में लेते है। जंगल में मंगल मनाते ये पर्वतवासी बांसुरी और अलगोजा की लय, स्वर, ताल पर 'घोराइया' की धुन पर रागिनी छेड़ते है। शांत वातावरण को चीरती तीखी, सुक्ष्म स्वर लहरी वन-पर्वतांचल में गूंज उठती है।

११. ढ़ोल : गरासियों के वाद्य यंत्रों में ढ़ोल सर्वोच्च स्थान रखता है। यह लोग ढ़ोल कई भांति से बजाते है। गरासियों की अनेको विशेषताओं में यह मुख्य विशेषता है - 'ढोल बजाने की कला'। एक ही ढ़ोल एक ही 'ढोली' परन्तु बजाने के पृथक-पृथक तरीके जिसके भिन्न भिन्न अर्थ निकलते है।

ढोल अनेक प्रकार के होते है जैसे गोल, अण्डाकार, संकुकार आदि। दोनों ओर (साइड) बकरे की खाल से मढे हुए होते है। इसका मूल ढांचा लोहे का या लकडी का बना हुआ होता है।

गरासियों के लिये ढ़ोल बहुत महत्त्वपूर्ण होता है जिसके अनेको उपयोग करते है। ढोल केवल शादी-ब्याह, धार्मिक संस्कार, उत्सव के आयोजन के अवसर पर ही नहीं बजाते, इसके अनेको उपयोग है जैसे जंगल में आग लगने पर शेर चीत्ते का आक्रमण पर, चोरी-डकैती, जन्म, मृत्यु आदि अनेक घटनाओं की सूचना ढ़ोल को भांति-भांति से बजा कर देते है। ढोल गरासियों का टेलिफोन या रेडियो या 'साइरन' की तरह दूरसंचार का साधन एवं मीडिया है। तत्काल सूचित करने हेतु पर्वत की चोटी पर चढ कर ढ़ोल बजाते है इससे दूर दूर तक आवाज सुनाई देती है और सभी उसके अर्थ को समझ कर वहाँ एकत्रित हो जाते है।

ढोल की ताल, लय, ध्वनि, गति और कौशल सदेशानुसार चलती है। समाज उस 'कोड भाषा' (ध्वनि) का अर्थ समझता है। ढोली के शक्ति के अनुसार ढोल की 'ध्वनि तरंगे' फैलती है। गरासिये इस कला में पूर्ण प्रवीण होने है। ढोल भी तरह तरह के होते है और अपने अपने ढोल सभी अलग-अलग रखते है।

खुशी और प्रसन्नता में शांति तथा धैर्य से ढ़ोल बजाते है। नाचते समय ढ़ोल बजाने का ढंग अलग होता है। यदि कोई ढोली नर्तक की लय-ताल के अनुसार ढोल नही बजा सकता तो उसकी व्यंग-विनोद से हंसी उड़ाते है। उत्सव अवसर पर युवक-युवतियों में नृत्य

प्रतियोगिता ढोल वाला करवाता है। कला और तकनिक की दक्षता का प्रमाण सम्मुख आता है। कभी कभी ढोली प्यार में विजय दिलाने में भी सहायक होता है।

नवरात्रि में प्रधान 'भोपा' और अन्य 'भोपें' अपने कटिप्रदेश में चमड़े का पट्टा बांधते है जिस पर पीतल के घुंघरूं लगे रहते है। हाथों-पांवो में भी घुंघरुं बांधते है। नाचते समय घुंघरूं बजते रहते है। देवी को प्रसन्न करने हेतु भोपे नाचते है। भांति-भांति की ढ़ोल की ध्वनि से भिन्न अर्थ निकलते है। कुछ उदाहरण निम्नांकित -

१. वार ढोल : 'वार' का अर्थ है आक्रमण। 'वार' का ढ़ोल सुनते ही गरासिये सब काम छोड कर अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित हो कर ढोल की ध्वनि के सहारे वहाँ पहुँच कर योजना बना कर मोर्चा बनाकर आक्रमण करते है। ढोल की ध्वनि में गुप्त संदेशा होता है, जो वे ही समझ सकते है। चोरी हो तो चोर का पीछा करते हा। कुछ संदेशो के उदाहरण -

अ) आदिवासी पटेल की मृत्यु हो तो तीन बार ढोल बजाते है जिसका अंर्थ है कि किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति (त.ख.झ.) की मृत्यु हो गई है। सबको तत्काल वहाँ पहुँचना है।

ब) चोरी के मौके पर निरंतर ढोल पर डंडा पड़ता रहता है -

डिंगडिंग-डिंगडिंग

यह ध्वनि सुनते ही सभी संभल कर, सावधान होकर एक स्थान पर एकत्रित हो जाते है।

२. गारीया ढोल : बिना विराम दिये लगातार बजाया जाता है पर उक्तांकित (चोरी) से ध्वनि भिन्न होती है। यह किसी प्रकारकी दुर्घटना के समय बजाया जाता है अथवा सतर्क करने अथवा मदद मांगने के हेतु बजाते है।

३. जन्म ढोल : बच्चे के जन्म का सुभ संदेश देने के हेतु बजाते है।

४. सांप डसने का ढोल : सर्प डसने के पश्चात विष उतरने तक बजाते है। इसके आधार पर 'भोपा' झूमता है और विष उतारता है।

५. बादोला का ढोल : यह ढोल शादी में बारात भोजन करने के लिये जाते समय रास्ते में बजाते है। ढोल की ध्वनि खुशी, स्थिरता, समर्पण एवं मंगल भावना दर्शाती है। इसकी ध्वनि इस प्रकार है -

डिंगा डिंग ढ़का ढ़क

डिंगा डिंग ढ़का ढ़क

डिंगा डिंग ढ़का ढ़क

६. नाचणियौ ढोल : इस ढोल की ध्वनि अन्य नृत्यों से अधिक रोमांचित करती है। इसी विशेषता के लिये इसे 'नाचणियौ' कहा गया है। इसी ध्वनि निम्न प्रकार होती है -

ढम ढम ढमा समसा ठाकर

ढम ढम ढमा समसा ठाकर

ढम ढम ढमा समसा ठाकर

७. शादी का ढोल : शादी का ढोल अलग तरीके से बजाते है। भिन्न भिन्न अवसर पर भांति भाति से बजाते है। एक उदाहरण नीचे -

ठमक डमक माधुभाई

ठमक डमक माधुभाई

ठमक डमक माधुभाई

८. गौर ढोल : गौर के नाच के समय यह ढोल बजाया जाता है। इसमें डंके की चोट और चाप की ध्वनि निम्न प्रकारकी रहती है।

धरना कुम्भार

धरना कुम्भार

धरना कुम्भार

९. नवरात्रि ढोल : यह ढोल नवरात्रि में ही बजाया जाता है। यह ढोल कोई भोपा बजाना प्रारंभ करता है और वरिष्ट भोपा बंद करता है। यह ढोल रातजगा के समय भी बजाते है। इसकी ध्वनि जोरदार होती है।

ढिंग ढिंग ढिंग

ढिंग ढिंग ढिंग

ढिंग ढिंग ढिंग

१०. होली ढोल : इसे होली के अवसर पर बजाते है। इसकी ध्वनि निम्नांकित प्रकार की होती है -

जीमधा मेजीम गोधो सेंटर

जीमधा मेजीम गोधो सेंटर

जीमधा मेजीम गोधो सेंटर

११. देवाल ढोल : यह ढोल मालेरी ढोल के नाम से भी जाना जाता है। देवताओं का विशेष सनसनी खेज संदेश देता है , ऐसा अनुभव होता है - भगति का वातावरण बनता है -

धरमर धरमर

धरमर धरमर

धरमर धरमर

१२. भोपा ढोल : ढोल देवळ पर भोपा भाव में आते है अथवा डायन आदि निकालते है तब बजाते है।

१३ ढाक : 'वीरवादक' गीत गाने में पूर्ण प्रवीण होते है। वाद्य यंत्र बजाने में पारंगत कलाकार होते है। यह लोग गाते समय मादळ थाली अथवा ढाक थाली का उपयोग

अवश्य करते है। ढाक डमरू के आकार का बड़ा स्वरूप होता है। इसके दोनो 'साइड' में चमड़ा मढा हुआ होता है। मंडल लकड़ी का होता है जिस पर डोरियाँ कसी रहती है। इन रस्सियों का कसाव-खीचाव कम-अधिक करने के लिये लोहे तथा पीतल की कड़ियाँ लगी रहती है। इसे कसने और ढीली करने से आवाज को तेज अथवा कम की जा सकती है। इसके साथ स्वर-ध्वनि में भी मंद या तेज होती है। जब धार्मिक गीत गाथाएँ गाई जाती है तब ढाक पांव पर रख कर बजाते है। इस समय रस्सी कै एक सिरा दांये पांव के अंगुष्ठ के बांधा जाता है। ढाक का फाबा इससे उपर नीचे करना पड़ता है। कई लोग ढाक कै घुघरुं बांधते है। जिससे बजाते समय घुंघरू साथ साथ ध्वनि करते रहते है। ढाक के एक मुँह पर अंगुलियाँ और दूसरे मुँह पर बांस की 'खप्पचियाँ' की चोट से बजाते है। थाली लकड़ी के डंडे से बजाते है। इसे भूमि पर रखकर भी बजाते है इससे झनझनाहट कम होती है।

वाद्य यंत्रों का रख रखाव : गाँव का एक ढोल होता है जो पटेल के घर रहता है। 'तंदूरा' भी सामूहिक वाद्य होता है। ढोल हीरागर बानाते है। इसका आकार अपने ढोल से छोटा होता है। साज सागवान, लूणीया, पाबूरा आदि को लकडी से बनाते है। सागवान का 'तंदूरा' सर्वश्रेष्ठ होता है। ढोल के साथ कांसे की थाली बजाते है। बांसुरी और 'अलगोजा' बजाने के भी गरासिये बड़े शौकीन होते है।

ये लोग बिना वाद्य-यंत्रो के भी गाते है। वाद्यों में मुख्यतया ढोल, नगारा, मादळ, अलगोजा, जंजेरा (लौजम्प जैसा) और पिंजनिया आदि है। ढाक तथा नगारे भांबी (चमार) बनाते है। मृदंग भील बनाते है और अलगोजा गरासिया स्वयं बनाते है। पिंजणिया बने बनाये बाजार से खरीदते है। गहना स्वर्णकार घड़ते है। मृदंग और ढोल पर केवल नाच होते है।

गरासिये स्वयं भी कई साज बनाते है। केई लोग अलग अलग पुर्जे आदि खरीद कर जोड़ने का काम करते है - जैसे ढ़ोल का खोखा, चमड़ा, रस्सियाँ आदि। साज बाज बनने वाले कुछ गरासियों के नाम पते निम्नांकि है, जो उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है -

१. चूनाराम S/O लछाराम गरासिया, सांभरवाड़ा (नाना-काकराड़ी)
२. मगाराम S/O नोंपाराम गरासिया, सांभरवाड़ा
३. प्रेमाराम S/O राजाराम गरासिया सांभरवाडा (काली पारी)
४. इन्दिराराम S/O सांगाराम गरासिया कोयलवाव (काली पारी)
५. कालाराम S/O चौपाराम गरासिया कोयलवाव (काली पारी)
६. कनाराम S/O रताराम गरासिया कोयलवाव (काली पारी)
७. भेराराम S/O सोनाराम गरासिया कोलवाड़ा
८. मोतीराम S/O वगताराम गरासिया कोलवाड़ा

९. भेराराम S/O सोनाराम गरासिया कोलवाड़ा
१०. चिमनाराम S/O लछाराम गरासिया कोलवाड़ा
११. रामाराम भील वार्ड पंच कूरण



गरासियों के कुछ वाद्य यंत्र



डमरू



ढाक



कुंडी



घेरा (सांग)



तंदूरा



अलगोजा

जड़ी बूटी अर इलाज

~ ~ ~

जड़ी बूटी अर इलाज

गरासिया रै अनपढ व्हैवण सूं अग्यान, अंधविश्वास, कुपोषण अर साफ-सफाई री कमी सूं अलेखू रोग पनपे अर 'संतुलित' अर 'पोष्टिक' अहार अै नीं लैय सकै, जिणसूं अर इण लोगां रै भाखरवासी व्हैवण सूं केई रोग लागू व्है। ताव-तप, मलेरीया, दाद, खाज, खुजली, फोड़ा-फुंसी, घबीड़, उल्टी, दस्त, वाळौ, निकाळौ अर सूगळौ पांणी पीवण सूं ई केई रोग लागै। रोग रै इलाज वास्तै अै लोग देवतां रै थान, बूझ, भोपां रा भाव, जंतर-मंतर, झाड़ा-झपटा, टाटक-टोटक, डोरां-मादळियां, उतारणा-अवारणा आद में आदू जुगां सूं भरोसो राखै। अंधविश्वास सूं ई रोगां मांय वधापौ व्है। अै लोग 'परंपरागत इलाज' में ई विस्वास करै। भाखर रा पूरा भौमिया है। देसी जड़ी-बूटियां री ई नांमी ग्यान राखै। आ ई जाणकारी खरी राखै कै किसी जड़ी बूटी किण ठौड़ है। यूं भाखरां में दवाखाना री सगवड कठै है ? सो इलाज सारूं जावै तो जावै कठै ? इण वास्तै आपरौ इलाज आपरी औखद सूं करै।

डांम लगायनै ई कोई रोगां रौ इलाज करै। कीं वैमारी मांय किण अंग में कैड़ौ, कठै अर कित्तौ डांम दैवणौ, इणरौ पूरो ग्यान राखै। आपरै खुद रै मूतर अर गोमूत्र सूं ई इलाज करै। माऊड़ा रै रूंखड़ां रै फूल, पत्ता, बीज अर छाल ई इलाज में काम लेवै। जळौका अर खीघड़ी ई लगावै। देसी इलाज रा कीं दाखलां नीचे देरीजै जकौ करण जोग -

क्र.सं	वैमारी रौ नांव	जड़ी-बूटी	दवा काम लैवणरी विधि
१.	ताव-तप	सिलूटी अर अडूसा री जड़	दोन्यूं नै कूट झिगद नै उकाळै अर दिन में तीन वार पावण सूं आराम व्है।
२.	बांझड़ी रौ इलाज	भुंई रींगणा री जड़	भूंई रींगणी री जड़ ने गाय रा घी में उकाळनै कपड़े आवै वींरै नवमें दिन पावै तो गरभ रेवै।
३.	सोरू-पारू	जंगळी रोहिणी बूटी	अधपाव जड़ अर छाल किलो पांणी में उकाळणी, पाव रैय जावै जद गुड़ मिला'र पावै।

४.	हड़कियौ कुत्ता रौ जै'र	अरडूऔ, तूतार, सूखो गळकौ, आकड़ा रौ दूध, नीमड़ौ अर काटोल रा पांन	अरडूआ री छाल, काली त्रीटी, तूतार रै साथै पाव पांणी में मिलायनै पावै। घाव सफा करनै सूखी गलका दूध साथै लगावै। नीमड़ी री निम्बोळी अर काटोल रा पत्ता घोट घोटा'र पावै।
५.	सांप रौ जै'र उतरणौ	नागरवेल, अंकोर, ककोरी, अरीना, विद्रख, धतूरो, आकड़ौ, केर	इण सगळा री जड़ां कूट-पीस अर घोटनै अेकजीव करनै मिलायनै डंक माथै लेप करणौ अर धीरत में आ इज दवा पावै, उल्टी छौ व्हैती, रोकणी नीं। पाणी नी पावणौ, नींद नीं लैवण दैणी।
६.	बिच्छु री दवा	थोर रौ दूद, कांदा, लाबूड़ा री जड़, ओक, आकड़ौ नै खाखरौ	थोर रौ दूद अर लाबूड़ा री जड़ आकड़ा रौ दूद अर कांदा रा फूस सूघावै।
७.	दम	हाथन री जड़	हाथन री जड़ रौ रस-कस निकाळनै दिन मांय दो वार दस दिनां तक पावै।
८.	नाकौर	नदारू	नदारू रौ रस रांधनै लिलाड़ माथै चोपड़णौ।
९.	टूटोड़ी हाडकी	माऊड़ा रा फूल	मिनख कै जिनावर हाड़की टूटे तो माऊड़ा रै पुसपां रौ काढौ पावै।
१०.	मस्सौ	कन्तेर री जड़ अर अरेण री जड़ समभाग लें।	दोन्यूं नै पीसनै चिणा जितरी गोळियां बणावणी, दिन में तीन वार पनरां दिन लैणी।
११.	धागर	डूम अर डोड रौ गूंद, अंजीर रा पांन	दोन्यूं नै कूटपीसनै एकजीव करनै लगावणा।
१२.	खरजावौ	कोरजी, लसण रा पांन नै अमल	सगळा नै पीसनै लुगदी बणायनै बांधणी।

१३.	साण्डा	अमीनौ गूंद, गूगळ रा सूखा पांन, नींबड़ा री छाल, बांसड़ा रौ सूखौ चूरौ, खेजड़ी रौ गूंद अर आकड़ा री छाल	इयां सगळानै कूट पीसनै लुगदी बणा'र घाव माथै बांधै।
१४.	घूमड़ा,फोड़ाफुंसी	काळौ धतूरौ, गिलोय, भूंई आंवळां नै कसूवार रा पांन	सगळा नै कूट-पीसनै लुगदी बणायनै पीड़ा पर बांधै।
१५.	चांबड़ी रा रोग	माऊड़ा री छाल अर बीजां रौ तेल	माऊंड़ा रै छाल धिसनै लगावणी अर बीजां रै तेल री मालिस करणी।
१६.	गोडां री दरद	आकड़ा रा पीळा पांन, राई, मुरगी रा ईण्डां रा छुतरकां नै फिटकडी	राई, फिटकरी अर ईण्डा रौ छुतरका बिरोबर-बिरोबर भाग घोट बांटनै गोडां पर गाढो लेप करणौ अर पछै आकड़ा रा पीळा पानडां ऊंनां करनै ऊंनां-ऊंनां बांधणा।
१७.	जै'री कांटौ, अर अैडी दरद	रूंगड़ी कै जळौकां	दरद माथै रूंगड़ी कै जळौकां लगावै।
१८.	सींग पादरा करणां	हेळदी नै गैंगची	दोन्यूं नै घोटनै सीगां पर लेप करै, सींग इतो नरम व्है जावै कै मोड़ सकौ। हाडकी ई वैगी जुडै।
१९.	लुर की खांसी (खुरखलियौ)	जिण बेरा में मिनख मरयौ व्है, वीं रै घेड री ठीकरी अर दारू	धेड़ री ढीकरी ताती करनै लाल व्है जावै जरै दारू री भरी वाटकी मांय बुझोवै अर वो छंमकियौड़ो दारू खुरखलिया वाळा टांबर नै पावै।
२०.	कंठमाळ कै पेट में गांठ	लूणीया री जड़ (अेक रूंखडी जिंरी जड़ा गांठीली, पत्ता टीमरू-सा व्है	लूणीया री जड़ पांणी मांय घोटनै-छांणनै पावणी। अेक अेक कप अेक अठवाड़ियै पावणी। तेल, गुड़, खटाई, मिरच, आद रौ परेज राखै, फीकौ खावणौ। इणसूं लोही ई वधै।

२१.	नजर टोकार	पीपळ बेल (पीपळ- सा पान)	टांबरां री निजर-टोकार अर माथा मांय छाळा-चिगदा व्है तो इणरा पान घिसनै लगावणा।
२२.	पीळीयौ	कांटी सेरीया रा पंचाग	इणरा बटकां करनै, डोरां मांय पोयनै माळा बणायनै गळा में लटकावे के हाथ में राखै।
२३.	जुकाम-खांसी	गोयल बेल री जड़	गोयल री जड़ घोटनै पावै तो घड़ीभर मांय आराम मिळै। तोळा सूं बत्ती नीं लेवणी। खारी जै'र व्है।
२४.	लोही रांध री दस्ता	मरोड़ा फळी	मरोड़ा फळीनै घोटनै पावणी, पेट दूखणौ मरोड़ा आवणा, लोही राध री दस्तां सै ठीक व्है, दही छाछ चावल खावणा।
२५.	सोजन	रतन जोत रा पान, सरसु री तेल	इणरा पानडां रै तेल लगा'र ऊनां करणां अर जठै सोजन व्है वठै बांधणा।
२६.	ताकत वास्ते	ना'र कांटां री जड़, धोळी मूसळी, नरगुंडी, धावड़ा री गूंद	सगळा बाकर नै सुखायनै पीसे अर बिरोबर मात्रा मांय दूद रै साथै लेवै।
२७.	ताव-तप	अ. अडूसा रा पत्ता, सेतरी रा डांकळां अर नवजात पौधां री जडां	सगळा नै पांणी मांय उकाळनै सिनान करावै।
		ब. थोर रा पत्ता	थोर रा पत्ता पाणी मे उकाळै, पाणी फेंक देवै अर पत्ता री साग खवाड़ै। कैड़ौ ई ताव व्हौ जातो रेवै।
		स. नीबड़ा री अंतर छाल, नीम गिलोय अर कूट	तीन्यूं वाटनै पांणी साथै पावै तो ताव-तप जावै।
२८.	हाडकी टूटे	टीटा कंद (आलू जिसी धारीयां वाळी गांठ)	मिनख कै जिनावर री हाडकी टूटे जरै रोज उकाळनै अेक कप अेक टक पावै।

२९.	गोडा रौ दरद अर चामड़ी रा रोग	माल कांगणी रौ तेल	टीपरीयौ भरीयौ मालकांगणी रौ तेल दूध कै चाय साथै दसेक दिन पीवै।

डांम सूं इलाज :

गरासिया जंतर-मंतर सूं ई इलाज करे अर जड़ी बूटी सूं ई करै। तोई ठीक नीं व्है तो नस माथै डांम तक दैवे। डांम खास-खास अंगां पर अर ठांवी ठौड इज लागै। डांम लगावणियौ पैली वैमारी नै आछी तरीया समझै, मूळ रौ पतो काढै। डांम माथै कितो भरोसो राखै गरासिया इण औखाणा सूं सुभट लखावै -

'कै तो राखै रांम ने कै राखै डांम'

इणनै अग्नि कर्म, दाह क्रिया, डाम,सीळौ अर चपकौ लगावणौ ई केवै

विधि :

जठै डाम देवणौ व्है वीं ठौड पैली राख सूं टीकी लगायनै सैलाण करै। डाम खाखरा रै पानां री बीटणी, सूई, ठीकरी, गाबा री गोटी कै हळ वाणी आद ताती करनै रोग मुजब न्यारा न्यारा अंगां माथै दीरीजै। जैड़ी वैमारी व्है वैड़ौ डांम लागै। पेट अर कमर रा रोगां मांय मोटो डाम दैवणौ पड़ै। डांम दिया पछै वो पकाव झेलै जरै आकड़ा रा पीळा पानां रौ रस लगावै अर ऊपर खोपरा रौ तेल लगावै। डांम रौ दाग तो जीवै जितै रैवै।

जिनवरां री वैमारी में ई डांम देवै। इणारी चाबड़ी जाडी व्है इण वास्तै भाटौ, दांतरळौ, कै हळवाणी ऊंनी करनै चेपे। डांम नै गरासियां 'सीळौ' लगावणौ केवै।

डांम कठै देवणौ :

लुरकी खांसी (कुत्ता धांसी) व्है तो गळा री नाड़ माथै पळां रै पांन री बीटणी सूं डांम देवै। इणमें डांम जवार रा दाणां जिसौ व्है। इणनै 'झापेट्या' केवे। डांम में फगत ऊपरळी चाबडी इज बळै, ऊंडौ घाव नीं घालै। खाली चपकौ लगावै।

पोतवाळ्यां मांय पाणी भरीजै तो पुणचा पर अंगोठा कने तात सूं डाम देवै। जीमणा पोतवाळ्यां मांय पाणी व्है तो डावा पुणच्यां रै अर डावां रै व्है तो जीमणा पुणचा रै लगावै। खाली चपकौ लगावै।

'कवळ्या' (पीळीया) मांय सूंटी माथै ठीकरी सूं डांमै। काळजौ वधै तो कमर पर तीजी पासळी री हाडकी माथै डामीजै। माथौ दूखे तो आंख्यां रै भोपणियां (भंवारां) रै बिचै कै छेड़ा पर डांम लगाड़ै। पीड़ जिण कांनी व्है उणरै दूजी बाजू डांमै। ठीक नीं व्है तो हाथरी

चिटुडी आंगळी री नस माथै सूंई सूं डांमै। गुजराती (न्यूमोनिया) व्है तो छाती रै दोन्यूं कांनी ठीकरी ऊंनी करने चेडे।

कथा अर गीत सूं इलाज :

ताव भांत-भांत रा व्है। जियां कै अेक ताव थोडौ घणौ ताप दैयनै जातो रेवै। अेक ताव जोरदार धूजणी-छूटावै, अेक अेकान्तरो आवै, अेक हर तीजै दिन आवै वींनै 'तीजरौ' ताव कैवे। हर चौथे दिन ताव आवे उणनै 'चौथियो' कैवे। इणांरा न्यारा-न्यारा इलाज है पण अेक मिंतर सैंग ताव-तप मांय चालै -

'स्री मंत महाराजा धीराज स्री भविचरण विश्वनाथजी। रोगी रौ नांव....... निवास........ जात........ नै ताव अेकान्तरो/ तेजरौ /चौथीयौ वाचते परवाणै के आप वडा धरां पधार जावौ नीतर इस्माइल है सो जाणसी।'

केई वैमार्‌यां फगत टोटका सूं ई परी जावै। इणमें 'चणक' ई अेक है। इण टोटका मांय दो लुगायां हाथां मांय अेक मूसळ रा दोन्यूं मुंडा अपड़नै सवाल-जवाब करै अर जठै चणक पड़ी है मूसळ मेलानै गोळ फेरती जावै। आ क्रिया सात, इग्यारा कै कैइकीस वार करै। औ टोटकौ बासी आंगणै बिना कचरौ-बुहारौ-काढ्यां करै।

मूसल फेरती जाय अर नीचे मुजब सवाल-जवाब करती जाय

कांई अै चणक ?

कांई अै मणक ?

कठै चाली ?

खैर रै मगरे।

खैर रै मगरै कांई करसी ?

खैर री मूसळ ल्यासू ?

मूसळ सूं कांई करसी ?

चणक्या की चणक उतारस्यूं।

*

इणरौ दूजौ रूप भी चलै -

कै अै चणक ?

हा अै मणक ?

बाण्यां कै जावैली ?

जावूली।

घी गोळ खावैगी ?

खावूगी ।

चणक्या की चणक काढ़ेगी ?

काढूगी ।

अै तो दोय दाखलां नमूना सारूं नूदूयां है पण फेरू ई केई इलाज का'णी अर गीतां सूं गरासिया लोग करै। ज्यूं कै 'अेकातरे ताव री कथा' आद।

जड़ी बूटी और देशी चिकित्सा

गरासियों के अशिक्षित होने से अज्ञान, अंधविश्वास, कुपोषण और स्वच्छता की कमी से अनेक रोग उत्पन्न होते है और बीमारी बढती है। दरीद्रता भी इसमे एक कारण है जिसके कारण यह लोग संतुलित और पौष्टिक आहार नही ले पाते। जंगल और पर्वत के निवासी होने से अनेक रोग लग जाते है। ज्वर, मलेरिया, दाद, खाज खुजली, फोड़ा-फुंसी, अर्बुद, वमन,अतिसार, नारू आदि अधिक होते है। गंदा पानी पीने से अनेक रोग लग जाते है। यह लोग देवस्थान, 'बूझ' भोपो के भाव, जंत्र मंत्र-तंत्र, झाड़-फूंक, टोटके, डोरे, ताबीज, 'उतारणा', 'आवारणा' आदि में आदिकाल से विश्वास रखते है। अंधविश्वास के कारण रोगो में वृद्धि होती है। साथ ही ये लोग परंपरागत चिकित्सा में भी पूरा विश्वास रखते है। पर्वतीय आँचल के पूरे जानकार होते है। देशी जडी-बूटी का इन्हे अच्छा ज्ञान होता है। यहाँ तक भी पूरी जानकारी रखते है कि कौनसी जड़ी बुटी किस स्थान पर उपलब्ध है। यों पर्वतीय आँचल में औषधालयों का प्रबंध भी कहाँ है ? इसलिये चिकित्सा के लिये जाय तो जाय कहाँ ?

अग्नि कर्म से दाग कर भी यह लोग उपचार करते है। किस रोग में किस अंग पर किस जगह, कैसा और कितना अग्नि कर्म (दाह कर्म) करना, इसका पूरा अनुभव होता है। अपने स्वयं के पेशाब (शिवाम्बु) और गोमूत्र से भी इलाज करते है। महुआ के फूल, बीज तथा छाल से भी इलाज करते है। देशी इलाज के कुछ उदाहरण निम्नांकित -

क्र.सं	बीमारी का नांव	जड़ी-बूटी	दवा काम लेनावारी विधि
१.	ज्वर	सिलूटी अर अडूसा की जड़	दोनो को कूट पीस कर यह क्वाथ उबाल कर दिन में तीन बार पीलाते है।

२.	बांझ स्त्री का	कटेरी की जड़	कटेरी की जड़, छाल गोधृत में उबाल कर मासिक धर्म के नवमें दिन पिलाने से गर्भ रहता है।
३.	गर्भपात हेतु	जंगली रोहिणी बूटी	आधापाव (१२५ ग्राम) जड़ और छाल किलो एक पानी में उबाले, चतुर्थांश रहजाय तब गुड़ मिला कर पिलावै।
४.	पागल कुत्ते का विष	अरडू, तूतार, सूखा गलका, आक का दूध, नीम तथा काटोल के पत्ते	अरलू की छाल, काली त्रिटी और तूतार पाव भर (२५० ग्राम) पानी में मिलाकर पिलाते है और घाव साफ करके सूखी गलका को दूध के साथ लगाते है। नीम के बीज और कटोल के पत्ते भी गर्म जल के साथ पिलाते है।
५.	सर्प का विष	नागरवेल, अंकोर, ककोरी, अरीना, चिद्रेक, धतूर, आक तथा केर	इन सबकी जड़ों को कूट-पीस कर मिलाकर दंश पर लेप करते है और धृत में यही औषध पिलाते है। वमन होने दे, रोके नहीं। पानी नही पिलावै तथा नींद नहीं लेने दे।
६.	बिच्छु का विष	स्नुही का दूध, प्याज, लाबुडा री जड, ओक, आक तथा पलाश	स्नुही का दूध, 'लाबूडा' की जड़ ओकड़ा और आक का दूध तथा प्याज का छिलका सूंघाना।
७.	अस्थमा	'हाथन' की जड़	'हाथन' की जड़ का स्वरस निकाल कर दिन में दो बार लगातार दस दिन तक पिलाते है।
८.	नाक्सीर	नादारू	नादरू का स्वरस निकालकर ललाट पर लेप करते है।
९.	टूटी हाड्डी	महुए के फूल	जानवर अथवा मनुष्य हड्डी टूट जाती है तो महुए के फूलो का क्वाथ पिलाते है।

१०. अर्श	कन्तेर की जड़ और अरेठा की जड़	दोनो को घोट पीस कर चने के बराबर गोलियां बना कर दिन में तीन बार, पन्द्रह दिन तक लें।
११. एग्जिमा	डूम और डोड का गोंद, अंजीर के पत्ते	तीनो को कूट पीस कर दद्रु एवं अग्जिमा पर लगाना।
१२. घाव विशेष	कोरजी, लहसुन के पत्ते अफीम	सबको कूटपीस कर लुगदी बना कर बांधते है।
१३. घाव	अमीना गौंद, गूगलु के सूखे पत्ते, नीम की छाल, बांस का सूखा चूरा, खेजड़ी (शर्मा) का गौंद और आक की छाल	इन सबको कूट पीस कर क्लक बना कर घाव पर बांधते है।
१४. अर्बुद, फोड़े-फुंसी	काला धतूरा, गिलोय, भूं-आंवला, कसूवार की पत्तियां	सबको कूट-पीस कर लुगदी (कल्क) बना कर पीड़ा पर बांधे।
१५. चर्म रोग	महुए के फूल और छाल, बीजो का तेल	महुए की छाल घिस कर लगानी और इसके बीजों के तेल की मालिश करनी।
१६. घुटनों का दर्द	आक के पीले पत्ते, राई, मुर्गी के अण्डो के छिलके तथा स्फटिक	राई, फिटकरी और अण्डे का छिलके समभाग घोट बांट कर घुटनों पर लेप करते है और आक के पीले पत्ते गर्म करके गर्म-गर्म बांधते है।
१७. विष कांटा अथवा एडी का दरद	रूंगड़ी या जलौक	जहाँ दर्द है वहाँ रूंगड़ी अथवा जलौक लगाते है।
१८. सींग सीधे करने	हलदी और गैंगची	दोनो घोट कर पशु के सींगो के लगाने से सींग इतने मुलायम हो जाते है कि उन्हे मोड सकते है। हड्डी भी शीघ्र जुड़ती है।

१९.	कुक्कर खांसी (हूपिंग कफ)	जिस कुँए में आदमी मरा हो उसकी 'धेड' की 'ठीकरी' और शराब	घेड़ की 'ढीकरी' गर्म करें जब वह लाल हो जाय तब शराब की भरी कटोरी में डाल कर बुझा दें और वह शराब पिलाते है।
२०.	गलगंड या पेट में गांठ	'लूणीये' की जड़ (एक जडी बुटी जिसकी जड़ गांठवाली, पत्ता टीमरू जैसे)	लूणीया की जड़ पानी में घोट-छांन कर पिलानी एक एक कप एक सप्ताह पिलावे। तेल, गुड़, खटाई, मिरच, आदि का परहेज रखना होता है। फीका खाना। यह रक्त वर्धक भी है।
२१.	नजर लगना	पीपल-वल्लरी (पीपल से पत्ते)	बच्चों को नजर लग जाय और सिरमें फोड़े-फुंसी हो तो इसके पत्ते घिस कर लगाते है।
२२.	पांडु रोग	'कांटी सेरीया' के पंचांग	इसके टुकडे करके, धागे में पिरो कर माला बना कर गले में या हाथ में राखते है।
२३.	जुकाम-खांसी	गोयल वल्लरी की जड़	गोयल की जड़ पीसकर पिलाते है, घंटेभर में आराम मिलता है। एक तोले से अधिक नहीं दी जाती। अत्यन्त कडवी होती है।
२४.	रक्तातिसार	मरोड़ फली	मरोड़ फली घोट कर पिलाते है। उदरशूल रक्तातिसार ठीक होता है। खाने में दही, छाछ चावल देते है।
२५.	शोथ	रतन जोत के पत्ते और, सरसों का तेल	रतन जोत के पत्तो पर तेल लगा कर गर्म करना और जहाँ शोथ (सोजन) है उस जगह बांधते है।
२६.	शक्तिवर्धक	शतावरी, सफेद भूसली, नरगुंडी और धाव का गोंद	समस्त सामग्री सुखा कर पीस के और समभाग मिलाकर दूध के साथ ले।
२७.	ज्वर	अ. अडूसे के पत्ते, सेतरी, नवजात पौधो की जडे	सबको पानी में उबालकर स्नान करवाते है।

		ब. स्नुही के पत्ते	पानी में उबाल कर पानी फेंक दे और पत्तों की सब्जी खिलाते है। कैसा भी ज्वर हो जाता है।
		क. नीम की छाल, गिलोय और कुटज	तीनो को पीस कर पानी के साथ पिलाते है तो ज्वर जाता है।
२८.	हाड्डी टूटना	टीटा कंद (आलू जैसी धारीदार गांठ)	आदमी अथवा जानवर की यदि हड्डी टूट जाय तो इसे घोट कर एक कप रोज एक टाईम पिलाते है।
२९.	घुटनो का दर्द और त्वचा रोग	माल कांगणी का तेल	छोटा चम्मच भर माल कांगणी का तेल दूध अथवा चाय के साथ दस दिन तक रोज पिलाते है।

अग्नि कर्म चिकित्सा :

गरासिये लोग जंत्र-मंत्र-तंत्र से भी उपचार करते है और देशीय परंपरागत चिकित्सा (आर्यर्वेदाधार पर) भी करते है, फिर ठीक नहीं हो तो नस पर दाह क्रिया करते भी है। यह अग्नि कर्म विशेष अंगो के विशेष स्थानों पर ही किया जाता है। अग्निकर्म विशेषज्ञ सर्वप्रथम रोग का सही निदान करता है, कारण का पता करता है। फिर कहाँ, कितना, कौनसी दाह क्रिया करनी है, निश्चित करता है। 'डांम' पर गरासिये कितना विश्वास रखते है, उनकी इस कहावत से स्पष्ट है -

'कै तो राखै राम, नै के राखै डांम'

इसे अग्निकर्म, दाह क्रिया, डाम, सीळा, और चपका लगाना भी कहते है।

विधि :

जहाँ 'डांम' देना है वहाँ राख आदि से बिन्दु लगा कर चिन्हित करते है। दाह कर्म पलास के पत्ते के निपल से, सूई, 'ठीकरी', कपडे की गांठ या हलवानी आदि से, गर्म करके रोग के अनुसार अलग-अलग अंगो पर नस ढूढ़ कर डांम देते है। अग्नि कर्म के पश्चात वह पकता है तब उस पर आक के पीले पत्तो का स्वरस लगाते है और ऊपर नारियल का तेल लगाते है। दाह कर्म का निशान तो आजीवन रहता है।

जानवरों की बीमारी में भी 'डांम' देते है। इनकी चमड़ी मोटी होती है इसलिये पत्थर, हसिया, हलवानी गर्म करके लगाते है। 'डांम' को गरासिया 'सीळौ' कहते है।

डांम' कहां दिया जाता है ? :

अलग-अलग रोगो में अलग-अलग स्थानों पर 'डांम' लगाते है जैसे 'कूकर खांसी' हो तो गले की नस पर पलास के पत्ते की 'निपल' से 'डांम' देते है। इसमें 'डांम' जवार के दाने जैसा होता है इसे झपेट्या कहते है। डांम से केवल ऊपर की चमड़ी जलाते है। गहरा घाव नहीं किया जाता। केवल चपका लगाते है ।

पांडुरोग में नाभी पर मिट्टी के घडे के टुकडे से 'डाम' लगाते है। लीवर बढता है तो पीठ पर तीसरी पसली की हड्डी पर दाहक्रिया की जाती है। सिर शूल में नेत्रों के भौहों के बीच अथवा भोहों के अंतिम छोर पर 'डांम' लगाते है। जिधर दर्दहो उसके विपरीत दिशा में अग्नि कर्म किया जाता है। यदि ठीक नहीं हो तो हाथ की सबसे छोटी अंगुली की नस पर 'सूंई' से दाह क्रिया करते है। 'न्यूमोनिया'हो तो सीने के दो ओर 'ठीकरी' गर्म करके 'डांम'लगाते है।

कहानी और गीत से चिकित्सा :

ज्वर अनेक तरह के होते है। एक ज्वर मामूली ताप दे कर चला जाता है, तो एक जोरदार कंपकंपी देता है। एक 'एकान्तरा' ज्वर एक दिन छोड कर आता है। एक ज्वर हर तीसरे दिन आता है, इसे 'तिजरा' ज्वर कहते है। एक हर चौथे दिन आता है उसे 'चौथिया' ज्वर कहते है। परन्तु एक मंत्र सभी प्रकार के ज्वरों के इलाज हेतू प्रचलित है -

'श्री मंत महाराज धीराज श्री भविचरण विश्वनाथजी। रोगी का नाम....... निवास........ जात........ को ज्वर अेकान्तरा/ तिजारो /चौथीया पढते ही आप बड़े घर चलें जाओ, नहीं तो 'इस्माइल' है, यह ज्ञात रहे।

कुछ रोग केंवल मात्र 'टोटके' से ही चले जाते है। इसमें 'चणक' भी एक है। इस टोटके में दो औरते हाथ में मूसल के दोनो मुँह (छोर) पकड़ कर प्रश्नोत्तर करती है और जहाँ 'चणक' पडी है (दर्द है जहाँ) मूसल गोल घुमाती रहती है। यह क्रिया सात, ग्यारह या इक्कीस बार करती है। यह प्रातः बिना झाडू लगाये करती है।

मूसल घुमाती जाती है और निम्नांकित प्रश्नोत्तर दोनो करती रहती है -

क्या ए चणक ?

क्या ए मणक ?

कहां चाली ?

'खैर' के पर्वत।

'खैर' के पर्वत क्या करेगी ?
'खैर' का 'मूसल' लाऊंगी ?
'मूसल' से क्या करेगी ?
'चणक्या' की 'चणक' निकालूंगी।

*

इसका एक दूसरा स्वरूप भी प्रचलित है -
क्या ए 'चणक' ?
हा ए 'मणक' ?
बनिये कै जायेगी ?
जाऊंगी
घी गुड खायेगी ?
खाऊंगी
'चणक्या' की 'चणक' निकालेगी ?
निकालूगी।

यह तो उदाहरण नमूने के रूप में प्रस्तुत किये गये है इसके अतिरिक्त अनेक उपचार कहानी और गीतों द्वारा गरासिया करते है। जैसे 'एकांतरे ताव री कथा'।



जंतर-मंतर

~ ~ ~

जंतर-मंतर

जंतर-मंतर मा गरासिया रौ भारी भरोसो। लोक धारणा है के हरेक गरासियो जादू-मंतर मा उस्ताद व्है। आ विद्या मिनख अर लुगायां दोन्यूं जाणै। घणखरा मिनख तो इणनै भला सारू ई काम लेवै पण लुगाया नुक्साण पूगावण सारू ई काम लेवै क्यूंके लुगायां सुवारथ अर ईड-'इर्षा' री भावना घणी राखै। इण 'तांत्रिक' लुगायां ने तीन भागां मा बांट हका -

१. डाकण

२. मैली

३. स्यारी

अै लुगायां दूजी लुगायां, टाबरां ने के जिनावरां ने लागे अर रै-रै ने तळै। डाकण-दूजी लुगाई ने डाकण ई बणावै, आपरी करामत सिखावै अर आपरी जमात वधावै।

पूरो आदिवासी समाज ई अनोखो। इणां मा अलेखू लोक विस्वास चालै जिणनै आपां अंधविस्वास कैवां। परलोक री पण केई बातां इणां मा चालै-आतम रा चौरासी लखरा चक्करयि, अलेखू जोनियां मा जलम, प्रेतगति, पितरगति, चुडैल गति आद केई मानीतावां है। बैमारयां री वजै आज ई अै लोग देवी रो कोप मानै। भोपां गे भाव (भावाविष्ट,घूणता) देखण जोग।'अलौकिक' आतमावां परगटे अर 'गोडलो' रै जरिये दुख-दाळीदर मेटे। झाड़ा-झपटा, जंतर-मंतर-तंतर, जादू ,टूणां टोटका इणांरी जिन्दगी रा जरूरी अंग। टांबरा सूं लगार डोकरां तक री सगळी बैमारयां झाड़ा-झपटा सूं इज ठीक करै। झाडा-झपटा बुहारी, झाडू, नीबड़ा री डाळी, मोर पांख रौ झाडू आद सूं मंतर जपता थका झाडू अर रोगी रै फूंक मारतो रेवै, इण वास्तै इणनै 'झाड-फूंक' केवै।

जाब्तो (रिक्सा) करण रो मंतर :

हर हमेस रात रा सूवती वेळा आपरी रिक्सा खातर रोज ओ मंतर बोले 'सोट मोट गुरू री ओट, गुरुजी वचावै जन री चांट।' - पछै निरभै सोवै।

सस्तर बांधण रौ मंतर :

तरवार, खाण्डो, बंदूक, तीर-कबाण आद किण ई अस्तर-सस्तर ने बांधण रौ अजूबो मंतर है। इण मंतर सूं बंध्या पछै वा सस्तर-पाती काम नीं करे, धार चाले इज नीं।

धार-धार फूल, धार-धार बांधू
अेक इज वार, मारी बाधी नीं बंधे
हाथी बांधू हथणी बांधू
बांधू-बांधू अेक इज वार
मारी बांधी नी बंधे तो
जल-पवन रा वासा (वाचा)
धार-धार फूल, धार धार बांधू
अेक इज वार, मारी बांधी नीं बांधे
तो चांद-सूरज री वासा (वाचा)

मूठ फेंकण रौ मंतर :

'आकास लोक री दरोवली' पताल लोक रा बाण। मूठ वाऊ मसाण री जे निकाल जावै पिराण। नरसिंघ वीर नडो[१] तोड़े तोई काळजा खाय।'

मूठ मंतर दूजो :

कमोई[१] का कोमठा[२] अरद[३] का बणाऊ तीर। मूं जादू अदीतवार चलाऊ, चोट पाडू[४] डाटू[५]। मूठ सबद मुठी सूं बणियो। अेक मूठी भरया धांन मूठी मा राखे अर उणनै जादू-मंतर सूं मंतरै अर जिणनै नुक्साण पूगावणौ चावै वीं रौ नांव लेनै फेंके। मूठ ई केई जात-भांत री -

१. झाट मूठ : इण मूठ सूं सिकार अकड़ीजनै करडौ पड़ जावै अर दातौर पड़े पीड़ा व्हे। घालयौडी कौळ-कवळ पूरी हुया पछै पाछो निरोगो व्है अर असर जातो रेवै।

२. नजार मूठ : इणरै असर सिकार रै डील माथै मोटा-मोटा फालका, छाबका, मस्सा कै गांठां व्है जावै।

३. झालकी मूठ : इणरै असर सूं सिकार ने लोही री उलटियां व्है।

४. हूक मूठ : इणनै हूक मूठ इण वास्तै कैवै के सिकार दन दन हूकतो (सूकतो) जाय अर भंवळ आवै, धूजणी छूटे अर कमजोरी आवै।

५. तुरत मूठ : आ मूठ सगळी मूठां सूं खतरनाक है। इणमें खास कौल मुद्द घालीजै, की पल, की कलाक, कीं दनां, कीं मीनां कै कीं बरसां री कौल घालै। इण 'अवधि' मा मरणो पड़े। आ मारक मूठ व्है। जठा तांई 'दस देवला' सूं के किण ई दूजी 'विरोधी' मूठ सूं ईरौ इलाज टैम माथै नीं करै तो वींनै मरणौ इज पडै।

जद कोई गरासियो आजाणचक मर जावै के सगतिहीण व्है जावै के सगळां डील मा

जळण-बळण व्है तो वे आ मानै कै मूठ रो असर है, वीं कारण कस्टीज्यौ मानै। मूठ रै परभाव सूं रूंख तक सूख जावै, भाटां-चाट फाट जावै, नाळां-खाळां अर निवोर रौ नीर सूख जावै। मूठ चलावणी गरू, चेलां नै सीखावै। गरासिया इणमें भरोसो राखै भारी। मूठ अेक ठौड सूं दूजी ठौड उडने जावे अर सिकार रे लागे। जिण भांत अेक माटी रौ मंतरयौड़ौ दिवलो मंतर रै पांण आभा मा जातरा करै अर जिणनै नुक्साण पूगावणौ चावै वींनै पूगावै, इण इज भांत मूठ मेलीजै। अैड़ी मूठ जिणरै घेर जावै तो तीन वार उणरै नांव सूं हेलो पाड़ै। गर'जे पाछो बोलनै पडुत्तर नीं दैवै तो वा मूठ पाछीं फेंकणिया 'देवला' कनै परी जाय, जिण मेली है। 'देवला' उणनै किण ई रूंखड़ा कै चाट माथै मोड़ नै फेंके अर नस्ट करै। कदैसीक सिकार जाणकार व्है तौ उण मूठ नै दूजा घण महताऊ मंतर रै जोर सूं पाछी फेर दैवै अर वीं 'देवला' कनै पाछी पूगावै जिण मूळ रूप सूं मेली ही। जे आगलो धणी ताकतवर व्है तो मूठ रौ नास पण कर हकै, नीतर वा मूठ उणरौ खातमौ कर दैवे।

मूठ रौ इतियास :

गरासिया बतायौ कै 'गणपति महाराज' इज पेलपोत मूठ रा जाणीता अर जामी हा। अेकर गणेसजी कोप्या अर देवियां माथै मूठ फेंक दीवी जिणसूं वियांरौ रथ ठेट पताळा पूगौ। जरै देवीयां 'धीरीया' भील नै तेड़ायौ, उण मूठी देखने ओ भेद खोळ्यौ। जद देवियां गुजानन्दजी नै पाछा राजी कर्‌या जद उणां मूठ पाछी फेरी। मूठां भांत-भांत री व्है अर साधना करण री आलेखू विधियां है। सीखणीया घरपेला लीला झाड़ पर फेंकने असर देखे। रूंख सूख जावै अर थोड़ीक ताळ पछौ लीलो व्है जावै। पाकी मूठ झट असर करै। मूठ काची जद रेवै कै साधना सिद्धि मा कसर रैय जावै। मंतर रै पैली हड़मानजी री आंण दैवे कै आप मूठ-मंतर पूरो सिद्ध नीं करयौ तो आपनै माता सीता रै पति व्हैवण रौ, राम रौ माथौ बाढ़ण रौ अर लिछमण री घात करण रौ पाप लागेला। औ हड़मान 'वीर' व्है। कोई इणनै पंचमुखी हड़मांन मानै। जति, राजा, भजनी अर सन्यासी माथै अर धरम-करम वाळा मिनख पर मूठ रौ असर कोनी व्है।

गरासियां कनै दोय मारक विद्या है - 'मूठ' अर 'कामण'। ताबड़-तोबड़ मारण सारू 'मूठ' अर रिब-रिबनै मारण खातर 'कामण' काम में लेवै। मूठ मा मंतरयौड़ा उड़द फेंके तो कामण मा 'पूतळौ' बणाइजै। दोन्यूं गुपत विद्यावां है। चौड़े कियां इणरौ असर कम व्है जावै अर दरेक कोई 'दुरूपयोग' कर हकै। इण वास्तै अठै पण आधी-अधूरी जाणकारी देय रयौ हूं।

भादरवा (कोटा) थान पर मूठ री झपट में चढ्यौड़ा नै देवी बचावै। अेक आदिवासी बतायौ कै अेकर अेक राजपूत जीव रा उकळाया दस बा'रा बरस रा छोरा नै लैयनै इण

थान पर आया। छोरा रै सरीर में जळण-कुळण व्हैती ही, वो तड़फतौ हो। भोपो कह्यौ कोई मूठ दूजा रै फेंकी ही पण वचमें रमतोड़ौ झपटिज नै झड़पीजग्यौ। भोपों छोरा रा गोडां चूस्या अर आपरे मुंडा माऊं उड़द अर मूंग थूक्या। इणी भांत खूणियां अर गळा माऊं चूसनै उड़द अर मूंग काढ़्या। सांमी भोपां री थान हो जठै दारू री धार देवाड़ी। देखतां-देखतां टाबर हंसतो-खेलतो पाछो व्हीर व्हियौ। औ जोर रौ चमत्कार हो।

मोवनी मंतर :

सै मंतर सिखाया पछै छेलो मंतर सिखावै मोवनी मंतर। केई मंतर है जकै इण काम में लीरीजै। इणसूं आंख्यां, कांन अर नाक मा छळ पैदा करै अर औ परभाव मंतरयौडी चीज ने सूंघण सूं, देखण सूं, सुणवा सूं, हाथ लगावा सूं कै - खावण सूं व्है।

१. काजळ : सनिचर कै अदीतवार री रात ने चमेली रा तेल अर अमरबेल रा तेल मिलायनै नैनीक वाटकी मा घी मिला' त्यार करै। इण काम मा अेक इज रंग री गाय रौ घी लैवणौ जरूरी। इणसूं पाड़्यौडी काजळ मंतरनै आंख्यां में काढै अर किण ई लुगाई साम्ही जोवै, दोन्यूं री अेक निजर व्हिया पाछै वा लुगाई उण माथै रीझ जावै।

२. मंतरयौड़ी कंकू : अेक आंधलौ हांप (बोगी) जिणरै दो मुंडा व्है, राता गाँबा पर कंकू री सात नैनी-नैनी ढिगल्यां बणा'र वी हापनै वीं माथै लुटण द्यौ। हांप जाय परो जरै वीं कंकू नै भेळो करेनै पुडी बणा'र मेल दैवणी पण आ 'क्रिया' सनिवार नै इज व्हैणी चाइजै। पछै सात दन इणनै मंतरे। इण मंतरयौड़ा कंकू नै जे किण ई लुगाई माथै न्हाखै तो उणनै वीं मिनख कनै आवणौ इज पड़ै। गरासियां मा अैड़ौ भरोसो है।

३. मंतरयौडी सोपारी : अेक मंतरयौडी सोपारी लुगाई ने आखी गिटकाय द्यो। सोपारी पाछी मळ माऊं बारे आवै जद वींनै धोय-धवाय नै पाछी मंतरे। आ सोपारी जिण मिनख नै खवाड़े वो उण लुगाई रे लारे 'दीवानो' व्है जावै बतावै। जिण गरासिया रै घणी बहुवां (बहु पत्नियाँ) व्है वे सौतां इणनै काम लेवै।

४. जंगळी पुसप : फूल मंतरनै कांनो मांय कै जेब मांय राखै। इणरी सुगंध सूं आगली लुगाई कै मिनख पर रीज्या बिना नी रैवे।

५. हांप रौ मंतर : हांप रै मंतर री साधना-सिद्धि चन्द्र ग्रहण कै सूरज ग्रहण में देवस्थान कै नीवोर रा जळ मांय बैठने करीजै। दरेक पूनम, अमावस कै होळी-दिवाळी री रातनै इण विदया नै दोहराय नै ताजी करै। आदिवासियां रै मंतरां मा हड़मानजी अर गुरू गोरखनाथ री आंण घलीजै। हाप उतारवा रौ मंतर हेटे मंड्या मुजब -

काळी हांप / गोरो हांप / रातो हांप / उतरे तो उतारूं नीं उतरे तो मारूं / गुरू गोरखनाथ री दुवाई लगाऊं नारूं मंतर / धरती मात रो जाप करू / चांद-सूरज नै धोक लगाडूं।

गरासिया मांय आ विद्‌या घण महताऊं अर परभावी। जावतड़ा हांप माथै मंतरयौड़ा कांकरां फेंके तौ वींनै है -जठे-रो-जठै ठंट कर देवै। हांप नै केई वाळ हांप खादोड़ा रै डील मांय बुला'र बंतळ करावे, वाचा दिरावे। पंण मांय लायनै वीं सूं सवाल-जबाब करै।

बिच्छु रो मंतर :

सोनोर नै पादोर, वे चरवा गी
चरता चरता गोबर कीधू
गोबर में बिछूडी ब्याई
दस राता दस काळा
आगल चोर - पूठे मोर (डंक)
उतर बिच्छु एक है चोर
नीं उतरे तो मा'देव री आण
मारे उतर्यौ नीं उतरे तो
मा' देव री वाचा
अमीयादे री वाचा
वाचा चूके तो ऊभो हूके

बिच्छू री जै'र उतारण सारू धूप अगरबत्ती करने इण मंतर रो जाप करता हाथ फेरे अर फूंक देवै, बिच्छू उतरै पण पैली इण मंतर ने सिद्ध करणी पड़े।

डाकण भूतण निजर-टोकार : पै' ली गूगळ री धूप करने रोगी रै मुण्डा पर हाथ फेरे अर रोज संझ्यां रै ठमौरे हेटे मंड्यौ झाड़ौ न्हाखे -

'मा'देवा री वाछा लीगे थनै, उतर जाईजै
बारै निकळ जाइजे।'

लगोलग दो अदीतवार तांई औ करै जरै नक्की ठीक व्है।

पवन लाग जावै, झपट में आय जावै जिणसूं ताव तप आवै, उल्टी व्है तो गूगळ री धूप करनै, चीपटा सूं धरती री धूड़ जळ मा न्हाख नै वो पाणी पावणौ, अमरवेल नै घोट-वाट नै वींरो रस काढनै पावणौ, चौकस ठीक व्है।

अेक नैनाराम गरासियो इंछा मुजब फळ री प्राप्ति सारूं ताबीज बणा'र देवै। चोर अर दोषी नै अपड़ा री विदया ई इण कनै बतावै।

कारज सिद्ध सारू : आखा मूंग, राख अर मारग री धूड़ रळा'र मूंग हथाळ्यां मा मसलतो रेवै अर मंतर जपतो रेवै। मंतर भणवा रै साथै साथै हाथां पर फूंक मारता जावै।

इणसूं अै लोग मन मुताबिक अर इंछा मुजब कारज सिद्ध करै।

इण ई तरै ताबीज ई भरीजै जिणसूं रोग अर चोट सूं रिक्सा करै अर मूठ आद दूजा मंतर पछै इण माथै नी चालै।

टोटका : टोना-टोटका दरेक गरासिया थोड़ा घणा जाणै। काळा कामण री क्रियावां, 'सम्मोहन', उच्चारण, 'विद्धेषण', मूठ आद रा घणखरा जाणीता। भूत-परेत, डाकण-भूतण काढण रा झाड़ा-झपटा, डोरा-मांदळयां करणा घणानै आवै। इणांनै काढण रा दोय तरीका-अेक तो वीं आतमा री मुराद पूरनै अर दूजी वींनै कूटमार करने, मंतरा सूं काबू करने काढै। भोपां इणमें रिप पड़या अै लोग नुगरी अर सुगरी दो तरै री आतमावां मानै।

वीर अर सिकोतरियां : अै अैड़ा तांत्रिक पिसाच व्है जको नीबू अर उड़दां मा रेवै। अर टोळां मा रेवै। इण वास्तै उड़द कै नीबू मंतरै नै जिण घर में मेल देवै वठै भांत-भांत रा उदंगळ व्हैवता रैवै। गरासियां री धारणा है कै अै परमेसर रै मैल सूं परगटिया इयानै 'वीर' कैवे। इण वीरां ओरूं अलेखू वीरां नै जळम दियौ। गरासिया इणानै सिद्धि-साधना सूं आपरै वस में करै अर आपरी इंछा मुजब इणानै हुकम दैयनै काम कढावै। आ विद्या घणी जूनी नै जाणीती।

पूतळा-सिकोतरा : आटा री पूतळी घड़नै 'वीर' बणावै अर जिण घर आंगणां मांयै जमी दीठ करै वठै कलेस पैदा करै। जठा तांई घर में रेवै रगड़ा-झगड़ा, रोळा अर अस्यांति रैवे। नैरात सूं कोई कांम नी कर सकै। कपड़ा ई वैरी व्है जावै।

डाकण सिकोरतरी : वीर अर सिकोतरा-सिकोतरी कुकरम बिना नीं सधे। आ गंदी क्रिया है। डाकण रा पांच वीर व्है, वे लुकायनै राखै। वा जिणनै आपणै जिसी डाकण बणावणी चावै वींनै छानै चुरकै लखण देवै जको उणनै खुदनै ई ठाह कोनी पड़ हकै। वा किण ई बात रै मिस हुंकारौ भराय देवै। जिकौ डाकण अेक सौ भख लेवै वा सिकोतरी बण जावै। लालबाई अर फूलबाई सिकोतरियां है। लालबाई लाल चूडी पैरे अर फूलबाई फूल माळा राखै। सिकोतरी 'भाव' मिनख नै इज आवै, लुगाई ने कोनी आवै। सिकोतरी खुद नीं परगटै, दूजी रै 'माध्यम' सूं काम काढै।

इणनै सिद्ध करणनै साधना सारूं मसाण में कै हड़मानजी रै थान जावणौ पड़ै। लाल बाई रै लाल अर फूलबाई रै धवळौ बटको अर फूंदी चढावणी पड़ै। कुवारिया, चदेरिया अर बामणिया गांमां मांय इयांरा थान थापन करयौड़ा।

मोगी : अेक लुगाई जकौ काळौ जादू-मंतर करै अर जे वा मर जावै तो पछै वा मोगी अर सिकोतरी बण जावै। आ 'खत्री' कै 'मालेरी' रै नौकर ज्यूं काम करै अर हुक्म री तामील करै। इणारी साल में एक वार 'काळी काति' (कालि कार्तिक) पर पूजा करीजै।

भेळौ : (दयाळू आतमावां) अै 'संरक्षक आत्माएँ' व्है। इणांनै वाडका (पितृ आत्मा) ई कैवै। अै सादीव आपरै भगतां री मदद करै। परवार में खुसी लावै। खेतर माय उपज वधावै। परवार मा वधापौ करै। बिरखा करै। इणरौ फूल (उकेरयौड़ी मूरत) गळा मांय पैरे। झगड़ा मा वीर गति गियोड़ा उण झूंझारां नै याद करै अर उण रा बखाण करै। गरासिया सगळा 'भोपां' अर 'देवला' नै गाडै कोनी, बाळै।

लासण : अै लोग भारत री संस्क्रिति मुजब 'पूर्वजन्म' अर 'पुनर्जन्म' मा भरोसो राखै भारी। जिण बाळका री अकाल मौत व्है उणरै सरीर रै अंगां माथै काजळ कै कंकू सूं सैलाण करै। वो आइटांण आगला जळम मा वीं इज ठौड मिळै। इण निसाणी नै 'लसण' केवै। काजळ रौ काळौ नै कंकू रौ लाल रंग रौ सैलाण पड़ै। आ वात पतवाणियौड़ी है।

बोलमा पारी : दोह-माह (चमत्कार) री ठाह पड्या पछै वे बोलमा करै कै घेर मा सुख-स्यांति व्हीया मोगा री थान घर में थापन करैला। पछै भोपा नै पूछने मूरत बणायनै लावै। मूरत ऊभी, बैठी, खड्गधारी, घोड़े सवार अर भांत-भांत री बणै। आदमी री पूतळी धौळा गाबा मा अर लुगाई री राता बटका मा बिटौळनै लावै, औ रीवाज है।

मोगां री प्रतिष्ठा : मोगां (पूरबजी, पितर) री थरपणा रै पैली रातीजगो देवै। लुगाया मोगा री मै'मा गावै, जस रा गीतड़ा उघेरे। वीयां रै घण महताऊ कामां रौ लेखो लैवे -

पूरबजी आया मारी अळियाजी गाळियां
फूल बिखेरया चंपा कळिया ओ राज
फूल बिखेरिया चंपा कळिया ओ राज
पूरबज भल पधारिया

गीतड़ा रै साथै ढोलां रै ढमकै मोगां भोपां रै डील मा पंण में आवै । मोगा रै खास सौक री चीज रौ भोग भोपानै देवै जियां कै - बीडी, पान, अंतर, अमल, भांग, दारू, मांस, दूध अर चाय आद अर पूजा मा पांच पकवान, खजूर, अंतर, बाफियौड़ा चिणां, मरमरियां, नारेळ, कांच, कांगस्यौ, तीर कबाण आद चौकी माथै मेले। भोग रै वास्तै चूरमौ, चोखा, उदबत्ती, काचौ दूद, मक्की री फूली, रोटी अर दारू आद मेले। मात लोक री पूजा मा मै'दी, मजेठ, काजळ, सुरमौ, टींकी, फूंदी, लच्छा, कंकू आद मेले। पूरबजी री प्रतिष्ठा मा सवा मणी (चूरमौ) बणै अर खाजरू ई करीजै। दरेक बरस वैसाख कै काती री पूनम नै रातजगो दीरीजै। इण मोके भोपां नै भाव आवै अर बूझ व्है। कुटुम्ब कबीला वाळा आपरै दुख-दरद रै निवारण री अरदास करै अर मोगा अणरौ उपाव बतावै।

कामण पूतळौ : मोम काळौ, माटी, आटौ कै चीथड़ा रौ मिनख जैड़ौ नैनो पूतळौ बणावै। जिण मिनख नै कस्टा दैवणी वींरै नांव-ठांव अर वींरै माऊड़ी रै नांव री साधना

करणी पड़ै। आ साधना-सिद्धि चाळीस दिनां री व्है अर अधरात्या व्है। कामणगारो (तांत्रिक) सधना करता थका रोज रातरा इणै पुत्तागरै अंगां पर अेक तीर छोडै, तीर बरू रौ व्है। तीर री ठौड़ आजकाल आल पिनां ई काम लैवै। साधना पूरी व्हिया पछै पूतळी वींरै घर मा, गाम रै आगती-पागती, निवोर तळाव कै नाळा-खाळा मा गाडै। रूंखड़ा री जड़ियां मा ई गाड़ै। घर मा ई गुपत ठौड खोदनै गाड हकै। जिनावर आद नीं खावै इणरौ पूरो जाब्तौ पैला सूं राखै। मसाण कै कब्रीस्तान मा इण साधना री क्रिया कर्म व्है। ज्यूं ज्यूं वो पूतळी गळै, व्यूं व्यूं वीं मिनख रौ सरीर गळै, पीडा आद करै। जठै जठै पूतळा रै अंग में तीर, सूळ कै पिनां आद चुभोयौडी है, वठै वीं मिनखरै सूळआं चालै, सळीका अर चटीका मारै अर पीड़ा करै। कीं इलाज ई लागू कोनी व्है। कई जाणकार सूं पूतळी काढावै तो आराम व्है जावै, नीतर ठिकाणै लाग जावै।

कलवा : कलवा अैक अैड़ी पवन व्है जकौ कामणगारा नै इज निगै आवै। आ साधना मरयौड़ा टाबर माथै करीजै पण वींरी ऊमर नव मी'ना सूं बेसी कोनी हुवणी चाइजै। जण दन मरै अर जठै गाडयौड़ौ व्है उठै जयनै वींनै न्यूतै अर कैवै कै आज सूं मे थनै गोठ देवूला। इण गोठ मा थनै दारू पाऊंला अर मिठाई ई खवाडूला। गोठ अर साधना दो बीसी दन चालै। रोज रात रा साधै। रोज मिठाई अर दारू री बोतल ले जावै। मिठाई मा धवळौ मावौ चालै। साभना मांझल रात रा १२ बज्यां सूं दो बज्या तांई चालै।

इण वास्तै टाबर गाड्यौड़ी ठौड़ रै च्यारूंमेर औळै दौळै कार घालीजै अर कार कनै कामणगारौ बैठै। इणरै बैठक रै ई चोफेर कार घालै ताकि ना तो टाबर री लॉस नै कोई सगति ले जाय सकै ना तांत्रिक माथै कोई घात कर हकै। सरूपोत मा टाबर रै ऊपरा सूं माटी आधी करनै उघाड़ै। लॉस रै मुंडा मा दारू री धार चढावै अर मिठाई रौ कवौ देवै अर मिंतर जपतो जाय। पछै पाछी माटी न्हाखनै ढकै।

साधना रै दरम्यान केई रिमझोळां बाजै, ठुमकै सूं नाच सुणीजै, गीत सुणीजै, डरावणी आवाजां आवै पण सेंठौ रैवणौ पड़ै, जे डरप्या तो मरया। कलवा सध्या पछै वो हर हमेस तांत्रिक रै हाथ हजूर ऊभो रैवै, हुकम अदूली नीं करै अर मनसां पूरै। पण जे कलवा नै खावां-पीवां सूं सोरो नीं राख हकै तो वौ कामणगारा माथै पण घात कर हकै। अेकर अेक कलवै कामणगारा रौ काळजौ ई बारै काढ न्हाल्यौ अर लोही पी ग्यौ।

माल्या : जद टाबर मर जाय अर वीं री आतमा 'प्रेतयोनि' में परी जावै तो वींनै 'माल्या' कैवे। औ 'माल्यौ' टाबर-टूबरां नै इज लागै अर फोड़ा घालै। जिणनै लागै वींनै उल्टी-दस्तां व्है। मिंतरयौड़ा आखा सात वार रोगी रै ऊपरै अवारनै च्यारूं दसा में फेंकण सूं हवा जावती रैवै। आ विद्या सीखणनै नौरतां सूं कातकी पूनम तांई बा'रा मी'ना खैवट राखणी पड़ै। सिद्धि सारूं मसाण मा, बड़ला हेटे, हड़मानजी रै थान, कै भाखर री नाळ में बैठणी पड़ै।

स्यारा-स्यारी : कैवै सियारी कोई भूखी आतमा व्है, वा खास करनै धीरत खाय। सो गरासिया घी अठी उठी ले जावै तो घी मा तिणकलौ न्हाखनै ले जावै। इणसूं स्यारी रौ बक नीं लागै। इण विद्या सूं खासी भौ सूं धीरत खांच लेवै। अर घरपेटे री गुपत वातां रौ तकात पतो लगाय देवै।

कामणगारी लुगाया : सौ'ले विद्यावां मा इणनै ई अेक मानी है। इणरी साधना सूं हित अर अहित दोन्यूं काम सरै। पण घणखरी लुगाया इणनै 'अनिष्ट' सारू इज काम लेवै। लुगाया सुभाव सूं ई ईसकौ राखै पण दूजां सूं भलो काम चावै इणरी 'साधना' अर 'प्रयोग' गुपत रूप सूं छानै मानै करै।

इस्या 'प्रयोग' तीन भांत रा व्है - डाकण, मैली अर स्यारी। मैं सूं जोरदार डाकण, वीं सूं उतार मैली अर तीजै लम्बर स्यारी व्है।

स्यारी साधक लुगाई जठै ई दही विलोवतौ देखे तो तुरत फुरत आपरै घरै जायनै बिलौवणौ करबा लागै। अर आपरी तांत्रिक विद्या सूं धीरत, माखण, दूद, दही आद आपरी गोळी के हांडी मांऊं खांच लेवै। औ माल वा खुद खासै, बेचण सूं विद्या अकारथ जावै अर पाछी पण कोनी साध सकै। चतर लुगायां इण कला नै समझै अर आपरै ठांम मा गोबर घोळ देवै। इणसूं तांत्रिक रै ठाम मा वो गोबर आय जावै इणसूं वीरौ दूद माखण आद खराब व्है जावै। सैंग गुड़ गोबर व्है जावै। वा समझ जावै कै चोरी अपड़ीजगी अर आपरी तांत्रित विद्या सांवट लेवै। इणी भांत गाय भैंस दूवती वाळ बोबा पंपोळती पूंजाळती वैठी रैवै, सेर नीं काढै। इणसूं स्यारी रै दूद खेंचा रौ टेम टळ जावै, वा दूद नीं चुराय हकै। ताता दूद माथै ई स्यारी रौ बस नीं चालै।

मैली : स्यारी सूं बती जाणकार मैली व्है। आ दूद नै फाड़ न्हाखै। बा'रा बरस तांई रा टाबरां री आंख्यां खराब कर देवै। नैणां री जोत मगसी कर न्हाखै। गरासिया मा आ मानीता चालै कै जे गडक री अैटवाड़ौ खवराड़ै तो आ विद्या जाती रैवै।

पण आ हिम्मत बिड़ला ई करै चूंकी सैंग डरै। आ नक्की है कै अेकणवार वटळ्या पछै आ विद्या जाती रेवै अर पाछी भवैई हाथ नीं आवै चावै लाख जतन करो।

डाकण : डाकण जे किण ई नै लाग जावै तो ज्यारो छोडावणौ दोरो। केई लुगायां नै तो मरणौ पड्यौ। डाकण लागै वींरै अंग में पंण में आवै, बकै, गावै, पछाटीजै अर तरै तरै री फरमाइस करै। टाबरां रौ तो घड़ी भर मा गटकौ कर देवै।

डाकण री आपरी गुपत तांत्रिक सवारी व्है। इणरा इष्ट देव हड़मानजी व्है। इयांरै मुंडा आगै विद्या साधै। मंगळवार नै अधरात्या हड़मानजी रै थान जावै। वठै आपरी विद्या नै कारगर राखण वास्तै जतन करै। वचाव रा जतन करै, अर कळ-बळ पावै।

इणरी सवारी मगरमछ कै रीछ व्है। सवारी हाजर व्हिया पछै मां जाई (नांगी) व्हैनै, सवारी चढै अर सिकार में निसरै। ई ढाळै इणपर जे कोई री निजर पड़ जावै तो वींरौ 'अनिष्ट' व्हिया बिना नीं रेवै। हड़मांनजी रै देवरा सूं व्हिर व्हिया पछै, लारे जे कोई गाबा चुरावा री करै तो सवारी तुरत-फुरत थांन कांनी भाजे, गाबा रौ पैला जाब्ती करै।

डाकण जद दूजी नै आपरा लछण देवणौ चावै तो उणनै मिंतर सगति (डा डी डुच्च) रौ परवेस करावै औ परवेस आपरौ अैटवाड़ौ खवाड़नै कै वात-व्रात मा हुंकारो भरायनै दे देवै। बस हामल रै समचै लछण दे देवै। मिंतर री आ सगति 'वीर' कैवीजै। डाकण जद कोई रौ बिगाड़ करण खातर मिंतर जपै जद घर में अेकली रेवै। वीं टैम इणरी भूंडी भगती बिगड़ै, मूंडां सूं लारां टपकै, आंख्यां राती-पीळी व्है जाय, उणियारौ भम जाय।

डाकण, मैली अर स्यारी फगत जीवती लुगायां इज व्है अर लुगाया नै इज लागै। स्यारी नीं तो कोई रौ अैटवाड़ौ खावै अर नीं कोई रै भेळी बैठे, ताकि विद्या भस्ट नीं व्है। डाकण रै भेलो जीमण सूं कीं असर कोनी व्है। हां भिस्टौ खवाडै तो विद्या अकारथ जावै। अैडी लुगाई रै घर में कोई बेटी नीं देवै, नीं लावै।

डाकण रै वीर बावन व्है। जकौ वीर जिण तरे रौ दुख दैवै वीं नांव सूं इज औळखीजै - जिणसूं डील गळै वो 'गळ्यौ वीर' केवीजै। जकौ जलण पैदा करै वींनै 'जळणियौ वीर', धूजणी छूटै वीनै 'धूजणियौ वीर' आद कैवै।

जंतर-मंतर रौ महातम : गरासिया लोग भूत-परेत अर देवी-देवतावां मा घणौ भरोसो राखै। अलेखूं वैमारयां गै कारण पण इयां रै कोप नै इज मानै। इण वास्तै इयांनै तुष्टमांन कारण सूं निरोग व्है, अैडौ मानै। जादू-मंतर नवी पीढ़ी नै दैवे। अधरात्या मसाण जगावै, नागी हो'र साधना साधै, गडयौड़ा मुरदा नै बारै काढनै रूंखड़ै ऊंधौ लटकावै अर अेक जणौ, वीं मुरदा माथै पांणी कूढ़ै। साधक नीचे नागो बैठे जिं पर पांणी री धार पडै अर वो मंतर जाप करतो जाय, साधना सधती जाय। नदी मा नांगो पांणी मा बेठनै ई साधना करै। लुगयां पण मां जाई (नांगी) व्हैनै इणी इज तरै साधना करै।

घणा जणा प्रेम ब्याव में ई जंतर-मंचर सूं वसीकरण करै। वीं रौ मन आपरै कांनी खाचै। औ आपरी रिक्छा रौ साधन ई है। मूठ आद मारक विद्या है जिणसूं हत्या तक कर हकै। रोग रौ इलाज इ मंतर-तंतर सूं करै। भोपां पन्दह तरै रा व्है, उणां कनै आखा, तांबां रौ ढब्बू पइसो, माटी, कोलचा अर कंकू लैनै जावै। पछै भोपो 'पूरा' अर 'जगत' करै।

गरासियां री बस्ती मा बड़ता ई कोई देवी-देवतावां, मोगा अर मात लोक रा चीरा आद निगै आवै, इणसूं इणांरौ 'अलोकिक' विस्वास' सांमी आवै। दीतवार नै 'भाव' पड़ै, भेद बतावै अर सावचेत करै। 'अलोकिक' आतमा डील में आवै अर गोडलां (भोपां) रै

मारफत लोगां रा दुख मेटे, भेद बतायनै सावचेत करै। बुआरी कै मोरपांख रै झाडू कै नीबडी री डाळी सूं झाड़ौ न्हाखै।

हांप रै मंतर री साधना : हांप रै मंतर री साधना सारूं उजाळा पख मा गोगा पांचम नै कड़िया तांई पांणी में बेसनै करणी पड़ै। हांप नै मानवी डील में बुलावा रौ मंतर ई व्है। इण मंतर सिद्धं करणीया, नै ऊमर भर वास्तै आल, तौरी अर भिंडी छोड़णी पड़ै। चौमासा रा पगरखी नीं पैरै। 'रेड' पद्धती दांण भूखो रैवणी पड़ै।

जिणरै नाग झूमियौ उणरी लॉस झाड़का रै बांधनै लटकावै। औळे-दौळे लीपचूंप नै कुंभ-कळस मेलै। नीबडा रा छणगा (छोगां) सूं अेलम रै साथै झाड़ै। सांप मानवी भासा मा बंतळ करै। ठीक व्हिया पछै 'नवनाथ बाबा' जीमावै।

भेरूनाथ री साधना मा लूंग रौ धूप लागै। ७८ वाटक्यां मा दारू चढावै। त्रिसूल, लाल लंगोट, लाल पतरणा अर लाल इज बखतरी राखै। इणमें सवा लाख मंतर जपीजै। भेरू साधना पछै वो जकौ मांगे वो देवै। पण भैरव - गायत्री रौ जप करती दांण घणौ अबोट रैवणौ पड़ै। पेसाब कियां पछै ई न्हावणौ पड़ै। इण 'अवधि' मा रातो भोजन करै, गवां री रोटी नै गुड़ खावै। भैरू रै पांव सूं लगा'र सवा सेर तांई गुलगुलां चढावै।

हांप रै मंतर री साधना 'चन्द्रग्रहण', 'सूर्यग्रहण' मा कै मसाण कै निवोर रै जळ में बैठनै कै देवस्थान पर करीजै। दरेक पूनम, अमावस, होळी कै दियाळी री रात नै 'दोहराय' नै ताजी करै। मंतर रै पैली गुरू गोरखनाथ कै हडमानजी री आंण घलीजै। अे लोग आसतीक रिखि रौ नांव लैयनै तीन ताळी बजाड़ै अर हांपनै भगाय देवै। पुराण मा इणरौ दांखलौ मिळै-

आस्तीक्यां वचन स्मृत्याय: सर्पो न निवर्तते
शतया मिधते तस्य शीणं वृक्ष फल तया।

केई रूखड़ियां अैड़ी व्है जिणरै परताप सूं हांप वींरै आगती-पागती फरूकै ई कोनी। किसी रूखड़ी भाखर में कठै है वीं रै ठिकाणा री पूरी जाणकारी आदिवासी राखै। अै भाखर रा भौमिया पूरा। 'भूत पांवरा' नांव री बूटी (बाठकौ) कनै हांप फरूकै ई कोनी। गरासिया इण जड़ी नै घर मा लगाड़ै अर हांप सूं निरभै रैवै। 'वीरपुरा' (उदीयापुर) गांम मा 'तखाजी बापजी' रौ चावौ थांन औ 'गातोड़जी' नांव सूं चावौ। यूं दरेक गांम रै गोरवै (फळां माथै) 'गतोड़जी' रौ थांन। मिळै जठै भोपो जै'र चूसे कै मंतरयौड़ौ पांणी पावै - छांटै तो अंग (पंण) में आयनै सांप मानवी भासा मा बंतळ करै। गरासिया मा नागराज री सिद्धि, नव कुळी सांप री साधना आद केई विधियां है। हड़क्यां कुत्ता रौ जैरवा उठ्या पछै, ठीक करण सारूं दरोळी पंचायत रा भंवरासिया गांम मा देवरो है। वींयां रै नाव री तांती (जेवड़ी) ई बांधण सूं जैरवा रौ असर मिटै।

आतमा री अमरता :

गरासिया 'दर्शन' मा आतमा री अमरता री मानीता है। अै मानै कै देह सूं निकळ्या पछै आतमा रौ 'अस्तित्व' रेवै अर वा 'सूक्ष्मिय' व्है जावै। खुली पवन मा घुळमिळनै वा कठैई आय जाय हकै। इण आधार माथै आतमा री 'प्रेतयोनि' कै 'देवयोनि' मा जावण री वात ई सिकारै। केई आदिवासी तो मानै कै सैंग कबीला रा लोग मारया पछै पितर जूण मा जावै। 'पितरा' नै अै 'मोगा' कैवे। इणरीं पूतळी थापन करनै पूजै। अर मानै कै परवार रै सुख सारू मोगां मददगार व्है, 'अनिष्ट' सारू पैली चेतरावै, हपना मा आपरी औळखाण करावै, मोदीवार पैदा करै, चमत्कार बतावै।

आतमावां रौ रूप :

गरासिया खास करने आतमावां दो तास री मानै गोबरू (बुरी) अर भेळौ (भली)। इणांरौ भरोसौ है कै गोबरू आतमावां जादूगरा सूं गैरो गन्नो राखै। तांत्रिक जादू मंतर री ताकत लैवण सारूं 'गोबरू' री आराधना करै। इण आतमावां री सगति नै मैलिया केवै। इणांनै राजी राखण खातर सूगली चीजां चढावै। गोबरू (भूंडी) आतमावां खास करने जादू-मंतर री ताकत सूं वधै, ताकतवर बणै अर आपरी इंछा ई पूरी करै।

भेळौ (भली) आतमावां मिनख री रिक्छा करै। अै आतमावां गोबरू आतमावां रै भूंडा परभाव रै बचाव वास्तै 'अस्तित्व' मा आई। भूत-पलीत, डाकण-भूतण अर चुडैल आद 'गोबरू' 'आतमावां' व्है। अै कई तरै री वैमारयां पैदा करै - जबाड़ौ बंद व्है जाणौ, आंख्या आडा जाल आवणा अर अेकदम कमजोरी आय जावणी आदि व्है। गारसिया अजांणचक 'असाधारण' 'तकलीफ' रौ कारण इणांनै मानै। 'सिकार' नै तकलीफ दैवण सूं वींरै दरद बीजौ नी व्है, आगला भूत रै दरद व्है। इण वास्तै 'सिकार'रै कोरड़ा लगावै, पीसींयौड़ी लाल मिरचा आंख्या मा न्हाखै। तांत्रिक जादू मंतर सूं बस में करनै सरीर सूं बारै काढै, सीसी मा बंद करै, निवोर मा गाडै अर छुटकौ करै। अहम्मै भूतां रौ नास करण वास्तै 'बावजी' आगै आय रीया है। आज विग्यान रा जुग मा लांबी लांबी सडकां, मोटरां री रेलपेल, धुंआधोर वातावरण, धां-धूं, हाका दड़बड़ अर रेलां री दौडभाग रै कारण जंगळ सुनसान कोनी रया सो भूत भाग रया है, अैड़ौ अै गरासिया मानै। गरासिया रौ आतमावां अर भूतो पर भरोसो भागै नीं इण वास्तै अर 'देवला' रौ महातम कायम राखण वास्तै 'बाव्वजी' री वात चलाई। रेल-मोटर रा धुंआं सूं भूतां (नैना फेफडा वाळा) रौ दम घुटै सो भूत ठौड़ छोडनै भाग रया है। वि. सं. १८५६ (छप्पनियौ काळ) मा केई भूत मरग्या। चिनार गांम मा भूत सूं लडतौ थकौ अेक पटेल फोत व्हैग्यौ, वो भूत बण ग्यौ। अहम्मै तो वा 'फळी' पटेल भूत री फळी रै नांव सूं इज जाणीजै।

वीरस (आतमावां) : वीरस (आतमावां) भली अर बुरी दोन्यूं तरै री व्है। गरासियां खास-खास बैमारया नै खास-खास वीरस सूं संबंध जोड़ै। मामूली अैड़ा वैड़ा वीरां तांई कोनी पूगै। बठा तांई पूगण सारूं 'देवला' री मदद जरूरी व्है। फगत 'देवला' इज मिनख अर वीं आतमां रौ जुड़ाव कराय हकै। गरासियां मैं रोगां रौ मूळ 'वीरां' नै मानै। 'देवला' 'वीरां' नै कब्जे करनै समाज मा वैद्य अर जादूगर (तांत्रिक) बण जावै। गरासिया सौ रै लगेटगै वीरां री संख्या मानै जिणमें बावन घण महताऊं मानै। वीरां रै कारण न्यारा-न्यारा अंगां पर परभाव रै मुजब वीरां रौ नांव धरीया, कीं दाखला हेटै मंड्या मुजब -

क्र.	वीरों रा नांव	रोग रा लछण	परभाव किण माथै	पूजा(इलाज)
१	रगतियौ	पेसाब-मळ में लोही आवै	सगळा पर	दारूं, खाजरूं, नाळेर अर तीन तरै रा धांन चढ़ावणा
२	दूधीयौ	दूध पावण वाळी मां रै छाती रा रोग	लुगायां में	अेक रंग री बकरी कै लुगाई रौ दूध चढावणौ
३.	सुकलियौ	मोड्यार री कमजोरी	जवानां में	खाजरूं अर दारूं चढ़ावणौ
४.	सुलियौ	डील दूखणौ	सगळां में	नारेळ अर दारू री धार चढावणौ
५.	अंगीयौ	आधौ अंग सुन्न व्हैजावै 'अंशिक लकवा रै ज्यूं	सगळा में	खाजरूं अर दारूं चढावणौ
६.	मसाणियौ	सरीर अर दिमाग सूं कमजोर हुवणौ, सूख जावणौ	सगळा में	मांस, लोही अर नव तरै रा धांन चढावै
७.	आगीयौ	सरीर मा जळण	सगळा में	बकरौ अर दारू चढावणौ
८.	वचानियौ	जीभ जाडी पडै बोल नीं हके	सगळा में	नारेळ अर दारूं चढावै
९.	खोपरियौ	दिमाग रा रोग जिणसूं कालौ (पागल) व्है जावै	सगळा में	नव नीबू, दीवौ, तेल अर दारूं री धार देवै

१० तावनियौ	माथौ दूखणौ, भंवळ आवणी	सगळा में	राता-धौळा गाबां रा नव बटकां जिमै नव धांन, कंकू, ईण्डा, सात वार माथै फेरनै चार मारग फंटै वठै माटी रा ठीबां में उतारणौ मेलै।
११ बालटेनिया	हाथआं, पगां, बाहुड़ा अर जोडां में दुखाव	सगळा में	तीन नाळेर, तीन नीबू, च्यार-च्यार फांकां में काट ने च्यारू दिसा में फेंकणा
१२ कासबियौ	मिनख पीळौ पड़ जावै (पीळीयौ)	सगळामें	२५० ग्राम तेल वाटकी में सात वार माथै अवार नै सात मंतर' यौड़ा नीबू सात दिन खावणां।
१३ नरसिंघा	नाड़ी तंत्र में गड़बड़ी	सगळा में	नारेळ अर दारू रौ चढावौ चाढै।
१४ फेंफड़ियौ	फेंफड़ा अर गुर्दा रा रोग	सगळा में	मुर्गी रौ खून चटावै
१५ सुजानियौ	सैं सरीर सूज जावै	सगळा में	दो इंण्डा अर दारू चाढै
१६ बेसनियौ	बोलण में अर सांस लैवण में तकलीफ	सगळा में	मांस अर दारू चाढै।
१७ दांतियौ	दांतां अर मसूडां रौ दरद	सगळा में	सात तरै रा धांन सात रंग मिला'र मेलणा।
१८ चांरियौ	चाबड़ी रा रोग	सगळा में	मांस अर दारू मेलै।

इणरै सिवाय दूजां वीर ई केई है ज्यूं कै जालीयौ, नाळीयौ, गोथियौ, छोटियौ, टाळियौ, अंटारियौ, छालियौ, वाळियौ, भानीरीयौ, कौरीयौ, नाजरियौ, भूरीयौ, कारनियौ, पुछरियौ, घूगियौ, आमलियौ, जागीयौ, धुनियौ, डारोळियौ, सारळियौ, खाटियौ, टिटुरियौ, बारीयौ, धुजणियौ, काजळियौ, बुरकियौ, मोवनियौ, डाकणियौ, खाटीयौ आद। अठै खालीब नमूना परख्या है

मूरत्यां रा कारीगर :

गरासियां रै देवतावां री पूतळ्यां माटी री, भाटा री, काठ री, ईटां री, कपड़ा री अर अनघड़ भाटा री बणै। इण मूरत्यां मा खांडा माता, सूर माता, काळका, पीपळाज माता, धरमराज, नरसिंधी, काळाजी, गोराजी, ताखाजी, कूकड़ माता, गोरज्या, चौसठ जोगणिया आद खास गिणीजै। उदीयापुर जिल्ला रै 'मामेला' गांम मा पूतळयां नांमी घड़ीजै। मूरत्यां त्यार व्हिया पछै, भोपो समचौ देवै जरै पुजारी भोपो आवै अर गाजै-बाजै मूरतां ने लावै अर थापन करै। गुजरात अर मालवा तांई अठा री मूरत्यां जावै। लकड़ी रा तोरण, मामादेव अर रूपण रा देवरा ई जोरदार बणै। अै तोरण रा आकार रा पांच-पांच फुट तांई ऊंचा बणै जकौ देखण जोग। तेजाजी, हड़बूजी, लखाजी, देवनागयणरी पूतळ्यां भाटां री बणै। देवनारायण री मूरतां कई ठौड़ ईटां री ई बणै। देव व्हौ चावै देवी इयांरा भोपां 'आदमी' इज व्है। बायासा री भोपी 'लुगाई' व्है। लाल फूला रा भोपां भाव री टैम कठैई-कठैई लुगाई रौ वेस धाराण करै।

१.धनुष, २. पर्वत ३.एक विशेष वृक्ष, ४. धनुष, ५.उड़द, ६. गिराऊ करू, ७.फेंकू

जंत्र - मंत्र

जंत्र मंत्र में गरासियों का दृढ विश्वास है। लोकधारणा है कि प्रत्येक गरासिया जादू-मंत्र में पारंगत होता है। यह विद्या मनुष्य और स्त्रियाँ दोनो जानते है। अधिकांश मनुष्य तो इसका प्रयोग - उपयोग जनहित के लिये काम में लेते है परन्तु स्त्रियाँ तो हानि भी पहुँचाती है। स्वाभाविक है कि स्त्रियों में स्वार्थ और इर्षा की भावना अधिक होती है। इन तांत्रिक स्त्रियों को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

१. डायन २. मैली ३. स्यारी

यह डायन-औरतें दूसरी स्त्रियों, बच्चों या जानवरों को लगती है और रह रह कर कष्ट देती है। अन्य को डायन बनाकर अपनी संख्या बढाती है।

आदिवासी समाज भी विचित्र है। इनमें अनेक लोक विश्वास है, हम इसे अंधविश्वास कहते है। परलोक की बातें भी इनमें प्रचलित है - आत्मा के चौरासी लाख के चक्कर, अनेक योनियों में जन्म, प्रेतगति, पितरगति तथा चुडैल गति आदि। रोग का कारण भी ये लोग देवी प्रकोप मानते है। भोपे का भावाविष्ट हो कर धूणने का दृश्य देखने योग्य है। अलौकिक आत्माएँ प्रकट हो कर 'गोडलो' (भोपो) के माध्यम से दुःख हरती है। जादू-मंत्र इनके जीवन के अंग है। बच्चों से वृद्धों तक के कई रोग झाड़-फूंक से ठीक करते है। झाड़ फूंक झाडू, नीम की डाली, मोरपंख से करते है इसलिये इसको झाड़ फूंक कहते है।

झाडू और रोगी के फूंक लगता रहता है, इसलिये 'झाड़ फूंक कहते है।

रक्षा मंत्र :

हमेशा रात्रि में सोते समय अपनी आत्मरक्षा के लिये रोज निम्नांकित मंत्र का जप करके निर्भय हो कर सोते है -

'सोट मोट गुरू की ओट, गुरूजी बचावे जन की चोट'

शस्त्र बांधने का मंत्र :

तलवार, खाण्डा, बंदूक, धनुष-बाण आदि किसी भी अस्त्र-शस्त्र बांधने का विचित्र मंत्र है, इस मंत्र से बांधने पर फिर वह शस्त्र काम नहीं करता -

धार-धार फूल, धार-धार बांधू
एक बार में मेरी बंधी नहीं बंधे
तो चन्द्र-सूर्य का वचन
हाथी बांधू हथनि बांधू
बांधू-बांधू एक ही बार
मेरी बंधी नहीं बंधे तो
जल-पवन का वचन
धार-धार फूल, धार-धार बांधू
एक ही बार मेरी बंधी नहीं बंधे
तो चन्द्र-सूर्य का वचन।

मूठ फेंकने का मंत्र :

आकाश लोक का दरोवली, पाताल लोक का बाण
मूठ फेंक शमशान की, कि निकल जाय प्राण
नृसिंह वीर नाडा तोडे, तो भी कलेजा खाय।

दूसरा मूठ का मंत्र :

कमोई का धनुष उड़द का तीर बनाऊँ
मैं जादू रविवार चलाऊ, चोट करूं मारू

मूठ शब्द 'मुट्ठी' से बना है। अनाज मुट्ठी में रख कर उसको जादू-मंत्र से अभिमंत्रित करके जिसे क्षति पहुचाना चाहे, उसे लक्ष्य करके (नाम पता बोलकर) असके पास पहुँचाने के हेतु से फेंका जाता है। 'मूठ' भी अनेक प्रकार की होती है।

१. झाट मूठ : इससे शरीर में अकड़न - जकड़न आती है और लक्षित 'शिकार' अचेत

हो जाता है। कभी कभी शूल या सुइयां के चुभन सी पीड़ा होती है। व्यक्ति तड़फता है। जो निश्चित अवधि रखी जाती है तब तक प्रभावी रहती है फिर स्वतः स्वस्थ हो जाता है।

२. **झालकी मूठ** : इससे लक्षित व्यक्ति (शिकार) को ख़ून की वमन होती है।

३. **नजर मूठ** : इसके प्रभाव से 'शिकार' के शरीर पर फलोले, अर्श या गाँठे हो जाती है

४. **हूक मूठ** : इसे हूक (सूख) मूठ इसलिये कहते है कि इससे 'शिकार' सूखने लगता है। चक्कर आना, कंपकपी छूटना और शक्तिहीन हो जाता है।

५. **तुरत मूठ** : (तुरंत) यह सबसे खतरनाक एवं मारक है। इसमें विशेष अवधि निर्धारित रहती है - कुछ मिनिट, घंटे, दिन, मास या एक वर्ष। अवधि में मरना ही पड़ता है क्योंकि यह मारक मूठ है। यदि समय रहते किसी 'देवला' से या अन्य विरोधी मूठ से नहीं रोके तो निश्चित मरता है।

जब कोई गरासिया अचानक मर जाय या शक्तिहीन हो जाय या समस्त शरीर जलता हो तो इसका कारण मूठ को मानते है, कि यह तकलीफ इसी कारण हुई है। इसके प्रभाव से वृक्ष सूख जाता है, पत्थर फट जाता है, नदी-नाले सूख जाते है। मूठ चलाना गुरू शिष्य को सिखाता है। गरासिये इसमें दृढ विश्वास रखते है। मूठ एक स्थान से दूसरे स्थान पर उड़ कर जा कर लगती है। जिस प्रकार एक मिट्टी का अभिमंत्रित दीपक जादू-मंत्र के बल पर नभ में यात्रा करता है और जिसे क्षति पहुँचानी है, उसके पास पहुँच जाता है, इसी प्रकार मूठ भी भेजी जाती है। ऐसी मूठ जिसके घर जाती है वहाँ तीन बार इसका नाम पुकारती है। यदि उत्तर अनुत्तरित रहता है तो उस भेजने वाले 'देवला' के पास स्वतः वापस लौट जाती है। 'देवला' उसे किसी वृक्ष या चट्टान पर मार कर नष्ट करता है। कभी कभी 'शिकार' भी जानकार हो तो उस मूठ को दूसरे अधिक बलशाली मंत्र के साथ वापस आक्रमण करता है और उस व्यक्ति (देवला) के पास पहुँचा देता है जिसने भेजी थी। आगे वाला अधिक शक्तिशाली हो तो मूठ को नष्ट भी कर देता है।

मूठ का इतिहास :

गरासियों ने मुझे बताया कि 'गणेशजी' मूठ के प्रथम जनक एवं आविष्कार थे। एक बार गणेश कुपित होकर देवियां पर मूठ फेंक दी जिससे उसका रथ पाताल में पहुँच गया। तब देवियों ने 'धीरीया' नामक भील को बुलाया, उसने उनकी मुट्ठी देख कर यह रहस्योदघाटन किया। तब देवियों ने 'गणेशजी' को प्रसन्न किया तब कहीं जाकर उन्होने मूठ वापस खीची। मूठे कई तरह की होती है और इनकी साधनाएँ भी कई प्रकार की होती है। सीखनेवाला सर्वप्रथम हरे वृक्ष पर फेंक कर परीक्षण करते है, वह तत्काल सूख कर कुछ

समय बाद वापस हराभरा हो जाता है। पक्की मूठ तत्काल असर करती है। मूठ कच्ची तब रहती है जब इसकी साधना - सिद्धि में कसर रह जाती है। मूठ-मंत्र के पूर्व वीर हनुमान की शपथ दिलाते है कि अगर आपने मूठ-मंत्र पूर्ण रूपेण सिद्ध नहीं करवाया तो आपको सीता माता के पति होने का, राम का सिर कलम करने का और लक्ष्मण की हत्या करने का पाप लगेगा। यह हनुमान इनका 'वीर' होता है। कोई इसे पंचमुखी हनुमान मानते है। राजा, भजनी, सन्यासी और भक्त पर मूठ का असर नहीं होता। गरासियों के पास दो मारक विद्याएँ है। 'मूठ' और 'कामण'। तत्काल मारने के लिये मूठ और धुल-धुल कर मारने के लिये 'कामण' का उपयोग करते है। 'मूठ' में अभिमंत्रित उड़द फेंकते है तो 'कामण' में उसका पूतला बनाकर गाडते है। दोनो गुप्त विद्याएँ है। इसलिये यहाँ पर भी आधी-अधूरी ही जानकारी दे रहा हूँ ताकि कोई दुरूपयोग न करें।

भादरजा (कोटा) देवस्थान पर मूठ की चपेट में आये सिकार (रोगी) को यह देवी बचाती है। एक आदिवासी ने बताया कि एक बार एक राजपूत अपने दस-बारह वर्ष के लड़के को भादरजा लाये। लड़के के तन में जलन एवं पीड़ा होती थी। वो तड़प रहा था। भोपे ने कहा कि बच्चा मूठ के झपट में आ गया है। भोपें ने उस लड़के के घुटने चूस कर अपने मुँह से उड़द और मूंग थूके। इसी प्रकार कोहनी और गले के अंदर से भी चूस कर उड़द तथा मूंग बाहर निकाले। सन्मुख भेरू का मंदिर था, वहाँ शराब की बोतल की 'धार' चढवाई। देखते-देखते बालक हँसता-खेलता घर लौटा। यह गजब चमत्कार था।

मोहिनी मंत्र :

मोहिनी मंत्र समस्त मंत्रो के अंत में सिखाया जाता है। अनेक मंत्र है जो इस काम में आते है। इस मंत्र में उसकी आँखों, कानो और नासिका में 'छल' पैदा किया जाता है। यह प्रभाव अभिमंत्रित चीज को सूंघने, देखने, सुनने एवं चखने से होता है।

१. काजल (कालिका) : शनि या रवि वार को चमेली और अमर बेल के तेल को मिला कर कटोरी में तैयार कर ले। इस काम में एक ही रंग की गाय का घी ले कर, वह भी कटोरी में मिला लें। इससे काजल बनावे और उसे मंत्रो से अभिमंत्रित करके आंखो में आंजे, और किसी स्त्री के सामने देखे। दोनो की दृष्टि मिलने पर वह उस पुरुष से आकर्षित होगी।

२. अभिमंत्रित 'कूंकू' : एक अंधा दो मुँहा सर्प को लाल वस्त्र पर 'कूंकू' सात छोटी छोटी 'ढेरियाँ' बना कर, उस पर लोटने का अवसर दे। जब सांप चला जाय तो 'कूंकू' सामिल करके पुड़िया बना कर रखें। यह प्रक्रिया शनिवार को ही होना अनिवार्य है। फिर इसे सात दिन तक मंत्रित करें। इस मंत्रित 'कूंकू' को यदि किसी युवती पर डाला जाय तो उसे उस पुरुष के पास आना ही होगा। गरासियो को इसमें पूरा विश्वास है।

३. अभिमंत्रित सुपारी : एक मंत्रित सुपारी स्त्री को बिना तोड़े पूरी की पूरी साबुत निगलवा दे। सुपारी जब मल के साथ वापस बाहर निकले तो उसे धो कर साफ करे और वापस मंत्रित करें। यह सुपारी जिस व्यक्ति को खिलायेंगे, वह उस स्त्री का दीवाना हो जायेगा। जिस गरासिये के बहुत सी पत्नियां होती है, वे सौते भी इसे काम में लेती है।

४. जंगली पुष्प (मंत्रित) : फूल अभिमंत्रित करके कानो में या जेब में रखें। इसकी खुशबू से स्त्रियां एवं पुरुष मोहित हो जाते है।

५. सर्प का मंत्र : सांप के मंत्र की साधना-सिद्धि चंद्रग्रहण या सूर्यग्रहण में की जाती है। यह साधना देवस्थान अथवा नदी के जल में बैठकर करते है। फिर प्रत्येक पूर्णीमा, अमावस्या अथवा होली-दिवाली की रात को इस विद्या को दोहरा कर ताजी करते है। आदिवासियों के मंत्र मे हनुमान और गुरू गोरखनाथ की कसम दिलाई जाती है। सांप का विष उतारने का मंत्र निम्नांकित है।

काला सांप / गोरा सांप / लाल सांप / उतरता है तो उतार दूं

नही उतरता है तो मार दूंगा / गुरू गोरखनाथ की दुआं करू

मारक मंत्र / धरती मां का जप करू / चन्द्र सूर्य को नमस्कार करू ।

गरासियों में यह विद्या अति महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावशाली है। चलते हुए सर्प पर अभिमंत्रित कंकड़ फेंक कर उसे जहाँ है वहाँ का वहाँ रोक देते है। कई बार सर्प काटे हुए व्यक्ति के शरीर में सांप को बुला कर बातचीत करते है, वादा करवाते है, उससे मानवी भाषा में प्रश्नोत्तर करते है।

बिच्छु का मंत्र :

गवरीबाई की गोरी गाय

सोनार और पादोर, चरने को गई

चरते-चरते गोबर किया

गोबर में बिछुड़ी ब्याई

दस लाल दस काले जन्मे

आगे चोर, पीछे मोर (दंश)

उतर जा बिच्छु एक तू है चोर

नहीं उतरता है तो शंकर की कसम है

मेरे उतारा हुआ नही उतरता है तो

मा'देव की कसम

मेरा उतारा नहीं उतरे तो

मा'देव की वाचा

अमीया दे की वाचा

वाचा चूके तो ऊब सूक जाय

डाकिन भूतिन तथा नजर : पहले गूगळ का धूप करके रोगी के मूँह पर हाथ फेरते है। रोज संध्या को निम्नांकित मंत्र जपते है -

''महादेव की कसम है, तुम चली जाना
शरीर से बाहर हो जाना।''

दो रविवार तक करे तो निश्चित ठीक हो जाता है। पवन लग जाय, झपट में आ जाय, जिससे ज्वर आ जाता है तो वमन होती है। गूगल का धूप करके चीपटे से धरती पर चोट करनी और उस चोटिल स्थान की धूल जल में डाल कर पिलाते है। आकाश वल्लरी को घोट पीस कर उसका रस भी दर्दी को पिलाते है, निश्चित ठीक हो जाता है।

नानाराम गरासिया इच्छानुसार फल की प्राप्ति के लिये तावीज भी बना कर देता है। चोर और दोषी को पकड़ने की विद्या भी इसके पास है।

कार्य सिद्धि : साबत मूंग, राख, रास्ते की धूल सब मिला कर 'मूल मंत्र' जपते हुए मूंगादि हथेलियों में मसलते जाते है। मंत्र पढने के साथ साथ हाथों पर फूंक भी मारते रहते है। इससे यह लोग मनोवांछित कार्य सिद्ध करते है, सफलता पाते है।

इसी प्रकार यह तावीज भी बनाते है जिससे रोग और चोट से रक्षा होती है। और मूठ आदि दूसरे ऐसे जादू फिर उस पर प्रभावी नहीं होते।

टोने टोटके : टोने-टोटके प्रत्येक आदिवासी थोड़ा बहुत जानते है। 'काले कामण' (काला जादू) की क्रियायें, मूठ, सम्मोहन, उच्चाटन, वसीकरण, विद्वेषण आदि के ज्ञाता खूब उपलब्ध है। डायन-भूतिन और भूत-प्रेत निकालने के मंत्र, ताबीज करना भी जानते है। विशेषकर भोपे इसमे प्रवीण होते है। 'नुगरी' और 'सुगरी' दो तरह की आत्माएँ ये लोग मानते है।

पूतला और सिकोतरा : आटे का पुतला बना कर अभिमंत्रित करके घर-आंगन की जमीन में गाड देते है, जहाँ किसीकी दृष्टि नहीं पडे। जब तक यह पुतला घरमें रहेगा वहाँ तक घर में झगड़े और अशांति होगी। शांति और धैर्य से कोई भी पारिवारिक सदस्य उस घर में नही रह सकते। पहिनने के वस्त्र भी शत्रु बन जाते है अर्थात् परिजन भी पराये हो जाते है।

वीर और सिकोतरा : यह ऐसे तांत्रिक पिशाच होते है जो नीबू और उड़द में रहते है और झुंड में रहते है। एक उड़द आथवा नीबू में अनेक वीर रहते है इसलिये मंत्रित नीबू अथवा उड़द जिस घर मे रखते है वहाँ झगडे, समस्यायें और रोग आते रहते है। गरासियो में विश्वास है कि ये वीर ईश्वर के मैल से प्रकट हुए और उन वीरों ने अनेको को जन्म दिया। गरासिये अपनी साधना-सिद्धि से वश में करके स्वेच्छानुसार काम करवाते है। यह विद्या अति प्राचीन है।

डायन सिकोतरी : 'वीर' और 'सिकोतरा-सिकोतरी' बिना कुकर्म के नही साधे जा सकते। यह गंदी क्रिया है। डायन के पांच वीर होते है जिसे वह छिपा कर रखती है। वह जिसे अपने जैसी डायन बनाना चाहती है, उसे गोपनीय रूप से इस प्रकार देती है कि उसे स्वयं को भी इसका भान नही हो पाता। किसी बात के बहाने 'हाँ' (स्वीकृत) करवा देती है। जो डायन एक सौ 'भख' (हत्या) ले लेती है फिर वह सिकोतरी बन जाती है। लालबाई तथा फूलबाई नाम की सिकोतरियाँ है। लालबाई लाल चूडी और फूल बाई फूल माला पहनती है। सिकोतरी का 'भाव' मनुष्य को ही आता है, औरत को नही आता। सिकोतरी स्वयं प्रकट नहीं होती। किसी अन्य के माध्यम से काम करवाती है। इसे सिद्ध करने के हेतु शमशान या हनुमानजी के मंदिर जाना होता है। लालबाई के लाल तथा फूलबाई के श्वेत वस्त्र खण्ड और फूंदी (चोटी) चढ़ाते है। कुवारिया, चंदेरिया व बामणिया गाँवों में इनके मंदिर स्थापित है।

मोगी : एक स्त्री जो काला जादू करती हो और उसकी मृत्यु हो जाय तो वह 'मोगी' या 'सिकोतरी' बन जाती है। फिर वह 'स्त्री' या 'मालेरी' से नौकर जैसे कार्य करवाती है और आदेश की पालना करवाती है। वर्ष में एक बार काली कार्तिक (कालीकाती) पर पूजा की जाती है।

मेळौ : (परोपकारी आत्माएँ) : यह संरक्षक आत्माएं होती है, इसे पितृत्मा (वाड़का) भी कहते है। यह अपने भक्तो की सहायता करती रहती है। परिवार में खुशी लाती है। खेतो में उपज बढाती है। वंशवृद्धि हेतु संसति में वृद्धि करती है। वर्षा करवाती है। इसकी प्रतिमा (फूल) गले में पहिंनते है। विपत्ति में इनका स्मरण किया जाता है। जिन्होने संघर्ष में वीरगति पाई है, उसका यशगान करते है। सभी 'भोपे' और 'देवला' का मृत्यु के पश्चात दाह संस्कार करते है, दफनाते नही है।

लहसुन : लासण : यह लोग पूर्वजन्म और पुनःजन्म में विश्वास रखते है। जिस बालक की अकाल मृत्यु हो जाती है, उसके किसी अंग पर काजल या कूं-कूं से निशान करते है यह निशान अगले जन्म में इसी जगह मिलता है, इसी को ये लासण या लहसुन कहते है। काजल का काला और 'कूं-कूं' का लाल चिह्न बनता है। यह बात प्रमाणित है।

बोलमा पारी : पितर (मोगा) के चमत्कार जब देखे जाते है तो वे इनकी मनौती मनाते है कि गृहशांति हो जायेगी तो घरमें स्थापित करेंगे । शाति हो जाय तो 'भोपे' से पूछ कर मूर्ति बना कर लाते है। यह मूर्ति खडी, बैठी, खड़गधारी, घोड़े पर सवार आदि अनेक प्रकार की होती है। आदमी की मूर्ति श्वेत वस्त्र में एवं स्त्री की लाल वस्त्र में लपेट कर लाते है। यह प्रथा प्रचलित है।

पितर प्रतिष्ठा : पितर (पितृ) प्रतिष्ठा के पूर्व रातजगा दिया जाता है और मोगा की महिमा मंडित करते हुये इनकी यश कीर्ती के गीत गाये जाते है।

पितृ आये मेरी अली गली में
फूल बिछाये चंपा कलियों के हो राज
पितर भले पधारे जी

पितरों के गीतो के साथ ढोल की थाप पर मृत पितृत्मा भोपे के शरीर में आती है। 'मोगा' की प्रिय वस्तु का भोग लगाते है तथा भोपे को भेट करते है, जैसे बीड़ी, सिगरेट, पान, इत्र, मिष्टान, खजूर, उबले हुए चने, सेव, नारीयल, कांच, कंधा, धनुष बाण आदि चौकी पर रखते है। भोग के लिये चूरमा, चावल, अगरबत्ती, कच्चा दूध, मक्की की फूली, रोटी और शराब आदि रखते है। 'मातलोक' (स्त्री मोगा) के लिये मेंहदी, मंजिष्ट, काजल, टीकी (बिंदियाँ), सुरमा, चोटी (फूंदी) लच्छा, कूं कूं आद रखते है। पूरबजी की प्रतिष्ठा में सवामणी (सवा मन चूरमा) बनता है। बकरे की बलि भी चढाते है। प्रत्येक वर्ष वैशाख अथवा कार्तिक पूर्णिमा को रातजगा दिया जाता है। इस अवसर पर भोपे का 'भाव' भी आता है, वे भावाविष्ठ हो जाते है। उस समय बूझ (पेशी।)होती है और परिवार के लोग अपने दुःख-दरद की फरियाद करते है और वे उसके निवारण का उपाय बताते है।

कामण पूतला : काला मोम, काली मिट्टी, आटा अथवा चिथड़े का मनुष्य के आकार का छोटा पुतला बनाते है। जिस मनुष्य को कष्ट देना है, उसके नाम और उसकी मां की साधना करनी पड़ती है। यह साधना-सिद्धि चालीस दिनो की होती है और तांत्रिक जादूगर साधना करते हुए हमेशा पुतले के अंगो पर तीर छोडता रहता है, तीर 'बरू' के होते है। तीर के स्थान पर आजकल आल पिनों का भी उपयोग करते है। साधना सम्पन्न होने के बाद पुतले को उसके घर में, गांव के आस पास, तालाब अथवा नदी-नाले में गाड दिया जाता है। वृक्ष की जड़ों में भी गाडते है। घर में भी गोपनीय ढंग से गुप्त स्थान पर खोद कर गाडते है। जानवर आदि नहीं खा सके इसकी पूरी सुरक्षा पूर्व से करनी होती है। शमशान अथवा कब्रिस्तान में यह साधना की जाती है। जैसे जैसे वह पुतला गलता है वैसे वैसे ही उस व्यक्ति विशेष का स्वास्थ गिरता जाता है। जहाँ जहाँ पुतले के पिने आदि डाली है वहाँ उसके सूल चलती है, पीड़ा होती है। इलाज नही हो पाता। कोई जानकार पुतला निकालता है तो आराम होता है वरना मरना पड़ता है।

कलवा : कलवा एक हवा होती है जो तांत्रिक ही देख सकता है। यह साधना बच्चे को शव पर करते है परन्तु उसकी आयु नौ माह से अधिक नहीं होनी चाहिए। जिस दिन मृत्यु हो और जिस स्थान पर दफनाया गया है रात को वहाँ जा कर उसे निमंत्रण देते है और कहते है कि आज से मै तुझे हमेशा दावत दूंगा। दावत में तुझे शराब पिलाऊँगा, मिष्टान

खिलाऊँगा। यह दावत नियमित बीस दिन चलती है। यह साधना मध्यरात्रि करते है। हमेशा मिष्टान और शराब की बोतल ले जाते है। मिठाई मे सफेद मावा देते है। यह साधना अर्ध रात्रि बारह बजे से दो बजे तक चलती है।

इसके लिये बच्चे का शव के चारो ओर रेखा खींचते है (गोलाकार)। रेखा के पास जादूगर बैठता है। उसके भी चारो और गोलकार रेखा खींचता है। इसके बालक के शव को कोई शक्ति न तो ले जा सकती है और नही तांत्रिक पर कोई आघात कर सकता है। प्रारंभ में बालक के शव के मुँह में शराब की धारा पिलाते है और मिष्टान का ग्रास मुँह में देते है और मंत्र जपता जाता है फिर वापस मिट्टी डाल कर ढक देते है।

साधना की अवधि में अनेक पायल की झनकारें सुनाई देती है। भयानक ध्वनियाँ सुनाई देती है परन्तु इससे घबराना नही चाहिए। निर्भय रहना चाहिए, डरे तो मरे समझो। कलवा सिद्धि हो जाने के बाद में वह हमेशा तांत्रिक के वश में रहता है, सेवा में तत्पर रहता है, आदेश की अवहेलना नही करता। प्रत्येक इच्छा पूरी करता है, परन्तु अगर कलवे के खाने-पीने से संतुष्ट नहीं रखें तो तांत्रिक पर आघात कर सकता है। एक बार तांत्रिक का खून पी गया।

माल्या : जब बच्चा मर जाता है और उसकी आतमा 'प्रेतयोनि' में चली जाती है तो उसे 'माल्या' करते है। यह बच्चों को ही लगता है एवं कष्ट देता है। इसके लगने से उसे वमन-विरेचन होता है। अभिमंत्रित अनाज सात बार सिर पर घुमा कर चारो दिशओं में फेकने से पवन निकल जाती है, स्वस्थ हो जाता है। यह विद्या सिखने के लिये नवरात्रि को कार्तिक पूर्णिणा तक बारह महिने ध्यान रखना होता है। सिद्धि के लिये समशान में, वट वृक्ष तले, हनुमान मंदिर अथवा पर्वत की घाटी में बैठना पड़ता है।

स्यारा-स्यारी : कहते है कि सियारा कोई भूखी आत्मा होती है, वह विशेषकर धृत पी जाती है। इसलिये गरासिये धृत इधर-उधर ले जाते है तो धृत में तिनका डाल देते है, इससे 'स्यारी' का दाव नहीं लगता। इस विद्या से घी-दूध बहुत दूरी से खींच लेती है। घर के गुप्त भेद-रहस्य का भी पता लगा देते है।

जादुगरनी स्त्रियां : सौलह विद्याओं में इसे भी एक विद्या मानी है। इस सिद्धि से हित और अहित दोनो संभव है। परन्तु अधिकांश स्त्रियां इसे 'अनिष्ट' के लिये ही काम में लेती है। स्त्रियां स्वभाव से ही ईर्षालु होती है परन्तु दूसरो से अपने लिये भला चाहती है। यह साधना और प्रयोग गोपनीय रूप से करती है। ऐसे प्रयोग तीन भांति के होते है - डायन, मैली और स्यारी। सबसे शक्तिशाली डायन, उससे कम मैली, तीसरे दर्जे पर स्यारी होती है। स्यारी जहाँ भी दही मंथन करते देखती है, तो तत्काल घर जा कर वह भी देही बिलौने लगती है। और अपनी तांत्रिक विद्या से मक्खन, दूध, दही अपनी गोली या हंडियाँ मे खींच

लेती है। यह माल वह स्वयं खाती है। अन्य को देने या बेचने से विद्या निष्फल हो जाती है, और पुनः नहीं साधी जा सकती। चतुर स्त्रियाँ कभी गोबर घोल कर मथ देती है, जो तांत्रिक के पात्र में चला जाता है और सब गुड़ गोबर हो जाता है और अपनी माया समेट लेती है।

मैली : स्यारी से अधिक तांत्रिक विद्या मैली के पास होती है। यह बच्चों की आँखें खराब कर देती है। नेत्र ज्योति क्षीण कर देती है। कुत्ते का झूठन खिलाने से यह तांत्रिक सिद्धि समाप्त हो जाती है। परन्तु यह हिम्मत विरले ही जुटा पाते है क्योंकि सब भयभीत रहते है। पर यह निश्चित है कि एक बार झूठा खाने के बाद वापस यह विद्या कदापि हाथ नहीं आती चाहे कितने ही प्रयास करो।

डायन : जब डायन किसीको लग जाती है तो पीछा छुडाना कठिन हो जाता है। अनेक महिलाओं को तो मरना पड़ा। जिसे डायन लगती है उसके शरीरमें प्रेतात्मा प्रवेश करती है, 'पंण' में आ कर बकवाद करती है, कभी नाचती है, कभी गाती है, कभी अपने आप को पछाड़ती है तो कभी वार्तालाप में कुछ मांगती है। बच्चों को तो पल भर में मार डालती है।

डायन की अपनी गोपनीय अज्ञात वाहन होता है। इसके इष्टदेव हनुमानजी होते है। इनके सन्मुख सिद्धि हेतु आराधना करती है। मंगलवार को अर्धरात्रि में हनुमानजी के मंदिर जाती है। अपनी तांत्रिक विद्या की सफलता एवं प्रभावित रखने का प्रयत्न करती है। इससे बल मिलता है।

इनकी सवारी मगरमच्छ अथवा भालू होता है। वाहन के उपस्थित होने पर नग्न हो कर सवार होकर शिकार को निकलती है। इस रूप में अगर कोई इसे देख लेता है तो उसका 'अनिष्ट' निश्चित है। हनुमान मंदिर में प्रस्थान करने के बाद पीछे यदि कोई उसके वस्त्र चुराने का प्रयत्न करें तो वाहन तत्काल स्वतः मंदिर की ओर भागता है। वस्त्रों की सुरक्षा को प्राथमिकता देती है।

डायन जब अपने लक्षण अन्य को देती है तो अपनी मंत्र शक्ति (डा डी डुच्च) से प्रवेश करती है। इसके लिये अपना झूठन खिला कर अथवा बातों बातों में 'हाँ' कहलाने के साथ ही दे देती है। यह मंत्र शक्ति 'वीर' कहलाती है। डायन जब किसी को क्षति पहुँचाने के हेतु मंत्रोच्चारण करती है तब घर में अकेली होती है। उस समय उसकी हालत बहुत खराब होती है - मुँह से लार टपकती है, आँखें लाल-पीली हो जाती है, सूरत बिगड़ जाती है।

डायन, मैली और स्यारी केवल जीवित स्त्रियों ही होती है और महिलाओं को ही कष्ट देती है। 'स्यारी' न किसी का झूठा खाती है, न किसी के सामिल खाती है, कारण इससे

विद्या नष्ट हो जाती है। डायन को सामिल खाने से कोई प्रभाव नही होता। हाँ विष्टा खिलाने से विद्या व्यर्थ हो जाती है। ऐसी स्त्री के घर न तो कोई बेटी ब्याहता है न उस घर से बेटी लाता है।

डायन के वीर बावन होते है। जो वीर जिस प्रकार का दुःख देता है उसी नाम से पहिचाना जाता है जैसे - जिससे शरीर गलता है उसे 'गळण्यौ वीर' कहते है, जो जलन पैदा करता है उसे 'जळण्यौ वीर' जिससे कंपकपी छूटे उसे 'धुजण्यौ वीर' आदि कहते है।

जंत्र-मंत्र का महत्त्व : गरासिये लोग भूत-प्रेत और देवी-देवताओं में बहुत विश्वास रखते है। अनेक रोगों का कारण भी वे इन्हें ही मानते है। इसलिये इनको संतुष्ट करने से स्वस्थ रहते है ऐसा यह मानते है। जादू मंत्र नई पीढी के युवकों को सीखाते है। अर्धरात्रि शमशान जगाते है, नग्न हो कर साधना करते है, गड़े मुर्दों के निकाल कर वृक्ष पर उल्टा लटकाते है और एक व्यक्ति मुर्दे पर जल डालता है जो नीचे नग्न बैठे साधक पर गिरता है और वह मंत्रोच्चारण करता रहता है। नदी के जल में नग्न बैठ कर भी साधना साधते है। महिलायें भी इसी प्रकार नग्न साधना करती है।

अनेक लोग प्रेम-विवाह में भी जादू-मंत्र से वश में करते है। उसके मन-मानस को आकर्षित करते है। यह इनकी रक्षा का साधन भी है। मूठ आदि मारक विद्या है, इससे हत्या तक कर सकते है। रोग की चिकित्सा भी मंत्र से करते है। भोपे (गोडला) पन्द्रह तरह के होते है। उनके सामने साबुत अनाज (आखा) मक्का आदि, तांबे का ढब्बू पैसा, मिट्टी, कोयला, कूं-कूं लेकर जाते है तब भोपे 'पूरा' और 'जगत' करते है।

गरासिया बस्ती मे प्रवेश करते ही अनेक देवी-देवता, मोगा और मातृ लोक के 'चीरा' आदि देखते ही इनका 'अलौकिक विश्वास' दृष्टिगत होता है। रविवार को भापा भावाविष्ट होकर धूणता है, अलौकिक देवी की आत्मा भोपे (गोडला) के शरीर में प्रवेस करती है और भोपो के माध्यम से लोगो का दुःख दूर करती है। रहस्योदघाटन कर सचेत करती है। झाडू, मोरपंख के झाडू या नीम की डाली से झाड-फूंक करता है।

सांप के मंत्र की साधना : सर्प का विष उतारने के मंत्र को सिद्ध करने के लिये शुक्ल पक्ष में नाग पंचमी को कमर तक पानी में बैठकर साधना की जाती है। सर्प को व्यक्ति के शरीर में बुलाने का मंत्र भी है। इस मंत्र को सिद्ध करनेवाले को आजीवन धीया, लौकी, तरूई और भिंडी छोड़ने का प्रण लेना होता है। वर्षा में जूते नही पहिनते। 'रेड' पढ़ते समय भूखा रहना होता है। जिसे सांप काटा हो उसके शव को वृक्ष के बांध कर लटकाते है। चारो ओर नीचे लीप कर कलश स्थापित करते है। नीम की डाली से मंत्र पढते है, तो सांप मानवी भाषा में बात करता है। फिर स्वस्थ होने पर 'नवनाथ बाबा' को भोजन कराते है। भेरूनाथ की साधना में लौंग का धूप देते है।

भेरू के भोपे त्रिशूल, लाल बिस्तर, लाल लंगोट और लाल ही 'बखतरी' रखते है। सवा लाख मंत्र जपे जाते है। भैरव साधना के बाद वह जो मांगे वह देना होता है। भैरव-गायत्री का जप करते समय बहुत पवित्र रहना जरूरी है। शुद्धता के लिये पेशाब करने के बाद भी स्नान करना होता है। इस अवधि में लाल भोजन करना अनिवार्य होता है अतः गेंहूँ की रोटी तथा गुड़ आदि खा सकते है! भैरव के पाव से सवा सेर तक गुलगुले चढाते है।

सांप के मंत्र की साधना चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण, शमशान, नदी, देवस्थान पर करते है। प्रत्येक पूर्णीमा, अमावस्या, होली अथवा दिवाली की रात्रि में इस विद्या को ताजी करने हेतु दोहराते है। गरासियों के मंत्रो में गुरु गोरखनाथ या हनुमान की शपथ दिलाते है। यह लोग आस्तीक ऋषि का नाम ले कर तीन ताली बजा कर सांप को भगा देते है। पुराण में भी इसका प्रसंग उपलब्ध है -

आस्तीक्यां वचन स्मृव्यायः सर्पो न निवर्तते
शतया मिधते तस्य शीणं व्रृक्ष फलतया।

कई वनस्पतियां इस प्रकार की होती है जिसके प्रभाव से सांप उसके आसपास भी नहीं फटकता। गरासिये पर्वत-जंगल के अधिकारिक ज्ञाता होते है। कौनसी जड़ी बूटी पर्वत में कहाँ है ? पूरा पता रखते है। 'भूतपांवरा' नामक बूटी के आसपास सांप फरूकता भी नहीं। गरासिये यह जडी अपने घर मे लगा कर निर्भय हो जाते है। वीरमपुरा गांव में 'तखाजी बावचा' के प्रसिद्ध स्थान है जिसे 'गातोड़जी' नाम से प्रसिद्ध है। जहां सांप का विष उतारते है।

यो प्रत्येक गांव में 'गातोड़जी' का देवस्थान मिलता है। जहाँ सांप काटे हुए व्यक्ति को ले जाते है। वहाँ भोपा भावाविष्ट होकर धूणता है, विष चूस कर खींचता है अथवा अभिमंत्रित जल पिलाता है या छांटता है। सांप को 'पंण' (शरीर में) लाकर बात भी करवाता है। आदिवासीयों में नागराज की सिद्धि, नवकुळीनाग साधना आद केई विधियाँ है। पागल कुत्ते का विष उतारने अथवा पागलपन आने के बाद ठीक करने के लिये दारोली पंचायत में भावरिया गाँव के देवता के वहाँ जाते है अथवा उनके नाम का डोरा (रस्सी) बांधने से विष प्रभावहीन हो जाता है।

आत्मा की अमरता : गरासिया 'दर्शन' में आत्मा शाश्वत है। ये लोग मानते है कि शरीर नहीं रहते हुये भी आत्मा का 'अस्तित्व' रहता है। देह से निकाल कर वह 'सृष्टिमय' हो जाती है। मुक्त पवन में घुलमिल कर वह कहीं भी आने जाने में समर्थ हो जाती है, यह 'प्रेतयोनी' अथवा 'देवयोनि' भी स्वीकार करते है। कई आदिवासी तो समस्त परिवार के लोगो का मरणोपरांत पितर (मोगा) योनि में जाना मानते है। 'पितरों' को यह 'मोगा' कहते है। इनकी मूर्ति स्थापित कर पूजते है। इनकी मान्यता है कि पारिवारीक सुख में

'मोगे' सहायता करते है। अनिष्ट के लिये पूर्व में सचेत करते है। स्वप्न में संकेत दते है।

आत्माओं का स्वरूप : ये आत्माएं दो तरह की मानते है एक 'गेबरू' (बुरी) दूसरी भेळौ (भली)। बुरी से जादूगर संबंध रखते है तांत्रिक जादू-मंत्र की शक्ति प्राप्त करने हेतु बुरी (गोवरू) आत्माओं की आराधना करते है। इन आत्माओं की शक्ति को 'मैलिया' (गंदी) कहते है। इन्हे प्रसन्न रखने के लिये गंदी वस्तुएँ भेट चढ़ाते है। 'गोबरू' आत्माएँ जादू मंत्र की शक्ति से अपनी शक्ति भी बढ़ाती है और अपनी इच्छा भी पूरी करती है।

भली (भेळौ) आत्माएँ मानव की रक्षा करती है। यह आत्माएँ बुरी (गोबरू) के प्रभाव को नाकाम करने के उदेश्य से अस्तित्व में आई। भूत-प्रेत, डायन-भूतिन, चुडैल आदि दुष्टात्माएँ होती है, यह अनेक प्रकार के रोग पैदा करती है और रोग का बहाना बना कर आती है जैसे - जबडा बंद हो जाना, आँखों के आगे जाल आ जाना, सिर दर्द एवं ज्वर आना, एकदम आचानक कमजोरी आ जाना आदि। गरासिये अचानक असाधारण बीमारी या तकलीफ का कारण इनको ही मानते है। 'सिकार' (रोगी या दर्दी) को कष्ट देने पर उसे पीड़ा नहीं होती, उस भूत को दर्द होता है इसलिये 'शिकार' के कोड़े लगाते है, पिसी हुई लाल मिर्च आँखों में डालते है। तांत्रिक जादू-मंत्र से भूतप्रेत को बस में करके शरीर से बाहर करता है, बोतल में बंद कर देता है और नदी में गाड देता है और इससे छुटकारा हो जाता है। अब भूतां को नष्ट करने हेतु 'बावजी' आगे आ रहे है। आज विज्ञान के युग में लंबी-लंबी सड़कें, मोटरों की भाग-दौड़, धुंआधार वातावरण शोर शराबा, ध्वनि प्रदुषण और रेल गाडियों की दौड़-भाग के कारण जंगल सुनशान नहीं रहे अतः भूत भाग गये। भूतां पर विश्वास उठे नही इसलिये 'देवला' का महत्त्व निरंतर रखने हेतु 'बावजी' की बात चलाई गई है। रेल-मोटर के धुंआं से भूतो (छोटे फेफड़ो वाले) का दम घुटता है अत. वे मूल स्थान त्याग कर भाग रहे है। संवत १८५६ (छप्पनियौ काळ) के आकाल में अनेक भूत-प्रेत मर गये। चिनार गांव में भूत से लड़ता हुआ एक पटेल का देहान्त हो गया और वह भी भूत बन गया। वह 'पटेल भूत' के नाम से प्रसिद्ध हुआ और अब तो उस क्षेत्र विशेष (फळी) को 'भूत पटेल फळी' के नाम से ही जाना जाता है।

वीरस : (आत्माएँ) : यह आत्माएँ भली और बुरी दोनो तरह की होती है। गरासियों ने कुछ विशेष 'वीरसों' का कुछ विशेष रोगों से संबंध जोड़ रखा है। एक साधारण व्यक्ति की पहुँच 'वीरों' तक नहीं होती। वहाँ तक पहुँचने के लिये 'देवला' का सहयोग लेना पड़ता है। केबल 'देवला' ही मनुष्य का दिवंगत आत्मा से संपर्क करवा सकता है। गरासिये रोगों का मूल 'वीरो' को मानते है। 'देवला' 'वीरों' को वश में करके समाज में वैद्य एव तांत्रिक (जादूगर) बन जाते है। वीरों की संख्या लगभग सौ मानी जाती है जिनमें बावन अधिक महत्त्वपूर्ण है। 'वीरों' के अलग अलग अंगो पर अलग अलग प्रभाव के

अनुसार 'वीरो' का नामकरण हुआ है। कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे है -

क्र.	वीर रा नांव	रोग का लक्षण	प्रभाव	इलाज (पूजा)
१	रगतियौ	मळ-मूत्र में रक्त आना।	सब पर	शराब, मांस, नारियल,तीन धांन चढ़ाना।
२	दूधीयौ	दूध पान वाली मां की छाती के रोग।	औरतों में	एक रंग की बकरी का या स्त्री का दूध चढाना
३.	सुकलियौ	युवकों की कमजोरी	युवकों में	शराब और मांस चढ़ाना।
४.	सुलियौ	शरीर में दर्द, सूले चुभना।	सभी में	नारीयल और शराब चढ़ाना।
५.	अंगीयौ	आधा भाग सुन्न हो जाना।	सभी में	शराब और बकरे की बली चढ़ाना।
६.	मसाणियौ	शरीर और दिमाग कमजोर होना, सूख जाना।	सभी में	मांस, रक्त और नौ तरह के अनाज रखना।
७.	आगीयौ	शरीर में जलन।	सभी में	बकरे की बली तथा शराब चढ़ाना।
८.	बचानियौ	जीभ मोटी हो जाना। बोल नहीं पाना।	सभी में	नारीयल और शराब रखना।
९.	खांपरियौ	मस्तक रोग जिससे पागल हो जाय।	सभी में	शराब, नौ नीबू, दीप, तेल धरना।
१०	तावनियौ	सिर दर्द, चक्कर आना।	सभी में	लाल व सफेद कपड़े के नौ टुकडो में नौ अनाज कंकू, अंडे रोगी पर सात सात बार फेरकर मिट्टी के 'ठीकरे' में रखना।
११	बालटोनिया	हाथ, पांव, भुजाओं और जोडों में दर्द।	सभी में	तीन नारीयल तथा तीन नीबू चार चार टूकडे करके चारों दिशाओं में फेंकना।
१२	कासबियौ	व्यक्ति का रंग पीला पड़ जाता है।	सभी में	२५० ग्राम तेल कटोरी में रख कर सात बार रोगी पर फेरना। सात मंत्रित नीबू सात दिन खाने।

१३	नरसिंघा	नाड़ी तंत्र का दोष	सभा में	नारीयल और शराब
१४	फेंफड़ियौ	फेंफड़ों और गुर्दो के रोग	सभी में	मुर्गी काटकर खून चटाना
१५	सुजानियौ	सपूर्ण शरीर में शोथ	सभी में	दो अंडे और शराब
१६	बेसनियौ	बोलने में और श्वास लेने में तकलीफ	सभी में	मास अर शराब चढ़ाना
१७	दांतियौ	दांतो व मसूढो में दर्द	सभी में	सात तरह के अनाज में सात रंग मिलाकर खाना
१८	चांमरियौ	चर्म रोग	सभी में	मास और शराब चढ़ाना

इसके अतिरिक्त अनेक वीर भी है जैसे जालीयौ, नाळीयौ, गोथियौ, छोटियौ, टाळियौ, अंटारियौ, छालियौ, वाळियौ, भानीगीयौ, नाजरियौ, भूरीयौ, कारनियौ, पुछेरियौ, घूगियौ, आमलियौ, जागीथौ, धुनियौ, डारोळियौ, सारळियौ, खाटियौ, टिटुरियौ, बारीयौ और धुजणियौ आदि।

मूर्तियों के शिल्पी : गरासियों के देवताओं की मूर्तियाँ मिट्टी की, पत्थर की, काष्ठ की, ईंटों की, कपड़े की और अनघड़ पत्थर की बनाई जाती है। इन मूर्तियों में खांडा माता, सूर माता, काळका माता, पीपळाज माता, धरमराज, हड़मान, नरसिंघी, काळाजी, गोराजी, लाखीजी, कूकड़ माता, गोरज्या, चौसठ जोगणिया आदि मुख्य है। उदयपुर जिले के 'मामेला' गांव में मूर्तियां शानदार घड़ी जाती है। प्रतिमाएं तैयार होने के पश्चात शिल्पी-भोपा उस पुजारी भोपे को सूचित करता तब पुजारी भोपा आता है और गाजै बाजै मूर्तियां ले जा कर स्थापित करता है। गुजरात और मालवा तक यहाँ की मूर्तियां जाती है। यहाँ पर लकड़ी के तोरण, मामा देव और रूपण के मंदिर (लकडी के) शानदार बनते है। यह तोरण पाँच पाँच फूट ऊँचे बनते है जो देखने योग्य होते है। तेजाजी, हडबूजी, लखाजी और देवनारायण की प्रतमाएँ पाषाण की बनती है। देव हो चाहे देवी इनके भोपे (पुजारी) 'पुरुष' ही होते है। 'बायासा' की भोपी (पुजारिन) स्त्री होती है। लाल फूला के भोपे भावाविष्ट होते समय कहीं कहीं औरत का वेष धारण करता है।



मर्दुमसुमारी रा आंकड़ा

~~~
~~~

मर्दुमसुमारी रा आंकड़ा

गरासियां री पेलपोत री जनसंख्या सन् १८९१ मा व्हि जकी मर्दुमसुमारी राजमारवाड़ ई. सन् १८९१ (हरदयालसिंह रिपोर्ट) में 'मारवाड री जात्यां' रो लेखो लाधौ। राजपूताना (मारवाड़, सिरोही, डुंगरपुर, मेवाड़ अर परतापगढ रियासतां) री मरदुम सुमारी सन् १९२१ सूं सरू व्हि ही। नीचे मुजब आंकड़ा त्यार कर्‌या-

क्र.सं.	खेतर	१८९१	१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९४१
१	सिरोही राज्य	८,०४८	७,७५४	११,००५	१३,३७०	१६,००४	१७,८३०
२	मारवाड़ राज्य	४,०४०	४,५३८	२,९४८	४,१५०	५,०२२	६,९८२
३	डुंगरपुर राज्य	-	०५	-	-	-	-
४.	मेवाड राज्य	-	-	३,४६६	७,३७५	८,१७८	१५,७०८
५.	प्रतापगढ	-	-	-	०४	-	-
६.	आबू जिला	-	-	-	११	२७	२०

गरासिया जाति रै विस्तारा-वधापा रौ फी सैकडू १९०१ भा १.७३, १९११ मा ४.६६, १९२१ मा ४३.०, १९३१ मा १७.३५ अर १९४१ मा ३८.६९ रयौ। इणसूं परतख दीसै के सन् १८९१ रे पेली गरासिया सिरो ही जिला मा रीं सूं बत्ता हा। इयांरी मायड़ भौम ई सिरोही बाजे। सन् १८९१ मा सिरोही राज मा तहसीलवार ब्यौरो नीचे मुजब -

क्र.	तहसील	कुल जनसंख्या	गरासियारी जनसंख्या	प्रतिशत
१	आबूरोड	८४,१२४	३४,९९४	४१.६०%
२	पिंडवाडा	९६.८३८	७,७२७	८.०६%
३	रेवदर	८६,१२६	१,३३७	१.५७%
४	सिरोही	८९,५४१	९६५	१.०८%
५	शिवगंज	६८,१८६	२८७	०.४१%

१९७१ री मर्दुमसुमारी मुजब जनजात्यां (आदिवासी) री आबादी राजस्थान में ३१.२५ लाख ही -

क्र.	जाति	मिनख	लुगायां	कुल
१	भील	७,१४,९२८	६,८८,०१५	१४,०२,९४३
२	भील गरासिया	१७,९४४	१७,०५०	३४,९९४
३	भील मीना	९,१६३	७,९१३	१७,०७९
४	गरासिया राजपूत	२८,८९९	२३,३६९	५२,२६८
५	मीणा	८,०४,६९७	७,२७,६३४	५,३२,३३१
६	सहरिया	१३,०६७	१३,८७२	२६,९३९
७	अन्य	७,०११	७,३४३	१५,१५४
८	जिनकी पहिचान नही की जा सकी	२२,७०१	-	-
		१६,१९,२१०	१५,०६,२६९	३१,२५,५०६

१९९१ री मर्दुमसुमारी रै मुजब राजस्थान आदिवासीयों री आबादी रौ ब्यौरो :

क्र.	जिला	कुल जनजातिसंख्या	अनु.जनजाति संख्या	प्रतिशत
१	उदीयापुर	२१,८९,३०१	१,०६३,०७१	३६.७९%

जनगणना के आंकडे

गरासियों की जनसंख्या का सर्व प्रथम विवरण मुझे सन् १८९१ की मर्दुमसुमारी राजमारवाड़ ई. सन् १८९१ (हरदयालसिंह रिपोर्ट) में 'मारवाड़ की जातियों' में मिला। राजपूताना (मारवाड़, सिरोही, डुंगरपुर, मेवाड़ और प्रतापगढ रियासतें) की जणगणना (मर्दुम शुमारी) १९२१ से प्रारंभ हुई। गरासियों के विस्तार-वृद्धि का विवरण निम्न प्रकार से मैने तैयार किया -

क्र.सं.	खेतर	१८९१	१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९४१
१	सिरोही राज्य	८,०४८	७,७५४	११,००५	१३,३७०	१६,००४	१७,८३०
२	मारवाड़ राज्य	४,०४०	४,५३८	२,९४८	४,१०५	५,०२२	६,९८२
३	डुंगरपुर राज्य	-	०५	-	-	-	-

४.	मेवाड राज्य	-	-	३,४६६	७,३७५	८,१७८	१५,७०८
५.	प्रतापगढ़	-	-	-	०४	-	-
६.	आबू जिला	-	-	-	११	२७	२०

गरासियों की वृद्धि का प्रतिशत १९०१ में १.७३% १९११ में ४.६६, १९२१ में १७.३५% और १९४१ में ३८.६९% रहा। इससे स्पष्ट है कि सन् १८९१ के पूर्व गरासिये सिरोही जिले में सर्वाधिक थे। इनकी मातृ भूमि भी सिरोही मानी जाती है। सिरोही में तहसीलानुसार १८९१ में निम्न प्रकार था -

क्र.	तहसील	कुल जनसंख्या	गरासियो की संख्या	प्रतिशत
१	आबूरोड	८४,१२४	३४,९९४	४१.६०%
२	पिंडवाडा	९६,८३८	७,७२७	८.०६%
३	रेवदर	८६,१२६	१,३३७	१.५७%
४	सिरोही	८९,५४१	९६५	१.०८%
५	शिवगंज	६८,१८६	२८७	०.४१%

१९७१ की जनगणना के अनुसार जनपतियों (आदिवासी) की जनसंख्या राजस्थान में ३१.२५ लाख थी -

क्र.	जाति	मिनख	लुगायां	कुल
१	भील	७,१४,९२८	६,८८,०१५	१४,०२,९४३
२	भील गरासिया	१७,९४४	१७,०५०	३४,९९४
३	भील मीना	९,१६३	७,९१३	१७,०७९
४	गरासिया राजपूत	२८,८९९	२३,३६९	५२,२६८
५	मीणा	८,०४,६९७	७,२७,६३४	१५,३२,३३१
६	सहरिया	१३,०६७	१३,८७२	२६,९३९
७	अन्य	७,०११	७,३४३	१५,१५४
८	जिनकी पहिचान नही की जा सकी	२२,७०१	-	-
		१६,१९,२१०	१५,०६,२६९	३१,२५,५०६

१९९१ की जनगणना के अनुसार आदिवासीयों की जनसंख्या का विवरण (जणगणना

में जाति के अनुसार विभाजन नहीं किया) -

क्र.	जिल्ला	कुल जनजातिसंख्या	अनु.जनजाति संख्या	प्रतिशत
१	उदीयापुर	२१,८९,३०१	१,०६३,०७१	३६.७९%

आदिवासियां रै साक्षरता रौ जिल्लेवार लेखो - (१९०१)

क्र.	जिल्लै रौ नांव	अनु. जनजाति	साक्षर व्यक्ति	प्रतिशत
१	गंगानगर	५,०९५	१,२१८	२३.९१
२	बीकानेर	१,४९६	३२९	२१.९९
३	चूरू	५,६११	९६९	१७.२१
४	झुंझनू	२३,०७७	४,९८९	२१.६१
५	अलवर	१४३,८५८	२४,५८३	१७.०९
६	भरतपुर	५६,७१६	११,९२९	२१.०३
७	सवाई माधोपुर	३४८,१३०	६१,६८१	१७.१२
८	जयपुर	३८०,१९९	५९,४७५	१५.६४
९	सीकर	३६,५५२	७,२६१	१९.८६
१०	अजमेर	३२,१८३	४,६२४	१४.३७
११	टौंक	९२,४७७	१०,४९३	११.३५
१२	जैसलमेर	१०,६८८	०.४२९	३.८४
१३	जोधपुर	४०,०८८	२,४२४	६.०५
१४	नागौर	२,९८४	४८३	१६.१९
१५	पाली	६९,६९४	३,६३१	५.२१
१६	बाड़मेर	५७.०३८	१,६७९	२.९४
१७	जालोर	७२.३६१	१,५९७	२.२१
१८	सिरोही	१,५५,२४५	५,१७५	३.३३
१९	भीलवाडा	१,२१,६६४	७,२८१	५.९८
२०	उदयपुर	८,०९,१५६	४८,३६५	५.९८
२१	चितौड़	२,२३,८६४	१२,१३५	५.४२
२२	डुंगरपुर	४,४०,०२६	४२,५२४	९.६६
२३	बांसवाडा	६,४३,५६६	५४,३६१	८.४४

२४	बूंदी	१,१०,०३०	१३,२८०	११.२५
२५	कोटा	२,३१,३१६	३७,६००	१६.२५
२७	झालावाड़	९१,६१०	११,२९४	१२.३३
	राजस्थान (योग)	४१,८३,१२१	४,२९,७८८	१०,२७

उक्त सूचि समस्त आदिवासियों की सम्मलित है तथा प्रत्येक जनजाति की पृथक पृथक उपलब्ध नहीं है।

स्तोत : जनरल पोप्युलेशन टेबल - सिरीज १८, पार्ट २ अे पृष्ट ८०,८४,९४,१२० - सेन्सेस ऑफ इंडिया १९८१। यह आदिवासीयों की साक्षरता का राजस्थान के प्रत्येक जिले के अनुसार विवरण प्रस्तुत किया गया है।



माप-तौल

~~~
~~~

माप-तोल

आदिवासियों में माप-तोल आज ई नीचे मुजल चालें :—

ठोस पदार्थ रौ माप :

१. अेक लाप - ५५ ग्राम

२. अेक धोवौ - १२६ ग्राम

३. च्यार धोवा (अेक पाइली) - १ किलौ।

४. च्यार पाइली (अेक मोणौ) - ४ किलो।

५. पांच मौणौ (अेक सेई) - १० किलौ।

६. वीस सेई (अेक कळसी) - २ क्विंटल

७. बीस कळसी (अेकमुर्रा) - ४० क्विंटल

पालौ, पाइली, मौणौ, सेई, आद, अेक खोरवली लकड़ी रा बणै। इनकी बोली में मांय बीस री इकाई नै अेक बीसी कैवै। पांच बीसी री इकाई नैं अेक हिकड़ौ (सैकड़ों) कैवे। दस हिकड़ां मिळायनै अेक हजार व्है।

राष्ट्र कूट री राजधानी हस्ती कुण्डी (हटुण्डी) पाली जिला रा 'अभिलेख' मांय डावली, मण, कळसी रौ अर भीनमाळ रा 'अभिलेख' वि.सं. १३०८ मांय सई, मण, पाइली अर कळसी री इकाई रौ लेखो लाधै।

गरासियां अंदाज सूं ई नाप-माप कूतै ज्यारां की दांखला नीचे मुजब है -

१. हाथरी हथाळी भरनै कोई चीज देवै तो वीनै 'खुणच्यौ' भरकै मुट्टी भरीयौ कैवे।

२. दोन्यू हथाळ्यां जोड़नै (धोबो) भरनै चीज देवै वींनै 'पावली' कैवे।

३. च्यार 'पावला' (पाला) अेक 'पाइली' बिरोबर मानै।

४. च्यार 'पाइली'रौ अेक 'माणौ' गिणै। औ ढाई किलौ व्है।

५. च्यार 'माणां' री अेक 'सेई' व्है।

६. बीस 'सेई' री अेक 'करही' (कळसी) व्है।

७. दस कराही रौ अेक मूरौ व्है। पिघळ्यौड़ौ तरल पदारथ (द्रव) रौ नाप हेटे मंड्या मुजब मानै -

१. पहरौ - १२५ ग्राम
२. च्यार पहरौ अेक हार - ४६० ग्राम
३. आठ पहरौ (२१/४ हार) - १ किलो ग्राम
४. आठ हार (अेक डबली) - ४ किलो ग्राम
५. च्यार डहली (अेक डोबौ) - १६ किलो ग्राम

लंबाई नापण री नाप :

१. अेक आंगळ - ३/४ इंच
२. च्यार आंगळ - ३ इंच (८ से.मी.)
३. बा'रा आंगळ - १ बैंत (५ इंच कै २५ से.मी.)
४. दो बैंत (बिलात) - १ हाथ (१८ इंच कै ५० से.मी.)
५. दो हाथ - ३६ इंच कै १०० से.मी.
६. च्यार हाथ - १ वाम कै २०० से.मी.

गरासिया मांय केई नाप-तोल री विधियां चालै, की दृष्टांत नीचे मुजब -
१. दोन्यूं हाथ लांबा करनै, वीं बिरोबर नाप नै 'बोव' कैवै।
२. खांदा तांई री पूरा हाथ रै बिरोबर नाप ना 'बांह भरयौ' कहते है।
३. खूणी सूं आंगळी तांई नापनै 'हाथ भरयौ' कहते है।
४. हाथ रा अंगूठा सूं लगायनै (हथाळी चौड़ी राखनै) चिटुड़ी आंगळी तांई रा नाप नै (फैला कर) 'वेंत भरयौ' कैवे।
५. अंगूठो छोडनै बाकी च्यारूं आगळ्यां रै बिरोबर रा नाप नै 'च्यार आंगळ भरयौ' कैवै।

नाप-तोल

ठोस पदार्थ का माप :

१. एक हथेली भर - ५५ ग्राम
२. एक अंजली भर - १२५ ग्राम
३. चार अंजली (एक पाइली) - १ किलो
४. सौलह अंजली (चार पाइली) - एक मौणा या ४ किलो
५. पांच माणौ - एक सई अथवा १० किलो
६. बीस सेई - एक कालसी या २ क्विंटल

७. बीस कलसी - एक मुर्रा या ४० क्विंटल (४०० किलो)

पालो, पाइली, मोणौ, सेई आदि एक खोखली लकड़ी अथवा काष्ट से खाती का बनाया हुआ नाप होता है। बोल चाल की बोली में बीस की इकाई को 'एक बीसी' अथवा 'अेक कौडी' कहते है। पाँच बीसी की इकाई को 'हिकड़ा' (सैकड़ा) कहते है। दस 'हिकडा' मिला कर हजार होते है।

राष्ट्रकूट की राजधानी हस्तीकुण्डी (हटूंडी) पाली जिले के अभिलेख में डाबली, मन, कलसी का और भीनपाल के एक अभिलेख वि.सं. १३०८ में सई, मन, पाइली और कलसी की इकाई का विवरण मिलता है।

गरासिये अंदाज से भी नाप-माप करते है जिसके इदाहरण निम्नांकित है -

१. हाथ की हथेली भर कोई वस्तु देते है तो उसे वे 'खुणच्या भर' अथवा 'मुट्ठी भर' कहते है।
२. दोनो हथेलियों को मिला कर वस्तु देते है तो उसे 'पावली' अथवा 'धोबौ' (अंजलि) कहते है।
३. चार 'पावला' (पाला) एक पाइली के बराबर होती है।
४. चार 'पाइली' का एक 'माणा' होता है। इसमें ढाई किलो वजन होता है।
५. चार 'माणां' की एक 'सई' होती है।
६. बीस 'सेई' की एक कळसी (करही) होती है।
७. दस करही (कळसी) का एक 'मूरा' होता है।

द्रव पदार्थ का माप :

१. पहरो - १२५ ग्राम
२. च्यार पहरो - एक हार - ४६० ग्राम
३. आठ पहरो - २१/४ -१ किलो ग्राम
४. आठ हार - एक डबली - ४ किलो ग्राम
५. चार डबली - एक डोबो - १६ किलो ग्राम

लंबाई नामने का नाप :

१. एक अंगुली - ३/४ इंच
२. चार अंगुली - ३ इंच (८ से.मी.)
३. बारह अंगुल - १ बिलात (९ इंच या २५ से.मी.)

४. दो बिलात - १ हाथ - (१० इंच या ५० से.मी.)

५. दो हाथ - -३६ इंच या १०० से.मी.)

६. चार हाथ - १ वाम या २०० से.मी.

गरासिया समाज मे अन्य अनेक विधिया प्रचलित है, कुछ उदाहरण -

१. दोनो हाथ पूरे लंबे करके, उसके बराबर नाप को 'वोव' कहते है।

२. कंधे तक पूरे हाथ के बराबर नाप को 'बांह भर' कहते है।

३. कोहनी से मध्यमा अंगुली तक (हथेली चौड़ी करके) उसके बराबर नाप को 'हाथ भर' कहते है।

४. अंगुष्ट से ले कर (हथेली चौड़ी करके) छोटी अंगुली तक के नाप (दूरी) को 'बेंत भरयौ' कहते है।

५. अंगुष्ट को छोड कर शेष चारो अंगुलियों के बराबर के नाप को 'चार अंगुल' कहते है।



संदर्भ ग्रंथो की सूची छ

१. लोक साहित्य की सांस्कृतिक परंपरा - डा. मनोहर शर्मा

२. राजस्थानी लोक साहित्य - डा. रामप्रसाद दाधीच

३. राजस्थानी लोक साहित्य - नानूराम संस्कर्ता

४. राजस्थानी लोक साहित्य - (विशेषांक परंपरा) डा. नारायण सिंहभाटी

५. राजस्थान के पूर्वी आंचल का लोक साहित्य - गोविन्द रजनीश

६. लोक धर्मी प्रदर्शनकारी कलाएँ - देवीलाल समा

७. लोक संस्कृति और दर्शन भाग १ - रमेश जैन

८. राजस्थानी मांडणा - रामविलास बम

९. राजस्थानी लोक-नृत्य गीत - एस पी. दिनेश

१०. राजस्थान गाता है - पूर्णिमा गहलोत

११. हाड़ौती के लोक गीत - डा. चन्द्रशेखर

१२. राजस्थानी लोक कथा विज्ञान - श्री चन्द्र जैन

१३. कन्नौजी लोक साहित्य - डा. सन्तराम भार्गव

१४. मालवी लोकगीत - डा. चिन्तामणी उपाध्याय

१५. राजस्थानी लोक कथाएँ - शांति भट्टाचार्य

१६. करौली का ख्याल साहित्य - कल्याण प्रसाद शर्मा

१७. लोक साहित्य विज्ञान - डा. सत्येन्द्र

१८. हरियाणा लोक साहित्य - शकर लाल यादव

१९. राजस्थानी गाथाओं का अध्ययन - डा. कृष्ण कुमार शर्मा

२०. राजस्थानी लोक नाट्य - नारायण शर्मा

२१. लोक साहित्य की भूमिका - कृष्ण देव उपाध्याय

२२. राजस्थानी भाषा और साहित्य - डा. हीरालाल महेश्वरी

२३. राजस्थानी वात संग्रह - डा. नारायण सिंह भाटी

२४. राजस्थानी लोक गीत - सूर्य करण पारीक

२५. राजस्थानी लोक गीत - लक्ष्मीकुमारी चूंडावत

२६. ऋग्वेद

२७. वातां री फुलवारी (प्रथम खंड की भूमिका) - विजयदान देथा

२८. राजस्थानी - कर्नल टॉड

२९. राजस्थानी लोक गीत - स्वर्ण लता अग्रवाल

३०. भीलो के लोक गीत - फूलजी भाई भील

३१. राजस्थानी भीलो की कहावतें - फूलजी भाई भील

३२. भीलों की लोक कथाएँ - डा. पुरशोत्तम मनेरिया

३३. आदिवासी भील - जोधसिंह मेहता

३४. भील संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में - डा. नरेन्द्र व्यास

३५. भील और भगोरिया - मांगीलाल सोलंकी

३६. अभिजात आदिवासी - मनीका भण्डारी

३७. आदिवासी लोक गीत - उमाकांत त्रिपाठी

३८. भीली संगीत विवेचना - मालती काले

३९. भील क्रांति के प्रणेता मोतीलाल तेजावत - प्रेमसिंह कांकरिया

४०. मीणा इतिहास - रावत सारस्वत

४१. आबू क्षेत्र के आदिवासी - डा. सोहनलाल पटनी

४२. आदिवासी भील मेणा - संतोष कुमारी

४३. उदयपुर के आदिवासी - डा. महेन्द्र भानावत

४४. वनवासी भील और उनकी संस्कृति - श्री चन्द जैन

४५. राजस्थानी भील गीत - गिरधारी लाल शर्मा

४६. राजस्थान के आदिवासी १९६६ - अदिम शोध संस्थान, उदयपुर

४७. कुँवारे देश के आदिवासी - डा. महेन्द्र भानावत

४८. राजस्थानी शब्द कोष की भूमिका - सीताराम लालस

४९. वीर विनोद - शामळ दास

५०. नैणसी री ख्यात - अनु. रामनारायण

५१. मारवाड़ का इतिहास - विश्वेश्वर रेऊ

५२. राजस्थानी भीलो के लोक गीत - साहित्य संस्थान, उदयपुर

५३. भीली कहावतें - साहित्य संस्थान, उदयपुर

५४. Linguistc survy of India - Dr. Griysan

५५. Folklore and psychology - By R. R. Marelt

५६. A Hand Book of Folklore - Miss Sofia Burh

५७. The Folk Tales - Stith Thompson

५८. The Science of Folklore - H. N. Kroppe

५९. Senses of India 1961,71,81,1991.

६०. History of Sirohi - Lalla Sita Ram

६१. History of Mewad - cap. I.C. Brock

६२. Gyatier of Sirohi K. B. Arskeen.

६३. History and culture of the Garasias - Dr. B. I. Mehrda



Indian Literature in Tribal Languages



सम्पादक–अनुवादक

अर्जुनसिंह शेखावत

Rs.250

ISBN 81-260-2246-